नये हिंदी लघु नाटक

इन लघुनाटकों का मंचन लेखक की पूर्वानुमति बगैर नहीं किया जाय।
संवादों के बीच आये मंच संकेतों को (मोटे अक्षरों में) नाट्य-पाठ के दौरान ही कोष्ठक लगाकर पढ़ा जाये क्योंकि वे मात्र संकेत हैं, संवाद नहीं।

मुखपृष्ठ : नटरंग प्रतिष्ठान के सौजन्य से

ISBN 81-237-0765-7

पहला संस्करण 1986 *(शक 1908)*
दूसरी आवृत्ति 1997 (*शक* 1918)

Naye Hindi Laghu Natak *(Hindi)*
रु. 30.00
निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, ए-5 ग्रीन पार्क, नयी दिल्ली-110 016 द्वारा प्रकाशित

अनुक्रम

भूमिका

हमारे देश के लिए एकांकी या लघु-नाटक की परंपरा नयी नहीं है। नाट्य शास्त्र में जिन रूपकों-उपरूपकों का उल्लेख है उनमें से कई केवल एक ही अंक के होते थे, जैसे प्रहसन, भाण आदि। पिछली शताब्दी में जब हिंदी में पश्चिमी प्रभाव से नाटक और रंगमंच के नये दौर की शुरुआत हुई तो आधुनिक हिंदी नाटक के जन्मदाता **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र** ने भी **अंधेर नगरी** जैसे छोटे नाटक लिखे। उनके अन्य समकालीनों और परवर्तियों की भी पूर्णाकार नाटकों के साथ लघु-नाटक लिखने में रुचि रही। इस शताब्दी में जयशंकर प्रसाद का **एक घूंट** और उनके कुछ पूर्ववर्तियों और समकालीनों के नाटक भी इसी कोटि के हैं।

पर वास्तव में व्यापक रूप से आधुनिक ढंग का एकांकी-लेखन हिंदी में इस शताब्दी के चौथे दशक में ही शुरू हुआ। इसकी प्रेरणा शायद अंग्रेजी के **कर्टेन रेजर** से, यानी मुख्य नाटक शुरू होने के पहले दर्शकों को शांत रखने के लिए प्रस्तुत किये गये अल्पकालीन नाट्य-प्रदर्शन से आयी। पर जहां अंग्रेजी के 'कर्टेन रेजर' का जन्म रंगमंच पर हुआ, वही हिंदी में एकांकी नाटक का प्रारंभ मूलतः रंगमंच की जरूरतों के लिए नहीं हुआ। चौथे दशक में हिंदी में कोई रंगमंच था ही नहीं। पारसी थिएटर कंपनियां भी, जो शहर-शहर घूमकर थोड़े-बहुत नाटक दिखाती रहती थीं, अब बंद हो रही थीं, नाटक खेलने वाली अव्यावसायिक मंडलियां तो नहीं के बराबर ही थीं। जो थोड़ा-बहुत नाटक देखने-खेलने और विशेषकर पढ़ने का शौक था, वह विश्वविद्यालयों और कालेजों तक ही सीमित था। हिंदी में एकांकी मूलतः इसी समुदाय की जरूरतों के लिए लिखे जाने शुरू हुए और मुख्यतः उन्हीं को पूरा करते रहे। इसी कारण बहुत ही कच्चे, यदा-कदा होने वाले प्रदर्शनों से संबद्ध होने के कारण हिन्दी एकांकी पर एक प्रकार के शौकियापन की छाप लगातार रहती आयी।

परवर्ती वर्षों में हिंदी का एकांकी-लेखन सक्रिय और समर्थ रंगमंच के अभाव में अधिकाधिक 'साहित्यिक' विधा का रूप लेता गया और धीरे-धीरे उसने विश्वविद्यालयों में हिंदी-साहित्य के पाठ्यक्रमों में स्थान बना लिया। चौथे दशक के अंत से रेडियो केंद्र खुलने से उनके लिए भी छोटे नाटक-नुमा रूपकों की जरूरत होने लगी और उसने भी अनेक लेखकों-कवियों, कथाकारों, उपन्यासकारों को, कुछ शौक के लिए, कुछ नयी विधा में हाथ आजमाने के लिए, और कुछ अतिरिक्त आय के लिए, एकांकी लिखने को प्रेरित किया। इस प्रकार हिन्दी एकांकी-लेखन नाटक और रंगमंच का एक अंग और अंश होने के बजाय, मूलतः अन्य सूत्रों से अधिक जुड़ा रहा है और इसका बड़ा गहरा और प्रत्यक्ष प्रभाव हमारे संपूर्ण एकांकी साहित्य पर साफ दिखाई पड़ता है।

यह नहीं कि इस तरह लिखे जाने वाले एकांकी कभी खेले नहीं जाते थे। निस्संदेह विश्वविद्यालयों और स्कूल-कालेजों के वार्षिक अधिवेशनों में, या कभी-कभी अन्य अवसरों पर किसी-किसी अधिक अग्रगामी विश्वविद्यालय के अन्य शैक्षिक संगठनों या क्लबों द्वारा, या किसी-किसी कालेज की 'ड्रमेटिक एसोसिएशन' द्वारा उनके प्रदर्शन होते रहे हैं। स्वाधीनता मिलने के बाद से तो यह प्रक्रिया कई गुना बढ़ी है। पर ऐसे अधिकांश प्रदर्शन रंगमंचीय कार्य-कलाप की इतनी कम जानकारी और इतनी कम तैयारी के साथ होते रहे हैं, और अब भी होते हैं, कि उनको किसी प्रकार के कलात्मक कार्य का दर्जा देना कठिन है। इसीलिए अधिकांश एकांकी न तो किसी सक्षम-समर्थ रंगमंच के प्रभाव से रचे गये, न बाद में वैसे रंगमंच पर उनका कोई परीक्षण-प्रयोग हो सका।

इस दौर के एकांकीकारों में एक महत्वपूर्ण अपवाद है **भुवनेश्वर**। उन्होंने केवल एकांकी ही लिखे और उनकी संख्या भी बहुत नहीं है। उनका पहला संग्रह **कारवां** सन् 1935 में प्रकाशित हुआ था और बाद में पांचवें-छठे दशक में भी उन्होंने कुछ एकांकी लिखे। पर उनके ऊपर बर्नाड शा और इब्सन के विचारों और नाट्य-चेतना का गहरा प्रभाव पड़ा था। साथ ही उनका अपना भावबोध भी कुछ इस प्रकार का था कि वे अपने अनुभव की नाटकीयता को सहज ही पकड़ पाते थे, और ऐसे अंदाज से प्रस्तुत करते थे जो हिंदी नाटक लेखन के लिए एकदम नया और अपरिचित था। बल्कि शायद यह कहना ज्यादा ठीक हो कि उनके नाटकों की संवेदना और संरचना, दोनों ही अपने युग से बहुत आगे की थी। विषयवस्तु की सूक्ष्मता और सार्थकता, शिल्प की नवीनता, और भाषा की बहुस्तरीयता तथा व्यंजना की दृष्टि से उनके नाटक आज भी महत्वपूर्ण हैं। यद्यपि रंगमंच के अभाव में शुरू में वे बहुत खेले नहीं गये, पर पिछले दो-तीन दशक में **ऊसर, तांबे के कीड़े, स्ट्राइक, आजादी की नींव** आदि उनके नाटक जब भी मंच पर प्रस्तुत किये गये, सदा बहुत प्रभावी हुए हैं।

छठे दशक के मध्य से हिंदी रंगमंच का नये सिरे से विकास और प्रसार होने पर हिंदी एकांकी का जीवंत रंगकार्य से सम्पर्क बढ़ना शुरू हुआ। इसका एक प्रभाव और परिणाम यह हुआ कि रंगमंच से संबद्ध या उसमें रुचि रखने वाले नाटककारों तथा अन्य लेखकों ने एकांकी लिखे। उनमें उपेन्द्र नाथ अश्क, जगदीश चंद्र माथुर, धर्मवीर भारती, लक्ष्मी नारायण लाल, विष्णु प्रभाकर आदि उल्लेखनीय हैं। इनके एकांकियों में रंगमंचीय चेतना, दृष्टि या अनुभव का आधार होने के कारण एक भिन्न स्वर और स्तर उभर आया और उसने इन्हें सामान्य रंगमंचीय लेखन और कार्यकलाप से जोड़ दिया। यह प्रक्रिया पिछले दो दशकों में कमोबेश जारी रही है और अनेक रचनाकारों ने रंगमंच के लिए एकांकी या छोटे नाटक लिखे हैं। इनमें प्राय: सभी महत्वपूर्ण नाटककार हैं, भले ही वे साथ में उतने ही या अधिक प्रतिष्ठित कवि, कहानी लेखक या उपन्यासकार भी हों।

इस बीच रंगमंच और नाटक-रचना के बीच सक्रिय और जीवंत संपर्क के

फलस्वरूप नाटक और एकांकी के बीच विभाजन एक हद तक निरर्थक हो गया है। अब ऐसे कई नाटक लिखे जाते हैं जिनकी प्रदर्शन अवधि डेढ़-दो या ढाई घंटे की होने पर भी उनमें कोई अंक-विभाजन नहीं होता और कार्य-व्यापार शुरू से अंत तक अबाध चलता जाता है। इससे भिन्न कई छोटी अवधि के नाटक ऐसे हैं जिनमें कई-कई अंक या दृश्य हैं, जिनका कार्य-व्यापार एक से अधिक स्थलों पर चलता है। ऐसे भी कई छोटे नाटक लिखे गये हैं जिनकी प्रदर्शन अवधि एक से डेढ़ घंटे के बीच ही होती है, पर जिनमें कार्य-व्यापार अपनी सघनता और बहु-स्तरीयता के कारण संपूर्ण नाट्यानुभव प्रस्तुत करता है।

इस दृष्टि से यह उपयुक्त लगता है कि एकांकी की कोई अलग कोटि या वर्ग मनाने की बजाय छोटी अवधि के नाटकों को लघु-नाटक ही कहा जाय। प्रस्तुत संग्रह में नाटकों के चुनाव में यही दृष्टि रखी गयी है और उन्हें **लघु-नाटक** ही कहा गया है।

इस संग्रह में दस लघु-नाटक हैं। इनके लेखक लगभग सभी इस दौर के अग्रणी और महत्वपूर्ण नाटककार हैं। एक-दो नाटक ऐसे भी शामिल किये गये हैं जो रचना की दृष्टि से अपने आप में रोचक और कल्पनाशील नाट्य-बोध की उपज हैं, भले ही वे नाटककार के रूप में बहुत विख्यात न हों।

मोहन राकेश मौजूदा दौर में हिंदी के सबसे क्षमताशील नाटककार रहे हैं। उनके लघु-नाटकों में भी सूक्ष्म नाटकीय बोध, समकालीन प्रासंगिकता, सार्थक विषयवस्तु, सधा हुआ शिल्प और बड़ी एकाग्र नाट्य-भाषा आदि नाट्य-रचना के सभी तत्व मौजूद हैं। उनके संग्रह **अंडे के छिलके तथा अन्य एकांकी** और **बीज नाटक** उनकी मृत्यु के बाद ही छपे, यद्यपि इनके नाटक अलग-अलग पत्र-पत्रिकाओं में पहले छप चुके थे। इनमें, विशेषकर अंतिम कुछ वर्षों में लिखे गये। **शायद, हां**, और **बहुत बड़ा सवाल** में, नाटक की भाषा के और भी गहरे परीक्षण और कई प्रकार के प्रयोगों की कोशिश दिखाई पड़ती है। राकेश के नाट्य-शिल्प में बुनावट की सहजता के साथ स्थितियों और चरित्रों के अंतर्विरोध की बड़ी सूक्ष्म अभिव्यक्ति है। **बहुत बड़ा सवाल** छोटी-से-छोटी बात के लिए व्यर्थ के सेमिनार, गोष्ठी और मीटिंग करने और लोगों की क्षुद्र आत्मलीनता पर व्यंग्य है। इसमें बारह पात्र हैं पर बहुत ही नुकीलेपन से उनके अलग-अलग व्यक्तित्व, रुझान और सामाजिक पृष्ठभूमि को उकेर दिया गया है। चरित्रों की भाषा में, उनकी छोटी-छोटी हरकतों-आदतों में, उनका दृश्य-रूप बड़ी कल्पनाशीलता के साथ उभर आता है।

संवेदना और शिल्प दोनों ही में मोहन राकेश से एकदम अलग नाटककार हैं **विपिन कुमार अग्रवाल,** जो सर्वथा नये ढंग से समकालीन जीवन की असंगतियों को प्रस्तुत करते हैं। वह एक हद तक भुवनेश्वर की ही परंपरा को आगे बढ़ाते हैं, और उन्होंने भी अधिकतर लघु-नाटक ही लिखे हैं। अपेक्षाकृत लंबे **लोटन** के अलावा, उनके लघु-नाटकों के दो संग्रह प्रकाशित हुए हैं—**तीन अपाहिज** और **खोये हुए आदमी की खोज**। विपिन

कुमार अग्रवाल के नाटक यथार्थवादी शैली को तोड़कर जीवन की विसंगति को स्थितियों और भाषा की विसंगतियों द्वारा भी व्यंजित करते हैं। विपिन कुमार अग्रवाल कवि हैं और कविता ने उनके नाटकों की भाषा को अधिक सघन, पारदर्शी, व्यंजनापूर्ण तथा बहुस्तरीय बनाया है, अन्य कवि-नाटककारों की तरह रंगीन और स्फीत नहीं। उनके नाटकों में आज के राजनीतिक, सामाजिक और बौद्धिक जीवन की आत्मवंचना, ढोंग और दिशाहीनता को उधेड़ा गया है। **तीन अपाहिज** में स्वाधीनता के बाद पूरी पीढ़ी के अपाहिज बना दिये जाने की हालत दिखायी गयी है। तीनों अपाहिज बड़े तीखे ढंग से सारी व्यवस्था और मानवीय आधारों के टूट जाने की स्थिति को पेश करते हैं। इस नाटक के शिल्प और भाषा में कविता जैसी परोक्ष, बिंबात्मक व्यंजना है।

सुरेन्द्र वर्मा ने कई बहु-चर्चित और मंचित पूर्णाकार नाटकों के अलावा लघु-नाटक भी लिखे हैं जिनका एक संग्रह, **नींद क्यों रात भर नहीं आती** नाम से प्रकाशित हुआ है। यहां संकलित **मरणोपरांत** में, उनके अधिकांश पूर्णाकार नाटकों की भांति, स्त्री-पुरुष संबधों की बड़ी सूक्ष्म और संवेदनशील पड़ताल है। इसमें एक स्त्री की मृत्यु के बाद उसके पति और प्रेमी को आमने-सामने लाकर इन संबंधों की अनेक परतों और विडंबनाओं का एक नया आयाम उद्घाटित किया गया है। नाटक का शिल्प यथार्थवादी है, पर उसकी सघनता में एक तरह की काव्यात्मकता है जो उसे बहुत प्रभावी बनाती है। वर्ष १९९६ में इनके चर्चित उपन्यास **'मुझे चांद चाहिए'** के लिए इन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

कवि-कथाकर **मणि मधुकर** ने बहुचर्चित **रसगंधर्व** के अलावा कई अन्य लोकप्रिय पूर्णाकार नाटकों के साथ-साथ अनेक लघु नाटक लिखे हैं। उनका एक प्रकाशित संग्रह है **सलवटों में संवाद**। यहां संकलित नाटक **अंधी आंखों का आकाश** अभी पुस्तकाकार प्रकाशित नहीं हुआ है। अंधी आंखों का आकाश एक निम्न-मध्यवर्गीय परिवार की लड़की के बारे में है जिसे प्रेम करने वाला युवक एक अच्छी नौकरी के लिए अपने अफसर की बेटी से विवाह कर लेता है और लड़की धीरे-धीरे अपना शरीर बेचने के लिए विवश होती है। नाटक का सारा कार्य-व्यापार एक पार्क में घटित होता है जहां दूसरों के अतिरिक्त एक पात्र स्वयं ईश्वर है! नाटक में करुणा, व्यंग्य और विडंबना का बड़ा प्रभावी मेल है। रेडियो नाटक की कुछ छाप के बावजूद, इस नाटक के रूप और शिल्प में नवीनता, चमक और निपुणता है।

इस संकलन के सबसे लंबे नाटक **अजातघर** के रचनाकार **रामेश्वर प्रेम** भी कवि हैं। उन्होंने कई नाटक लिखे हैं जिनमें से कोई भी बहुत लंबा नहीं है। **अजातघर** एक सर्वथा अछूते अनुभव का ऐसा सघन और विचलित कर देने वाला रूप है जो उसे पिछले दिनों लिखे गये लघु-नाटकों में खास जगह देता है। सिर्फ दो ही पात्रों और कुछ आवाजों से उत्पन्न स्थितियों तथा वातावरण की असामान्यता को, और आवेगात्मक तनाव की तीव्रता

को, इसमें जिस तरह से निभाया गया है वह हिंदी नाटक में भाव-वस्तु और शिल्प की दृष्टि से नया और महत्वपूर्ण है।

कवि-कथाकार-पत्रकार **सर्वेश्वर दयाल सक्सेना** ने अपने बहुर्मचित नाटक **बकरी** से हिंदी नाटकों में एक नये मुहाविरे के विकास में महत्वपूर्ण योग दिया। उन्होंने कई छोटे नाटक लिखे हैं जो अभी पुस्तकाकार प्रकाशित नहीं हुए हैं। उनके **हवालात** में हमारे समाज के कानून और व्यवस्था की हालत पर टिप्पणी है। नाटक में कुल चार पात्र हैं, तीन लड़के और एक पुलिस का सिपाही। लड़के सिपाही से जिद करके कहते हैं कि उन्होंने बड़े-बड़े अपराध किये हैं और उन्हें थाने ले जाकर हवालात में बंद कर दिया जाय। ऐसी अनोखी जिद का वास्तविक कारण यह है कि वे बेघर हैं और उनके कपड़े फटे हुए हैं। भयानक सर्दी की रात में उन्हें हवालात में कुछ तो राहत मिलेगी। इस छोटे से नाटक में हास्य, व्यंग्य और करुणा का बड़ा कल्पनाशील मिश्रण है, सर्वेश्वर जी की चुटीली भाषा और गीतों का चमत्कार तो है ही।

कथाकार **रमेश बक्षी** अपने पहले साहसिक नाटक **देवयानी का कहना है** से ही विख्यात हो गये। कई नाटकों के अलावा उनके लघु-नाटकों का भी एक संग्रह प्रकाशित है—**छोटे नाटक**। **पिनकुशन** में तानाशाही व्यवस्था की अराजकता और उसमें बदलाव की कोशिश से एक और निरंकुश व्यवस्था की स्थापना दिखाई गयी है। यह एक तरह का विसंगतिवादी फार्स है जो प्रतीकात्मकता और अतिरंजना के द्वारा तर्कशून्य स्थितियों को व्यंजित करता है।

कल्पना के खेल के लेखक **ललित मोहन थपल्याल** ने गढ़वाली और हिंदी में कई बड़े रोचक, छोटे किंतु पूर्णाकार नाटक लिखे हैं। उनके इस नाटक का कार्य-व्यापार न्यूयार्क में बसे भारतीयों की दुनिया से संबंधित है, जिसमें विनोदपूर्ण सधे हुए अंदाज में, और आकर्षक, लचीले शिल्प के साथ, स्त्री-पुरुष संबंधों को पेश किया गया है। इसमें दिवास्वप्न, पूर्वावलोकन की युक्तियों के अलावा गीतों और कविताओं का भी बड़ा आकर्षक प्रयोग है।

शांति मेहरोत्रा और शंभुनाथ सिंह साहित्य-जगत में जाने-पहचाने नाम होते हुए भी नाटककार के रूप में बहुत परिचित नहीं हैं, यद्यपि शांति मेहरोत्रा का एक नाटक, **ठहरा हुआ पानी** प्रकाशित हो चुका है। इस संग्रह में संकलित इन दोनों के ही नाटक कुछ नयी प्रवृत्तियों और उपलब्धियों के सूचक हैं। शांति मेहरोत्रा का **एक और दिन** आज की बाहरी तड़क-भड़क और टीमटाम की जिंदगी में एक संवेदनशील और कलात्मक रुझानवाली स्त्री के जीवन की बिडंबना को पेश करता है। इसमें भी यथार्थवादी ढांचे को तोड़कर एक काल्पनिक दिवास्वप्न को यथार्थरूप में पेश करने की युक्ति का प्रयोग किया गया है। इसकी भाषा में प्रवाह और सहजता है, यद्यपि बुनावट इतनी कसी हुई नहीं है।

शंभुनाथ सिंह के **दीवार की वापसी** में एक रंगमंचीय रूढ़ि का बड़ा दिलचस्प प्रयोग

है। यथार्थवादी नाटक की यह एक रूढ़ि है कि दर्शक इस प्रकार नाट्य-व्यापार को देखता है मानो कमरे की चौथी दीवार सामने से हटा दी गयी हो। **दीवार की वापसी** में पात्र के मन में यथार्थ और भ्रम के गडमड होने को इस चौथी दीवार के होने न होने के भ्रम के सहारे अभिव्यक्त किया गया है। रंगमंचीय प्रयोग की दृष्टि से यह नाटक नयी संभावनाएं प्रस्तुत करता है।

इस प्रकार इस संग्रह में संकलित नाटक समकालीन नाटक-लेखन में कथ्य, भावदशा, परिवेश, शैली, शिल्प आदि की विविधता की एक बानगी पेश करते हैं। मगर पिछले वर्षों में इनके अलावा भी ऐसे कई लघु-नाटक लिखे गये हैं जो रोचकता या कल्पनाशीलता के लिहाज से कम महत्वपूर्ण नहीं हैं। यह आशा की जा सकती है कि कभी वे सब भी नाटक प्रेमियों को एकत्र सुलभ हो सकेंगे।

नयी दिल्ली **नेमिचंद्र जैन**
26 मार्च 1985

बहुत बड़ा सवाल

मोहन राकेश

पात्र

रामभरोसे
श्यामभरोसे
शर्मा
कपूर
मनोरमा
संतोष
गुरप्रीत
प्रेमप्रकाश
दीनदयाल
रमेश
मोहन
सत्यपाल

पहला दृश्य

स्थान : एक स्कूल का कमरा जिसे ब्लैकबोर्ड कोने में हटाकर मीटिंग के लिये तैयार कर लिया गया है। मास्टर की कुर्सी-मेज अध्यक्ष के लिए है और बच्चों के डेस्क शेष सदस्यों के लिए। पीछे दीवार पर संसार का बहुत बड़ा मानचित्र लटक रहा है। आने-जाने के लिए दोनों तरफ दरवाजे हैं।

परदा उठने पर रामभरोसे और श्यामभरोसे डेस्कों से धूल झाड़ रहे हैं।

श्यामभरोसे : **हाथ रोक कर** रामभरोसे !

रामभरोसे बिना सुने धूल झाड़ता रहता है।

श्यामभरोसे : ए रामभरोसे।

रामभरोसे : **बिना हाथ रोके** क्या है ?

श्यामभरोसे : इतनी धूल क्यों उड़ाता है ? आहिस्ता से नहीं झाड़ा जाता ? रोज-रोज की धूल से फेफड़े पहले ही खाये हुए हैं।

रामभरोसे : तो रोता क्यों है ? जान पांच बरस में नहीं जायेगी, चार बरस में चली जायेगी।

श्यामभरोसे : तू अपनी जान चाहे पांच बरस में दे, चाहे एक बरस में। पर मेरी जान अभी रहने दे।

रामभरोसे : ससुरी रोज-रोज ये मीटिंग होंगी, तो किसकी जान रहेगी ? आज एक का जन्म-दिवस होकर निकलता है, तो कल दूसरे का मरन-दिवस आ जाता है। जनमें-मरें ये, धूल खायें राम-भरोसे, श्यामभरोसे। **जोर-जोर से झाड़ता हुआ** सबेरे निकालो, तो शाम को चली आती है। शाम को निकालो, तो सबेर नहीं होने देती।

श्यामभरोसे : आज भी किसी का जन्म-दिवस है क्या ?

रामभरोसे : पता नहीं कौन दिवस है। अपना मरन-दिवस है।

ढीले-ढाले ढंग से फाइल हाथ में लिये शर्मा बाहर से आता है।

शर्मा : **अपने-आप से बड़बड़ाता** अभी तक कोई भी नहीं है यहां।

रामभरोसे : **हाथ रोककर** कोई भी नहीं है, माने ?

शर्मा : माने जो आने वाले थे, उनमें से कोई भी। लोग समझते हैं, मेरे बाप के घर का काम है। जैसे मुझे तनख्वाह मिलती है इसकी। कोई एक आदमी वक्त से नहीं आता।

श्यामभरोसे : साहब, आज किसी की साल-गिरह है यहां पर ?

शर्मा : मेरे झख मारने की साल-गिरह है। तुम लोगों से अभी तक डेस्क साफ नहीं हुए ?

रामभरोसे : देख रहे हो, कर ही रहे हैं।

शर्मा : साढ़े पांच बजे मीटिंग शुरू होनी थी और पौने छह बज चुके हैं। लोग देर से आयें, तुम लोगों को तो जगह वक्त से तैयार कर देनी चाहिए।

रामभरोसे : एक घड़ी दिला दो साहब। तब हम वक्त से सब काम कर सकते हैं। हमें क्या मालूम कब पांच बजता है, कब साढ़े पांच।

शर्मा : स्कूल में वक्त से घण्टी नहीं बजाते ?

श्यामभरोसे : सुपरीडेंट की डांट सुनकर बजाते हैं। घड़ी तो स्कूल की कब खराब पड़ी है।

रामभरोसे : आप लोगों के हाथ पर लगी रहती है, फिर भी देर कर जाते हो। हमारी तो कोई बात ही नहीं है।

श्यामभरोसे : और जल्दी कर दें, तो डांट पड़ती है कि जल्दी क्यों किया, फिर से धूल भर गयी। जल्दी न करें, तो डांट पड़ती है कि जल्दी क्यों नहीं किया, टाइम बरबाद हो रहा है।

रामभरोसे : कोई जादू तो जानते नहीं। हाथ से काम करते हैं, सो कर रहे हैं।

शर्मा : बक-बक मत करो, काम करो। अभी कितना काम बाकी है ?

रामभरोसे : क्लास सारी झाड़ दी है। मास्टर की कुर्सी बाकी है।

जाकर उस कुर्सी-मेज को साफ करने लगता है।

लो हो गयी यह भी। और बता दो जो झाड़ना हो।

श्यामभरोसे : ब्लैक बोर्ड तो नहीं चाहिए ?

शर्मा : नहीं। पर दोनों आदमी कहीं जाना नहीं। यहीं दरवाजे के पास बैठना। पता नहीं किस काम के लिए जरूरत पड़ जाये।

आगे की डेस्क पर बैठने लगता है, पर सहसा उठ जाता है।

यह सफाई की है ? देखो कितनी धूल जमी है यहां। सफाई इस तरह से की जाती है ?

रामभरोसे : क्या पता साहब किस तरह से की जाती है। किसी स्कूल से इस काम की पढ़ाई तो पढ़े नहीं हैं।

श्यामभरोसे : सुपरीडेंट कहता है सीधा झाड़न मारो, सो सीधा मार देते हैं। आप कोई और तरीका बताओ, तो वैसे कर देते हैं।

शर्मा : नानसेंस। अब जैसा हुआ है, रहने दो।

श्यामभरोसे : रहने दो, तो रहने देते हैं।

शर्मा रूमाल से सीट साफ करके डेस्क पर बैठ जाता है।

शर्मा : जाओ, बाहर बैठो अब।

श्यामभरोसे : क्यों साहब, मीटिंग बरखास्त कब होगी ?

शर्मा : क्या पता कब होगी। तुम्हें क्या करना है ?

श्यामभरोसे : कमरे को ताला नहीं लगाना है ? ताला लगेगा, तभी तो यहां से जा पायेंगे। नहीं तो सुपरीडेंट कल हमारी जान को आयेगा।

वह और रामभरोसे दोनों दायीं तरफ के दरवाजे के बाहर जा बैठते हैं। रामभरोसे हाथ पर सुरती मलने लगता है। श्यामभरोसे ऊंघने की मुद्रा में टेक लगा लेता है। मनोरमा, संतोष और गुरप्रीत उसी दरवाजे से आती हैं। रामभरोसे आंखें उठाकर चिढ़े हुए भाव से उन्हें आतेदेखता है।

मनोरमा : क्या बात है, शर्मा ? पहरा क्यों बिठा रखा है बाहर ? मीटिंग में मार-धाड़ तो नहीं होने वाली है।

शर्मा : **उठता हुआ** साढ़े पांच हो गये आप लोगों के ?

मनोरमा : अभी कोई भी तो नहीं आया, सिवाय हमारे।

शर्मा : साढ़े छह तक आराम से आयेंगे लोग। वक्त की पाबंदी तो सिर्फ एक आदमी पर है। क्योंकि वह कमबख्त सेक्रेटरी है।

संतोष : मैंने इसीलिए अपना नाम वापस ले लिया था। मुफ्त की सिर-दर्दी।

मनोरमा : तूने इसीलिए नाम वापस ले लिया था कि शर्मा के खिलाफ तुझे तीन वोट भी न मिलते। अवर शर्मा इज ग्रेट।

संतोष : लांग लिव शर्मा।

मनोरमा : **गुरप्रीत से** तू इतनी गुपचुप क्यों है ?

संतोष : शर्मा के सामने यह हमेशा गुपचुप हो जाती है ।

गुरप्रीत : प्लीज ।

कपूर मुस्कराता हुआ बायीं तरफ के दरवाजे से आता है ।

कपूर : वाह, वाह ।

मनोरमा : वाह, वाह ।

कपूर : आप किस चीज की दाद दे रही हैं ?

मनोरमा : आपकी वाह-वाह की ।

कपूर : मैं तो इस बात पर वाह-वाह कर रहा था कि शर्मा तीन-तीन लेडीज से घिरा है । सेक्रेटरी होने के ये मजे होते हैं ।

शर्मा : आज से तुम सेक्रेटरी हो जाओ ।

मनोरमा : और शर्मा को चेयरमैन बना दीजिए ।

कपूर : चेयरमैन मत कहिए·· वह कहिए···क्या होता है वह ·· अधि-अक्ष ।

संतोष : अध्यक्ष ।

कपूर : अधि-अक्ष ।

संतोष : **जोर देकर** अध्यक्ष ।

कपूर : **जोर देकर** अधिअक्ष । वह तुम्हारा अधि-अक्ष अभी तक नहीं आया, शर्मा ?

शर्मा : तुम्हीं कौन वक्त से आ गये हो ?

कपूर : दस-बीस मिनट लेट, लेट नहीं होता । और फिर मैं तो साधारण सदसिय हूं ।

मनोरमा : सीधे मेम्बर क्यों नहीं कह देते ? सदसिय ।

कपूर : वह लफ्ज क्या है वैसे ?

मनोरमा : सदस्य ।

कपूर : सदसिय ।

मनोरमा : **जोर देकर** सदस्य ।

कपूर : **जोर देकर** सदसिय । मैं पहले ही कहता था इस आदमी को चेयरमैन नहीं बनाना चाहिए । आज छुट्टी का दिन है, वैसे भी ठंड है, घर में रजाई में दुबक कर सो रहा होगा । सॉरी ·· घर में नहीं होगा, वह होगा आज उसके यहां···

संतोष : किसके यहां ?

गुरप्रीत : प्लीज ।

संतोष : नाम तो जान लेने दे ।

गुरप्रीत : प्लीज। प्लीज। प्लीज।

कपूर : गुरप्रीत जी नाम जानती हैं।

संतोष : जानती है तू ?

गुरप्रीत : मैं इसीलिए आप लोगों की मीटिंग में नहीं आना चाहती। यहां काम तो कुछ होता नहीं, बस इसी तरह की बातें होती रहती हैं।

कपूर : गुरप्रीत जी की सहेली है वह।

संतोष : अच्छा···वह ?

कपूर : हां, वही।

संतोष : यह कब से ?

कपूर : कब से ? दो साल से तो मैं ही जानता हूं।

संतोष : पर वह तो पहले···

कपूर : आप बहुत पुरानी बात कर रही हैं, लगता है आप शहर में नहीं रहतीं।

संतोष : **गुरप्रीत से** सच बात है यह ?

गुरप्रीत : **शर्मा से** मैं जान सकती हूं, मीटिंग कब शुरू होगी ?

कपूर : कम से कम चेयरमैन तो आ जाए। क्यों शर्मा, तब तक एक-एक प्याली चाय न पी ली जाए ? ठंड आज वाकई बहुत है। क्यों मनोरमा जी ?

मनोरमा : आई डोंट माइण्ड।

कपूर : राम भरोसे!

रामभरोसे : **सुरती फांक कर** फरमाइए।

कपूर : जा कर लाला से एक सेट चाय ले आ। पांच प्यालियां।

शर्मा : मैं नहीं पिऊंगा

गुरप्रीत : मैं भी नहीं लूंगी।

कपूर : आपको लेनी चाहिए। आपकी तबीयत सुस्त लग रही है।

गुरप्रीत : थैंक्स। मुझे इस वक्त जरूरत नहीं है।

कपूर : रामभरोसे, आधा सेट और तीन प्यालियां।

मनोरमा : शर्मा से भी तो दूसरी बार पूछ लेते।

कपूर : क्यों भई शर्मा ?

शर्मा : यह मीटिंग का वक्त है, चाय पीने का नहीं।

कपूर : रामभरोसे। आधा सेट और तीन प्यालियां।

संतोष : साथ थोड़ी मूंगफली। शर्मा मूंगफली खायेगा।

कपूर : पच्चीस पैसे की मूंगफली ।

शर्मा : मैं ठीक छह बजे मीटिंग शुरू कर दूंगा । तुम लोग चाय पीते रहना ।

रामभरोसे सहज भाव से चल कर शर्मा के पास आ जाता है ।

रामभरोसे : **शर्मा से** पैसे आप देंगे या···?

मनोरमा : कपूर साहब देंगे ।

कपूर जेब से बटुवा निकालकर देखता है ।

कपूर : मेरे पास दस का नोट है ।

मनोरमा : कोई बात नहीं, टूट जायेगा ।

कपूर रामभरोसे को नोट देता है ।

कपूर : चेंज गिनकर लाना ।

रामभरोसे : **जाते–जाते** जितनी गिनती आती है, उतना गिनकर ले आयेंगे ।

गुरप्रीत : मुझे आज मीटिंग होती नहीं लगती ।

संतोष : अभी तो कोरम ही पूरा नहीं है ।

कपूर : क्यों न मीटिंग कैंसिल करके सब लोग कैंटीन में चलकर चाय पियें ?

शर्मा : मीटिंग कैंसिल नहीं होगी । आज की छुट्टी तो बरबाद हुई है फिर एक छुट्टी बरबाद करनी पड़ेगी ।

मनोरमा : सेक्रेटरी के मुंह से ऐसी बात अच्छी नहीं लगती ।

शर्मा : मैं तो इसी वक्त त्यागपत्र देने को तैयार हूं । आप लोग मंजूर कर दीजिए ।

कपूर : वाह ! तिआगपतर कैसे दे सकते हो तुम ?

संतोष : त्यागपत्र ।

कपूर : तिआगपतर ।

संतोष : **जोर देकर** तिआगपतर ।

कपूर : **जोर देकर** तिआगपतर । तुम तिआगपतर दे दोगे, तो दूसरा सेक्रेटरी हमें कहां मिलेगा ?

मनोरमा : हियर-हियर । सेक्रेटरी शर्मा जिंदाबाद ।

कपूर : सबकी तरफ से जिंदाबाद ।

शर्मा : श्यामभरोसे ।

संतोष : सो रहा है वह ।

शर्मा : **ऊंचे स्वर में** श्यामभरोसे ।

श्यामभरोसे : सुन रहे हैं, साहब, बोलिए तो ।

शर्मा : तुमसे मैंने क्या कहा था ?

श्यामभरोसे : क्या कहा था ?

शर्मा : बैठने को कहा था ।

श्यामभरोसे : तो हम बैठे ही हैं, खड़े तो नहीं हैं ।

शर्मा : लेकिन बैठे-बैठे ऊंघ रहे हो ।

श्यामभरोसे : मानुस हैं, साहब । रबड़ के पुतरे नहीं हैं । आ गयी होगी ऊंघ । काम बताइए ।

शर्मा : रामभरोसे चाय लाने गया है ।

श्यामभरोसे : गया है । आपके सामने गया है ।

शर्मा : मैं भी कह रहा हूं, गया है । तुम उसके पीछे चले जाओ । बोलो, चाय एकदम जल्दी आनी चाहिए ।

श्यामभरोसे : **उठता हुआ** बोल देते हैं पर आयेगा तो पैरों से चलकर ही । हमारे जाने से उसके पंख तो उग नहीं आयेंगे ।

शर्मा : **गुस्से से** तो मत जाओ तुम । आने दो उसे, जब भी आता है ।

श्यामभरोसे : **बैठता हुआ** नहीं जाते । वैसा हुकम हो, तो वैसा । ऐसा हुकम है, तो ऐसा ।

कपूर : क्यों शर्मा, लो ग्रेड में ये लोग नहीं आते ?

शर्मा : आते हैं ।

कपूर : तो इन्हें भी मेंबर नहीं होना चाहिए ? लो ग्रेड वर्कर्ज वेल्फेयर सोसाइटी जैसे हम लोगों की है , वैसे ही इन लोगों की भी है ।

मनोरमा : है तो नही, पर होना चाहिए ।

संतोष : तब रामभरोसे चेयरमैन हो जायेगा, श्यामभरोसे सेक्रेटरी ।

कपूर : फिर चाय लेने कौन जायेगा ? शर्मा ?

शर्मा : तुम मेरा अपमान कर रहे हो ।

कपूर : अगर अपमान हो गया हो तो मैं माफी मांग लेता हूं । मैंने तो एक बात कही थी ।

रामभरोसे चाय और मूंगफली लिये हुए आता है ।

मनोरमा : लीजिए, चाय आ गयी ।

कपूर : गुरप्रीत जी, आप बनाइये चाय ।

गुरप्रीत : मुझे सबके टेस्ट का पता नहीं है ।

कपूर : आपको नहीं है पता ? बनाइए, बनाइए ।

संतोष : **गुरप्रीत से** सबसे छोटी तू ही है ।

कपूर : सबसे छोटी और सबसे······

मनोरमा : कह दीजिए, कह दीजिए ।

कपूर : सॉरी, मेरा वह मतलब नहीं था ।

गुरप्रीत चाय बनाने लगती है । प्रेमप्रकाश, दीनदयाल बायीं तरफ से आते हैं ।

मनोरमा : क्या मौके पर आये हैं आप लोग ।

प्रेमप्रकाश : चाय और मूंगफली । किसने दावत की है ?

मनोरमा : कपूर साहब ने ।

प्रेमप्रकाश : किस खुशी में ।

मनोरमा : आप लोगों के देर से आने की ।

दीनदयाल : मैं एक प्याली ले सकता हूं ?

गुरप्रीत : **पहली प्याली उसकी तरफ बढ़ाकर** लीजिए ।

दीनदयाल : **प्याली लेकर** थैंक्स ।

गुरप्रीत : **प्रेमप्रकाश से** आप भी लेंगे ?

प्रेमप्रकाश : क्यों नहीं ?

गुरप्रीत : **प्याली बढ़ाकर** लीजिए । चीनी कम डाली है । अब तीसरी प्याली कौन लेगा ?

मनोरमा : कपूर साहब, जिन्होंने चाय मंगवायी है ।

कपूर : नहीं, नहीं, आप लीजिए ।

मनोरमा : आप तकल्लुफ कर रहे हैं । ले लीजिए ।

कपूर : तकल्लुफ तो आप कर रही हैं ।

मोहन दायीं तरफ से आता है ।

मोहन : मीटिंग शुरू नहीं हुई अभी ? चाय चल रही है ? यह एक्स्ट्रा प्याली किसके लिए रखी है ? मैं ले सकता हूं ?

गुरप्रीत : क्यों नहीं ?

मोहन प्याली उठाकर पीने लगता है ।

मोहन : खूब गरम चाय है । मेजबान कौन है ? दीनदयाल जी, आप ?

दीनदयाल : मैं भी तुम्हारी तरह मेहमान हूं ।

मोहन : तो प्रेमप्रकाशजी की तरफ से है चाय ? **प्रेमप्रकाश से** धन्यवाद, बहुत-बहुत धन्यवाद ।

प्रेमप्रकाश : मुझे धन्यवाद क्यों देते हो ? मैं खुद मेहमान हूं ।

मोहन : हम तीनों मेहमान हैं ? तो मेजबान ?

संतोष : पैसे कपूर साहब के खर्च हुए हैं ।
मोहन : पैसे खर्च किये हैं, फिर भी खुद नहीं पा रहे ? क्या बड़प्पन है ।
संतोष : बड़प्पन तो अपने आप हो गया है, जब·······
मोहन : किसी-किसी में होता है ऐसा बड़प्पन । हमारी पहचान के एक साहब और हैं ऐसे । शादी-शुदा हैं । वे अपनी पत्नी को खुद सैर करने नहीं ले जाते । दोस्तों को ले जाने देते हैं ।

गुरप्रीत : प्लीज ।
शर्मा : मुझे ऐसी बातचीत पर सख्त एतराज है । मैं चाहूंगा कि हम मीटिंग का वातावरण गम्भीर रहने दें ।
मोहन : मैं इसके बाद गम्भीर रहने की प्रतीज्ञा करता हूं । थोड़ी मूंगफली तो ले सकता हूं न ?
शर्मा : तो अब कार्रवाई आरम्भ की जाय···

बाहर से एक ठहाका सुनाई देता है।

मनोरमा : अभी और लोग आ रहे हैं ।
मोहन : रमेश और सत्यपाल हैं । ऐसी बहशियाना हंसी और कोई हंस ही नहीं सकता ।
कपूर : देखो, तुमने अभी प्रतीज्ञा की है कि···
मोहन : सॉरी । मगर कोई भी कह दे, यह हंसी इंसानों की-सी है ?

रमेश और सत्यपाल बायीं तरफ से आते हैं ।

रमेश : किसकी हंसी इंसानो की-सी नहीं है ?
मोहन : मेरा मतलब आप ही की हंसी से था । लेकिन मैं अपने शब्द वापस लेता हूं । आप मूंगफली खाइए ।
सत्यपाल : यह जरा-सी मूंगफली आप किस-किस को खिलायेंगे ?
रमेश : ले भी लो अब । शर्मा साहब, आप भी लीजिए ।
शर्मा : **एक दाना लेकर** तो मीटिंग की कार्रवाई अब···
रमेश : मनोरमा जी, आप परे क्यों खड़ी हैं ? लीजिए न । कुल आठ-दस दाने बचे हैं ।
मनोरमा : ये कपूर साहब को दे दीजिए वह बेचारे···
रमेश : आप लीजिए, उन्हें भी देता हूं । आप भी लीजिए संतोष जी । गुरप्रीत जी, आप छिप क्यों रही है ? लीजिए, कुल दो ही दाने बचे हैं । अरे, दो में से भी एक दाना छोड़ दिया ? लीजिए कपूर साहब ।

कपूर : यह तुम ले लो ।

रमेश : नहीं, आप ले लीजिए ।

कपूर : नहीं, तुम्हीं ले लो ।

रमेश : नहीं-नहीं । आप ले लीजिए ।

दीनदयाल : ऐसा भी क्या तकल्लुफ ? आप दोनों मत लीजिए । मैं ले लेता हूं । थैंक्स ।

शर्मा मास्टर की कुर्सी के पास चला जाता है ।

कपूर : पहले सब लोग बैठ जायें ।

मोहन : लेडीज फ्रण्ट । जैण्ट्स बैक ।

रमेश : क्यों ? एक-एक डेस्क पर एक-एक पेयर क्यों नहीं ?

मोहन : लेडीज कम हैं, जेण्ट्स ज्यादा हैं ।

रमेश : तो दो-दो डेस्क जोड़ लिए जायें जिससे···

मोहन : मुझे कोई ऐतराज नहीं ।

शर्मा : मुझे ऐतराज है । डेस्क इतने है कि एक-एक डेस्क पर एक-एक आदमी बैठ सकता है । जहां-जहां बैठना हो, बैठ जाइए ।

मोहन : इस सुझाव से कौन-कौन सहमत है ?

मनोरमा : हम सब सहमत हैं ।

मोहन : आप सब सहमत हैं, तब तो कुछ कहने को बचता ही नहीं ।

एक डेस्क पर बैठ जाता है । और लोग भी बिखर कर बैठ जाते हैं ।

शर्मा : मैं समझता हूं, अब और किसी के आने की आशा नहीं करनी चाहिए । अध्यक्ष महोदय नहीं आये, इसलिए आज की मीटिंग की अध्यक्षता के लिए मैं कपूर साहब के नाम का प्रस्ताव करता हूं ।

सत्यपाल : मैं इसका समर्थन करता हूं ।

शर्मा : आइए, कपूर साहब ।

कपूर मास्टर की कुर्सी पर जा बैठता है । सभी लोग ताली बजाते हैं ।

कपूर : **गला साफ करके** भाइयों और बहनों···

मोहन : मेरा एक संशोधन है । बहनों पहले और भाइयों बाद में होना चाहिए ।

शर्मा : क्या मैं अनुरोध कर सकता हूं कि आप सब गम्भीर होकर बैठें ?

मोहन : मैं बिल्कुल गम्भीर होकर यह बात कह रहा हूं।

शर्मा : आप बिल्कुल गम्भीर होकर नहीं कह रहे हैं।

रमेश : आप कैसे कह सकते हैं कि ये गम्भीर होकर नहीं कह रहे ? सभ्य समाज में हमेशा लेडीज एण्ड जेण्टल मैन कहा जाता है, जेण्टलमैन एण्ड लेडीज नहीं।

शर्मा : अच्छा, अच्छा। मैं आपका संशोधन स्वीकार करता हूं।

रमेश : आपका मतलब है, आप मिस्टर मोहन का संशोधन स्वीकार करते हैं।

शर्मा : मेरा मतलब है, मैं मिस्टर मोहन का संशोधन स्वीकार करता हूं। बहनों और भाइयों····

सत्यपाल : मैं एक बात कह सकता हूं ?

शर्मा : कहिए।

सत्यपाल : बहनों और भाइयों, यह एक झूठा स्टेटमैंट नहीं है ?

दीनदयाल : बात करने का मुहावरा ऐसा है, यार।

सत्यपाल : लेकिन यह झूठा मुहावरा नहीं है ? क्या शर्मा साहब कह सकते है कि जितनी महिलाएं यहां बैठी हैं···

प्रेमप्रकाश : आप पर्सनल बातें बीच में नहीं ला सकते।

सत्यपाल : मैं कोई पर्सनल बात बीच में नहीं ला रहा। मेरा मतलब सिर्फ इतना है कि हमें इस मुहावरे की जगह कोई दूसरा मुहावरा इस्तेमाल करना चाहिए जो कि लेडीज एण्ड जेण्टलमैन की तरह न्यूट्रल हो।

मोहन : लेडीज एण्ड जेण्टलमैन की तरह न्यूट्रल ? ग्रामर ठीक है आपकी ?

सत्यपाल : मैं मुहावरे की बात कर रहा हूं।

प्रेमप्रकाश : वह मुहावरा भी न्यूट्रल किस तरह से है ? किसी भी सभा में बैठी हुई सब लेडीज लेडीज नहीं होतीं।

गुरप्रीत : दिस इज टू मच।

मनोरमा : आप इनडायरेक्टली हमारा अपमान कर रहे हैं।

प्रेमप्रकाश : मैं सिर्फ इतना कह रहा हूं कि बहनों और भाइयों, यह मुहावरा उतना ही सही है जितना लेडीज एण्ड जेण्टलमैन। इसलिए शर्मा साहब को आगे चलने दिया जाए।

कपूर : चलिए शर्मा साहब।

शर्मा : **फिर गला साफ करके** आप सब जानते हैं कि 'लो ग्रेड वर्कर्ज

वेलफेयर सोसाइटी' की स्थापना किस उद्देश्य से की गयी है। लगातार बढ़ती मंहगाई के इस जमाने में हमारे-जैसे सब लोग अपने लिए खान-पान के मामूली साधन जुटाने में भी असमर्थ हैं। इसलिए हम चाहते हैं कि हम अपने वर्ग के लोगों के वेल्फेयर की ऐसी स्कीम सरकार के सामने रखें, और उन्हें मनवाने के लिए जितना जोर सरकार पर डाल सकें, डालें जिससे कि··· मेरा मतलब है, ऐसी स्कीमें जो कि···जैसे पिछली बार सरकार से ज्यादा-से-ज्यादा छोटे कर्जों की मांग की गयी थी···

दीनदयाल : उस मांग का अब तक हुआ भी है कुछ ?

कपूर : यह सवाल बाद में उठाइयेगा।

दीनदयाल : बाद में क्यों ? अगर उसी बारे में अब तक कुछ नहीं हुआ···

कपूर : क्यों शर्मा, हुआ है उस बारे में कुछ ?

शर्मा : थोड़ा-बहुत हुआ है··· या नहीं भी हुआ, तो होने की आशा की जा सकती है। फिलहाल हम अपने आज के एजेंडा को ध्यान में रखें।

मोहन : आज का एजेंडा क्या है ?

शर्मा : मैं उसी पर आ रहा हूं। आज हम सरकार के सामने यह ठोस सुझाव रखना चाहते हैं कि···मेरा मतलब है कि आबादी बढ़ जाने से शहर बी ग्रेड से ए ग्रेड हो जाते हैं, लेकिन जहां तक हम लोगों का ताल्लुक है···कहना चाहिए कि लो ग्रेड वर्कर्ज की जिंदगी लो ग्रेड से लोअर ग्रेड होती जाती है, इसलिए हमारे लिए जरूरी है कि···और हमें सिर्फ प्रस्ताव ही पास नहीं करना, उसके लिए, उसे मनवाने के लिए, पूरी कोशिश भी करनी है कि एक-ड़ेढ़ साल के अंदर जैसे इतनी कॉलोनीज हैं, उसी तरह एक निम्नस्तर गृह-निर्माण योजना के अंतर्गत····

कपूर : क्या ? क्या ?

शर्मा : निम्नस्तर गृह-निर्माण योजना···

कपूर : इसका मतलब ?

रमेश : घटिया किस्म के घर बनाने की स्कीम।

कपूर : **अविश्वास के स्वर में** नहीं-नहीं···

सत्यपाल : घर बनाने की घटिया किस्म की स्कीम।

कपूर : नहीं-नहीं।

दीनदयाल : वह स्कीम, जिसके मातहत निचले दर्जे के घर बनाये जायें।

प्रेमप्रकाश : निचले दर्जे के घर तो सारे देश में हैं ही। उनके लिए सरकार को और स्कीम बनाने की क्या जरूरत है ?

मनोरमा : ही मींज हाउसेज फार लो ग्रेड वर्कर्ज।

कपूर : आई सी, आई सी।

शर्मा : तो कहने का मतलब है कि ऐसी एक योजना हो जिससे···वह सहकारी योजना भी हो सकती है और छोटे कर्जों की योजना का हिस्सा भी··· एक सुझाव था कि घर नीलाम किये जायें, लेकिन मैं उसके पक्ष में नहीं हूं···क्योंकि नीलामी जो है, वह समाजवादी नीति नहीं है ··उसमें बड़ा छोटे को निगल जाता है और छोटा···वैसे लाटरी भी डाली जा सकती है घरों की···· पर योजना जो भी हो, ऐसी होनी चाहिये कि उसका लाभ हमारे सब सदस्यों को हो सके।

दीनदयाल, प्रेमप्रकाश : हियर हियर।

शर्मा : क्योंकि घर एक ऐसी चीज है जो हर आदमी की बुनियादी जरूरत है, उसकी सुख-शांति का आधार है। आदमी काम करता है कमाने के लिए। कमाता है आराम पाने के लिए। और सही माने में आराम वह तभी पा सकता है जब उसके पास अपना एक ऐसा घर हो जिसमें···सर्दी हो या गर्मी, दुख हो या सुख···एक ऐसी जगह जहां···जहां ··· जहां पर वह ··· उन लोगों के साथ जोकि उसका परिवार है···· हम में से हर एक का अपना परिवार है···उस परिवार के साथ··· वह आदमी··· वह अदमी····**आंखे गुरप्रीत के चेहरे पर अटक जाती हैं, जिससे जुबान और अटकने लगती है।**

मैं हर परिवार की बात नहीं कहता···कई बार···कुछ परिवारों में··· कुछ ऐसे परिवार भी होते हैं···जिनमें ··· जिनमें··· वह भी होता है··· मतलब कलह-क्लेश होता है··· पर क्यों होता है ? उस कलह-क्लेश के कारण··· उसके कारण ·· आदमी के लिए··· किसी भी आदमी के लिए··· घर की आवश्यकता··· जो सुख-शांति वह चाहता है···उसकी आवश्यकता··· एक अंदरूनी आवश्यकता··· जैसे आज ही समाचार था···· कि एक आदमी ने··· अपने पूरे परिवार के साथ··· पूरे परिवार को उसने जहर दे दिया ·· और उसके साथ··· उसके बाद··· स्वयं भी

आत्महत्या करने का प्रयत्न किया है···

रमेश, सत्यपाल : हियर, हियर।

कपूर : **डस्टर से मेज ठोकता हुआ** आर्डर-आर्डर।

शर्मा : जानने की बात यह है··· कि ऐसा जब भी होता है··· जब भी ऐसा होता है··· तो उसके मूल में··· यदि उसके मूल कारणों की खोज की जाए तो··· तो पता चलेगा कि··· कहीं-न-कहीं ··· अवश्य कहीं-न-कहीं··· और यह बात किसी के लिये भी सच हो सकती है··· कि कहीं-न-कहीं ··· कुछ-न-कुछ ऐसा है कि··· हो सकता है कि मैं अपने विषय से थोड़ा भटक गया हूं··· परंतु यह इसलिए है कि ·· यदि हम सोचना चाहें, तो पता चल सकता है कि ·· वह कुछ-न-कुछ क्या है।

जेब से रुमाल निकालकर माथे का पसीना पोंछता है।

दीनदयाल : शर्मा, पानी पी लो, थोड़ा। रामभरोसे शर्मा को एक गिलास पानी देना।

शर्मा : मुझे पानी नहीं चाहिए।

दीनदयाल : थोड़ा पी लो, तरावट आ जायगी।

शर्मा : नहीं, नहीं। **रामभरोसे की तरफ** पानी नहीं चाहिए।

प्रेमप्रकाश : चाय मंगवा लो।

शर्मा : नहीं, चाय भी नहीं चाहिए। मैं जो बात आपके सामने रख रहा हूं···

कपूर : सीधे आज का परस्ताव ही क्यों नहीं पढ़ देते ? जो बात है, वह सब लोग जानते हैं।

रमेश : बोल लेने दीजिए उन्हें। अगली मीटिंग जाने कब होगी।

सत्यपाल : शर्मा साहब, सीधे उस बात पर आ जाइए··· जब से इंदिरा सरकार बनी है, तब से···

रमेश : बल्कि उससे भी आगे से शुरू कीजिए ··· जब से आपने सेक्रेटरी पद संभाला है, तब से····

कपूर : आर्डर-आर्डर। शर्मा, तुम परस्ताव पढ़ दो अब।

संतोष : क्षमा कीजिए, परस्ताव नहीं, प्रस्ताव।

कपूर : परस्ताव।

संतोष : **जोर देकर** प्रस्ताव।

कपूर : **जोर देकर** परस्ताव।

दीनदयाल : पी ए आर ए एस नहीं, पी आर ए एस··· प्रस्ताव ।

कपूर : जो भी हो वह रेजोल्यूशन की हिंदी । वह पढ़ दो तुम ।

शर्मा : तो मैं आपका अधिक समय न लेकर आपके सामने प्रस्ताव पेश कर रहा हूं ।

अपनी फाइल खोलता है । फिर उसे आगे–पीछे पलटने लगता है ।

शर्मा : प्रस्ताव है······ प्रस्ताव था······

रमेश : था, मतलब खो गया कहीं ?

शर्मा : नहीं, इसी फाइल में है··· मतलब इसी फाइल मे था··· अभी सुबह मैंने ड्राफ्ट बनाया था···

सत्यपाल : किसी और फाइल में तो नहीं है ?

शर्मा : और किस फाइल में हो सकता है ?

सत्यपाल : गुरप्रीत जी की फाइल देख लीजिए । उसमें हो शायद ।

शर्मा : **सख्त पड़कर** उनके पास कोई फाइल नहीं है ।

सत्यपाल : तो हो सकता है, उनके बटुवे में हो ।

गुरप्रीत : **सख्त पड़कर** इनका प्रस्ताव मेरे बटुवे में ? आप कहना क्या चाहते हैं ?

सत्यपाल : नाराज होने की बात नहीं । चूंकि प्रस्ताव खो गया है इसलिए मैंने सोचा कि हो सकता है इधर-उधर पड़ा देखकर आपने अपने बटुवे में संभाल लिया हो ।

गुरप्रीत : **उसी तरह सख्त** मेरे बटुवे में ऐसी फालतू चीजों के लिए जगह नहीं है ।

रमेश : क्या कहा आपने ? फालतू या पालतू ?

गुरप्रीत : **और भी सख्त** रमेश चोपड़ा ।

रमेश : प्रेजेंट मिस ।

कपूर : आर्डर-आर्डर ।

दीनदयाल : शर्मा, फाइल में नहीं है, तो कहीं-न-कहीं तो होगा ही । एक बार पतलून की जेब में देख लो ।

शर्मा : पतलून की जेब में कैसे हो सकता है ? **दोनों जेबें टटोलता है** घर से चलते समय मैंने फाइल में रखा था । **जेबों का सामान निकालकर** पतलून में सिर्फ रूमाल है और तीस पैसे हैं···

सत्यपाल : सिर्फ तीस पैसे ? व्हाट पिटी ?

प्रेमप्रकाश : पतलून में नहीं है, तो कोट की जेबों में देख लो ।

दीनदयाल : कोट की जेबें सिली हुई हैं। आज ही ड्राईक्लीन होकर आया लगता है।

प्रेमप्रकाश : तो, अंदर कमीज की जेब में हो शायद ?

शर्मा : कमीज में जेब नहीं है। मैं जेब वाली कमीज नहीं पहनता।

प्रेमप्रकाश : फिर तो एक ही बात हो सकती है। भाग कर घर पर देख आओ। शायद बच्चों ने निकाल लिया हो।

दीनदयाल : बच्चों को प्रस्ताव का क्या करना है ?

प्रेमप्रकाश : खेल रहे होंगे।

सत्यपाल : या वहां मौहल्ले में पेश कर रहे होंगे। हो सकता है, अब तक उन्होंने पास भी कर दिया हो।

कपूर : आर्डर-आर्डर... मेरा ख्याल है शर्मा तुम जल्दी से नया ड्राफ्ट बना लो।

शर्मा : नया ड्राफ्ट ? नया ड्राफ्ट बन सकता है, लेकिन...

रमेश : उसके लिए इन्हें किताब चाहिए वह......वन हंड्रेड ड्राफ्ट रेजोल्यूशंज।

शर्मा : मैं किताब देख कर ड्राफ्ट नहीं बनाता।

सत्यपाल : ठीक बात है। वरना स्पेलिंग की इतनी गलतियां नहीं हो सकतीं।

कपूर : तुम साथ के कमरे में चले जाओ, शर्मा।

शर्मा : **चुनौती स्वीकारने के स्वर में** ठीक है। मैं अभी नया ड्राफ्ट बनाकर लाता हूं।

फाइल समेट कर दायीं तरफ के दरवाजे से चला जाता है। रामभरोसे आंख उठाकर उसे जाते देखता है, फिर सिर हिलाता है।

कपूर : **जम्हाई रोक कर** उतनी देर अब क्या करना चाहिए ?

दीनदयाल : आप बतायें।

कपूर : आप लोग बताइए।

दीनदयाल : जो चेयरमैन की रूलिंग हो।

कपूर : मैं काहे का चेयरमैन हूं। चेयरमैन तो आज आया ही नहीं।

रमेश : आप अपना वह भाषण दे दीजिए...असूल कहता है कि....

कपूर : नहीं-नहीं, बहुत हो चुका वह। बोर हो गये।

रमेश : आप भी बोर हो गये ?

कपूर : मुझे खुद भी तो सुनना पड़ता है।

दीनदयाल : तो मनोरमा जी से कहा जाय, ये गीत सुना दें।

प्रेमप्रकाश : ये तो मीटिंग के अंत में सुनाती है।

दीनदयाल : हां हां···आज पहले सुना दें।

प्रेमप्रकाश : **दबे स्वर में** पहले मोहन से कविताएं सुन ली जायें।

दीनदयाल : मैं कहता हूं, पहले गीत हो जाने दो।

प्रेमप्रकाश : मैं कहता हूं, पहले कविताएं हो जाने दो।

दीनदयाल : गीत में देर कम लगती है।

प्रेमप्रकाश : इसीलिए तो कह रहा हूं। बाद में कविताओं में बहुत देर लग जाती है। **ऊंचे स्वर में** मेरा प्रस्ताव है कि मनोरमा जी गीत सुनायें।

रमेश : मैं इसका समर्थन करता हूं।

दीनदयाल : मेरा प्रस्ताव है कि मोहन अपनी कविताएं सुनायें।

सत्यपाल : मैं इसका समर्थन करता हूं।

संतोष : मेरा प्रस्ताव है कि सत्यपाल सब सदस्यों की नकलें सुनायें।

रमेश : मैं इसका भी समर्थन करता हूं।

कपूर : और मेरा प्रस्ताव है कि गुरप्रीत जी जिस प्रस्ताव का समर्थन करें वह प्रस्ताव मान लिया जाय।

दीनदयाल : इसका समर्थन कौन करता है?

कपूर : मैं खुद ही समर्थन भी करता हूं।

प्रेमप्रकाश : आप खुद अपने प्रस्ताव का समर्थन नहीं कर सकते, इसलिए आपका प्रस्ताव कैंसिल हुआ।

सत्यपाल : रमेश ने एक साथ दो-दो प्रस्तावों का समर्थन किया है, इसलिए वे दोनों प्रस्ताव भी कैंसिल हुए। अब सिर्फ दीनदयाल जी का प्रस्ताव रह जाता है कि मोहन अपनी कविताएं सुनायें। **मोहन की तरफ देख कर** मोहन। अरे, इसे क्या हुआ है? **सब लोग देखते हैं कि मोहन आंखें मूंद कर डेस्क की पीठ से टेक लगाये है।**

सत्यपाल : मोहन।

मोहन हड़बड़ा कर आंखें खोलता है।

मोहन : प्रस्ताव पास हो गया?

सत्यपाल : वह साथ के कमरे में ड्राफ्ट हो रहा है।

मोहन : कौन ड्राफ्ट कर रहा है?

सत्यपाल : शर्मा।

मोहन : तब ड्राफ्ट हो जाने दो। हो जाय, तो जगा देना।

सत्यपाल : पर इस बीच दूसरा प्रस्ताव पास हो गया है।

मोहन : क्या ?

सत्यपाल : कि तब तक तुमसे तुम्हारी कविताएं···

शर्मा दायीं तरफ से आता है।

शर्मा : मिल गया।

कपूर : वही ड्राफ्ट जो खो गया था ?

शर्मा : हां, बाहर कूड़े में था।

कपूर : कूड़े में ?

शर्मा : आते हुए गिर गया होगा। जमादार ने झाड़ू से कूड़े में डाल दिया था।

कपूर : अच्छा है, मिल गया। वक्त की बचत हो गयी। अब तुम जल्दी से इसे पढ़ दो।

शर्मा पहले वाली जगह पर उसी मुद्रा में खड़ा हो जाता है।

शर्मा : **गला साफ करके** प्रस्ताव की रूपरेखा इस प्रकार है···**कागज देखता है** हम, लो ग्रेड वर्कर्ज वेल्फेयर सोसाइटी के सब सदस्य···

संतोष : मुझे आपत्ति है। जब प्रस्ताव हिंदी में है, तो संस्था का नाम हिंदी में होना चाहिए।

दीनदयाल : मुझे भी आपत्ति है। जब सब सदस्य यहां उपस्थित नहीं हैं, तो प्रस्ताव में सब सदस्यों का उल्लेख कैसे किया जा सकता है ?

रमेश : मैं पहली आपत्ति का समर्थन करता हूं।

सत्यपाल : मैं दूसरी आपत्ति का समर्थन करता हूं।

कपूर : आप पहले पूरा ड्राफ्ट सुन लें। उसके बाद जो संशोदन करना हो, करें।

संतोष : संशोदन नहीं, संशोधन।

कपूर : संशोदन।

संतोष : धन धन धन···संशोधन।

कपूर : धन धन धन···संशोदन।

संतोष : सं···शो···धन।

कपूर : सं···शो···दन।

दीनदयाल : डी एन नहीं, डी एच ए एन।

कपूर : आप पहले पूरा ड्राफ्ट सुन लें। उसके बाद जो एमेंडमेंट करना हो, करें।

संतोष : परंतु हिंदी के प्रस्ताव में संस्था का नाम अंग्रेजी में हो, यह राष्ट्रभाषा का अपमान है। आप इनसे कहिए, पहले नाम हिंदी में कर दें।

कपूर : क्यों शर्मा, लो ग्रेड वर्कर्स वेल्फेयर सोसाइटी की हिंदी क्या है ?

प्रेमप्रकाश : निचला दर्जा कामगार हितकारी सभा।

शर्मा : यह गलत है। असली हिंदी में निम्नस्तर कर्मचारी-कल्याण-समाज।

प्रेमप्रकाश : यह भी गलत है।

शर्मा : यह कैसे गलत है ?

प्रेमप्रकाश : मेरे वाली हिंदी कैसे गलत है ?

शर्मा : वह पुरानी हिंदी है, इसलिए गलत है।

प्रेमप्रकाश : यह मुश्किल हिंदी है, इसलिए गलत है।

शर्मा : आप हिंदी जानते हैं ?

प्रेमप्रकाश : आप अंग्रेजी जानते हैं ?

शर्मा : आप लड़ना चाहते हैं ?

प्रेमप्रकाश : जी नहीं...आप...

कपूर : दोस्तों, वक्त बहुत हो रहा है। काम जल्दी होने दीजिए, जल्दी करो, शर्मा।

शर्मा : मैं आपकी दोनों आपत्तियां स्वीकार कर रहा हूं। **संशोधन करके** तो अब प्रस्ताव इस प्रकार है''' **कागज देखता है** हम, निम्नस्तर-कर्मचारी-कल्याण समाज के सब उपस्थित सदस्य'''

दीनदयाल : यह कैसे कहा जा सकता है कि प्रस्ताव सर्व-सम्मति से पास होगा ? इसलिए सब उपस्थित सदस्यों का उल्लेख भी नहीं किया जा सकता।

शर्मा : तो आप चाहते हैं, मैं प्रस्ताव पेश न करूं।

दीनदयाल : मैंने यह कहा है ? मैंने तो कहा है, शब्द 'सब' बीच में नहीं होना चाहिए।

शर्मा : मैं जब तक प्रस्ताव पूरा नहीं पढ लेता, तब तक इसमें कोई संशोधन नहीं करूंगा।

रमेश : यह आप कैसे कह सकते हैं। अभी-अभी आपने दो संशोधन स्वीकार किये हैं।

सत्यपाल : और जब दो-दो संशोधन स्वीकार कर सकते हैं, तो तीसरा क्यों नहीं कर सकते ?

कपूर : घड़ी पर नजर रखकर चलो, शर्मा।

शर्मा : तो लीजिए, मैं तीसरा संशोधन भी स्वीकार कर लेता हूं। **कागज देखता है** हम, निम्नस्तर-कर्मचारी कल्याण समाज के उपस्थित सदस्य बहुत तीव्रता से यह अनुभव करते हैं कि सामाजिक पुनर्निर्माण की सरकारी नीतियों में हमारे हितों का ठीक से संरक्षण नहीं हो पा रहा है। पंचवर्षीय योजनाओं के अंतर्गत देश के बदलते आर्थिक ढांचे में निम्नस्तर कर्मचारियों के लिए समुचित निम्नस्तर आवास-व्यवस्था सरकार का एक प्रमुख उत्तरदायित्व है। इस उत्तरदायित्व के निर्वाह की···निर्वाह की··· एक शब्द मिट गया है··· क्या शब्द है ?···· निर्वाह की ····

कपूर : मिट कैसे गया ?

शर्मा : पता नहीं कैसे···

रमेश : जमादार की झाड़ू से मिट गया होगा।

शर्मा : निर्वाह की··· निर्वाह की···· किस उससे ?

संतोष : दृष्टि से ?

शर्मा : हां, हां··· दृष्टि से सरकार को चाहिए कि शीघ्र-से-शीघ्र एक निम्नस्तर-गृह-निर्माण-योजना बनाकर सब ऐसे कर्मचारियों को, जिनकी कि सेवा पांच साल से अधिक की है, छोटी-छोटी किस्तों पर एक-एक घर उप उप उप···

दीनदयाल : एक और शब्द मिट गया ?

शर्मा : पूरा नहीं मिटा। घर उप उप उप···

दीनदयाल : उपद्रव ?

शर्मा : उपद्रव कराने का बीड़ा···नहीं, यह नहीं हो सकता।

संतोष : उपलब्ध ?

शर्मा : हां हां···उपलब्ध कराने का बीड़ा उठाये।

कपूर : इतना ही है या और भी है ?

शर्मा : है तो और भी, पर वह छोड़ा जा सकता है।

कपूर : जो छोड़ा जा सकता है, उसे छोड़ दो। तो सज्जनों, अब इसका समर्थन कौन करता है ?

रमेश : समर्थन का क्या है, मैं समर्थन कर देता हूं। **मास्टर की कुर्सी**

के पास आकर मैं इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

लौटकर अपनी जगह पर चला जाता है।

मोहन : **बैठे-बैठे मैं इस प्रस्ताव का विरोध करता हूं।**

सब लोग घूमकर उसकी तरफ देखते हैं।

कपूर : इसका मतलब है, अभी और वक्त लगेगा।

प्रेमप्रकाश : तुम्हारी नींद कब खुली।

दीनदयाल : तुमने प्रस्ताव सुना भी है ?

मोहन : सब सुना है, इसीलिए विरोध कर रहा हूं।

दीनदयाल : प्रस्ताव में कहा क्या गया है ?

मोहन : क्या कहा गया है ?

दीनदयाल : तुम बताओ।

मोहन : आप बताइए।

दीनदयाल : कपूर साहब, आप बताइए इसे।

संतोष : प्रस्ताव अपने में बिल्कुल स्पष्ट है।

मोहन : क्या स्पष्ट है ?

संतोष : क्या स्पष्ट नहीं है ?

मोहन : बहुत कुछ स्पष्ट नहीं है ।

संतोष : जैसे ?

मोहन : जैसे···

कपूर : तुम्हें ज्यादा कुछ कहना है ?

मोहन : बहुत कुछ कहना है।

कपूर : तो यहां शर्मा की जगह पर आ जाओ।

शर्मा अनमने भाव से नीचे उतर जाता है। मोहन उसकी जगह पर आ खड़ा होता है।

मोहन : प्रस्ताव में तीन जगह एक शब्द आया है··· निम्नस्तर। इसका अर्थ है, चूंकि आज हम निम्नस्तर के कर्मचारी हैं, इसलिए जीवन-भर हमें निम्नस्तर के ही बने रहना है। हमारे लिए आवास-व्यवस्था हो, तो कैसी ? निम्नस्तर की। हमारे लिए घर बनाये जायें, तो कैसे ? निम्नस्तर के। इसके बाद शायद हम लोग यह मांग करें कि हमारे निम्नस्तर बच्चों के लिए निम्नस्तर बाल-संरक्षण व्यवस्था के अंतर्गत निम्नस्तर पालन की एक योजना बनाई जाये जिससे हर ऐसे बच्चे को, जिसकी कि उम्र पांच साल से अधिक की है, कम-से-कम आधा पाव दूध

उपलब्ध हो सके ।

रमेश : हियर-हियर ।

कपूर : आपने प्रस्ताव का समर्थन किया है और उसके विरोध में ही हियर-हियर कर रहे हैं ?

रमेश : **पहले की तरह उठकर और मास्टर की कुर्सी के पास जाकर** मैं अपना समर्थन वापस लेता हूं ।
वापस जा बैठता है ।

शर्मा : आप अपना समर्थन वापस कैसे ले सकते हैं ? समर्थन कभी वापस नहीं लिया जाता ।

रमेश : क्यों नहीं लिया जाता ?

सत्यपाल : जब प्रस्ताव वापस लिया जा सकता है, तो समर्थन भी वापस लिया जा सकता है ।

रमेश : मुझे अब विश्वास हो गया है कि आपका प्रस्ताव गलत है । इसलिए मैंने अपना समर्थन वापस ले लिया है ।

कपूर : **मोहन से** तुम्हें और भी कुछ कहना है अभी ?

मोहन : बहुत कुछ कहना है ।

कपूर : **घड़ी देख कर उठता हुआ** तो मैं आप लोगों से इजाजत चाहूंगा । मुझे एक जगह पहुंचना है जरूरी···

शर्मा : **आगे आकर** नहीं-नहीं, कपूर साहब ।

कपूर : भई, देखो शर्मा···

शर्मा : नहीं-नहीं, कपूर साहब ।

कपूर : भई, ऐसा है कि···

शर्मा : **कपूर को बांह से पकड़ कर कुर्सी पर बिठाता है** नहीं-नहीं, आप नहीं जा सकते ।

कपूर : **मिन्नत और शिकायत के स्वर में** भई, मेरा बहुत जरूरी है जाना ।

शर्मा : प्रस्ताव उससे ज्यादा जरूरी है ।

कपूर : उससे ज्यादा जरूरी नहीं है ।

शर्मा : उससे ज्यादा जरूरी है ।

कपूर : नहीं है ।

शर्मा : है ।

कपूर : नहीं है ।

शर्मा : है !

कपूर : तुम किसी और को बना लो चेयरमैन थोड़ी देर के लिए।

शर्मा : आप खुद देख ही रहे हैं। आपके बगैर यह प्रस्ताव पास नहीं हो सकता।

कपूर : क्यों नहीं हो सकता ?

शर्मा : नहीं हो सकता।

कपूर : क्यों नहीं हो सकता ?

शर्मा : नहीं हो सकता।

कपूर : जहां मुझे पहुंचना है, वहीं बल्कि मनोरमा जी को भी पहुंचना है। पूछ लो इनसे।

फिर से उठने की चेष्टा करता है।

शर्मा : **फिर से उसे बिठाकर** तब तो आप हरगिज नहीं जा सकते। मनोरमा जी का वोट बहुत इंपार्टेंट है।

कपूर : **असहाय भाव से मनोरमा को देखता हुआ** आप क्या कहती हैं ?

मनोरमा : **उससे आंखें बचाती है** मैं कुछ नहीं कहती।

कपूर : सात बज गया है।

मनोरमा : मुझे आठ से पहले घर पहुंच जाना है।

कपूर : **फिर से उठता है** इसलिए शर्मा...

शर्मा : **फिर से बिठाता है** नहीं-नहीं कपूर साहब।

मनोरमा : मैं यहां से सीधी घर जाऊंगी।

कपूर : सीधी घर जायेंगी ?

मनोरमा : सीधी घर जाऊंगी।

कपूर : तो वहां चलना था ?

मनोरमा : मैं नहीं चल सकूंगी।

कपूर : क्या कह रही हैं ?

मनोरमा : मैं नहीं चल सकूंगी। आठ से पहले मेरा घर पहुंचना जरूरी है। बच्चों को खाना खिलाना है।

कपूर : वह तो साढ़े आठ भी खिलाया जा सकता है।

मनोरमा : आठ तक वे भी घर लौट आयेंगे।

कपूर : **निढाल होकर** तब तो ···तब··· तो··· खैर, ठीक है शर्मा। तुम प्रस्ताव पास करा लो अपना। **मोहन से** बोलिए आप।

शर्मा : **मोहन से** बोलिए आप।

मोहन : सबसे पहले मैं आपका ध्यान इस चीज की ओर दिलाना चाहता हूं कि हमारे अंदर यह निम्नस्तर की वृत्ति क्या है,

क्यों है ?

शर्मा : विषय से बाहर मत जाइए।

मोहन : आप बीच में मत टोकिए। यह निम्नस्तर की वृत्ति एक संक्रामक रोग की तरह है, जिसके कीटाणु···

कपूर : जिसके क्या ?

मोहन : कीटाणु, जर्म्स···हमारी नस-नस में फैल जाते हैं और रात-दिन दुगने, चौगुने, दसगुने, सौगुने होते जाते हैं। इनसे आदमी की महत्वाकांक्षा मर जाती है, कार्य-शक्ति जवाब दे जाती है, किसी भी चीज को लेकर न कह सकने का साहस उसमें नहीं रह जाता। वह केवल दूसरों का मुंह ताकने और हां-हां करने की एक मशीन में बदल जाता है। जिसका सारा ध्यान निम्नस्तर की कुछ आवश्यकताओं को छोड़कर और किसी चीज़ पर नहीं टिक पाता। परिणाम होता है कुछ निम्नस्तर की मांगें, कुछ निम्नस्तर के प्रस्ताव···

रमेश, सत्यपाल : **डेस्क थपकते हैं** हियर-हियर।

शर्मा : यह मुझे गाली है।

मोहन : यह गाली नहीं है।

शर्मा : गाली है।

मोहन : गाली नहीं है।

शर्मा : है।

मोहन : नहीं है।

दीनदयाल : मिस्टर चेयरमैन, आप फैसला कीजिए, यह गाली है या नहीं है।

कपूर : यहां हिंदी-से-हिंदी की डिक्शनरी मिल सकती है ?

प्रेमप्रकाश : डिक्शनरी की क्या जरूरत है ? संतोष जी यहां हैं।

कपूर : क्यों संतोष जी··· ?

संतोष : निम्नस्तर के दो अर्थ हैं। एक न्यून स्तर। दूसरा हीन स्तर।

कपूर : उन दोनों के क्या अर्थ हैं ?

संतोष : न्यून स्तर के भी दो अर्थ हैं।

कपूर : माफ कीजिए, जितने भी अर्थ हैं, उनमें कोई गाली तो नहीं है ?

संतोष : गाली हो भी सकती है, नहीं भी हो सकती। यह शब्द का प्रयोग करने वाले की भावना पर है।

कपूर : मिस्टर मोहन, आपकी **भावना** गाली देने की थी ?

मोहन : बिल्कुल नहीं ।

कपूर : तो आगे चलिए **शर्मा से** इन्होंने गाली नहीं दी ।

शर्मा : इन्होंने मेरे प्रस्ताव को निम्नस्तर का कहा है ।

कपूर : यार, यही लफ्ज तुमने भी तीन बार इस्तेमाल किया है । अब आगे चलने दो। **मोहन से** चलिए ।

मोहन : यह निम्नस्तर की वृत्ति हमारे अंदर इस तरह घर कर गयी है कि हमारी जीवन-संबंधी धारणा ही निम्नस्तर की होकर रह गयी है। हम हंसते हैं, तो वह हंसी निम्नस्तर की होती है। प्रेम करते है, तो वह प्रेम निम्नस्तर का होता है······

मनोरमा : आप किस विषय में बोल रहे हैं ? प्रस्ताव से इन बातों का कोई संबंध नहीं है ।

मोहन : संबंध है ।

मनोरमा : नहीं है ।

मोहन : है ।

गुरप्रीत : **उठती हुई** भई, मैं जा रही हूं। आप लोग प्रस्ताव पास करते रहिए ।

मनोरमा : **उठती हुई** मैं भी चल रही हूं। यहां मीटिंग नहीं होती, बस, यही सब होता है ।

शर्मा : **हताश भाव से** रुकिए, रुकिए आप लोग ।

कपूर : **खड़ा होकर** जाइए नहीं, मैं दस मिनट में मीटिंग खत्म कर रहा हूं ।

वे दोनों दायीं तरफ से निकल जाती हैं ।

शर्मा : सुनिए मनोरमा जी···

कपूर : ठहरिए गुरप्रीत जी···

कुर्सी छोड़कर उन दोनों के पीछे जाने लगता है, पर शर्मा उसे बांह से पकड़ कर रोक लेता है ।

शर्मा : कम-से-कम आप तो मत जाइए ।

कपूर : लेकिन शर्मा···

शर्मा : **उसे कुर्सी पर बिठाता है** अब साथ ही चलेंगे थोड़ी देर में ।

कपूर : **निढाल होकर मोहन से** आपको और भी कुछ कहना है अभी ?

मोहन : केवल इतना कहना है कि इस निम्नस्तर की वृत्ति से छुटकारा पाने के लिए हमें प्रस्ताव यह पास करना चाहिए कि आज से

हम कहीं भी, किसी भी रूप में, अपने साथ इस शब्द का प्रयोग नहीं करेंगे। इसलिए सबसे पहले हम अपनी संस्था का नाम बदलकर····

शर्मा : जब तक पहले प्रस्ताव पर विचार नहीं होता, तब तक आप दूसरा प्रस्ताव पेश नहीं कर सकते।

मोहन : यह दूसरा प्रस्ताव नहीं है।

शर्मा : बिल्कुल दूसरा प्रस्ताव है।

मोहन : नहीं है।

कपूर : **मेज पर मुक्का मारता है** है–है–है। मैं आपको अब और बोलने की इजाजत नहीं दे सकता। आप अपनी जगह पर लौट जाइए।

मोहन : लेकिन अध्यक्ष महोदय···।

कपूर : आप अपनी जगह पर लौट जाइए। मैं अब शर्मा के प्रस्ताव पर वोट लूंगा।

रमेश : आप वोट नहीं ले सकते। क्योंकि और लोगों को भी प्रस्ताव पर बोलना है।

कपूर : अब उसके लिए वक्त नही है।

सत्यपाल : पर वक्त क्यों नहीं है ?

कपूर : क्यों कि नहीं है।

सत्यपाल : पर क्यों नहीं है ?

कपूर आप एक लाइन में कहिए, आपको क्या कहना है।

सत्यपाल : मैं एक लाइन में नहीं कह सकता।

कपूर : तो मत कहिए।

मोहन : लेकिन अध्यक्ष महोदय···।

कपूर : **गुस्से से** आपसे कहा है, आप लौट जाइए अपनी जगह पर।

मोहन : आप मेरा अपमान कर रहे हैं।

कपूर : आप चेयर का अपमान कर रहे है।

मोहन : आपको इस तरह बोलने का कोई अधिकार नहीं है।

कपूर : आपको इस तरह खड़े रहने का कोई अधिकार नहीं है। जो लोग प्रस्ताव के हक में हैं, वे लोग अपने हाथ···

मोहन : आप प्रस्ताव पर वोट नहीं ले सकते। पहले आप अपने व्यवहार के लिए क्षमा मांगें।

कपूर : मुझे किसी से क्षमा नहीं मांगनी है। जो लोग हक में हैं···।

सत्यपाल : आप वोट नहीं ले सकते, क्योंकि अभी तक प्रस्ताव का समर्थन नहीं हुआ।

शर्मा : समर्थन हो चुका है।

रमेश : नहीं हुआ। मैंने अपना समर्थन वापस ले लिया है।

कपूर : दीनदयाल जी, आप समर्थन कर दें।

दीनदयाल : मैं समर्थन करता हूं।

सत्यपाल : आप फिर भी वोट नहीं ले सकते, क्योंकि मुझे अभी प्रस्ताव के बारे में अपने विचार सामने रखने हैं।

शर्मा : आप अपने विचार सामने नहीं रख सकते, क्योंकि आप इस समय सदस्य नहीं हैं। आपका चंदा अभी तक नहीं आया है।

रमेश : जिस दिन आप सेक्रेटरी चुने गये थे, उस दिन आपका भी चंदा नहीं आया था, और आप सदस्य नहीं थे। जो सदस्य न हो, वह सेक्रेटरी कैसे बन सकता है? मैं सेक्रेटरी के चुनाव को चैलेंज करता हूं।

सत्यपाल : बल्कि जिस दिन यह संस्था बनी थी, और पदाधिकारियों का चुनाव किया गया था, उस दिन किसी का भी चंदा नहीं आया था और कोई भी सदस्य नहीं था। इसलिए मैं इस संस्था के पूरे चुनाव को चैलेंज करता हूं।

रमेश : और क्योंकि तब के चुने हुए पदाधिकारी इस संस्था को चला रहे हैं, इसलिए मैं इस संस्था को चैलेंज करता हूं।

कपूर : **डस्टर से मेज को ठोंकता हुआ** आर्डर-आर्डर-आर्डर। मैंने वोटिंग के लिए कह दिया है। जिन लोगों को एतराज है, वे चाहें तो वाक-आउट कर सकते हैं।

रमेश : हम वाक-आउट नहीं करेंगे।

संतोष : **उठती हुई** आप लोग कार्रवाई जारी रखिए। मुझे जाने की अनुमति चाहिए।

मोहन : **नीचे आकर** ठहरिए संतोष जी। मुझे भी उधर ही जाना है।

संतोष : **बाहर निकलती है** आप अपना देख लीजिए। मैं अब और नहीं रुकूंगी।

पल भर की खामोशी। मोहन अनिश्चित भाव से सबकी तरफ देखता है।

मोहन : **आकस्मिक ढंग से** मैं वाक आउट कर रहा हूं।

जल्दी से संतोष के पीछे निकल जाता है। उसके बाद भी पल भर खामोशी रहती है।

कपूर : **अपने को सहेज कर** तो अब···।

शर्मा : **पस्त भाव से** अब कुछ नहीं हो सकता।

कपूर : क्यों ?

शर्मा : क्योंकि कोरम पूरा नहीं है।

कपूर : लेडीज एण्ड जेंटलमैन···।

प्रेमप्रकाश : माफ कीजिए, लेडीज सब चली गयी हैं, सिर्फ जेंटलमैन बाकी हैं।

कपूर : तो···तो···जेंटलमैन, मुझे अफसोस है कि कोरम पूरा न होने से मीटिंग अब जारी नहीं रह सकती। मैं मीटिंग बरखास्त करता हूं।

खलबली-सी मच जाती है। रमेश और सत्यपाल डेस्कों पर हाथ मारते हुए 'शेम-शेम' के नारे लगाते हैं। पहले कपूर और शर्मा, फिर प्रेमप्रकाश और दीनदयाल कमरे से चले जाते हैं। रमेश और सत्यपाल को जरा बाद में ध्यान आता है कि वे खाली कमरे में 'शेम-शेम' कर रहे हैं। वे दोनों अचानक हाथ रोक कर एक दूसरे को तरफ देखते हैं, ठहाका लगाते हैं और बाहर चले जाते हैं।

श्यामभरोसे ऊंघ रहा है। रामभरोसे उसे हिलाता है।

रामभरोसे : उठ भइया, श्यामभरोसे। तमाशा खत्म हुआ।

श्यामभरोसे : **जागकर** बाबू लोग चले गये ?

रामभरोसे : चले गये।

श्यामभरोसे : क्या-क्या पास कर गये ?

रामभरोसे : पास कर गये कि रामभरोसे, रामभरोसे के घर में रहेगा, श्यामभरोसे, श्यामभरोसे के घर में। और बाबू लोग अपने-अपने घर में रहेंगे।

श्यामभरोसे की आंखें फैल जाती हैं।

श्यामभरोसे : और ?

रामभरोसे : और कि मूंगफली के आधे छिलके रामभरोसे साफ करेगा, आधे श्यामभरोसे।

श्यामभरोसे आंखें झपकाता है।

श्यामभरोसे : और कुछ नहीं ?

रामभरोसे : कुछ नहीं। **उसे बगल से पकड़कर सीधा खड़ा करता हुआ** अब सीधा हो जा। बहुत कूड़ा कर गये हैं। साफ करना है।

एक झाड़न श्यामभरोसे के हाथ में देता है। दोनों फिर कुर्सियां झाड़ने लगते हैं।

तीन अपाहिज

विपिन अग्रवाल

पात्र

कल्लू
खल्लू
गल्लू
साइकिल वाला
डुग्गी वाला

पहला दृश्य

आधे से ऊपर दिन बीत चुका है। तीन अपाहिज-से कल्लू, खल्लू और गल्लू एक तेल के लैंप के खंभे के नीचे, तीन तरह से बैठे हुए हैं।

कल्लू : **उठने का उपक्रम करते हुए** चलो।

खल्लू : चलो क्या ?

कल्लू : **झोंक कर उठना बंद करता है।** उठकर।

खल्लू : ओ, उठकर। **और आराम से बैठ जाता है।**

गल्लू : **लेटते हुए** कहां ?

खल्लू, कल्लू की ओर प्रश्नात्मक मुद्रा में आशा की नजरों से देखता है।

कल्लू : कहीं भी।

खल्लू : **सिर खुजलाकर** कहीं-भी, मैंने सुना है इस जगह का नाम। **जैसे स्वागत-भाषण करता हो।**

गल्लू : **करवट लेकर और कोहनी से मुड़े हाथ पर सिर टिकाकर** दूर होगी।

कल्लू : कहीं भी, मतलब, क-हीं-भी।

गल्लू : **कुछ प्रसन्न होकर** यानी, यहां आसपास भी ?

कल्लू : हो सकता है। मैंने अभी सोचा नहीं है।

खल्लू : बिना सोचे कभी नहीं बोलना चाहिए। **बोल कर मुंह बंद कर लेता है।**

गल्लू : हां, तो ? **गल्लू उठकर बैठ जाता है। दोनों कल्लू को नाराजगी से देखते हैं।**

कल्लू : **जैसे समय चाहता हो** तो···तो···क्या ?

प्रश्न की गंभीरता को महसूस कर गल्लू और खल्लू एक दूसरे को देखते हैं।

खल्लू : **सहसा मुसकुरा कर, मानों उत्तर पा लिया हो** शायद फिर बैठना पड़ता।

गल्लू : **चिढ़ कर** कौन जाने, पहले से कैसे कहा जा सकता है ?

कल्लू : मैं तो भविष्यवाणी मानता हूं।

गल्लू : मैं नहीं मानता ।

खल्लू : **पैर पर हाथ पटक कर जैसे मक्खी मार रहा हो** पहले से कैसे कह सकते हो—नहीं मानता।

गल्लू अपने को फंसा मानकर चुप हो जाता है। कल्लू कुछ देर बाद खल्लू की सफलता समझ कर हंसता है।

कल्लू : वाह खल्लू, हाथ मिलाओ । **उसके हाथ अपनी जगह पड़े रहते हैं।**

खल्लू : किससे ? **वह सिर हिलाकर एक के बाद एक दोनों को देखता है मानो निश्चय न कर पा रहा हो कि दुखी गल्लू से हाथ मिलाए या कल्लू से।** क्या गल्लू बुरा मान गया ? **दोनों के बीच में देखकर।**

गल्लू : नहीं।

कल्लू : **स्थिति अपनाकर** तो मिलाओ साथ।

गल्लू हाथ बढ़ाता है ।

खल्लू : **कुछ अधिक जोश से हाथ मिलाते हुए** मैं भी आकाशवाणी में विश्वास नहीं करता हूं। **शान से बैठ जाता है।**

कल्लू : आकाशवाणी नहीं, भविष्यवाणी । **खल्लू का चेहरा लटक जाता है।**

गल्लू : नकल बुरी चीज है।

खल्लू : तो कल्लू ऐसी भाषा क्यों बोलता है ?

गल्लू : उसकी मर्जी। अब हम आजाद हैं।

खल्लू : खाक।

कल्लू : **अपने ऊपर आक्रमण मानकर** क्या कहा ?

खल्लू : खाक।

कल्लू : खाक···खा···क··· **सिर हिलाता है मानो संबंध समझ न पा रहा हो।**

खल्लू : अब बोलो बच्चू।

गल्लू : हम लोग जब मिल कर बैठते हैं तो लड़ते क्यों हैं ?

खल्लू : क्योंकि हम लोग आजाद हैं, हि, हि··· **अपने किये मजाक पर खुद ही खुश होता है, पर औरों को गंभीर देखकर सहसा हंसी रोक लेता है।**

कल्लू : होठों पर उंगली रखकर चुप।
सब शान्त हो जाते हैं। कान लगाकर सुनने की कोशिश करते हैं। कल्लू उठकर मंच के अगले भाग में एक ओर जाकर झुक कर सुनता है। खल्लू जमीन से कान लगाकर सुनता है और साथ-साथ कल्लू की ओर देखता भी है। वहीं से कहता है : इधर से नहीं उधर से। कल्लू मंच के दूसरी ओर जाकर सुनता है। हलकी-हलकी डुग्गी पिटने की आवाज आती है, जो धीरे-धीरे तेज होती है कल्लू : इधर ही आ रहा है। कह कर अपनी जगह जा बैठता है। खल्लू भी सीधा बैठ जाता है। गल्लू खांसता है और अपनी बनियाइन पर से एक तिनका झाड़ता है। कल्लू बालों पर हाथ फेरता है। तीनों जैसे आने वाली घटना की तैयारी कर रहे हों। एक डुग्गी पीटने वाला आवाज लगाता है: आज शाम को, मुहम्मद अली पार्क में···डाक्टर सुखबीर सिंह भाषण देंगे ऽऽऽ (डुग्गी) देंगे ऽऽऽ···कहता हुआ मंच पर आता है और डुग्गी बजाता हुआ पार जाता है। बीच में इन तीनों को बैठा देख सहसा डुग्गी बजाना बंद कर देता है। एक पल के लिए उनकी ओर वह देखता है कि फिर कूल्हे एक ओर निकालकर आराम से खड़ा हो जाता है और जेब से एक बीड़ी निकालता है। बीड़ी देखकर तीनों उसकी ओर झुक जाते हैं। वह पूछता है माचिस है? प्रश्न सुनकर तीनों फिर सीधे बैठ जाते हैं। वह कंधे उचकाकर बीड़ी जेब में वापस डालता है। पहली बार हाथ जेब में नहीं जाता, वह झुककर बीड़ी सम्हालता है। खल्लू एकदम से लपक कर जमीन पर झुक कर बीड़ी ढूंढने लगता है। डुग्गी वाला बीड़ी जेब में रखकर चिल्लाता हुआ चला जाता है।

गल्लू : लालची।

कल्लू : बसकी की हद है, वह होशियार हो गया।

खल्लू : बोलने की कोशिश करता है। बड़ी मुश्किल से कह पाता है वह खाली कुर्ता पहने था।

गल्लू, कल्लू : क्या-या-या-या ऽ ऽ ऽ ?

खल्लू : हां।

गल्लू : सम्भल कर झूठ। खल्लू अपनी बात से हटाना चाहता है।

खल्लू : हाथ कंगन को पारसी क्या।

कल्लू : पारसी नहीं आरसी ।
खल्लू : अरे वही ।
गल्लू : अरे वही क्या । बोलना नहीं आता तो चुप रहा कर । विद्वान बनता है ।
कल्लू : पैर फैलाकर छोड़ो भी, भाषण सुनने चलोगे ?
खल्लू : क्या ?
कल्लू : भाषण । कोई बोलेंगे ।
गल्लू : कहां ?
कल्लू : पार्क में ।
खल्लू : जैसे बातचीत में छूटना न चाहता हो लाइन पर ।
कल्लू : हां, वहीं ।
गल्लू : तो जाने की क्या जरूरत है, यहीं से सुन लेंगे ।
कल्लू : यहीं से ।
गल्लू : हां, यहीं से । गुलब्बो जब रशीदन को डांटती है तो यहां साफ सुनायी पड़ता है ।
खल्लू : यह भाषण है, डांट नहीं है ।
गल्लू : सुनने में सब एक-से होते हैं । फरक मानो तो है, न मानो तो नहीं।

खल्लू सहारे के लिए कल्लू की ओर देखता है, पर वह चुप बैठा है । हारकर सब शांत बैठ जाते हैं । जिधर डुग्गी वाला गया था, उधर से एक युवक, अस्त-व्यस्त, हाथ में पुरानी साइकिल लिये हुए जिसके पिछले पहिये में बिल्कुल हवा नहीं है, आता है । इन लोगों को देखकर रुक जाता है ।

युवक : यहां कहीं पंक्चर की दूकान है ?
खल्लू : गल्लू से परचूनी की दूकान ।
गल्लू : काहे की दूकान ?
कल्लू : पंक्चर की ।
खल्लू : पंक्चर······ ।
गल्लू : पंक्चर ······ ।
कल्लू : हां, पंक्चर ।

तीनों चुप हो जाते हैं । युवक निराश होकर आगे बढ़ जाता है । हलकी-हलकी भाषण देने की आवाज आती है । जिधर युवक गया, उधर से ।

खल्लू : भाषण हो रहा है । भाषण··· मन-ही-मन मुसकुराता है

भाषण··· **मानो इस शब्द का उच्चारण करना उसे अच्छा लग रहा हो।**

कल्लू : चुप रहो।

भाषण की ध्वनि तेज हो जाती है, "··· अब हम आजाद हो गये हैं, गुलामी की जंजीरें हमने तोड़ डाली हैं···"।

खल्लू : कल्लू।

कल्लू : हां।

खल्लू : हम कब आजाद हुए ?

कल्लू : यही टिल्लू की उम्र समझ लो।

खल्लू : कोई दस साल का होगा, कुछ ऊपर।

कल्लू : और क्या।

खल्लू : तो आजाद अभी बच्चा है। हम बच्चा कैसे बन सकते हैं ?

कल्लू : आजाद बच्चा नहीं, देश है।

खल्लू : देश बच्चा कैसे बन सकता है।

कल्लू : अपनी किस्मत से।

सब इसको मान लेते हैं। फिर भाषण सुनने लगते हैं। "···अब हमें काम करना चाहिये। खाली हाथों नहीं बैठना चाहिए। हमारे प्रधानमंत्री का कहना है··· आराम हराम है।···"

खल्लू : आराम हराम है, यह कौन है कल्लू ?

कल्लू : तुम।

खल्लू : मैं। **आश्चर्य से, महत्व पा प्रसन्न भी।**

गल्लू : **चिढ़कर** हां तुम, कद्दू नहीं तो।

खल्लू : मैं कद्दू।

गल्लू : हां, तुम कद्दू।

खल्लू : **क्रोध में जैसे बोल नहीं पा रहा है** यह गाली है। कल्लू देखो।

कल्लू : हां गल्लु, यह गाली है, इसके घर वालों पर भी पड़ती है।

गल्लू : **टालने के लिए** कैसे ?

खल्लू : बनता है। अगर मैं कद्दू हूं तो मेरी मां कौन हुई ?

गल्लू : **कुछ सोचकर** धरती।

खल्लू : तो तेरी मां धरती है।

गल्लू : धरती-मां तो होती है।

दोनों सफाई के लिए कल्लू की ओर देखते हैं।

कल्लू : हां धरती माता तो होती है।

गल्लू : फिर कद्दू गाली नहीं हुई।

कल्लू : नहीं हुई।

खल्लू : तो गल्लू भी कद्दू है।

कल्लू : हां।

खल्ल : तुम भी कद्दू हो।

कल्लू : इसके लिए तैयार न था, पर और कोई चारा न देखकर हां, हम सभी कद्दू हैं।

गल्लू : कद्दू एकता की भावना को जगाता है।

कल्लू : पर कद्दू गाली नहीं है।

गल्लू : जब एकता को जगाती है तो है।

खल्लू : क्या जगाती है ?

गल्लू : एकता। खल्लू न समझने का सिर हिलाता है।

कल्लू : जरा खांसकर यानी हम सब एक हैं।

खल्लू : उंगली उठाकर बैठे लोगों को गिनने लगता है एक, दो···

कल्लू : खल्लू। खल्लू का गिनना बीच ही में रुक जाता है गिनती में एक नहीं, भावना में।

खल्लू : भावना में ? कल्लू, तुम फिर···।

गल्लू : इसमें क्या मुश्किल है। समझते कुछ हो नहीं। जाकी रही भावना जैसी··। अपनी राष्ट्रभाषा का शब्द है।

खल्लू : किसका ?

गल्लू : अपनी देश की भाषा का। हाथ हिलाकर खल्लू से तंग न करने का इशारा करता है। गंभीर होकर कल्लू से अच्छा कल्लू। वह आदमी साइकिल हाथ में लिये हुए क्यों जा रहा था ?

कल्लू : कौन जा रहा था ?

गल्लू : अरे ! वही जो अभी इधर से गया था।

कल्लू : उसे गये तो जमाना गुजर गया। याद पड़ता है, शायद उसका पहिया टूटा था।

गल्लू : पहिया टूटा था, क्या वह अभिमन्यु था, बड़ा तेज था उसके चेहरे पर।

खल्लू : क्या नाम लिया तुमने ?

गल्लू : अभिमन्यु।

खल्लू : तुम जानते हो उसे, बड़ा अजीब नाम है।

कल्लू : अभिमन्यु महाभारत में था, लड़ाई, में उसका पहिया टूटा था।

खल्लू : अच्छा, लड़ाई में क्या पहिया टूट जाता है ? **कल्लू की ओर देखता है ।**

कल्लू : हां, और लड़ाई का टूटा पहिया फिर कभी नहीं जुड़ता ।

खल्लू वह एकता नहीं जगाता, हि हि हि''' ।

कल्लू नाराज होकर उसकी ओर देखता है । खल्लू सहसा चुप हो जाता है ।

गल्लू : शाम हो गयी ।

तीनों आंखों पर हाथ की छाया कर दूर दूर एक ओर देखते हैं, मानो उधर शाम हो ।

कल्लू } खल्लू } : हां, शाम हो गयी ।

गल्लू : **उठकर मंच के सामने वाले भाग में एक ओर जाता है । झुक कर जमीन से चुटकी भर धूल उठाकर उड़ाता है ।** हवा चल रही है ।

खल्लू : **उठकर गल्लू के पास जाता है । उसकी नकल करता हुआ धूल उठाकर उड़ाता है ।** हवा चल रही है । **दोनों लौटकर एक-दूसरे की जगह बैठ जाते हैं । कुछ अजीब-सा लगता है ।**

गल्लू : यह मेरी जगह नहीं है ।

खल्लू : कैसे मालूम ?

गल्लू : मैं तुम्हारे सामने बैठा था ।

खल्लू : वह तो अब भी बैठे हो ।

गल्लू : यह मेरी जगह नहीं है ।

खल्लू : तुम्हें हवा लग गयी है । **चुटकी से धूल गिराने का संकेत करता है ।**

गल्लू : तुम मेरी जगह बैठ गये हो ।

खल्लू : और तुम मेरी ।

गल्लू : तो उठो ।

खल्लू : क्यों ?

गल्लू : जगह बदलो ।

खल्लू : हां, बदलो । **पर उठता कोई नहीं ।**

कल्लू : मैं अगर दूसरी ओर आकर बैठ जाऊं तो तुम लोग अपनी-अपनी जगह पर हो जाओगे । **खल्लू, गल्लू उसकी सूझ पर उसे बड़े आदर की दृष्टि से देखने लगते हैं । कल्लू उठने की कोशिश करता है, पर जैसे शक्ति न हो, धम से बैठ जाता है । दोनों**

उठकर कल्लू को सहारा देते हैं। कल्लू किसी तरह उठकर खड़ा हो जाता है। दोनों उसे पकड़कर घुमाते हैं जिससे कल्लू की पीठ दर्शकों की ओर हो जाती है और स्वयं आपस में भी उनकी जगह बदल जाती है। तीनों बैठ जाते हैं।

कल्लू : अब देखो।

गल्लू : यह तो फिर गड़बड़ हो गया।

खल्लू : हां, फिर।

दोनों मिलकर फिर कल्लू को उठाते हैं। कल्लू अब उठना नहीं चाहता। झींकता है।

कल्लू : अच्छी मैंने अकल बतायी।

खल्लू, गल्लू नहीं मानते। उसे फिर घुमाकर बैठाल देते हैं। इस सिलसिले में खुद भी घूमकर पूर्ववत् बैठ जाते हैं।

गल्लू : फिर गलत हो गया।

खल्लू : सही क्या था ? **दोनों कल्लू की ओर देखते हैं।**

कल्लू : जो पहले था वह अब नहीं है। न सही, न गलत।

गल्लू : न सही, न गलत। **दुहराता है मानो समझने का प्रयत्न कर रहा हो।**

खल्लू : तो अब क्या है ? **दोनों कल्लू की ओर देखते हैं।**

कल्लू : जो है।

बात समझ में आ जाती है। खल्लू और गल्लू इस युक्ति को स्वीकार कर लेते हैं। आराम से बैठ जाते हैं। कल्लू अपना पेट दबाकर कराहता है।

कल्लू : मैं जा रहा हूं।

गल्लू : कहां ?

कल्लू : मेरा पेट दर्द कर रहा है।

कल्लू किसी तरह उठकर जाता है। जाते-जाते वह अपनी धोती ढीली करके फिर से बांधता है। एक थैली वहीं गिर जाती है। उसे पता नहीं चलता। वह चला जाता है। उसके जाते ही खल्लू गल्लू उस थैली की ओर लपकते हैं। थैली गल्लू के हाथ लग जाती है। वह उसे खोलता है। खल्लू अंदर हाथ डालकर कुछ मुट्ठी में भरकर निकालता है।

खल्लू : अरे, यह तो चने है।

गल्लू : चने, भुने चने।

दोनों आकर बैठ जाते हैं। गल्लू खुली थैली खल्लू की ओर बढ़ाता है। खल्लू चनों को एक बार हसरत भरी नजरों से देख कर थैली में वापस डाल देता है।

खल्लू : लाओ।

गल्लू : **थैली बांधते हुए** क्या ?

खल्लू : चने, और क्या ?

गल्लू : क्या करोगे ?

खल्लू : क्या करेंगे।

गल्लू : हां ! शरीर में तनाव आ जाता है।

खल्लू : **हारकर** खायेंगे।

गल्लू : **उत्तर सुनकर शिथिल हो जाता है।** तुम्हारा मतलब है दोस्त की गैरहाजरी में हम उसका माल उड़ायेंगे।

खल्लू : **विचलित होकर** इस तरह से सोचते हो तो शायद नहीं।

गल्लू : **उत्तर सुनकर निराश हो जाता है पर विषय जारी रखना चाहता है।** क्या किसी और ढंग से सोचा जा सकता है ?

खल्लू : क्यों नहीं, थैली बीच में रख दो।

गल्लू थैली बीच में रख देता है। दोनों उसे मग्न होकर देखते हैं, मानों वहां से विचार उठेंगे।

खल्लू : यह चने हैं।

गल्लू : हां, हैं।

खल्लू : यह कल्लू के चने हैं।

गल्लू : कल्लू के हैं।

खल्लू : यह उसके पास पहले से थे।

गल्लू : हां, उसी से गिरे।

खल्लू : कल्लू का मन इनमें से कुछ चने पहले भी खाऐ बिना न माना होगा।

गल्लू : **खल्लू किस दिशा में बात ले जा रहा है, महसूस कर खुश हो, बढ़ावा देता है।** हां, हां, खल्लू, जरूर खाये होंगे।

खल्लू : **गल्लू के जोश से खल्लू की एकाग्रता भंग हो जाती है।** उसके चने थे उसने खाये। **बात बनी नहीं। दोनों दुखी हो जाते हैं।** मैं थक गया, अब तुम कोशिश करो। **दोनों फिर थैली की ओर देखना आरंभ कर देते हैं।**

गल्लू : कल्लू ने इसमें से कुछ चने खाये होंगे।

खल्लू : हां।
गल्लू : और अब उसका पेट दर्द कर रहा है।
खल्लू : **खुश होकर** हां कर रहा है।
गल्लू : चने से पेट दर्द करता है।
खल्लू : **बेबस होकर** हां, दर्द करता है।
गल्लू : कल्लू अभी फिर वापस आयेगा।
खल्लू : **निराश होकर** आयेगा।
गल्लू : यदि यह चने यूं ही रहे तो हमें उसे चने दे देने होंगे।
खल्लू : **उदास होकर**, हां, शायद।
गल्लू : पर चने मिलने पर उसका मन फिर नहीं मानेगा।
खल्लू : **आशा से** तब ?
गल्लू : वह फिर चने खायेगा।
खल्लू : तो।
गल्लू : उसका पेट फिर दर्द करेगा।
खल्लू : हां, फिर।
गल्लू : कल्लू हमारा दोस्त है।
खल्लू : हां, है।
गल्लू : हम ऐसा कोई काम नहीं कर सकते जिससे उसे तकलीफ हो।
खल्लू : कभी नहीं।
गल्लू : तो अपने दोस्त के हित में हमें यह चने खा लेने चाहिये।

खल्लू आश्चर्य और आदर से गल्लू को देखता है। गल्लू हाथ बढ़ाकर थैली उठा लेता है। दोनों चने निकाल कर खाने लगते हैं। पहले जल्दी–जल्दी फिर धीरे–धीरे।

खल्लू : हित में क्या, तुम कुछ कर रहे थे।
गल्लू : हित में, यानी अपने दोस्त की भलाई में।
खल्लू : ओ ! भई दोस्त के लिए क्या नहीं करना पड़ता।
गल्लू : नहीं तो दोस्ती से फायदा क्या।
खल्लू : कौन किसका दोस्त है। **बातचीत जारी रखने के इरादे से।**
गल्लू : मैं तुम्हारा, तुम कल्लू के और कल्लू मेरा।
खल्लू : हम सब दोस्त हैं।
गल्लू : **इसमें कोई बुराई न देखकर** हां, सब।
खल्लू : तब तो दोस्ती एकता बढ़ाती है।
गल्लू : बढ़ाती है।

खल्लू : दोस्ती गाली है, हि हि हि··· ।

गल्लू नहीं हंसता । यह देखकर खल्लू भी चुप हो जाता है । वे चने खाते हैं । किसी के आने की आहट आती है । गल्लू थैली छुपा लेता है । दोनों मुंह चलाना बंद कर देते हैं । डुग्गी वाला डुग्गी पीछे लटकाये बीड़ी पीता हुआ आता है । इन लोगों को देखकर रुक जाता है ।

डुग्गी वाला : बीड़ी पिओगे ? **दोनों पूर्ववत बैठे रहते हैं । वह हंसकर बैठ जाता है । एक कश लेकर** अरे, बुरा मान गये, कैसे दोस्त हो ? **दोनों 'दोस्त' शब्द सुनकर चिहुक जाते हैं , पर फिर स्थिर हो जाते हैं । डुग्गी वाला कंधे उचका कर उठकर चला जाता है । उसके जाते ही दोनों फिर जल्दी–जल्दी मुंह चलाने लगते हैं । थैली खाली होती है । थैली गल्लू जमीन पर रख देता है । कल्लू पैर घसीटता कठिनाई से चलता हुआ जाता है ।**

कल्लू : **बैठते हुए** ओफ्, बड़ी तकलीफ थी ।

खल्लू : कहां ?

कल्लू : पेट में ।

गल्लू : अब ठीक है ?

कल्लू : हां– मेरी एक थैली गिर **उसकी नजर जमीन पर पड़ी थैली पर पड़ती है । उसे उठाकर देखता है ।** लगता है चने सब गिर गये ।

खल्लू : कहां ? **इधर-उधर देखते हुए ।**

कल्लू : यहीं कहीं । शायद जमीन पर ।

गल्लू : जमीन पर !

कल्लू : हां, जमीन पर

गल्लू : **खुश होकर, मानो कोई बहुत अच्छा विचार आ गया हो तब** तो यहां चने की फसल उग आयेगी ।

खल्लू : तुमने बहुत बड़ा काम किया है ।

गल्लू : तुम्हारे लिए आराम हराम है ।

खल्लू : आजाद देश के तुम दोस्त हो । **गल्लू कुछ नाराज होकर गल्लू की ओर देखता है । खल्लू 'दोस्त' शब्द का प्रयोग करने की गलती को महसूस कर हाथ से मुंह दाब लेता है ।**

गल्लू : अब धरती से चने निकलेंगे । **पुरानी बात पर वापस आते हुए ।**

खल्लू : हां, निकलेंगे ।

गल्लू : धरती मां है ।

तीनों हंस पड़ते हैं।

खल्लू : तुम कद्दू !

गल्लू : तुम कद्दू !

कल्लू : तुम कद्दू !

कल्लू
खल्लू } : हम सब कद्दू
गल्लू हम सब दोस्त

तीनों एक दूसरे का हाथ पकड़कर घेरा बना लेते हैं ।

तीनों : हम सब एक ।

सहसा संध्या ढल जाती है । रात हो जाती है ।

परदा गिरता है ।

इन लघुनाटकों का मंचन लेखक की पूर्वानुमति बगैर नहीं किया जाय। संवादों के बीच आये मंच संकेतों को (मोटे अक्षरों में) नाट्य-पाठ के दौरान ही कोष्ठक लगाकर पढ़ा जाये क्योंकि वे मात्र संकेत हैं, संवाद नहीं।

मुखपृष्ठ : नटरंग प्रतिष्ठान के सौजन्य से

मरणोपरांत

सुरेंद्र वर्मा

पात्र

पहला युवक

दूसरा युवक

स्थान–समय

समुद्र का किनारा । ढलती दोपहर

नेपथ्य में तेज हवा । समुद्र की लहरों के किनारे पर टकराने की आहट । मंच पर प्रकाश होता है । मछली पकड़ने के दो-तीन जाल सूख रहे हैं–औंधी, टूटी नावों से बंधे । कुछ क्षणों बाद पहले युवक का प्रवेश । विंग्स में एक ओर रखे पैडस्टल पंखों की तेज हवाओं में उसके बाल बिखर रहे हैं । वह इधर उधर देखता है । कलाई की घड़ी पर निगाह डालता है । यों ही एकाध चक्कर लगाता है । एक तरफ खड़ा हो जाता है । एक सिगरेट निकालकर मुंह में दबाता है । दो तीन तीलियां बुझ जाने के बाद अपनी सिगरेट सुलगा पाता है । कश खींचते हुए दांयें-बायें खोजपूर्ण ढंग से देखता है । विराम। दूसरे युवक का प्रवेश । दोनों एक-दूसरे को देखते ही अपनी अपनी जगह पर ठिठक जाते हैं । फिर दूसरा युवक धीरे धीरे निकट आता है । एकटक पहले को ओर देख रहा है । पहला आंखें चुराये हुए है । फिर जेब से पैकेट निकालता है ।

पहला हाथ आगे बढ़ाते हुए आप पसंद करेंगे ? ··· वैसे आप पीते तो नहीं हैं । दूसरा कुछ क्षणों के बाद धीरे–से इंकार में सिर हिलाता है । फिर एकाएक दूसरी ओर देखने लगता है ।

विराम

दूसरा : मेरा फोन पाकर तुम्हें ताज्जुब तो हुआ होगा ?

पहला : कुछ ठहरकर अनिश्चित-सा शायद····

दूसरा : पहले कभी तुमने देखा है मुझे ?

पहला : इंकार में सिर हिलाता है सिर्फ दो-तीन तस्वीरों में··· विराम वैसे पिछले पांच दिनों से मैं खुद सोच रहा था कि···

दूसरा : कि ?

पहला : पता कर' दूसरे की ओर देखता है । किंचित आवेग से कैसे ?

दूसरा : **संतुलित स्वर में** ट्रक के साथ हैड-लांग क्रैश था। अस्पताल पहुंचने के सात-आठ मिनट बाद ही···

विराम

पहला : **ठंडी सांस लेकर** आखिरी वक्त क्या कहा उसने ?

दूसरा : उसे होश कहां था ?··· और मुझे खुद सात बजे मालूम हुआ···घर पहुंचने पर।

पहला : यानी उन लम्हों में तुम उसके पास नहीं थे ?

दूसरा इंकार में धीरे से सिर हिलाता है। विराम।

दूसरा : तुम्हें कब पता चला ?

पहला : दो दिन बाद।

दूसरा : कैसे ?

पहला : दफ्तर में फोन किया था।

दूसरा : क्यों ?···**अटक कर** ओह···गलत सवाल है।

पहला : **ध्यान दिये बिना** क्योंकि पिछले दिन मिलने की बात थी और वह नहीं आयी थी।

दूसरा : फिर ?

पहला : ऐक्सीडेंट की एक लाइन की खबर मिली।

दूसरा : फिर ?

पहला दूसरे की ओर देखता है—नासमझी से।

: कैसा लगा ?

पहला कुछ क्षण सामने देखता है। व्यथा से मुस्कराता है। सिगरेट नीचे फेंक, जूते से कुचल देता है।

: **पीड़ा भरे व्यंग्य से** अफसोस तो हुआ होगा कि दिल बहलाने को एक चीज मुफ्त में हाथ से निकल गयी।

पहला : **पलटकर, तीव्र स्वर में** शर्म नहीं आती तुम्हें ? जो चला गया, उसके लिए··· **अपने को संभालने का यत्न करता है। धीमे, वेदनायुक्त स्वर में** तुम कैसे समझोगे कि वह··· क्या थी मेरे लिए···

दूसरा स्थिर दृष्टि से पहले की ओर देखता है। विराम।

दूसरा : **प्रश्न होते हुए भी लहजा सामान्य कथन का है।** तो तुम मिलना चाहते थे मुझसे···

पहला : हां।

दूसरा : **तनिक रुककर** क्यों ?

पहला : कि तुम्हें देखूं···तुमसे बात करूं।

दूसरा : फिर ?

पहला : दो दफा फोन तक आया। पहली बार सात-तीन-पांच-नौ तक डायल किया। फिर रिसीवर रख दिया···दूसरी बार नंबर पूरा मिलाया। पर घंटी बजते ही फिर····

दूसरा : क्यों ?

पहला : लगा कि तुम पता नहीं ···किस तरह से लोगे।

दूसरा : डर ?

पहला : **क्षणिक विराम** नहीं। पूरी तरह डर नहीं···लेकिन कुछ समझे न जाने की··· या गलत समझे जाने की···· जोखिम··· और···· हो सकने वाली नाउम्मीदी का बोझ···

दूसरा : तो मेरा फोन पाकर तुम्हें···

पहला : **बीच में ही** छुटकारा-सा मिला।

दूसरा : क्यों ?

पहला : क्योंकि तुम्हीं तो हो, जो ··· **अटक जाता है** क्योंकि हम दोनों ही एक-दूसरे की चोट को समझ सकते हैं।

दूसरा : **करुण स्मित से** हां, तुम··· मुझे देने के बाद।

विराम

पहला : **विचारपूर्ण स्वर में** तो तुम इस तरह से सोचते हो ?

दूसरा : **आरोप के स्वर में** कुछ गलत है इसमें ?

पहला : जिम्मेदारी एक पर डाल देने से बात सुलझी हुई लगती जरूर है, लेकिन उस हालत मे सच्चाई पूरी नहीं होती।

दूसरा : यानी ?

पहला : जो कुछ मैंने किया, वह··· अपनी खुशी के लिए।

दूसरा : पर तुम्हारी यह खुशी मेरे लिए क्या बन गयी ?

पहला : **दो टूक ढंग से** इसकी परवाह मैं क्यों करूं ? **पल भर दोनों की निगाह मिली रहती है। फिर पहला अन्यत्र देखने लगता है। धीमे स्वर में** और फिर सिर्फ मैं ही तो जवाबदेह नहीं हूं इसके लिए—अगर जवाब देना है तो···अगर वह भी अपना हाथ आगे नहीं बढ़ाती तो किस तरह····

लंबा विराम

दूसरा : तो मेरा फोन पाकर तुम्हें ताज्जुब नहीं हुआ।

पहला : **अनमने ढंग से** ऊंहूं ··

दूसरा : तो क्या तुम्हें ·· अंदेशा था कि···?

पहला : मुझे लग रहा था कि कहीं कुछ-न-कुछ ऐसा जरूर छूट जायेगा, जिससे…

दूसरा : **कुछ रुककर** उसके पर्स में एक मखमली डिब्बी निकली। उसमें जड़ाऊ कर्फलिंक। कागज के एक टुकड़े पर तुम्हारे इनीशियल्स के साथ सालगिरह की मुबारकबाद…. उसकी दराज में डायरी थी। एक फोन नंबर बिना नाम का। डायरेक्ट्री में देखा तो पी० और एम० पूरे खुल गये।

विराम

पहला : अगर ये चीजें न मिलतीं, तो….?

दूसरा : क्या मतलब ?

पहला : तुम्हें कभी कुछ…खटका नहीं ?

दूसरा : **कुछ क्षण सोचता रहा है** कई बार उलझन जरूर होती थी….

पहला : जैसे ?

दूसरा : उसका अचानक गुमसुम हो जाना…. अपने-ही-आप मुस्करा उठना… कई शामों की नामौजूदगी… **भर्राये स्वर में** और….

पहला : हूं ?

दूसरा : **एकाएक फूटकर** वह बहुत सर्द हो गयी थी।

पहला : **आवेश के साथ** कब से ?

दूसरा : **उसी प्रकार** कब से था यह सिलसिला ?

पहला : **वैसे ही** पहले मैंने पूछा है।

दूसरा : **वही ढंग** लेकिन जानने मैं आया हूं।

पहला : **दूसरे की ओर देखता रहता है। अपने को संभालने का यत्न करता है। संतुलित स्वर में।** एक साल से थोड़ा कम।

दूसरा : पहली मुलाकात ?

पहला : मेरे आफिस का रिनोवेशन होना था। तो इंटीरियर डेकोरेशन के लिए…**दूसरा प्रश्नसूचक दृष्टि से देखता है।**

: जगह दिखलायी। फिर बजट और प्लानिंग पर बातें हुईं। फिर उसकी फर्म ने एसाइनमेंट पूरा किया।

विराम

दूसरा : हूं ?

पहला : फाइनल पेमेंट के एक हफ्ते बाद एकाएक मुलाकात हो गयी।

दूसरा : कहां ?

पहला : चर्चगेट पर।

दूसरा : **क्षणिक विराम** तो ?

पहला : फिर हमने काफी पी···**दूसरे की ओर देखता है** बेंबोली में···
कोना काफी···चीज सेंडविच के साथ····

दूसरा : इसके लिए कहा किसने था ?

पहला : जाहिर है कि मैंने···

दूसरा : और उसने एकदम हामी भर दी ? एक बार भी यह नहीं कहा कि उसे देर हो रही है या कुछ और काम है ?

पहला : नहीं।

विराम

दूसरा : फिर ?

पहला : अगले हफ्ते मैंने फोन किया···कि मेरे पास 'इरोस' की फिल्म का एक एक्स्ट्रा टिकट है। एक दोस्त के लिए मंगाया था, पर उन्हें अचानक बाहर जाना पड़ा। अगर आपकी दिलचस्पी हो, और वक्त निकाल सकें, तो···

दूसरा : तो ?

पहला : उसने कहा कि उसे खुशी होगी।

दूसरा : **तनिक ठहरकर** पहली मर्तबा उसका हाथ वहीं थामा था ?

पहला : हूं।

दूसरा : उसने एक बार भी हटाया नहीं ?

पहला इंकार में सिर हिलाता है। विराम।

दूसरा : तुम लोग कहां बैठते थे ?

पहला : बेंवाली···पर्शियन डेरी···लियोपोल्ड···

दूसरा : पहली बार उसे चूमा कहां था ?

पहला सामने देखने लगता है

पहले के सम्मुख आकर, तनाव से और पहली बार कहां···?

पहला : **मुंह फेर लेता है** मत पूछो।

दूसरा : **तीव्र स्वर में** क्यों ?

पहला : **चुनौती से** क्योंकि चोट पहुंचेगी··· क्योंकि चुभन होगी····

दूसरा : **व्यथा से मुस्कराता है** वह तो तभी से हो रही है, जब से मालूम हुआ था।

पहला नीचे देखने लगता है।

दूसरा : **स्थिर दृष्टि से देखता है** मेरे घर में ?
विराम
: मेरे कमरे में ?...**पहले की बांह थाम, तनिक झकझोरते हुए** मेरे बिस्तर पर ?
पहला : **आवेग से, उसके हाथ झटकते हुए** नहीं-नहीं...**मुंह फेर लेता है** वहां कभी नहीं ।
दूसरा : क्यों ?
पहला : नहीं चाहते थे ।
दूसरा : कौन ?
पहला : दोनों ।
दूसरा : क्यों ?
पहला : उस घर में घुसते ही...बहुत तीखा हो जाता था गुनाह का एहसास...
दूसरा : अच्छा ।
पहला : **कुछ आत्मलीन-सा** ऐसा लगता था कि जैसे...तुम्हारी मौजूदगी में ही...
दूसरा : **एकाएक स्थिर हो जाता है** कौन करता था महसूस ?...तुम ?
पहला : दोनों ।
दूसरा : पहले कहा किसने था ?
पहला : **कुछ सोचकर** याद नहीं ।
दूसरा : **विह्वल होकर** कोशिश करो ।
पहला : **क्षणिक विराम** शायद उसी ने ।
दूसरा : **कुछ पल विचारमग्न रहता है । एकाएक फूटकर** लेकिन क्यों करती थी ऐसा महसूस ?
पहला : **एक नजर देखता है** क्योंकि करती थी ।
दूसरा : **भर्त्सना से** इस सबके बावजूद ?
पहला : इसी वजह से ।
दूसरा : **बौखलाकर** झूठ है ।
पहला : **वितृष्णा से** क्यों बोलूंगा भला ?
दूसरा : तुम्हीं जानते होंगे ।
विराम
पहला : **अंतर्मुख सा** काश ! तुमने देखी होती उसके मन की कचोट...पास आते-आते उसका छिटक जाना...और बाद में तकिये में मुंह

छिपाये···**क्षणिक विराम** कमजोर हो जाने का सुख···और उस सुख की शर्मिंदगी····

विराम

पहला : **सजग होकर** उसे तुम्हारा बहुत खयाल रहता था।

दूसरा पहले की ओर देखता है।

: वह तुम्हारे बारे में बहुत बात करती थी···तुम्हें पर्कोलेटर की काफी पसंद है··तुम्हें सब्जी में प्याज अच्छा नहीं लगता···तुम मिठाई के लिए एलर्जिक हो···बर्फ का पानी पीने से तुम्हारा गला खराब हो जाता है···**आवेश से** कभी-कभी तो मुझे लगता था कि जैसे वह सजा दे रही है मुझे।

दूसरा : **घृणापूर्वक** इतना भी सह नहीं पाते थे तुम ?

पहला : **तेजी से** बात साफ-साफ मेरे और उसके बीच थी।

दूसरा : **तीव्र स्वर में** पर मेरा रिश्ता क्या था उससे ?

पहला : **आवेश में** इतना ही घमंड है अपने इस रिश्ते पर, तो क्यों न उसकी जंजीर बनाकर उसके पैरों में····

एकाएक चुप हो जाता है। दूसरा चेहरे पर आक्रोश के साथ एक कदम आगे बढ़ाता है, फिर ठिठककर स्वयं को संभालने का यत्न करता है। निढाल पैरों से एक नाव तक आता है। टिककर खड़ा हो जाता है—अशक्त-सा। दोनों हाथों में मुंह छिपा लेता है। पहला कुछ क्षण सिर झुकाये खड़ा रहता है। फिर धीरे-धीरे निकट आता है। दूसरा चेहरे से हाथ हटा लेता है, पर सामने देखता रहता है।

पहला : **धीमे स्वर में** उसके लिए कितनी जगहों के साथ तुम जुड़े हुए थे··· हम बैरीज नहीं जाते थे, क्योंकि वहां की पेस्ट्री तुम्हें बहुत पसंद थी···लांग ड्राइव के लिए पूना रोड नहीं···डूबता सूरज देखने के लिए जुहू नहीं··· रेंदेवू नहीं। क्योंकि वहां तुमने प्रपोज किया था···

दूसरा : **भावहीन** कौन नहीं जाना चाहता था ?

पहला : **तनिक ठहरकर** दोनों।

दूसरा : क्यों ?

पहला : उसे लगता था कि उसका पहले का···तजुर्बा···झूठा हो जायेगा।

दूसरा : और तुम ?

पहला : **गहरी सांस लेकर** क्योंकि वह डूब नहीं पाती थी इस साथ में·· चलते हिंडोले की तरह ध्यान एक बार इस तरफ, एक बार उस तरफ··**विराम** तुम हमेशा मौजूद थे कहीं-न-कहीं···उसकी साड़ी के

पल्लू पर कहीं तुम्हारी उंगलियों की छुअन···अंधेरे में कहीं तुम्हारे दबे-पांव चलने की आहट, बंद खिड़की के पीछे कहीं तुम्हारी आंखों की चिंगारी···

विराम

दूसरा : तो···?

पहला : मैं उन लमहों में कभी जज्ब नहीं हो पाया···हमेशा रहती थी यह चुभन···कि तुमने कल रात उसे छुआ था···कि तुम आज की रात फिर···

अगले संवाद के बीच दोनों अंतर्मुख-से हैं।

दूसरा : **कुछ रुककर करुण मुस्कान से** और मुझे किसी तरह की कोई चुभन नहीं थी···जब वह मेरे नजदीक होती थी, तो मुझे लगता था कि बस, इसके आगे कुछ भी दरकार नहीं—सारा इत्मीनान। सारा सुख, सारा सुकून···यही तो है। **एकाएक विह्वल होकर** लेकिन नहीं, बिल्कुल गलत थे वे लमहे···वह पूरा एहसास ही गुमराह था···

पहला : **आवेश से** और मैंने यही इल्जाम लगाया है उस पर कि मेरे पास वह सिर्फ···शादी की अपनी उकताहट दूर कर रही है।

दूसरा : लेकिन मैंने कहा तो है तुमसे कि वह बहुत सर्द···**वाक्य अधूरा छोड़ देता है।**

पहला : **विह्वल हो** एक साल पहले से ?

दूसरा : **चिढ़ कर** इस एक साल पर इतना जोर क्यों दे रहे हो तुम ?

पहला : **भरा हुआ-सा** क्योंकि तभी तो मिलना हुआ था उससे। **अपने को नियंत्रित करने का प्रयत्न करता है। विराम। आत्मकेन्द्रित-सा** पिछले कुछ दिन···जब बार-बार यह शक डंक मारता था···जब आगे बढ़ा हुआ हाथ यों लौट आता था पीछे···कि जैसे उन्हे लंबे, घुंघराले बाल नहीं—सांप की छोड़ी हुई केंचुल छुई हो···जब इस शक की कड़ुवाहट इस तरह घुल गयी थी मन में···कि साथ की घड़ियों के बाद जो एहसास बाकी बचता था—वह इसी कसैलेपन का··· **लंबा विराम। उदास मुस्कान से** लेकिन तीखी-तीखी बातें सुनने के बाद जब वह सिर नीचा किये उंगलियों में रूमाल का कोना लपेटती-खोलती···बड़ी-बड़ी पलकें उठाकर देखती थी इस तरफ, तो····

दूसरा : **पहले की ओर देखता रह जाता है। मंद स्मित से** तो तुमने पहचान ली थी वह खासियत **कुछ रुककर, किंचित उमंग से** दरअसल सबसे

पहले जिस चीज ने मुझे खींचा था, वह···यही नजर थी···एक दोस्त के यहां, गार्डन पार्टी में जब पहली बार उसे देखा था, तो···

पहला : **खोया-सा** और उसकी हंसी, जो मैं सैंकड़ों की भीड़ में पहचान सकता था···जो···

दूसरा : **एकटक देखता है। उत्तेजित हो** जो ?

पहला : शैरी के दो पैग पीने के बाद कितनी हल्की हो जाती थी···एक मासूम कबूतर की तरह—कभी इस टहनी पर, कभी उस झुरमुट में, कभी लंबी उड़ान के साथ झील के उस पार···

दूसरा : **पहले को ओर आत्मीयता से देखता है।** और ?

पहला : **उसी ढंग से** और दायें गाल पर···होठों के पास···दहकते अंगारे-सा वह तिल···

दोनों अपनी-अपनी स्मृतियों में आत्म-विस्तृत। दीर्घ विराम।

दूसरा : **एकाएक** तुमने उसे उस तरह से तो नहीं लिया···?

अचकचाकर चुप हो जाता है। चेहरे पर तनाव। पहला प्रश्नसूचक दृष्टि से देखता है।

: मतलब···सस्ते ढंग से··?

पहला : **कुछ ठहरकर ठंडी सांस ले** लिया होता तो···शादी की बात होती कभी !

दूसरा : **एकटक देखता है। संतुलित स्वर में** हुई थी ?

पहला : **आवेश में** क्यों न होती ?···वह कोई जिंदगी थी आखिर ?···
हमेशा छिपे हुए, सहमे हुए···कहीं कोई देख न ले, कहीं कोई मिल न जाये, कोई तुम्हें बता न दे···और लगातार छीलती हुई वह गुनाह की खराश···मुझसे नहीं सहा जाता था। पिछली गली का वह सन्नाटा और धुंध···मुझे साफ आसमान चाहिए—चमकदार धूप और···

दूसरे के चेहरे का भाव देखकर चुप हो जाता है। विराम।

दूसरा : **शांत स्वर में** उसने क्या कहा ?

पहला : मुझे सोचने की मोहलत दो थोड़ी। **कुछ तिनककर** और तीन बार वक्त लिया, पर फैसला नहीं कर पायी कुछ।

दूसरा : क्यों ?

पहला : क्योंकि दोनों ही रिश्तों में वह अभी वहां तक नहीं पहुंची है, जहां···**क्षणिक विराम** क्योंकि तुमको लेकर वह अभी भी अपने अंदर कुछ कमजोरी पाती है··· कम-से-कम तुम्हें चोट देने की ताब जुटा पाना

बहुत मुश्किल है उसके लिए, क्योंकि बीते दिनों की खातिर⋯

दूसरा : **फूटकर** मुझे नहीं चाहिये किसी की दया। मैं भिखारी नहीं हूं। जो⋯**अपने को संतुलित करने की कोशिश करता है। पहला उसके कंधे पर सांत्वना का हाथ रखता है। कुछ क्षणों बाद आत्म-सजह हो हटा लेता है। विराम।**

दूसरा : **कुछ आत्मलीन-सा मैं** अभी तक समझ नहीं पाया कि हमारे बीच सब कुछ⋯कैसे नामालूम ढंग से बुझ गया था कि⋯**विराम** अच्छा, अगर हमारे यहां बच्चा होता एक⋯तो क्या कुछ फर्क पड़ सकता था ?⋯ **तनिक ठहरकर** पर अगर फर्क पड़ना होता कुछ, तो वह यह दलील ही क्यों देती कि वह बंधना नहीं चाहती अभी से⋯**विराम। जेब से हाथ निकालता है, तो मुट्ठी में डिब्बी खोलकर देखता है। गहरी सांस लेकर पहले की ओर बढ़ा देता है।** यह तुम्हारे लिए थी। **पहला कुछ पल ठिठका रहता है। फिर हाथ बढ़ाकर ले लेता है। विराम।**

पहला : छुट्टी लिये हो अभी ?

दूसरा हामी में सिर हिलाता है।

: कब तक की ?

दूसरा : परसों खत्म हो रही है, पर और बढ़ा लूंगा।

पहला : क्यों ? **क्षणिक विराम। धीरे-धीरे** क्या यह बेहतर नहीं होता कि काम में ही डूबकर,⋯**कुछ अंतर्मुख-सा** मैंने भी छुट्टी ली थी दो दिन की⋯लेकिन खालीपन इस तरह छा जाता है दिलो-दिमाग पर कि⋯ यादों के दबाव से नसें फटने लगती हैं⋯और बेकार की बातें⋯कि अगर ऐसा हो जाता तो यह नहीं होता। अगर वैसा हो जाता, तो बात वहां तक नहीं पहुंचती⋯बिल्कुल फिजूल के खयाल, जिनका कोई मतलब ही नहीं अब⋯**उदास मुस्कान भाव से** इसलिए बस, दिन भर काम, देर रात तक कोई रेस्तरां⋯और फिर बिस्तर⋯

दूसरा : नींद कैसी आती है ?

पहला : कभी गहरी, कभी उचटी।

दूसरा : कौन-कौन हैं घर में ?

पहला : सभी लोग।

दूसरा : **तनिक रुककर वह गयी है कभी तुम्हारे यहां ?**

पहला इंकार में सिर हिलाता है।

: **गहरी सांस लेकर** इसीलिए⋯

पहला सवालिया निगाह से देखता है ।

: **धीमे स्वर में तुम** एक हद तक काट सकते हो अपने-आपको · एकाएक **आवेश में** लेकिन मेरे घर की तो एक एक चीज से उसकी याद जुड़ी हुई है···मैं एक खिड़की खोलूं, तो···मैं एक पर्दा हटाऊं, तो ··मैं तो दस सैकंड नहीं काट सकता उस चारदीवारी में, अब किसी-न-किसी बहाने···

विराम

पहला : **धीमे स्वर में** कुछ दिनों के लिए किसी नयी जगह जाने से शायद···

दूसरा : **कुछ ठहरकर संतुलित स्वर में** निकल रहा हूं—आज शाम को ही ।

पहला : कहां ?

दूसरा : दो-तीन नाम बताये थे । जहां की भी बर्थ पहले मिल जायेगी ।

पहला : कब तक ?

दूसरा : दो-तीन हफ्ते । **विराम** अगर यह···सच्चाई बर्दाश्त हो गयी । तो वापस आ जाऊंगा··· वर्ना कहीं और तबादला करा लूंगा ।

विराम

पहला : **गहरी सांस लेकर** हूं···

दूसरा : और तुम ?

पहला : **कुछ नासमझी से मैं** ···?

दूसरा : तुमने क्या सोचा है ?

पहला : शादी करूंगा—जल्दी ही ।

विराम

दूसरा **धीरे-धीरे** पिछले तीन दिन से मैं बराबर सोचता रहा हूं कि···

पहला सवालिया निगाह से देखता है ।

दूसरा : मान लो, ये डिब्बी या और कोई भी चीज नहीं मिलती, इस बारे में मुझे कुछ भी मालूम नहीं पड़ता, तो···?

पल भर दोनों की नजर मिली रहती है । फिर पहला सामने देखने लगता है ।

: मैं बराबर यही समझता रहता कि···उसके होते हुए सब ठीक था··· **पीड़ा-भरे आवेग से** तो क्या गलत हो जाता इसमें ? अब इत्मीनान का वह एहसास धुंधला क्यों हो गया है ?····उन शुरू के दिनों की याद से भी शर्मिंदगी होने लगती है, जब तुम हमारे बीच कहीं नहीं थे····उस सुकून की चमक भी इस तरह झूठी लग रही है कि ·· जैसे छुओ, तो उंगलियों में उतर आयेगी···

क्षण भर ठिठका रहता है। फिर लंबे कदमों से बाहर निकल जाता है। पहला चेहरे पर तनाव के साथ उसकी दिशा में देखता है, फिर हाथ की डिब्बी की ओर। एकाएक डिब्बी एक ओर उछाल देता है। नेपथ्य में हल्का 'छपाका' औंधी नाव के सहारे टिक कर खड़ा रहता है--निढाल-सा। नेपथ्य से किनारे पर लहरों के टकराने की आवाज और तेज हवा···मंच का प्रकाश धीरे-धीरे मंद होने लगता है।

अंधी आंखों का आकाश

मणि मधुकर

पात्र

आवाज
बूढ़ा
भगतराम
दो बच्चे
अमित
उमा
देवी दयाल
गीता
युवक १, २, ३
दो सिपाही

पहला अंक

मंच पर अंधकार है। धीरे-धीरे पृष्ठभूमि से एक करुण संगीत उभरता है और उसके साथ ही हल्की-सी रोशनी बिखरने लगती है। सब कुछ अस्पष्ट है पर उस धुंधलके में भी मंच के अग्रभाग में एक सूखा हुआ पेड़ खड़ा दिखलायी देता है। पेड़ में सिर्फ दो शाखाएं हैं जो नंगी बाँहों की तरह आसमान की ओर उठी हुई हैं।

संगीत मंद होकर खोने लगता है और एक भारी आवाज मंच पर छा जाती है।

आवाज : कुछ नहीं है। कहीं कुछ नहीं है। चारों ओर न अंधकार है, न रोशनी है, न आग है, न ठंड है—सिर्फ शून्य का विस्तार है। धुआं है। इस धुएं में चीजें अपने आकार खो चुकी हैं। उनकी कोई पहचान शेष नहीं रह गयी है। उनके शब्द और संबोधन अतीत की गुफाओं में गुम हो चुके है। वर्तमान कुछ नहीं है। वर्तमान शून्य है। शून्य और कुछ नहीं, एक सूखा हुआ पेड़ है जो प्राणहीन हो चुका है। इस शून्य में, इस पेड की जड़ों में, समय का खोखलापन मर गया है। जुगनुओं की तरह कुछ क्षण इस शून्य में चमकते हैं और बुझ जाते हैं। उस चमक का कोई भविष्य नहीं होता। किसी चीज का कोई भविष्य नहीं होता, सिर्फ अंत होता है, और यहीं से यह जीवितों की शवयात्रा शुरू होती है—अर्थ की तलाश में अंधी आंखों की एक यात्रा।

उदास संगीत और अंधकार।

आवाज : अर्थ की तलाश का कोई रंग नहीं होता—न हरा, न पीला, न लाल। वह आकाश और पानी के बीच का कोई आभास होता है जिसे हम चीजों में ढूढते हैं। लेकिन—यह झूठ है। शायद यह झूठ है कि हम कुछ ढूढते हैं, कुछ तलाशते हैं। नदी और प्यास के बीच की दूरी बहुत बड़ी है। उसमें कुछ भी नहीं ढूंढा जा सकता।

पृष्ठभूमि से किसी के लड़खड़ा कर चलने की आवाज आती है। सहसा एक तेज रोशनी सुरंग की तरह मंच पर खिच जाती है और उसके अन्तिम सिरे पर एक बूढ़ा धक्के खाकर चलता हुआ नजर आता है। वह एक-एक कदम बड़ी मुश्किल से रख पा रहा है। उसके कपड़े मैले और पैबंद लगे हैं। दाढ़ी बढ़ी हुई है। वह थोड़ा-सा झुककर चलता है और बार-बार माथे का पसीना पोंछता है। उसके होंठ हिल रहे हैं, पर रह-रहकर 'आह' के सिवा कुछ सुनायी नहीं देता, पेड़ के पास आकर वह एक क्षीण दृष्टि से दर्शकों को देखता है, फिर गिरता हुआ-सा बैठ जाता है। अब उसकी आंखें बन्द हैं और वह हांफ रहा है। मंद संगीत के साथ आवाज फिर उभरती है।

आवाज : सदियों की उम्र और पीड़ा से थका हुआ यह बूढ़ा बार-बार अर्थ की तलाश में शामिल होता है, एक शवयात्रा के बीच चलता है, पर कुछ नहीं होता—कभी कुछ ऐसा नहीं होता जिससे मन में कोई नया विश्वास जन्म ले सके। जानते हो, यह बूढ़ा कौन है ?—यह बूढ़ा और कोई नहीं, ईश्वर है। —यह ईश्वर है। यह ईश्वर है—। ईश्वर अपने अकेलेपन से भयभीत ईश्वर अनेक आशंकाओं से घिरा हुआ है—ईश्वर—यह बूढ़ा, बदहवास, अकेला ईश्वर— ।

बूढ़ा आंखें खोलता है। उसकी आंखें जैसे रोशनी में चुंधिया गयी है, उनमें पानी है, पराजय है।

बूढ़ा : **बड़बड़ाते हुए** मैं···मैं यहां क्यों बैठा हूं ? मुझे···मुझे यहां किसने बुलाया है ? **पल भर रुककर** आः मैं हार गया हूं। सृष्टि की रचना करते-करते मेरे हाथ थक गये हैं। हर बार कुछ नया, कुछ ताजा गढ़ने की कोशिश करता हूं। और उलझ जाता हूं। यह उलझन मेरे मन की है। मन एक अंधा कुआं है उसमें कुछ नहीं है। कहीं कुछ नहीं है···· ।

रोशनी पूरे मंच पर फैल जाती है। बायीं ओर से भगतराम गुनगुनाता हुआ आता है। साधारण ढंग से ऊंची धोती और कमीज पहने हुए। कंधे पर अंगोछा। वह बाग का माली है। आते ही अजीब ढंग से सिर हिलाता हुआ कुछ मुद्राएं बनाता है, फिर बूढ़े को देखकर जैसे चौंक उठता है और दो कदम पीछे हट आता है।

भगतराम। अय-हये, आज तो मुझसे भी पहले कोई यहां मौजूद है। जाने कहां कहां से आ धमकते हैं। आखिर यह बाग भी तो कितना शानदार है। इसकी वायु अत्यन्त स्वास्थ्यवर्द्धक है। **व्यंग से** कोई विश्वास कर सकता है कि यह सपाट मैदान एक बाग है? यह सूखा पेड़ बाग है? यह कंकड़-रेत बाग है? **अपनी पीठ पर धौल जमा कर** और यह मूढ़ भगतराम बाग है? **हंसता है** ईश्वर की लीला बड़ी विचित्र है। **सहसा बूढ़े के पास जाकर** कहो जी, तुम यहां कैसे आये हो? मुसीबत के मारे हो या बैठे-बैठे तन्दरुस्ती बना रहे हो? देखना, इस सुंदर उपवन की शीतल सुगंधित वायु का सेवन कर तुम कहीं अतिरिक्त रूप से हट्टे-कट्टे न बन जाओ। एँ—हाँ, नाम क्या है तुम्हारा?

बूढ़ा : **अपनी ही धुन में बड़बड़ाता हुआ** कुछ नहीं है। आह, कहीं कुछ नहीं है।

भगतराम : **मुंह बनाकर** कहीं कुछ नहीं है। अरे, तो हम कब कह रहे हैं कि यहां कुछ है? अगर कुछ होता तो शास्त्री की परीक्षा में फेल **अपना माथा ठोंकते हुए** यह मौंदू, यह उल्लू, यह बैल, यह ढपोरशंख यहां ड्यूटी बजाने के लिए क्यों आता? यहां कुछ नहीं है, इसीलिए तो मैं आता हूं। **एक लंबी उबासी लेकर चुटकी बजाता है।** मेरी ड्यूटी यहां बैठकर ऊबते रहने की है और उबासियाँ न लो तो ऊबने का मजा नहीं आता। खैर, यह सब तो चलता ही रहता है। नगरपालिका इस जगह को बाग मानती है यानी पब्लिक पार्क, और इसकी रखवाली के लिए मुझे तनख्वाह देती है। इस समय यही सच है, मैं ईश्वर की शपथ खाकर कह सकता हूं कि इस सच से बढ़कर और कुछ भी सच नहीं है। लेकिन तुम यह तो बताओ कि तुम्हारा नाम क्या है? मैं तुम्हारा थोड़ा परिचय प्राप्त करना चाहता हूं जिससे हम खुलकर बातचीत कर सकें।

बूढ़ा कोई उत्तर न देकर एकटक भगतराम की ओर देखता रहता है।

भगतराम : ऐसे क्या देख रहे हो, भई? जरा मुंह से कुछ बोलो न? **मुस्कराता है** क्या मैं तुम्हें आदमी जैसा दिखलायी नहीं देता?

पृष्ठभूमि से बच्चों का शोर उभरता है। भगतराम का ध्यान उस तरफ चला जाता है। बूढ़ा सिर झुकाए बैठा रहता है। तभी

दो बच्चों की बातचीत सुनायी देती है।

एक : सूर्य पृथ्वी से छोटा है। सूर्य पश्चिम में उगता है। **इसे दुहराता है।**

दो : तुम गलत याद कर रहे हो।

एक : मैं गलत याद कर रहा हूं ? क्या मतलब ?

दो : हां, सूर्य पृथ्वी से छोटा नहीं, बड़ा है और वह पश्चिम में नहीं, पूरब में उगता है।

एक : पूरब और पश्चिम में क्या फर्क है ?

दो : कोई-न-कोई फर्क है तो जरूर ?

एक : तुम बता सकते हो ?

दो : नहीं, मुझे मालूम नहीं है।

एक : फिर क्यों कहते हो कि मैं गलत याद कर रहा हूं।

दो : किताब में लिखा है कि सूर्य पृथ्वी से बड़ा है और यह पूरब में उगता है।

एक : क्या किताब गलत नहीं हो सकती ?

दो : नहीं।

एक : हो सकती है।

दो : नहीं हो सकती।

एक : मैं कहता हूं, किताब गलत हो सकती है।

दो : मैं कहता हूं, किताब गलत नहीं हो सकती।

एक : तुम बेवकूफ हो।

दो : बुद्धिमान तुम भी नहीं हो।

एक : तुम गधे हो।

दो। आदमी तुम भी नहीं हो।

तीव्र संगीत। फिर शांति।

भगतराम : **हँसकर** कौन आदमी है और कौन गधा, इसकी पहचान बड़ी मुश्किल है, भई ! **बूढ़े से** पास में ही एक स्कूल है। ये बातूनी बच्चे वहां पढ़ने जा रहे हैं। जाते ही सबसे पहले ईश्वर की प्रार्थना करेंगे, फिर किताबें चाटने बैठ जायेंगे जैसे उनमें शहद लगा हो।

बूढ़ा : ये—ये ईश्वर की प्रार्थना करेंगे ! **लंबी सांस लेता है ।**

भगतराम : हां भई, एक नियम बन गया है कि ईश्वर की प्रार्थना न करो तो विद्या नहीं आती। मैं जब शास्त्री की परीक्षा दे रहा था, मैंने प्रार्थना करना छोड़ दिया। नतीजा यह हुआ कि फेल हो गया

और अध्यापक बनते-बनते माली बन बैठा और वह भी इस पब्लिक पार्क का। मैंने मूर्खता की। सोच लिया, मेरा नाम भगतराम है, और जो भगतराम हो उसे प्रार्थना की क्या जरूरत है? उसकी मदद तो ईश्वर करता ही है। पर ईश्वर ने चालाकी बरती। उसने भगतराम की मदद न करके जगतराम की मदद कर दी। वह पास हो गया और मैं फेल। **हंसता है** जगतराम चतुर था। वह रोज नहा-धोकर पूजा-पाठ करता था, आज भी करता है, और एक बड़ी फर्म का मालिक है। अब तो लोग उसे जगतराम नहीं जगत सेठ कहते हैं। **बूढ़े का कंधा पकड़ कर झकझोरता हुआ** अरे भई, तो क्या मैं अकेला ही बोलता चला जाऊंगा? वैसे मुझे लगातार बोलने की आदत पड़ी हुई है, लेकिन तुम इस तरह मुंह फुलाकर मत बैठो। कुछ न कुछ बोलते रहो। इससे मामला फिफ्टी-फिफ्टी हो जायेगा। हां तुमने अपना नाम अभी तक नहीं बताया?

बूढ़ा : **सोचता-सा** मेरा नाम ?—मुझे ईश्वर कहते हैं—ईश्वर।

भगतराम : सिर्फ ईश्वर? आगे पीछे और कुछ नहीं? ईश्वरचंद, ईश्वर लाल या ईश्वरसिंह—अपना पूरा नाम बतलाओ, भई।

बूढ़ा : मेरा पूरा नाम ईश्वर है। सब लोग मुझे इसी नाम से जानते हैं.... याद करते हैं। मुझे सर्वशक्तिमान—विश्वपालक—कृपानिधान, न जाने क्या-क्या कहा जाता है।

भगतराम : **जोर से ठहाका लगाकर** मैं तो पहले ही जानता था, तुम्हारे दिमाग में कुछ गड़बड़ है। आईने में अपनी शक्ल देखी है? बिल्कुल सर्वशक्तिमान, विश्वपालक और कृपानिधान लग रहे हो। **पल-भर बाद** पागलखाने से छूटकर आये हो क्या?

बूढ़ा : तुम समझ रहे हो कि मैं झूठ बोल रहा हूं? विश्वास न करना चाहो तो न करो, पर मैं ईश्वर ही हूं—सिर्फ ईश्वर।

भगतराम : **अंगोछा बिछाकर बैठता हुआ** अच्छा बाबा, तुम ईश्वर ही होगे। अब मगज मत खाओ और चुपचाप बैठे रहो। **जेब से डिबिया निकालता है**। भांग खाने का शौक रखते हो?

बूढ़ा : **निश्वास लेकर** नहीं।

भगतराम : **डिबिया से तीन-चार गोलियां निकालकर निगलता हुआ** अच्छा—अच्छा—ठीक है, मैं तो अब सो रहा हूं। तुम्हारी इच्छा हो तो तुम भी सो जाओ, या फिर बाग में टहलकर तंदुरुस्ती बनाओ।

लेट जाता है। थोड़ी देर बाद उसको खर्राटे सुनायी पड़ते हैं। अचानक पृष्ठभूमि से एक स्त्री की हंसी उभरती है—भयावह हंसी। बूढ़ा घबराकर चारों तरफ देखता है, फिर खड़ा हो जाता है। हंसी धीरे-धीरे दूर हो जाती है। बूढ़ा लड़खड़ाता हुआ चल देता है। उसके मंच से हटने के कुछ क्षण पहले एक युवक बायीं ओर से आता दिखलायी देता है। वह अमित है। बाल बिखरे हुए। हाथ में मुड़ा-तुड़ा अखबार। सूखे पेड़ का सहारा लेकर कुछ देर अन्यमनस्क-सा खड़ा रहता है, फिर वहीं जमीन पर बैठ जाता है और अखबार खोलकर पढ़ने लगता है।

अमित : यों ही गाता हुआ कोई उम्मीदवर नहीं आती—कोई—कोई सूरत नजर नहीं आती—

पढ़ते-पढ़ते गाना भूल जाता है और जैसे अखबार में ही डूब जाता है। एक युवती बायीं ओर से प्रवेश करती है। वह उमा है। कलाई में टंगा हुआ बड़ा पर्स। अमित को देखकर मुस्कराती है। फिर दबे पैरों उसके पास आकर बैठ जाती है।

उमा : अपने को सहेजती हुई जरा ऊंचे स्वर में कोई खास खबर है क्या ?

अमित : चौंककर एँ, उमा—तुम !

उमा : बहुत मन लगाकर अखबार पढ़ रहे हो।

अमित : तुम्हें यहां आये कितनी देर हो गयी ? अखबार समेटने लगता है।

उमा : अभी आयी हूं। तुम्हें इतने मनोयोग से अखबार पढ़ते देखकर मैंने पहले तो विघ्न डालना उचित नहीं समझा, फिर रहा न गया। नाराज तो नहीं हो गये ?

अमित : तुम मजाक कर रही हो। आजकल मैं अखबार पढ़ता ही कहां हूं, उसमें नौकरी के विज्ञापन ढूंढता रहता हूं। बस, मेरा काम पूरा हो जाता है।

उमा : कौन-सा काम ?

अमित : यही कि रोज नियमित रूप से यह जान लेता हूं कि दुनिया के किसी भी महकमे में मेरे लिए जगह खाली नहीं है। इतना जान लेने भर से काम पूरा हो जाता है। फिर मन में कोई दुख नहीं होता। हो सकता है, दुख होता हो, पर मैं उसे कल के लिए टाल देता हूं। कल कभी नहीं आयेगा। इसी तरह दिन गुजरते

चले जायेंगे और मैं एक बेमानी-सा इंतजार करता रहूंगा।

उमा : मेरी एक बात मानोगे, अमित !

अमित : **उसकी ओर कोमलता से देखता हुआ** कहो, जरूर मानूंगा।

उमा : **पर्स खोलकर उसमें से कंघा निकालती है** लो, अपने बाल संवार लो। बहुत बिखरे हुए हैं।

अमित हंस पड़ता है और कंघा लेकर बाल ठीक करने लगता है।

अमित : बस, यही बात थी ?

उमा : हां, यह छोटी बात है क्या ? देखती हूं, आजकल तुम अपने शरीर के प्रति एकदम लापरवाह होते जा रहे हो।

अमित : **कंघा उसके पर्स में रखता हुआ** शरीर से मुझे मिलता ही क्या है ? सिर्फ थकान।

उमा : अमित ! **उसका हाथ अपने हाथ में लेकर मुझे** कुछ गाकर सुनाओ न ! पहले तुम कितना गाते थे।

अमित : हां, पहले मैं हर वक्त गुनगुनाता रहता था। वे दिन और थे। उनकी याद करने से पीड़ा होती है। और याद करने से फायदा भी क्या ? वे लौटकर तो आयेंगे नहीं। सपनों और संगीत से भरे हुए ये दिन ! अब तो गुनगुनाने का अर्थ है, टूटती हुई सांसों को जोड़कर एक साबुत सांस लेने की कोशिश करना।

उमा का चेहरा उतर जाता है। उस पर निराशा की रेखाएं स्पष्ट हो उठती हैं।

उमा : **क्षीण स्वर में** रात मैंने एक बहुत बुरा सपना देखा, अमित ! मैंने देखा, बर्फ गिर रही है। चारों ओर उसकी धुंध छायी हुई है। एक बहुत ऊंचे पहाड़ पर मैं तुम्हारे साथ चढ़ रही हूं। सब कुछ बड़ा अच्छा लग रहा है। बर्फ से ढंके हुए वृक्ष, पत्थर और रास्ते। पर अचानक मैंने पाया कि तुम मेरे साथ नहीं हो। मैं डर गयी। मने तुम्हें पुकारना चाहा, पर किसी ने मेरा गला दबोच लिया और आवाज नहीं निकली। तभी एक बर्फ की चट्टान मुझ पर टूट कर गिर पड़ी। एक भारी चट्टान ! मैं उसके नीचे दब गयी और—और मैंने अपने को मृत्यु के नजदीक जाते हुए महसूस किया।

अमित : **कुछ अव्यवस्थित-सा** क्या तुम इस सपने पर विश्वास करती

हो ?

उमा : अँ—नहीं, नहीं, लेकिन नींद टूटने पर मैं एकदम घबरा गयी और रोने लगी। मां—और पिताजी भी जाग गये। पूछने लगे, क्या हुआ ? मैं क्या बताती ? रोकर चुप हो गयी और सोचती रही। बाद में मैं सो नहीं सकी।

अमित : मन में चिंताएं होती हैं तो ऐसे ऊलजलूल सपने आते हैं।

उमा अमित से सटकर बैठ जाती है और उसके कंधे पर अपना हाथ रख देती है। कुछ क्षण वह उसे खोयी-खोयी सी देखती रहती है।

उमा : क्या तुम--कभी यह सोच सकते हो, अमित, कि मैं बर्फ के नीचे दब कर मर जाऊंगी।

अमित : **प्यार से** तुम तो बिल्कुल बच्ची हो। मैं सपनों पर भरोसा नहीं करता।

उमा : लेकिन सपने—

अमित : **बीच में ही** मेरे सभी सपने झूठे निकले हैं।

उमा : **सोचती हुई** हां, मुझे भी सपनों पर विश्वास नहीं करना चाहिए। अमित, तुम मुझे सदा ऐसे ही प्यार करते रहोगे, न ?

अमित : तुमसे अलग किसी जिंदगी की कल्पना करना भी मेरे लिए असंभव है।

पृष्ठभूमि से एक स्त्री की पागल हंसी उभरती है। अमित और उमा सकमका जाते हैं। फिर वे सशंक दृष्टि से सोये हुए भगतराम की ओर देखते हैं। वह करवट बदलता है और खर्राटे लेने लगता है। हंसी विलीन हो जाती है।

अमित : **जैसे उबर कर, कुछ शरारत से** भगतराम के खर्राटे टैंकों की गड़गड़ाहट से कम नहीं हैं। क्या तुम्हें इनसे डर नहीं लगता ?

उमा : **मुस्करा कर** यह भी कैसा आदमी है !

अमित : मंगड़ी है। खाता है और सोता है।

उमा : सुखिया सब संसार में, खावै और सोवै।

अमित : दुखिया दास कबीर है, जागे और रोवै।

दोनों हंस पड़ते हैं।

उमा : **घड़ी देखती हुई** तो कबीरदास जी, अब मेरे आफिस जाने का वक्त हो गया है।

अमित : हां, तुम्हें आफिस जाना है।

उमा : **उठती हुई** तुम मुझे बस-स्टाप तक छोड़ने नहीं चलोगे ?

अमित : बस-स्टाप तक ? अच्छा—चलो। **खड़ा होकर चलने लगता है।**

उमा : **उसके साथ चलती हुई** लंच के समय तुम मुझे फोन करना।

अमित कोई उत्तर नहीं देता।

उमा : करोगे, न ? मैं तुम्हारे फोन का इंतजार करूंगी।

दोनों चले जाते हैं। कुछ देर तक मंच पर कांपता हुआ-सा संगीत छाया रहता है। फिर उसे चीरती हुई किसी के लड़खड़ाकर चलने की आवाज निकट आती है। वह बूढ़ा ईश्वर है जिसके आते ही संगीत रुक जाता है। बूढ़े की खटपट से भगतराम जाग पड़ता है।

भगतराम : **आंखें मलता हुआ** कहिए, श्रीमान् ईश्वरचंद कहां हो आये ?

बूढ़ा : कहीं नहीं गया, भाई, प्यास लग आयी थी—पानी पीकर आ रहा हूं। यहां से नल बहुत दूर है।

भगतराम : इस पब्लिक पार्क की यही तो विशेषता है, ईश्वरचंद। नगरपालिका ने यहां नल नहीं लगवाया ताकि लोग हरियाली से बचे रह सकें। हरियाली के अंधे को सब हरा ही हरा दिखलायी देता है। यहां न हरियाली है, न नल है, न पाइप है, न कोई बेंच-वेंच है—बस, यह भगतराम है। लोग इसी को देखने चले आते हैं।

बूढ़ा : हां, शायद तुम्हें ही देखने के लिए लोग यहां आते हैं।

भगतराम : **उत्साह से** अब तो उमर ढलने लगी है। श्रीमान् ईश्वरचंद। जवानी में मैं काफी सुंदर था। भांग ने सत्यानाश कर दिया। लेकिन मैं अब इसके बिना जी नहीं सकता। भांग की गोलियां खाकर मैं एक दूसरे लोक में चला जाता हूं। वहां यह पब्लिक पार्क नहीं होता, एक भव्य उपवन होता है, क्यारियां होती हैं, फूल और फव्वारे होते हैं। छोटे-छोटे बच्चे खेलते रहते हैं। सुंदर स्त्री-पुरुष हंसते हुए इधर-उधर घूमते हैं।

पृष्ठभूमि से बच्चों और स्त्री-पुरुषों का कोलाहल उभर कर मिट जाता है।

बूढ़ा : यह तुम्हारी कल्पना का संसार है, भगतराम ! सचमुच तुम इसके बिना जीवित नहीं रह सकते।

भगतराम : **सहसा कुछ याद कर** श्रीमान ईश्वरचंद, क्या मैं बहुत देर तक सोता रहा ?

बूढ़ा : नहीं—हां—–मेरे पास घड़ी नहीं है, इसलिए मैं ठीक-ठीक नहीं बता सकता ।

भगतराम : अरे, तुम कैसे ईश्वर हो ? कृपानिधान, तुम्हारे पास घड़ी तक नहीं है—तुम्हें समय का ज्ञान कैसे रहता है ?

कुरते की जेब से घड़ी निकालता है और उसे दो-तीन दफा उलट-पुलट कर देखता है ।

भगतराम : यह देखो, यह भगतराम की घड़ी है। अच्छी है, न ? लेकिन इसका टाइम हमेशा गलत होता है । यह लेट चलती है, यानी मेरी तरह खूब सोच-समझकर धीरे-धीरे चलने में विश्वास रखती है । इस समय इसमें चार बजने वाले हैं, तो दुनिया में जरूर सात-साढ़े सात बज रहे होंगे । बस, मैं इसी तरह टाइम मालूम कर लेता हूं ।

बूढ़ा : तुम—ठीक कहते हो ।

भगतराम : अरे, तुम यों मरे-मरे से क्यों बोल रहे हो, श्रीमान् ईश्वरचंद ! लगता है तुम विश्व का पालन करने के चक्कर में भोजन करना भूल गये हो । पेट खाली हो तो खोपड़ी भी खाली रहती है । मेरे गुरुदेव कहा करते थे कि आवाज खोपड़ी से ही निकलती है, **अपना टेंटुआ पकड़कर** कंठ तो उसे ब्रह्मांड में प्रसारित करता है । सुनो, यह साइंस की बात है । यह जो कंठ होता है, न, दुनिया के किसी भी रेडियो-स्टेशन से कम नहीं होता । लेकिन—– तुम्हें कुछ पता नहीं है । तुम्हारे पेट में कुछ नहीं है तो तुम्हारी खोपड़ी में भी कुछ नहीं है ।

कुरते की जेब से कागज का पूड़ा निकालकर सामने रख लेता है । फिर कुछ क्षण चेहरे पर गंभीरता चिपकाये रहता है ।

भगतराम : **पूड़े को खोलता हुआ ।** ये भीगे हुए चने हैं । लो, इन्हें खाओ और मस्त हो ।

बूढ़ा मुट्ठी भर चने लेकर जल्दी-जल्दी खाने लगता है । भगतराम भी खा रहा है ।

भगतराम : **मुंह चलाता हुआ** मेरे गुरूदेव कहा करते थे, भीगे चने खाने से आदमी घोड़ा हो जाता है । घोड़े की तरह बोलता है, **हिनहिना**

कर बतलाता है घोड़े की तरह उछल-कूद करता है, दुलत्ती झाड़ता है, और घोड़े की तरह तेजी से चलता है। **पूड़े में बचे हुए सारे चने मुंह में भरकर अस्पष्ट आवाज में** अब मैं घोड़ा हो गया हूं, अतः चलता हूं। **उठकर जाता हुआ** तुम भी घोड़े बन जाओ और चलते-फिरते नजर आओ।

बूढ़ा : **भगतराम के पीछे-पीछे जाता हुआ** आदमी और घोड़ा और ईश्वर! ईश्वर और घोड़ा और आदमी!

मंच पर अंधकार छा जाता है और बूढ़े के शब्द गूंजने लगते हैं।

दूसरा अंक

वही दृश्य । भगतराम अपनी जगह पर सो रहा है । उसके खर्राटे सुनायी दे रहे हैं । एक कोने में बूढ़ा भी गुड़मुड़ी होकर लेटा हुआ है । कंधे पर बहुत से प्लास्टिक के थैले लटकाये देवीदयाल प्रवेश करता है । वह उमा का बाप है । सूखे पेड़ की एक शाखा पर थैले टांगकर वह नीचे बैठ जाता है ।

देवीदयाल : **कुरते के बटन खोलता हुआ** उफ, कितनी उमस है ! आसमान बादलों से घिरा हुआ है, न जाने कब बारिश होगी ? पिछले साल बाढ़ ने तबाह कर दिया । लगता है इस बार अकाल पड़ेगा । **निश्वास लेकर** हे ईश्वर ! तुम कभी किसी को चैन से नहीं रहने दोगे ।

गीता आती है । दायीं ओर से । वह उमा की मां है । उसकी बदल में एक पुरानी काठ की पेटी है । वह देवीदयाल के पास आकर पेटी रख देती है और बैठकर सस्ताने लगती है ।

देवीदयाल : **स्निग्धता से** थक गयी हो !

गीता : हां, भटकते-भटकते पांवों में दर्द होने लगता है ।

देवीदयाल : कुछ बिक्री हुई ?

गीता : दो सैट बिक गये हैं ।

पेटी खोलती है । उसमें चूड़ियां भरी हुई हैं । एक कोने में ठूंसा हुआ पांच का नोट निकालकर वह देवीदयाल को देती है ।

गीता : यह लो पांच रुपये । **कुछ रुककर** तुमने कुछ बेचा ?

देवीदयाल : नहीं, एक भी थैला नहीं बिका । लोग कहते है, ये थैले टिकाऊ नहीं हैं, जल्दी फट जाते हैं । मैं समझाता हूं, भई, सस्ते भी तो कितने हैं—तीस पैसे का एक थैला ।—पर वे मेरी बात अनसुनी कर देते हैं, और सस्ते और टिकाऊ थैलों की मांग करते हैं ।

औरतें भी चूड़ियां लेने में बहुत झिकझिक करती हैं। हर घर में माथा-पच्ची होती है। **पेटी बंद करती हुई** तुम थोड़ी देर लेट जाओ।

देवीदयाल : आज महीने की तीस तारीख है। कल मकान-मालिक किराय के लिए कहेगा।

गीता : मैं भी यही सोच रही हूं।

देवीदयाल : लोग उमा के बारे में तरह-तरह की बातें बनाने लगे हैं।

गीता : मैं भी यही सोच रही हूं।

देवीदयाल : दिन-ब-दिन उसका स्वभाव चिड़चिड़ा होता जा रहा है। कुछ कहो तो वह झगड़ा शुरू कर देती है।

गीता : उसे आफिस में बहुत काम करना पड़ता है।

देवीदयाल : हां, काम तो काफी करना पड़ता है। लेकिन उसे बूढे मां-बाप का भी तो खयाल रखना चाहिये।

गीता : वह सब कुछ हमारे लिए ही तो कर रही है।

देवीदयाल : गीता ! **कुछ सोचता सा** हमें उसकी शादी के लिये प्रयत्न करना चाहिए।

गीता : अमित के रंग-ढंग ठीक नजर नहीं आते।—कोई दूसरा—अच्छा लड़का मिलता नहीं है।

देवीदयाल : उमा से तुम कह दो कि वह अमित से अधिक न मिला करे। उसके लिए कोई सुन्दर और कमाऊ लड़का चाहिए।

गीता : उमा की उम्र भी तो अब एक कठिनाई बनती जा रही है।

पृष्ठ भूमि से एक स्त्री की डरावनी हंसी उभरती है।

देवीदयाल : तुम यह पेड़ देख रही हो, गीता ?

गीता : हां—यह पेड़ कभी हरा नहीं होता।

देवीदयाल : यह सदा के लिए सूख चुका है। इसमें अब कोई उम्मीद नहीं है।

गीता : हां, यह एक सूखा हुआ पेड़ है।

देवीदयाल : इसे देखकर तुम्हें कुछ याद नहीं आता, गीता ?

गीता : **खिन्नता से** मैं कुछ भी याद करना नहीं चाहती।

देवीदयाल : लेकिन, लेकिन मेरे लिए—वह सब भूल पाना असंभव है। वह एक जिदादिल जमाना था। आजादी से पहले के वे दिन मैं अंगुलियों पर गिन सकता हूं।

अतीत में खोते हुए—तब मैं सड़कों पर निकलता था तो लोग मुझे घेर लेते थे। मेरे एक इशारे पर वे प्राणों की बाजी लगाने को तैयार थे। तुम्हें तो याद भी नहीं होगा कि मैं कितनी दफा जेल गया हूं।

गीता : मुझे याद है, तुम आठ बार जेल गये हो।

देवीदयाल : बड़े-बड़े जुलूस निकलते थे। मैं उनका नेतृत्व करता था। चारों ओर मेरे नाम को जयजयकार गूंजती रहती। हुकूमत कांप उठती थी। अंग्रेज बहादुर कहता, देवीदयाल ! हमें तुमसे डर लगता है, तुम जनता के नेता हो।

पृष्ठ भूमि में 'देवीदयाल जिन्दाबाद' और 'भारत माता की जय' के नारे लगते हैं।

गीता : **भावावेग से** उस समय जनता तुम्हारे पीछे पागल थी। तुम्हारे पास गांधी जी के संदेश आया करते थे। लाठियों और गोलियों की तुम्हें परवाह नहीं थी।

देवीदयाल : **जोश में भरकर** मैंने कभी उनकी परवाह नहीं की। देश के लिए, अपनी आजादी के लिए मुझ में एक मर-मिटने की भावना थी। मुझे किसी का डर नहीं था।

गीता : तुम अक्सर तूफानी दौरे किया करते थे। कभी-कभी तो तुम्हें एक दिन में दस-बारह सभाओं में भाषण देना पड़ता था।

पृष्ठभूमि में, कुछ दूर, देवीदयाल की आवाज सुनायी पड़ती है—"भाइयों और बहनों, आज हम सभी अपने देश को आजाद देखना चाहते हैं और एक ऐसी लड़ाई में शामिल हैं जो बहुत सी कुर्बानियां मांगती हैं। आप सब जानते हैं कि गुलामी की जिंदगी से मौत बेहतर है। हमें अपना तन-मन-धन न्योछावर करने के लिए तैयार रहना चाहिए। हमें अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ एक ताकत पैदा करनी पड़ेगी।"

देवीदयाल : हां, उन दिनों मैं बहुत व्यस्त रहता था। मुझे खाने-पीने तक की भी सुध नहीं थी। एक लगन से मैं लड़ाई में जुटा हुआ था। मैं चाहता था कि किसी तरह अंग्रेज यहां से चले जायें जिससे मुल्क राहत की सांस ले सके।

गीता : तब तुम इसी तरह की भाषा में बात किया करते थे। अखबारों

में तुम्हारे फोटो छपा करते थे। महीनों तुम्हारा पता नहीं चलता था कि तुम कहां हो ?

देवीदयाल : फिर अंग्रेजों को अक्ल आयी और जनता को वोट का अधिकार दिया गया। वह अपना नेता चुन सकती थी। इस तरह लोकप्रिय सरकारें बनीं।

गीता : चुनाव में तुम्हारी भारी बहुमत से जीत हुई थी। वह दिन मेरी स्मृति में एक चित्र की तरह टंगा हुआ है!

देवीदयाल : मुख्य मंत्री मुझे बहुत चाहते थे। उन्होंने मुझे पुलिस और वन-विभाग का मंत्री बनाया। **एक झटके से सिर उठाकर** याद है, जनता ने एक बार वन-महोत्सव का आयोजन किया था ? तब—तब मैंने यह पेड़ इस विशाल मैदान के बीच एक हरे पौधे के रूप में लगाया था—एक हरे, संभावनाओं से भरे हुए पौधे के रूप में। **आह भरकर** यह बड़ा, बड़ा हुआ, पौधे से पेड़ बना और सूख गया। मेरी तरह यह भी सूख गया।

गीता : हां, तुम्हारी तरह यह भी सूख गया।
आंखों से बहते हुए आंसू पोंछती है।

देवीदयाल : जो एक बार सूख जाता है, रसहीन हो जाता है, वह दुबारा नहीं पनप सकता।

गीता : **बात बदल कर** उमा कह रही थी कि पिताजी अगर चाहें तो अमित को किसी सरकारी दफ्तर में नौकरी दिला सकते हैं।

देवीदयाल : यह गलत है। अब सब लोग मुझे भूल गये हैं या भूलना चाहते हैं। मेरी सिफारिश कोई मतलब नहीं रखती। आजादी से पहले जो लोग अंग्रेजों को दावतें दिया करते थे, वे आज बड़े नेता बन गये हैं और मुझसे नफरत करते हैं।—और मैंने जनता का विश्वास भी तो खो दिया है। मैं अब कोई चुनाव नहीं जीत सकता। मेरा मूल्य, मेरा महत्व नष्ट हो चुका है। लोग पुराने देवीदयाल को दफनाकर तटस्थ हो चुके हैं।

गीता : तुम्हें अमित के लिए कुछ-न-कुछ अवश्य करना चाहिए। उसके साथ उमा का भी भविष्य जुड़ा हुआ है।

देवीदयाल : सबका अपना-अपना भविष्य होता है। कोई किसी के साथ नहीं जुड़ता। अमित के लिए अगर मैं कुछ कर सकता तो जरूर करता, पर मैं अब इस लायक नहीं रह गया हूं। **आवेश से** आजादी के बाद मैं बार-बार अपमानित किया गया हूं। **शर्मिंदा**

हुआ हूं। क्या और भी कुछ होना शेष है ?

दौड़ती हुई उमा आती है। वह बहुत अस्त-व्यस्त है।

उमा : नहीं, अब कुछ शेष नहीं है। सब कुछ खत्म हो गया है। मां ! **गीता की गोद में जा गिरती है और सिसक-सिसकर रोने लगती है।** अब कुछ शेष नहीं रहा, मां– आं !

गीता : **घबराहट से** क्या हुआ, उमी ! क्या हुआ, बेटी ! तुम रो क्यों रही हो ?

देवीदयाल : रोओ मत, उमा ! यह क्या पागलपन है ! तुम इतनी बड़ी हो गयी हो—तुम एक समझदार लड़की हो—

गीता : क्या बात है ? हम भी कुछ बतलाओ तो सही, उमा !

उमा : **सिसकती हुई** क्या बताऊं, मां···मां, अमित को···पुलिस की नौकरी मिल गयी है··

देवीदयाल : यह तो बड़ी अच्छी खबर है, बेटी !

उमा: और···और ··और उसने अपने अफसर की लड़की से शादी कर ली है !

गीता : शादी ? अमित ने शादी कर ली है ?

उमा : **रोती हुई** हां···आं··· मां, जिस अफसर ने अमित को नौकरी दिलवायी, उसी की लड़की से उसने शादी कर ली है। **जोर-जोर से रोने लगती है। देवीदयाल और गीता उसे चुप कराने लगते हैं। इस शोर-गुल से भगतराम की नींद टूट जाती है। वह झल्लाता हुआ उठता है।**

भगतराम : **उनके पास आकर** यह क्या हल्ला मचा रखा है तुम लोगों ने ? **उमा का रोना बंद हो जाता है। सुबकियां जारी हैं।**

भगतराम : जानते हो, यह बाग है ··पब्लिक पार्क ! यहां लोग खुशियां मनाने के लिए आते हैं मातमपुर्सी के लिए नहीं। **डांटता हुआ** चलो, भागो यहां से। **उमा से** अये मेम साब, चीखना-चिल्लाना है तो किसी चिड़ियाघर में जाओ। उठो, उठो, भगो यहां से। **देवीदयाल, गीता और उमा सकते में आ जाते हैं और चुपचाप उठकर चल देते हैं। देवीदयाल अपने थैले भूल जाता है इसलिए तुरन्त लौटकर आता है और जल्दी से थैले उठाकर भागता हुआ चला जाता है।**

भगतराम : **गुस्से में बूढ़े को ठोकर लगाता हुआ** अये श्रीमान जी, अये ईश्वर-

चंद के बच्चे, उठो, अब तुम भी रफा-दफा हो यहां से। यह बाग है, समझे! पब्लिक पार्क···इसे सराय समझ लिया है क्या?

बूढ़ा हड़बड़ा कर उठता है और भयभीत-सा लड़खड़ाता हुआ चल देता है।

भगतराम : आ जाते हैं न जाने कहां-कहां से।

भुनभुनाता हुआ बूढ़े के पीछे-पीछे चला जाता है। पृष्ठभूमि से एक स्त्री की पागल हंसी उठती है और उसके खत्म होते ही मंच पर अंधकार घिर आता है।

तीसरा अंक

मंच पर अंधेरा है। इस अंधेरे में सूखा हुआ पेड़ छाया की तरह दिखलायी देता है। धीरे-धीरे मंद संगीत के साथ एक भारी भरकम आवाज उभरती है।

आवाज : चारों ओर वही शून्य का फैलाव है। इस फैलाव में चीजों का अस्तित्व अर्थहीन हो चुका है। उनके नाम अतीत की अंधेरी तहों में दब चुके हैं। वर्तमान कुछ नहीं है। वर्तमान अंधी आंखों का आकाश है। वर्तमान और कुछ नहीं, एक सूखे रंगों वाला पेड़ है जिसके इर्द-गिर्द अर्थ की तलाश हो रही है। ईश्वर, उमा, अमित, देवीदयाल, गीता, भगतराम सब लोग कुछ ढूंढ रहे हैं ·· एक खोयी हुई वस्तु, और वह उन्हें मिल नहीं रही है। वह कभी किसी को नहीं मिलती। वह अदृश्य है। उसकी खोज व्यर्थ है : शायद वह चमकीले क्षणों का इतिहास है——शायद वह एक जुगनुओं से भरा हुआ इच्छित भविष्य है। उसका कोई रूप, कोई आकार नहीं, उसे पाना असंभव है, असंभव।

पृष्ठभूमि से एक स्त्री की पागल हंसी उभरती है, फिर तालियों की गड़गड़ाहट, फिर वही हंसी, फिर 'हो-हो' की आवाजें और तीखी सीटियां, फिर एक उदास संगीत मंच पर छा जाता है। एक हिस्से में नीला प्रकाश-वृत्त खुलता है और वहां उमा एक युवक के साथ हंस-हंस कर बातें करती हुई दिखलायी पड़ती है।

युवक : तुम्हारी आंखें कितनी गहरी, कितनी स्वप्निल हैं।

उमा : **शरमाती हुई** तुम झूठ बोल रहे हो।

युवक : नहीं, मैं सच कह रहा हूं। तुम्हारी आंखों में झीलों की-सी चमक और तरलता है। इन्हें देखकर लगता है जैसे दूर पहाड़ों पर बर्फ गिर रही हो और उसमें शाम के रंग घुलने लगे हों।

उमा : **खोयी हुई-सी** जैसे बर्फ गिर रही हो! **भयभीत होकर** मैं एक बर्फ की चट्टान के नीचे दब गयी थी।

युवक : बर्फ की चट्टान के नीचे? कैसे? कहां?

उमा : **संभल जाती है** कुछ नहीं, यह एक सपने की बात है। हां, तुम क्या कह रहे थे ?

युवक : मैं तुम्हारी आंखों और झीलों और शामों को एक सूत्र में जोड़ रहा था।

उमा खुश होकर हंसने लगती है। युवक उसे अपने नजदीक खींच लेता है और उसके बालों को सहलाने लगता है।

युवक : इन घने काले बालों को देखता हूं तो मुझे घटाओं मे घिरे हुए आकाश का स्मरण हो जाता है और मैं एक पुलक से भर उठता हूं।

उमा : **विभोर होकर** आज मैं कितनी खुश हूं। रस की एक नदी है और मैं उसमें नहा रही हूं।

युवक : **उमा के हाथों को अपने हाथों में लेकर** ये अंगुलियां कितनी नाजुक हैं जैसे गुलाब की पांखुरियां। क्या तुमने अलस्सुबह खिलते हुए गुलाबों को देखा है ?

उमा : **रोमांचित होकर** हां, देखा है। मैंने गुलाबों का खिलना देखा है···

युवक : तुमने कभी उन गुलाबों के सौंदर्य को अपने होठों से छुआ है ?

उमा : छुआ है, मैंने उन्हें अपने होठों से छुआ है, और उस वक्त मुझे तुम्हारा खयाल आया है।

युवक हंसने लगता है।

युवक : **सहसा कुछ सोचकर** तुम्हारी मां की तबीयत कैसी है, डार्लिंग ?

उमा : ठीक नहीं है। डाक्टर को टी० बी० का संदेह है।

युवक अपनी कमीज की जेब से कुछ नोट निकालकर उमा के ब्लाउज में खोंस देता है।

युवक : घबराने की कोई बात नहीं है। तुम उनका इलाज अच्छी तरह कराओ।

उमा : **भावावेश से** तुम मेरा कितना खयाल रखते हो, कितना चाहते हो तुम मुझे।

युवक : हां, मैं तुम्हें बहुत चाहता हूं, अपने से भी ज्यादा।

अंधकार और संगीत। मंच के दूसरे हिस्से में लाल प्रकाश-वृत्त खुलता है और उसमें उमा एक दूसरे युवक के साथ बातें करती हुई नजर आती है।

युवक : तुम्हारी आंखें कितनी गहरी, कितनी स्वप्निल हैं।

उमा : **शरमाते हुए** तुम झूठ बोल रहे हो।

युवक : नहीं, मैं सच कह रहा हूं। तुम्हारी आंखों में झीलों की सी चमक है। इन्हें देखकर लगता है जैसे दूर पहाड़ पर बर्फ गिर रही हो और उसमें शाम के रंग घुलने लगे हों।

उमा : जैसे बर्फ गिर रही हो। मैं एक बार बर्फ की चट्टान के नीचे दब गयी थी।

युवक : बर्फ की चट्टान के नीचे ? कैसे ? कहां ?

उमा : **संभलकर** कुछ नहीं, यह एक सपने की बात है। हां, तुम क्या कह रहे थे ?

युवक : मैं तुम्हारी आंखों और बर्फ की रंगीन शामों को जोड़ रहा था।

उमा हंसती है। युवक उसे अपनी बाहों में ले लेता है। फिर उसके गालों को थपथपाने लगता है।

युवक : ये घने काले बाल आकाश में छायी हुई घटाओं की तरह सुन्दर हैं। आह, कितने सुंदर !

उमा : **प्रसन्नता से** सचमुच आज मैं बहुत सुखी हूं। रस की एक चंचल धारा मेरे रोम-रोम में बह रही है।

युवक : तुम्हारे हाथ कितने मुलायम हैं, गुलाब की पांखुरियां की तरह।

उमा : मुझे गुलाब बहुत अच्छे लगते हैं।

युवक : तुमने कभी गुलाब के फूलों को अपने होठों से सटाकर देखा है।

उमा : नहीं मैं उन्हें जूड़े में लगाना पसंद करती हूं।

युवक : **सहसा कुछ सोचकर** डार्लिंग, तुम्हारे पिता जी की तबीयत अब कैसी है ?

उमा : ठीक नहीं है। डाक्टर कहता है कि उनके फेफड़ों में कैंसर है।

युवक अपनी कमीज की जेब से कुछ रुपये निकालकर उमा के ब्लाउज में खोंस देता है।

युवक : मैं समझता हूं ये उनके इलाज के लिए काफी होंगे।

उमा : हां, काफी होंगे। **कुछ पल रुककर** तुम कितने अच्छे हो।

युवक : यह तो मुझे तुमसे कहना चाहिए। और मैं··· मैं तुम्हें प्यार करता हूं।

उमा : मैं भी तुम्हें प्यार करती हूं।

अंधकार और संगीत। मंच के तीसरे हिस्से में एक हरा प्रकाश

वृत्त खुलता है और उसमें उमा एक तीसरे युवक के साथ बातें करती हुई दिखलायी देती है।

युवक : तुम्हारी आंखें कितनी गहरी, कितनी स्वप्निल हैं।

उमा : तुम झूठ तो नहीं बोल रहे हो ?

युवक : नहीं, मैं सच कह रही हूं। तुम्हारी आंखों को देखकर लगता है जैसे दूर पहाड़ों पर बर्फ गिर रही हो और उसमें शाम के रंग घुलने लगे हों।

उमा : जैसे बर्फ गिर रही हो ···! **हंसकर** मैं एक बार बर्फ में दब गयी थी।

युवक : बर्फ में ? कैसे ?

उमा : यह एक सपने की बात है, तुम्हें उससे क्या लेना-देना है ? तुम अपना काम करो।

युवक झेंप सा जाता है। फिर उमा को अपने निकट खींच लेता है।

युवक : **उसके बालों को छूकर** तुम्हारे बाल कितने घने हैं।

उमा : मैं इन्हें रीठे-दही से धोती हूं।

युवक : तुम्हारे हाथ कितने कोमल हैं, गुलाब के फूलों की तरह।

उमा : मुझे गुलाब के फूल पसंद नहीं हैं।

युवक : क्यों ? गुलाब के फूल तो सबको पसंद आते हैं।

उमा : मैं सबमें शामिल नहीं हूं।

युवक : तुम्हारे होंठ भी गुलाबी रंग के हैं।

उमा : **व्यंग्यपूर्वक** तुम इनका उपयोग कर सकते हो।

युवक : **कुछ सोचकर** मैंने सुना है, डार्लिंग, तुम्हारे मां-बाप बीमार रहते हैं।

उमा : तुमने गलत सुना है। मेरे मां-बाप मर चुके हैं।

युवक : **हतप्रभ होकर** ओह, मेरा मतलब था कि क्या मैं तुम्हारी कुछ मदद कर सकता हूं ?

उमा : तुम चाहो तो काफी-कुछ सकते हो।

युवक : तुम्हारे लिए कुछ करके मुझे सचमुच बड़ी खुशी होगी।

उमा : तुम मेरे बॉस हो। मेरा प्रमोशन करना तुम्हारा काम है।

युवक : **उत्साह से** श्योर, श्योर, मैं तुम्हारा कल ही प्रमोशन कर दूंगा।

उमा : इसके बदले में जो कुछ मी तुम मुझसे चाहोगे, वह तुम्हें मिल

जायेगा ।

अंधकार और संगीत । पृष्ठभूमि से एक भारी आवाज उभरती है ।

आवाज : समुच्छया :
सर्वेक्षयान्ता निचया : पतनान्ता :
संयोगा विप्रयोगान्ता मरणान्त च जीवितम् ।
सब पदार्थ अंत में क्षय को प्राय होते हैं । सारे उत्कर्ष अंत में पतन की ओर जाते हैं । इसी प्रकार सारे संयोग अंत में वियोग बन जाते हैं, और यह जीवन अंत में मरण को प्राप्त होता है ।

आवाज विलीन हो जाती है । फिर मंच पर कुछ हलचल उत्पन्न होती है । कहीं-कहीं पर फुसफुसाहट-सी उभरती है । अचानक पूरा मंच रोशनी से भर उठता है और एक पुलिस-अफसर की वर्दी में अमित प्रवेश करता है । उसके साथ दो सिपाही हैं । मंच पर उमा, वह तीसरा युवक और भगतराम पहले से मौजूद हैं । भगतराम एक कोने में बैठा हुआ है, उमा और युवक दूसरे कोने में । एकदम रोशनी होने और सिपाहियों के साथ अमित के आने से वे हक्के-बक्के रह जाते हैं, फिर खड़े हो जाते हैं । उमा अमित की ओर पीठ कर लेती है ।

अमित : **युवक से** तुम आधी रात को यहां क्या कर रहे हो ?

युवक कोई उत्तर नहीं देता ।

अमित : **कड़ककर** गूंगे हो क्या ? मैं पूछता हूं, यहां···इस सुनसान पार्क में तुम क्या कर रहे हो ?

युवक चुप है । अमित आगे बढ़कर उसके एक थप्पड़ लगाता है ।

अमित : **भगतराम की ओर मुड़कर** तुम यहां क्या कर रहे हो ?

भगतराम : **हाथ जोड़कर कांपता हुआ** स्साब, मैं इस बाग का माली हूं । इसकी रखवाली करता हूं ।

अमित : **उसे धक्का देकर** अच्छा, तो तुम इस बाग की रखवाली कर रहे हो ! **तेजी से आगे बढ़कर भगतराम के हाथों पर झपट्टा मारता है और दस-दस के नोट छीन लेता है ।** ये रुपये कहां से आये ? स्साले, दलाली करते हो ? बताओ, ये रुपये कहां से आये ?

भगतराम का गला पकड़ लेता है ।

उमा : **अमित के सामने आकर** ये रुपये इसे मैंने दिये हैं जितनी देर मैं यहां रहती हूं, उसके हिसाब से अपनी कीमत का हिस्सा भगतराम को देती हूं।

अमित : **चौंककर** उमा, तुम ···यहां ?

उमा : **व्यंग्य से** उमा नहीं, मेरा नाम आम्रपाली है। शायद तुम मुझे पहचानने में गलती कर रहे हो।

अमित : नहीं, मैं तुम्हें पहचानने में गलती नहीं कर सकता। तुम कुछ बदल जरूर गयी हो, पर तुम उमा ही हो·· इसमें कोई संदेह नहीं। ···तुम्हें यहां देखकर मुझे आश्चर्य हो रहा है। आश्चर्य और दुख···।

उमा : मुझे भी तुम्हें यहां देखकर आश्चर्य हो रहा है। दुख भी। क्योंकि तुमने मेरे एकांत में बाधा डाली है।

अमित : नहीं जानता था कि इस तरह छापा मारने पर मुझे यहां तुम मिलोगी।

उमा : इसमें जानने न जानने की क्या बात है ? पहले भी तो कई बार मैं तुम्हारे साथ यहां आयी हूं। **युवक की ओर इशारा कर** और आज भी मैं यहां तुम्हारे ही साथ आयी हूं। क्या तुम इसे नहीं पहचानते हो ? यह अमित है।

अमित : **स्तब्ध होकर** अमित ? इसका नाम भी अमित है ?

युवक : **डरता हुआ** नहीं, नहीं, मैं अमित नहीं हूं। मेरा नाम विजय है।

उमा : किसी विजय-संजय से मेरा कोई वास्तव नहीं। मैं तो इतना जानती हूं कि तुम अमित हो, तुम्हारे साथ मैं सदा यहां आयी हूं और तुम्हीं ने मुझे इस हालत में पहुंचा दिया है।

अमित कुछ न समझ पाता हुआ-सा खड़ा रहता है। **फिर वह सिपाहियों को संकेत देता है। वे उस युवक और भगतराम के हथकड़ियां लगाने लगते हैं।**

अमित : **उमा से** तुम्हें मेरे साथ थाने तक चलना होगा।

उमा : **व्यंग्य से हंसकर** मैं तुम्हारे साथ कहीं भी चल सकती हूं।

वे सब चुपचाप एक ओर चले जाते हैं। मंच पर अंधकार छा जाता है। फिर एक करुण संगीत के साथ हलका-हलका उजाला बिखरता है जिसमें बूढ़ा ईश्वर दिखलायी देता है। वह लड़खड़ाता हुआ पीछे से आ रहा है। सूखे हुए पेड़ के पास आकर वह रुक

जाता है। फिर उसे बांहों में भर लेता है। बूढ़े की आंखों से आंसू बह रहे हैं। उसका सिर पेड़ की एक शाखा पर टिका हुआ है। पृष्ठभूमि से आवाज उभरती है।

आवाज : न अंधेरा है, न रोशनी है··· कहीं कुछ नहीं है। आकाश और पानी के बीच का एक रंग है, धुआं है। इस धुएं में दम घुट रहा है····सबका दम घुट रहा है।

सहसा बूढ़े के चेहरे के भाव बदलते हैं। आंसू थम जाते हैं। एक तनाव उगता है। आंखें क्रोध से लाल हो उठती हैं। नथुने फड़कने लगते हैं। वह एक झटका देकर उसे सूखे हुए पेड़ को उखाड़ डालता है और सलीब की तरह उसे कंधों पर उठाये पृष्ठभूमि की ओर लौटने लगता है। संगीत के साथ आवाज आती है।

आवाज : नाटक खतम हो रहा है। अब कोई दृश्य शेष नहीं है। ईश्वर थक गया है। ईश्वर टूट गया है। ईश्वर अपना सलीब कंधों पर उठाये धीरे-धीरे लड़खड़ाता हुआ जा रहा है। अर्थ की तलाश से ऊबकर सब लोग राह बदल चुके हैं। आत्मायें मर चुकी हैं। ईश्वर साक्षी है—यह इस यात्रा का अंत है। आंखें अंधी हैं—सपनों की हथेली पर रखा हुआ आकाश भी अंधा है और सूखे हुए पेड़ का हत्यारा ईश्वर—इस दुनिया से जा रहा है—ईश्वर जा रहा है।

शोक-सूचक संगीत और अंधकार।

अजात घर

रामेश्वर प्रेम

पात्र

प्रथम पुरुष : दो अज्ञात पुरुष,
द्वितीय पुरुष : परस्पर अप्रत्याशित ढंग के शिकार

स्थान

दंगाग्रस्त इलाके का एक अज्ञात घर और उसका ध्वस्त बरामदा।

समय

एक दोपहर से दूसरे दिन धुंध-भरी सुबह।

दंगाग्रस्त मेला-भूमि, जली हुई झोंपड़ियां, मलबे और दुकानों की ढहियां। अंधेरे मंच पर लोगों की भागदौड़ की आवाजें—

दंगा हो गया, दंगा।

क्या हुआ ?

भगदड़ में भाक सा···

वहां क्या बाप की दुंडी पकड़ता है !

अबे, ओ अंगोछा···भाक भाग वहां से···!

(प्रथम पुरुष/द्वितीय पुरुष क्रमशः विपरीत दिशा में भागते दीखते हैं। मंच के एक कोने में परस्पर दोनों टकरा जाते हैं। दोनों भौंचक्के, हताश, हांफते हुए।

प्रथम पुरुष : यह किसका घर है ?

द्वितीय पुरुष : **प्रथम पुरुष की बांह पकड़ते हुए** चल, घर में चल। घर किसका है, बाद में देखेंगे।

प्रथम पुरुष की आश्वस्ति में भय। बाहें छुड़ाता है। कांटेदार तार फांदते हुए दालान से गली में भागता है। किसी वस्तु की तलाश में।

द्वितीय पुरुष : **बरामदे में भयभीत** वहां क्या करता है तू ? **चीखते हुए** क्या करता है वहां ?

प्रथम पुरुष : **गली से उसकी आंखें हिंसक पशु की तरह चमकती हैं। अचानक उसकी नजर लोहे की छड़ पर पड़ती है। क्रूर मुस्कान। द्वितीय पुरुष की ओर देखते हुए। फिर शिकारी की तरह पलटता है।** कुछ नहीं। हथियार ढूंढता हूं, तेज हथियार। **छड़ उठाता हुआ द्वितीय पुरुष की ओर देखता है** यह किस जात का है ?

द्वितीय पुरुष : **भयाक्रांत** अह !

आंगन में ईंट गिर जाती है।

प्रथम पुरुष : **चीखता हुआ** भाग और दालान में छिप जा। कोई न आने पाये। बेजात का घर हुआ तो बेमौत हलाल हो जायेंगे।

गली से निकलकर दालान में लगी संदूक पर चढ़ जाता है।

द्वितीय पुरुष : **दालान के अर्द्ध अंधेरे से** ठीक से बैठे रहता है, ठीक से···।

प्रथम पुरुष : ठीक से बैठे रहो। थोड़ी देर में कत्लेआम हो जायेगा। तब घर लौटेंगे। **बड़बड़ाता है** झूठे मक्कार। कल पकड़े जायेंगे तब पता

चलेगा। भीड़ में लाठी चलायेंगे, गदहे। **दांत पीसता है।** **द्वितीय पुरुष से** क्यों बे। उचक-पुचक करेगा ? तुझे पता है, मेले में लाठी किसने चलायी ?

द्वितीय पुरुष : **सशंकित** पता नहीं, मैं तो मेले में घूम रहा था।

प्रथम पुरुष : **ऐंठकर** घूम रहा था ! गदहे ! किस मुहल्ले में रहता है ?

द्वितीय पुरुष : **सशंकित** फिटकी गांव। लोहे वाला पुल।

प्रथम पुरुष : तू जादव है ? **गली में गरदन लटकाकर देखने लगता है** यह किसका घर है ?

भुनभुनाता है।

: अबे बोला नहीं तेरी क्या जात है ?

द्वितीय पुरुष : हयं ऽ अयं ऽ आंय ?

प्रथम पुरुष : बहरा है क्या ?

द्वितीय पुरुष : **अचानक चीखकर।** नहीं…।

प्रथम पुरुष : चीखता क्यों है ? बोलता क्यों नहीं ?

द्वितीय पुरुष : क्या बोलूं ?

प्रथम पुरुष : बहरा। साला। कहां से चले आते हैं मेले में। **भुनभुनाता है।** बीड़ी है ?

द्वितीय पुरुष : **अचकचाता है।**

प्रथम पुरुष : **डांटते हुए** बीड़ी है ? साला बहरा, बीड़ी है तो निकाल। तलब लग रही है। **बाहर झांकने लगता है** जुलूस हो रहा है…साला, आदमी को आदमी नहीं सूझता है…।

द्वितीय पुरुष : ऐं। **उसकी निगाह टूटी खिड़की पर जा लगी है जिसकी छड़ें अपेक्षाकृत ढीली किंतु बड़ी मोटी हैं। स्वर में कड़वापन** लेगा **बी—ड़ी।**

प्रथम पुरुष : ला, दे।

द्वितीय पुरुष जेब से बीड़ी निकालकर देता है। ऐसा करते हुए दो-तीन बीड़ियां नीचे गिर जाती हैं।

द्वितीय पुरुष : संभाल कर ला। अंधा भी है…बेहूदा।

द्वितीय पुरुष बीड़ी लेकर गली में दौड़ जाता है और आंगन की खिड़की से छड़ खींच लेता है, हांफता है। द्वितीय पुरुष पुनः दौड़कर यथास्थान आ जाता है और छड़ से चिपकता हुआ लगता है।

प्रथम पुरुष : भयभीत वह क्या है ?
द्वितीय पुरुष : किंचित उल्लसित छड़ है, लोहे की छड़।
प्रथम पुरुष : हां-हां। हताश तू खिड़की तोड़ने क्यों गया ?
द्वितीय पुरुष : चुप।

मेले के मैदान से शोर की आवाज, टिन बजने और गुब्बारे की 'रे' ध्वनि तैरती है।

प्रथम पुरुष : अजीब मुश्किल है।
द्वितीय पुरुष : क्या मुश्किल है ?
प्रथम पुरुष : यही, यह घर।
द्वितीय पुरुष : लगता नहीं है, शायद वह सराय है।
प्रथम पुरुष : नकल करते हुए लगता नहीं है।
द्वितीय पुरुष : खीझ के साथ तब यह क्या है ?
प्रथम पुरुष : तू मुझसे पूछेगा ?
द्वितीय पुरुष : और तू मुझसे पूछेगा ?
प्रथम पुरुष : लोहे की छड़ तानकर मैं। मैं पूछ सकता हूं।
द्वितीय पुरुष : भय से खीझकर मैं पूछ सकता हूं।
प्रथम पुरुष : काबिल की पूछ।··· यह पंचायत-घर है।
द्वितीय पुरुष : तुम्हारे कहने से। और सड़क की बाईं ओर क्या है ?
प्रथम पुरुष : तब यह घर क्या है ?
द्वितीय पुरुष : पता नहीं।
प्रथम पुरुष : तुम्हें क्या खाक पता है।
द्वितीय पुरुष : तुम्हें पता है ?
प्रथम पुरुष : तुम बेवकूफ हो। पता होता तो···।
द्वितीय पुरुष : तुम गदहे हो।
प्रथम पुरुष : गाली दोगे···?
द्वितीय पुरुष : शुरुआत तुमने की थी।
प्रथम पुरुष : झूठ बात।
द्वितीय पुरुष : तुम झूठ बोलते हो।
प्रथम पुरुष : मैं कहता हूं कि मेरे मुंह मत लग।
द्वितीय पुरुष : तुम धमकी दोगे ?
प्रथम पुरुष : खीझकर : मैं···मैं··· यह छड़ देख रहे हो न ?
द्वितीय पुरुष : तुम जान से मार दोगे।
प्रथम पुरुष : नहीं। और तुम ?

द्वितीय पुरुष : यह मैंने कब कहा ? मैंने कहा था ?

प्रथम पुरुष : हां, तुमने कहा था।

द्वितीय पुरुष : तुम मूर्ख हो। जाहिल हो। बेमतलब बात-बात में तुम टिप-टपाते हो····।

प्रथम पुरुष : तुम मुझे जाहिल कहोगे ?

द्वितीय पुरुष : अगर कहूं तो ?

प्रथम पुरुष : तुम्हारी गरदन मरोड़ दूंगा।

द्वितीय पुरुष : और मैं क्या छोड़ दूंगा ? मैं गरदन ही उड़ा दूंगा।

प्रथम पुरुष : उड़ाओ तो।

द्वितीय पुरुष : तुम मरोड़ो तो।

प्रथम पुरुष : मैं कमीने लोगों के साथ नहीं होता।

द्वितीय पुरुष : मैं जाहिलों के साथ नहीं होता।

प्रथम पुरुष : तू देखता है ना कि मेरी छड़ तुमसे बड़ी है। यहीं से आंखें फोड़ दूंगा।

द्वितीय पुरुष : **किंचित भय से** आंखें फोड़ता है।

प्रथम पुरुष : हां, आंखें फोड़ दूंगा।

द्वितीय पुरुष : समझता है, केस-मुकदमा भी नहीं चलेगा। आंखें फोड़ता है।

प्रथम पुरुष : केस-मुकदमे का डर दिखाता है तू ! कभी बाप-जनम में केस लड़ा है ? दंगा-फसाद का मुकदमा नहीं होता।

द्वितीय पुरुष : तू कानून जानता है ?

प्रथम पुरुष : जानता हूं।

द्वितीय पुरुष : **ईर्ष्या से** कानून जानता है।

प्रथम पुरुष : मैं कानून जानता हूं, इसलिए आंखें फोड़ सकता हूं।

द्वितीय पुरुष : और मैं तुम्हें छोड़ दूंगा ?

प्रथम पुरुष : लड़कर देख लो।

द्वितीय पुरुष : तुम्हीं देखो ! ताकत आजमाओगे ?

प्रथम पुरुष : **खिड़की से झांकते हुए अचानक चीखता है।** बचो ·· पथराव हो रहा है। आवाज सुन रहे हो न। **द्वितीय पुरुष से** पता नहीं कितनों की आवाजें हैं। सावधान ! छड़ आगे रखो। एकदम सीध में। कोई इस घर पर हमला करे, पेट में घुसा दो। खच्च या खप्प-घप्प पूरा पेट में घुसना चाहिए।

द्वितीय पुरुष : हुक्म करता है ! **बड़बड़ाते हुए छड़ सैनिक की तरफ आगे रखता है** संभल कर तो रहना ही चाहिए।

प्रथम पुरुष : हां, बिलकुल संभलकर ।

द्वितीय पुरुष : जरा-सी चूक और गरदन अलग ।

प्रथम पुरुष : बिल्कुल ठीक । लड़ाई के जमाने में ऐसा ही होता है ।

द्वितीय पुरुष : तुम्हें पता है, इस लड़ाई का मुखिया लीडर कौन है ?

प्रथम पुरुष : पता होता तो उसे मैं यू ही छोड़ देता ?

द्वितीय पुरुष : वही तो ।

प्रथम पुरुष : तू बिलकुल नया आदमी है...।

द्वितीय पुरुष : बीच में और तू क्या पुराना आदमी है ? पिछली दफा आया था इधर ? कहां घर है तेरा ?

प्रथम पुरुष : पर नरहिया गांव । जिला दरभंगा ।

द्वितीय पुरुष : नरहिया में कहां ? किस मुहल्ले में है ?

प्रथम पुरुष : नरहिया ही है । और तू फिटकी गांव, लोहे वाला पुल है जहां ?

द्वितीय पुरुष : हां ।

प्रथम पुरुष : और जात ?

द्वितीय पुरुष : नहीं मालूम ।

प्रथम पुरुष : बे-जात का होगा ।

द्वितीय पुरुष : यह गाली है । तुम गाली दोगे ?

प्रथम पुरुष : पंचायत करा लो ।

द्वितीय पुरुष : गालियों की पंचायत होती है ?

प्रथम पुरुष : गालियों की ही पंचायत होती है ।

द्वितीय पुरुष : तुम्हारे गांव मे होती होगी ।

प्रथम पुरुष : मैं कानून जानता हूं । गालियो की ही पंचायत हर जगह होती है ।

द्वितीय पुरुष : मैं नहीं मानता ।

प्रथम पुरुष : तुम्हारे मानने-न मानने की परवाह कानून को नहीं है ।

द्वितीय पुरुष : न, कानून तो तुम्हारी बपौती है ।

प्रथम पुरुष : अ...ह .. । यह दंगा किसने करवाया ? मेले में हंगामा ?

द्वितीय पुरुष : मैं नहीं जानता ।

प्रथम पुरुष : तू जानता है ।

द्वितीय पुरुष : तुम्हारे कहने से ।

प्रथम पुरुष : हां । फिटकी गांव से अकेले आ गया ?

द्वितीय पुरुष : नहीं, और लोग थे।

प्रथम पुरुष : **सशंकित** वे कहां हैं ?

द्वितीय पुरुष : **सरल आवाज में** मेले की झोंपड़ी में।

प्रथम पुरुष : तुम पर मुकदमा चलेगा।

द्वितीय पुरुष : क्यों, मैंने क्या किया है ?

प्रथम पुरुष : तुमने दंगा करवाया है। तुम्हारे आदमी उस झोंपड़ी में इसीलिए इसी मकसद से छिपे हैं, मैं जानता हूं।

द्वितीय पुरुष . लेकिन मैं बेकसूर··· ।

प्रथम पुरुष : यही तुम्हारा कसूर है। **हंसता है** चोर से पूछा कि तुम्हारा क्या नाम है ?

चोर बोला—कलंदर।

पूछा—तुम्हारे बाप का नाम ?

चोर बोला—बंदर।

और घर ?

चोर बोला—जेल के अंदर।.

सो चोर कहीं कसूर मानता है ?

चोर-चोर मौसेरे भाई···तू कसूरवार है··· ।

द्वितीय पुरुष . . **अचानक मेले के मैदान की ओर देखते हुए, दबी चीख से** सावधान।

प्रथम पुरुष : क्या हुआ ?

द्वितीय पुरुष : क्या हुआ। देखते नहीं, सड़क पर मारपीट शुरू हो गयी है। एक आदमी डर से चारपाई के नीचे छुप गया है और एक आदमी···साली धूप भी इतनी है कि कुछ दीखता नहीं **अचानक जोर से, बाहर लाल अंगोछा से** अबे-अबे ओ अंगोछा··· एक आदमी चारपाई में घुस गया है····उसे···· प···क···ड़ों···भागने न पाये।

प्रथम पुरुष : अबे क्या करता है तू। चीखता क्यों है ? उसे छिपा रहने दे।

द्वितीय पुरुष : **झांकते हुए** बहुत आदमी हैं।

प्रथम पुरुष : बहुत धूल भी है। धूल में **संदूक से उलझते हुए** कुछ नजर नहीं आता है।

द्वितीय पुरुष : चलेगा उन लोगों के साथ ?

प्रथम पुरुष : गदहा ! कहीं कोई पत्थर लग जाये तो ? **चीख के साथ लगता**

है, इस घर में भी लोग घुस आयेंगे···सावधान रहो। एक आदमी इधर न आने पाये।

द्वितीय पुरुष : **हड़बड़ा जाता है। आसन्न मृत्यु से आतंकित। मैदान की ओर देखता है।** अबे ओ गदहे···ए···खाट वाला आदमी···ए··· चारपाई··· ए आदमी···भाग···वहां से···भाग···।

प्रथम पुरुष : सभी खुराफाती हो गये। बकरी की जान जाये और खाने वाले को स्वाद न मिले। ··· **द्वितीय पुरुष की ओर मुखातिब होकर** तू क्या करता है यहां से ? क्यों रिरियाता है ? भीड़ में जाकर बचा।

द्वितीय पुरुष : तू कसाई है।

प्रथम पुरुष : जबान संभालकर बात कर।

बच्चों के चिल्लाने, औरतों के चीखने की सम्मिलित आवाजें।

द्वितीय पुरुष : **चौकन्ना** अब यह क्या हो रहा है ?

प्रथम पुरुष : चुप और सावधान रह।

द्वितीय पुरुष : हां ·· हां।

प्रथम पुरुष : यह औरत का रोना-धोना अच्छा नहीं लगता।

द्वितीय पुरुष : हां···हां···।

प्रथम पुरुष : लेकिन रो क्यों रही है ?

द्वितीय पुरुष : **कान लगाकर सुनता है** दंगे में फंस गयी होगी।

प्रथम पुरुष : **आशंकित।** दंगे में औरत। तुलुम ताल। **रुककर** तुम्हारी औरत तो नहीं आयी थी ?

द्वितीय पुरुष : नहीं।

प्रथम पुरुष : तुम अपनी औरत का रोना पहचानते हो ?

द्वितीय पुरुष : और तुम ?

प्रथम पुरुष : मैं नहीं पहचान पाता। तुम्हें मालूम है, औरतें सभी एक ढंग से रोती हैं।

द्वितीय पुरुष : मैं नहीं जानता।

प्रथम पुरुष : अजीब बात है, तू नहीं जानता। वैसे मुझे भी खास दिलचस्पी नहीं है। मेरा लड़का बी० एल० में पढ़ता है, इसलिए कानून में दिलचस्पी है।

द्वितीय पुरुष : गलत बात।

प्रथम पुरुष : क्या गलत ?

द्वितीय पुरुष : तुम्हारा लड़का बी० एल० में नहीं होगा। वह तुम्हारी तरह अनपढ़ होगा।

प्रथम पुरुष : मैं अनपढ़ नहीं हूं।

द्वितीय पुरुष : झूठ।

प्रथम पुरुष : तुम बेवकूफ हो। **छड़ सीधी करते हुए** एकदम मूर्ख-मन-गदहा।

द्वितीय पुरुष : जबान पर लगाम दो। **ऐंठकर** कानून जानता हूं। बेटा बी० एल० में पढ़ता है। जमाता है।

मैदान में शोर! दोनों उचक-उचक कर देखने लगते हैं। द्वितीय पुरुष 'कानून जानता है' बड़बड़ाते हुए प्रथम पुरुष से तटस्थ हो जाता है। प्रथम पुरुष द्वितीय की ओर देखता भी नहीं है। उसकी नजर मैदान की ओर है। उसकी आँखें और देह हरकत कर रही है। द्वितीय पुरुष बाहर देखता हुआ, आतंकित 'कानून जानता है' उसके होठों से अनायास अनवरतता से फिसल रहे हैं। 'कानून जानता है' की प्रतिध्वनि फुसफुसाहट में बदलने लगती है। यह वाक्य मैदान के शोर में गड्डमड्ड होने लगता है। मैदान में हाहाकार। चारों ओर आतंक के स्वर।

द्वितीय पुरुष : सभी खुराफाती हो गये। वाह रे जमाना।

प्रथम पुरुष : **बेचैन है जैसे अघटित हो गया हो।** औरत भी रो रही है। हम दोनों पकड़े जायेंगे।

द्वितीय पुरुष अचानक भयभीत हो जाता है, मुड़कर प्रथम पुरुष की ओर देखता है।

द्वितीय पुरुष : क्यों ?

प्रथम पुरुष : **फुसफुसाते हुए** औरत की वजह से, उसके रोने की वजह से। औरत और पहाड़ी धूप पर कोई विश्वास नहीं करता।

द्वितीय पुरुष : **भय से** पता नहीं। मुझे···मु··· पता नहीं··· क्या होगा, पता···।

प्रथम पुरुष : **फुसफुसाकर** तुम्हें जानकारी नहीं है।

द्वितीय पुरुष ; **मैदान की आवाज कान लगाकर सुनता है।**

प्रथम पुरुष : तुम्हें बिलकुल जानकारी नहीं है ? यह गों-गों की आवाज आ रही है।

प्रथम पुरुष अचानक मैदान की ओर पलटकर देखता हुआ चीखता है।

प्रथम पुरुष : सावधान !

द्वितीय पुरुष : **भयभीत-सा दीवार से सिकुड़कर छड़ आगे करता हुआ** क्या हुआ ?

प्रथम पुरुष : **फुसफुसाकर, भयभीत** धीरे बोल बिलकुल धीरे। बगल से रोने की आवाज आ रही है।

द्वितीय पुरुष : अब क्या करोगे ?

प्रथम पुरुष : सोच लो। तुरंत सोचो।

द्वितीय पुरुष : अयं—अयं...हां-हां।

प्रथम पुरुष : **फुसफुसाकर** चारों ओर खतरा-ही-खतरा है।

द्वितीय पुरुष : हां, खतरा है। खतरा ही खतरा।

समय : शाम। मैदान के इर्द-गिर्द अलाव की तरह मशालें दीख पड़ती हैं। बस्ती के ऊपर धुआं-धुआं-सा वातावरण। हलचल पूर्ववत है। वालेन्टियरों की सीटियां बजने, 'पकड़ो, पकड़ो' और औरत के रोने की आवाजें।

प्रथम पुरुष : सोच लिया ?

द्वितीय पुरुष : ना ! कुछ नहीं सोच पाया।

प्रथम पुरुष : **बाहर झांकते हुए** सांझ हो गयी।

द्वितीय पुरुष : हां, अंधेरा हो गया है।

प्रथम पुरुष : अंधेरा ! बस सोच लिया। अंधेरा होते ही हम भाग जायेंगे।

द्वितीय पुरुष : हां, हां।

द्वितीय पुरुष मैदान की ओर देखकर।

द्वितीय पुरुष : चुप ! चुप ! सामने मशालें आ रही हैं।

प्रथम पुरुष : मशालें ? तब तो रोशनी भी होगी। तब··· तब··· तब··· भागोगे कैसे ?

द्वितीय पुरुष : हां-हां, अब ?

प्रथम पुरुष : **सावधान करते हुए** छड़ सीधी रख, शायद इसी घर में घुसने की कोशिश करेंगें मशालची।

द्वितीय पुरुष : **गरदन बाहर निकालकर अचानक बड़बड़ाता है** झोपड़ी में आग लगा दी।

प्रथम पुरुष : किसने ?

द्वितीय पुरुष : **चौकन्ना होकर प्रथम पुरुष को मैदान की ओर इशारा करते हुए फुसफुसाता है** मशालवालों ने।

प्रथम पुरुष : **खीझ और नफरत से, द्वितीय पुरुष की ओर देखता हुआ** अबे, तू रोक उसको ! तुम्हें पता है ना, चारों ओर उजाला हो जायेगा, भागोगे कैसे ? **रुककर** लेकिन एक बात—यह झोंपड़ी है किसकी ?

द्वितीय पुरुष : पता नहीं । किसी गरीब की होगी ।

प्रथम पुरुष : **आशंका से, आहट लेता हुआ, छड़ संभालता हुआ** वे चले भी गये ।

द्वितीय पुरुष : लगता है, आग लगाकर चले गये । बुझायेंगे नहीं ?

प्रथम पुरुष : मूरख हो क्या ? क्या वे पानी डालेंगे ?

द्वितीय पुरुष : इतना पानी आयेगा कहां से ?

प्रथम पुरुष : **कुछ सोचता हुआ** ओह, अब समझा । तुम्हारे लोग झोंपड़ी में थे । तुमने कहा था न ?

द्वितीय पुरुष : **भयभीत** नहीं :

प्रथम पुरुष : अब तुम्हें पानी की चिंता कैसे सताने लगी ? **चीखकर** तू काबिल बनता है । बोल, तुम्हारे लोग थे या नहीं ? गलत । वे जरूर होंगे और जलकर मर रहे होंगे । **पटपटाते हुए** कायर सब ! मशाल वालों ने जला दिया तो जल गये । सामना करते तो क्या हो जाता ?

द्वितीय पुरुष : **चीखकर** वे नहीं थे ।

प्रथम पुरुष : तुमने झूठ कहा था ?

द्वितीय पुरुष : हां ।

प्रथम पुरुष : लेकिन अखबार में निकला तो ?

द्वितीय पुरुष : अखबार में तो यों ही निकलता है ।

प्रथम पुरुष : मुझे तुम पर तरस आता है । मैं कानून जानता हूं । तू जरूर पकड़ा जायेगा । फांसी चढ़ेगा तू ।

द्वितीय पुरुष : **बैठकर** कानून जानता है । तू जानता है बैल की पूंछ ! कानून जानता है ! कानूनी बुद्धि है तेरे पास ? वह तो होगी सोलह दूनी आठ । समझा न !

प्रथम पुरुष : मैं कहे देता हूं, तू ज्यादा लबड़-लबड़ मत कर । बहुत बुरा होगा ।

द्वितीय पुरुष की ओर ध्यान नहीं देता है, वह घर की ओर देखने लगता है यह घर है । कबाड़खाना है, कबाड़खाना । किसी चीज का कुछ पता चलता है ? खेल है, खेल । कितनी

बार कोशिश की है, जुलूस में पहचान के लोग मिलें, लेकिन यह जुलूस है। न किसी की आवाज ठीक से आती है, न सूरत दीखती है···। **अचानक वह दीवार की तरफ आ जाता है।** औरत नहीं है···। **उस तरफ द्वितीय पुरुष की ओर इशारा करता हुआ। द्वितीय पुरुष भौंचक है।** उस तरफ छोटी बच्ची है। रो रही है। मैं बच्चों का रोना पहचान सकता हूं। शायद मेले में छूट गयी है। उसे बचा लो।

द्वितीय पुरुष : हां-हां, उसे बचा लो।

प्रथम पुरुष : शायद नाबालिग है। मैं कानून जानता हूं। नाबालिग रो सकते हैं और बालिग रो नहीं सकते।

द्वितीय पुरुष : अगर रोये तो··· ?

प्रथम पुरुष : **दृढ़ता से** वह रो नहीं सकते। अधिक-से-अधिक हिचक सकते हैं। वह भी अकेले में।

द्वितीय पुरुष : यह मुश्किल है।

प्रथम पुरुष : कोई मुश्किल नहीं है। मैं रोने से पहले हिचक सकता हूं। **घुटने में गरदन दुबकाकर हिचकने लगता है। लोहे की छड़ पर बैठा है और उसकी नकली हिचकी चारों तरफ फैल रही है। द्वितीय पुरुष एक क्षण प्रथम पुरुष का हिचकना देखता है, फिर लड़की के अप्रतीक्षित रोने की ओर मुखातिब होता है।**

द्वितीय पुरुष : एक लड़की ! अबे ए ओ लड़की ! चुप। चुप हो जा। मत रो। रोना बुरी बात है।

प्रथम पुरुष हिचकता रहता है।

ऐ चुप क्यों नहीं हो जाती है ? चुप !

प्रथम पुरुष : **हिचकना बंद कर द्वितीय पुरुष को ओर देखता है।** मैं उठता हूं। चुप, चुप रह। संकट क्यों बुलाती है ? **रुककर** तू सुनता है न ? सड़क पर रोड़ेबाजी हो रही है।

द्वितीय पुरुष : **बेचैनी से देखता है। छड़ उठाकर बाहर झांकने की कोशिश करता है।**

प्रथम पुरुष : हद दरजे का देहाती है। तू बाहर ताक-झांक क्यों करता है ? यह कोई दुर्घटना नहीं है। यह मारपीट है, समझे ना ? या नहीं समझ रहे हो ? **द्वितीय पुरुष प्रथम पुरुष की ओर अनमना-सा देखता है। फिर बाहर झांकने लगता है।**

: खुद भी जायेगा और मुझे भी ले जायेगा। कछुए की तरह कभी गरदन अंदर करता है और कभी बाहर। हवन्नक।

द्वितीय पुरुष : तुम गालियां दोगे ?

प्रथम पुरुष : मैं तो केवल गालियां दे रहा हूं। बाहर जाओगे तब गरदन काट लेंगे।

द्वितीय पुरुष : लेकिन तुम दोगे क्यों ? मैं क्या तुम्हारा कर्जा रखता हूं ? तू मालिक है मेरा ?

प्रथम पुरुष : मैं तुम्हारा कोई नहीं हूं, लेकिन गालियां देने के लिए मुझे तुम्हारा मालिक होना चाहिए।

द्वितीय पुरुष : मालिक बनता है। तुम मुझे, मुझे तुम, मुझे···मैं गालियां नहीं सुन सकता हूं।

प्रथम पुरुष : तब क्या सुनोगे, गीत ? मैं कोई पतुरिया हूं ?

द्वितीय पुरुष : मैं जाहिलों से बात नहीं करता।

प्रथम पुरुष : कहता हूं, जबान पर लगाम दो। मैं सब जानता हूं। ऐसे ही मेरा बेटा बी० एल० में नहीं है। समझा ? मैं अच्छी तरह जानता हूं कि तुम चुप रहकर एकाएक हमला करोगे लेकिन तुम जानते हो ना कि कानून मकसद ढूंढता है। छड़ किसी की हो चाहे, खिड़की की, चाहे घर की या पूरी जमात की··· चाहे वह मुझे अचानक ही लग जाये, हालांकि मैं कानून जानता हूं, लेकिन उसमें समझा न। अगर मेरी मौत या हत्या तुम्हारा मकसद है तो फांसी न घर को होगी, न खिड़की को तुम्हें होगी। तुम्हें, और··· ।

द्वितीय पुरुष : मैं तुम्हारे लंबे भाषण में आने वाला नहीं। ऐसे भाषण मैंने बहुत सुने हैं और तू सुनता है न ! मैं तुम्हारी हत्या नहीं करूंगा। मैं किसी को मारना नहीं चाहता।

प्रथम पुरुष : तब यह छड़ फेंक क्यों नहीं देता ? चालाक बनता है तू।

द्वितीय पुरुष : आंय आंय ! हां। हां। लेकिन तू क्यों नहीं फेंकता ?

प्रथम पुरुष : मैं फेंक सकता हूं।

द्वितीय पुरुष : मैं भी फेंक सकता हूं।

प्रथम पुरुष : तो फेंक ना।

द्वितीय पुरुष : तू फेंक तो।

पथम पुरुष : पहले तू फेंक।

द्वितीय पुरुष : और तू क्या करेगा ?

प्रथम पुरुष : तू पहले क्यों नहीं फेंकता ?

द्वितीय पुरुष : और तू क्या **छड़ की ओर इशारा करके** इससे जमींदारी करेगा ?

प्रथम पुरुष : समझ गया।

द्वितीय पुरुष : क्या समझ गया तू ?

प्रथम पुरुष : तुम्हारा मकसद खूनी है। तू मुझे मारना चाहता है।

द्वितीय पुरुष : और तू क्या मुझे छोड़ रहा है ?

प्रथम पुरुष : तू छड़ तो फेंक कर देख।

द्वितीय पुरुष : अहह ? चालाक और कानूनी ? मकसद और मतलब। पाजामा और शर्ट। साला।

प्रथम पुरुष द्वितीय पुरुष को ओर संदेह की दृष्टि से देखता है। फिर छड़ सीधी करता है। फिर सामने को ओर देखकर लाठी की तरह पटक कर खिड़की से झांकता है।

प्रथम पुरुष : घोर अंधेरा है। अपच अंधेरा। जाने कहां क्या हो रहा है।

द्वितीय पुरुष छड़ को मजबूती से पकड़कर पास की उपेक्षित-सी टेबल पर बैठ जाता है। और छड़ को जमीन पर अनायास ठोकता है। ठक-ठक की आवाज रंगमंच पर उभरने लगती है।

प्रथम पुरुष : अंधेरा है और कोई आवाज नहीं आ रही, शायद दंगा बंद हो गया है।

द्वितीय पुरुष पूर्ववत् क्रिया में लीन-सा है। ठक-ठक की अंतःप्राण ध्वनि रंगमंच पर फैलती रहती है।

द्वितीय पुरुष : अंदर-अंदर बहुत-कुछ उबल रहा है··· और सामने की सड़क पर अंधेरा छा गया है। हम कैसे घर जायेंगे ?

प्रथम पुरुष : सचमुच ! हम कैसे घर जायेंगे ?

द्वितीय पुरुष : **अचानक मैदान की ओर से किसी को भागते हुए देखता है। चीखते हुए** यह दंगा नहीं है··· । यह दंगा नहीं है। **प्रथम पुरुष से** सुनता है तू ! यह दंगा नहीं है।

प्रथम पुरुष प्रकाशावृत्त में द्वितीय पुरुष की गरदन झपटकर पकड़ लेता है। द्वितीय पुरुष के हाथ में छड़ है, लेकिन वह कुछ नहीं कर पाता।

प्रथम पुरुष : तब बोल, यह क्या है ? बोल !

द्वितीय पुरुष : यह दंगा नहीं है।

प्रथम पुरुष : तब यह क्या है ?

द्वितीय पुरुष : मैं केवल यह जानता हूं कि यह दंगा नहीं है।

प्रथम पुरुष : तब यह क्या है ?

द्वितीय पुरुष : **चीखकर** कोई जरूरी है कि जिसकी मैं 'ना' जानता हूं उसकी मैं 'हां' भी जानूं ?

प्रथम पुरुष : बोल, यह क्या है ?

द्वितीय पुरुष : कसूर मेरा नहीं है।

प्रथम पुरुष : तब क्या कसूरवार का पता लगाना पड़ेगा ? तू, तू चीखा क्यों ?

द्वितीय पुरुष : मैं डर गया था।

प्रथम पुरुष : **ऐंठकर** डर गया था। लेकिन किसलिए ?

द्वितीय पुरुष : बहुत अंधेरा था।

प्रथम पुरुष : **ऐंठकर** अंधेरा था ?

द्वितीय पुरुष : हां, एक तना हुआ अंधेरा।

प्रथम पुरुष : तू मुझे तिलिस्म समझाता है। बोल, यह क्या है ?

द्वितीय पुरुष : मुझे नहीं मालूम।

प्रथम पुरुष : यह घर किस जात का है ?

द्वितीय पुरुष : अहह ! **गरदन छुड़ाकर** मुझे क्या पता ?

प्रथम पुरुष : मुझे क्या पता ! सारी चालाकी निकाल दूंगा। समझे।

मैदान में अंधेरा। लोगों की भाग-दौड़। प्रथम पुरुष द्वितीय पुरुष से अलग होकर।

द्वितीय पुरुष : अं हां ! हां !

दोनों संभालकर निशाना साधते हैं। प्रकाश-वृत्त में दोनों की आकृतियां धनुषाकार। मुड़े हुए कंकालों की तरह। आकृतियां अंधेरे में निकलती हुई डूबने लगती हैं। फ्रिज होते हुए।

प्रथम पुरुष : खूब संभालकर। निशाना खाली न जाये।

द्वितीय पुरुष : लेकिन फांसी हुई तो ?

प्रथम पुरुष : सामूहिक हत्या की फांसी नहीं होती।

द्वितीय पुरुष : हो भी सकती है।

प्रथम पुरुष : मैं···मैं कहता हूं, नहीं होती।

द्वितीय पुरुष : अगर हो जाये तो ?

प्रथम पुरुष : तू कायर है। फेंक, निशाना लगा और मार दे तमाम लोगों को··· ।

द्वितीय पुरुष : पहले तू फेंक।

प्रथम पुरुष : और तू नहीं फेंकेगा ?

छायाएं लिप-पुत जाती हैं। परस्पर दोनों की संदेहास्पद आंखें।

प्रथम पुरुष : सभी भाग गये। **छड़ सीधी करता है।** अंधेरे में कोई नहीं है। सभी भाग गये हैं। मूर्ख ! अब क्या अंधेरे पर वार करेगा ?··· सभी चले गये।

द्वितीय पुरुष : केवल अंधेरा है। **छड़ को धीरे-धीरे नीचे झुका लेता है।**

प्रथम पुरुष : लेकिन यह है क्या ?···तुम्हें पता है न कि यह दंगा नहीं है ?

द्वितीय पुरुष : मुझे कुछ भी नहीं मालूम।

प्रथम पुरुष हताश-सा छड को किसी प्राचीन हथियार की तरह उठाये मैदान की ओर देखने के उद्देश्य से कोने में चला जाता है। प्रकाश की हल्की-सी दूर से आती रेखा में उसकी छड़ के अनुपात में उसका कद छोटा दीखता है।

प्रथम पुरुष : सचमुच क्या पता चलेगा इससे ? हजारों-हजार आदमियों के शोर में क्या मालूम होगा कि शोर काहे का है ? किस जात के लोगों ने यह खुराफात की है ?

द्वितीय पुरुष : **द्वितीय पुरुष दुबका हुआ बैठ गया है। इसी गरदन की ऊंचाई तक छड का अग्र भाग दीखता है।** शायद अब मारकाट बंद हो गयी होगी। अब केवल हल्ला है। चिल्लाहट और केवल शोर। चीख, केवल चीख।

प्रथम पुरुष : बेकार की बहस है। मुझे तो कुछ भी पता नहीं चलता कि यह आदमी चिल्ला रहे हैं या जानवर।

द्वितीय पुरुष : तू तो कानूनची है न ?

प्रथम पुरुष : तू ठीक से बोल। मैं कानून जानता हूं।

द्वितीय पुरुष : मैं ठीक ही बोल रहा था। तू बता सकता है कि यह शोर किसलिए है ? यह घर किस जात का है ?

प्रथम पुरुष : मुझे नहीं मालूम है।

द्वितीय पुरुष : तब तू कानून क्या घंटा जानता है।

द्वितीय पुरुष ठेंगा बताता है।

प्रथम पुरुष : आ गये न अपनी औकात पर। जानता हूं, य'''ह आदमी का सबसे पुराना हथियार था। तुम कह लो। आदमी की एक बोली, एक भाषा, एक इशारा थी। अब यह चिढ़ाने का काम करती है। एक दिन सारे हथियार चिढ़ाने का ही काम करेंगे। समझता है तू ?

द्वितीय पुरुष : अ'''ह'''ह। काबिल बनता है।

प्रथम पुरुष : हां मैं काबिल हूं।

द्वितीय पुरुष : अपने दही को कभी ग्वालन खट्टा कहती है ?

प्रथम पुरुष : तुम मूर्ख हो। परम अथवल।

द्वितीय पुरुष : आज तक मेरी औरत ने मुझे ऐसा नहीं कहा।

प्रथम पुरुष : मैं तुम्हारी औरत हूं ?

द्वितीय पुरुष : गदहे ! न जाने किस जात का है ?

प्रथम पुरुष : पता है, तुम्हारी औरत तुम्हें क्या कहती होगी ?

द्वितीय पुरुष : मैं तुम्हें बता दूं ? तुम हमारे घरेलू मामले में दखल देने वाले कौन ? मेरी औरत पिछले साल मर गयी। लेकिन यह मैं तुम्हें क्यों बताऊं ? मैं पांच बच्चों का बाप नहीं होता तो वह मरती ? लेकिन मेरे पांच बच्चे हुए। मैं बाप बन गया। लेकिन इसमें मेरा दोष कहां है ? वह पिछली सरदी में ठीक इसी महीने में, दिन शायद मंगलवार था। हां, मंगलवार ! शाम हो गयी थी, वह ठीक शाम को मरी। लेकिन मैं क्यों बताऊं सारी बात ?

प्रथम पुरुष : जरूर तुमने कत्ल किया होगा। मैं पहले ही तुम्हारे चेहरे को देखकर जान गया था, तुम खूनी भी हो।

द्वितीय पुरुष : नहीं। सच मानो, वह अपनी मौत मरी। मैंने बहुत कोशिश की, वह बच जाये। वैद्य-डाक्टर सभी हार गये, लेकिन वह ''।

प्रथम पुरुष : लेकिन-वेकिन मत लगा। मैं जान गया हूं, तू खूनी है। अच्छा बोल, जात में ब्याह किया था कि बेजात में ?

द्वितीय पुरुष हतप्रभ-सा प्रथम पुरुष की ओर देखता है।

द्वितीय पुरुष : आखिर तू चाहता क्या है ? मैं कौन होता हूं उसकी जान लेने वाला ? मैं क्या कसाई हूं ?

प्रथम पुरुष : तो क्या तू धर्मी है ?

द्वितीय पुरुष : मैंने उससे ब्याह किया था। क्या उसको मारने के लिए ?

प्रथम पुरुष : मैं जानता हूं, सब जानता हूं, तू मुझे उल्टा पाठ पढ़ाता है। ब्याह करने वाला कसाई है, औरत को जला देना तो मामूली बात है। बोल, जात में ब्याह किया था कि बेजात में ?

द्वितीय पुरुष : मुझे नहीं मालूम।

प्रथम पुरुष : तेरी बात क्या है ?

द्वितीय पुरुष अंधेरे की ओर देखने लगता है। सड़कों, गलियों से गुजरने वाली इक्की-दुक्की मशालों की छुटपुटी उजास में प्रथम पुरुष के हाथ की छड़ और चेहरा दीखता है।

द्वितीय पुरुष : म···म···म··· ये लोग कौन हैं ?

प्रथम पुरुष : **खीझकर** अब चुप ! गुजर जाने दे। ये मशाल्ल वाले हैं। पहले जात पूछते है, फिर कपड़े खींचकर जाने क्या देखते हैं। फिर बदन पर आग फेंक देते हैं।

द्वितीय पुरुष : अपनी जात वालों को खोज रहे होंगे।

प्रथम पुरुष : लेकिन पता कैसे चले ?

द्वितीय पुरुष : जाने कैसे पता चलता है।

परस्पर संदेह। मशालों की रोशनी लुक-छिप करती गुजरती है।

द्वितीय पुरुष : सुन रहे हो न। यह किस जात का झुंड है ?

प्रथम पुरुष : यहां से क्या पहचाना जायेगा ? थोड़ी पास।

द्वितीय पुरुष : नहीं, नारे से, शोर से पहचाना तो जा सकता है।

प्रथम पुरुष : मतलब ?

द्वितीय पुरुष : हर बात में मतलब, कानून, ये वो।

प्रथम पुरुष : तू एकदम बेमतलब है।

द्वितीय पुरुष : अबे चुप ! **मैदान देखकर** पता तो चल जाये, किस जात का झुंड है ? साले शोर भी करेंगे तो दूर से ही। पता कैसे चले ? **बेचैनी** वह अंगोछे वाला जिसकी आंखें बाहर निकली-निकली लगती थीं, साला डरपोक आंखों में चोर था, चोर। बच गया। तमाम चोर बच जाते हैं····वह घर पहुंच गया होगा। हां।

प्रथम पुरुष : **नीचे घूरते हुए, अपनी आंखें फैलाता है। दीवारों को छूता है।** मकड़जाल गंदा कूड़ा। सड़ा। जाने किस जात का है यह काला गंदा ?

द्वितीय पुरुष : **फुसफुसाते हुए, सशंकित** पता चले तब तो।

प्रथम पुरुष अचानक दीवारों को छूते हुए किसी वस्तु से टकरा जाता है।

द्वितीय पुरुष : **चीखते हुए** क्या हुआ ?

प्रथम पुरुष : **भयभीत-सा** टकरा गया था।

द्वितीय पुरुष तन जाता है। बायें हाथ से छड दाहिने हाथ में लेता है।

द्वितीय पुरुष : लेकिन किससे ?

प्रथम पुरुष : **खीझ से** चीखता क्यों है ? कोई चीज थी। ठोकर लगते ही गिर गयी।

द्वितीय पुरुष : **आतंक और क्रोध से** तू उधर क्यों जाता है ? तुझे दीखता नहीं है कि अंधेरा है ?

प्रथम पुरुष : अंधेरा भी कहीं दीखता है। अंधेरे में कोई चीज नहीं सूझती।

द्वितीय पुरुष : अब तू जाता क्यों नहीं ?

प्रथम पुरुष : मैं क्या तुझसे पूछकर जाऊं ? तू मेरा बाप है ?

द्वितीय पुरुष : **बड़बड़ाता है** खबरदार ! जरा-सी गड़बड़ करने की कोशिश की तो ठीक नहीं होगा।

प्रथम पुरुष : तू मुझसे लड़ेगा ?

द्वितीय पुरुष : और तू लड़ेगा ?

प्रथम पुरुष : अभी ठहर तू ! पहले पता तो कर लेने दे, घर किस जात का है।

द्वितीय पुरुष : **भद्दा-सा संकेत करते हुए** घर का पता चल जाये तो क्या कर लेता तू ? ढूंढ तो ऐसे रहा है जैसे बाप का घर भूल गया हो।

प्रथम पुरुष : तुम्हारे बाप का है न ? तू मुंह क्यों लगाता है मुझसे ?

द्वितीय पुरुष : तू टकराया किससे था ?

प्रथम पुरुष : तुझसे तो नहीं टकराया था न।

द्वितीय पुरुष : बेईमान सब।

प्रथम पुरुष : **अंधेरे में टेबुल उठाकर रखते हुए**। टेबुल। टेबुल थी।

द्वितीय पुरुष : **ऐंठकर** टेबुल थी। **बाहर का शोर कान लगाकर सुनने की चेष्टा में दूर से हलका-सा शोर उठता है।** शोर हो रहा है। **प्रथम पुरुष से** चुप। लगता है, नारे भी लग रहे हैं।

प्रथम पुरुष : इसमें पता कैसे चले ? सब कुछ शोर हो जाता है ⋯।

द्वितीय पुरुष : सचमुच। पता लगाना कठिन है, लेकिन ये चाहते क्या हैं ?

प्रथम पुरुष : घंटा चाहते हैं। पूछते होंगे कि घर किस जात का है ?
द्वितीय पुरुष : यहा भी पूछेंगे तब तो ?
प्रथम पुरुष : जरूर पूछेंगे।
द्वितीय पुरुष : फिर क्या करोगे ?
प्रथम पुरुष : करना क्या है ? हम भी बाहर निकलकर भीड़ में मिल जायेंगे।
द्वितीय पुरुष : अगर वे देखे तो ?
प्रथम पुरुष : वे देखेंगे कैसे ? चुपके से निकलेंगे··· ।
द्वितीय पुरुष : फिर ?
प्रथम पुरुष : फिर वे जैसा करेंगे, साथ तो देना ही पड़ेगा।
द्वितीय पुरुष : फिर हम भी पूछेंगे, घर किस जात का है ?
प्रथम पुरुष : धत् ! हमें मालूम है, इसमें कोई नहीं है, हम पूछेंगे किससे ?
द्वितीय पुरुष : साथ देने के लिए केवल ?
प्रथम पुरुष : हां-हां।
द्वितीय पुरुष : अगर कोई नहीं बोला तो ?
प्रथम पुरुष : कहां से ?
द्वितीय पुरुष : इस घर से।
प्रथम पुरुष : तब वे जलायेंगें। हम भी जलायेंगें—इसे।
द्वितीय पुरुष : केवल घर ही तो जलेगा।
प्रथम पुरुष : और क्या वे लोग बाहर के लिए मशाल लिये घूमते है ?
द्वितीय पुरुष : हमें उनके आने से पहले भाग जाना चाहिए।
प्रथम पुरुष : नहीं, अभी और अंधेरा होने दो ·· ।
द्वितीय पुरुष : हां-हां, अंधेरा···और होने दो··· क्या ठीक है, कहीं उनकी नजर पड़ जाये तो ? नहीं, एक बात कहता हूं—लंबा, दो धार वाला छुरा कहीं पेट में घोंप दें तब ? बेमौत मारे जायेंगे।
प्रथम पुरुष : मूर्ख की तरह बात करता है तू। मार ही देगा तो क्या गरदन, क्या पेट। मौत तो कैसे भी हो ही जायेगी। मेरे गांव में लाला भगवानदीन का बेटा मेवालाल सांप के काटने से मर गया। सांप ने भौंह के पास डंक मार दिया था—वह रात में दालान के पास सोया था। सुबह हुई तो···वह मर गया था। और उसकी लाश के चारों तरफ लोग थे। उसकी पत्नि हिचक रही थी—उसका बूढ़ा बाप बेचारा चीख रहा था—मेरे लाल। मेरा बेटा··· मेरा···· लहू ।

द्वितीय पुरुष : बेमतलब की बात। इसमें क्या बात हुई ? कोई मर जाये तो हंसना थोड़े संभव है ?

प्रथम पुरुष : नहीं, वह बात नहीं है। उसकी मौसी भी आयी थी—लड़के को देखकर रोने लगी। रोते-रोते कहती थी—थोड़े के लिए बच गया, नहीं तो आंख में ही काट लेता सांप।

द्वितीय पुरुष : बेमतलब की बात करता है।

प्रथम पुरुष : तू ही कह रहा था—छुरा पेट में घोंप देना बुरा लगता है।

द्वितीय पुरुष : मुझे बुरा लगता है।

प्रथम पुरुष : कमाल है, चाहे छुरा कहीं भी लगे, आखिर में तो मरना ही है न।

द्वितीय पुरुष : लेकिन कुरूप होकर मरना नहीं चाहता। और मरूंगा क्यों ? जितनी जिन्दगी ऊपर वाले से मिली है, उतनी तो जी लूंगा, बाद में जैसे सब मरते हैं···।

प्रथम पुरुष : सब मरते हैं। लेकिन अकाल मृत्यु नहीं चाहिए। **अंधेरे मैदान की ओर हाथ में छड़ लिये घूमता हुआ-सा।**

मैदान की ओर आदमियों के चलने-भागने और फुसफुसाकर बोलने की आवाजें।

क्या कहा ? यहीं खड़ा था वह ?

मेरी समझ में उसे मार दिया गया। क्या ? मार दिया ?

पता चला, कौन था ?

धत्। पता क्या चलेगा ?

लेकिन लाश कहां है ?

किस जात का झुंड था वह ?

मैदान में हलका-सा शोर। कुछेक दूरवर्ती आवाजें। पकड़ो भाग न पायें।

प्रथम पुरुष भयग्रस्त और नेपथ्य के अंधेरे की आवाजें सुनते हुए।

प्रथम पुरुष : कमीने। उल्लू की औलाद। लाशें हर जात में पैदा होती हैं।

द्वितीय पुरुष : कोई बेचारा मारा गया।

प्रथम पुरुष : **अनुमान करता हुआ। भयग्रस्त** वह चारपाई वाला आदमी था, भीड़ में चाय की दुकान की चौकी के नीचे छिप गया था···।

द्वितीय पुरुष : छिपे तो सभी थे, फिर निकल कैसे गये ?

प्रथम पुरुष : जान बचाने में ही जान जाती है।

द्वितीय पुरुष : फिर जान बचाते क्यों हैं ?

प्रथम पुरुष : मूर्ख है तू ! जान बचायें नहीं तो क्या करें ? छिपे रहने पर भी और छिपाना चाहिए। जितना छिप सको–छिपे रहो।

द्वितीय पुरुष : ठीक बात।

दोनों छिपने की कोशिश करते हैं। भुन्नाते हैं। 'छिपो, छिपे रहो' कहते, फिज्ड होते-होते प्रकट होते हैं।

प्रथम पुरुष : और तेरे आदमी। वे तो छिपे हुए हैं न ?

द्वितीय पुरुष : तुम बेकार संदेह पालते हो। मेरे कोई आदमी नहीं आये थे—भगवान जाने वे लोग कैसे होंगे··· ?

प्रथम पुरुष : भगवान की औलाद। भीतर बैठकर दंगे करवाता है और यहां बकता है ?

द्वितीय पुरुष : तुम शक्की हो।

प्रथम पुरुष : शक्की-फक्की। सब जानता हूं।

द्वितीय पुरुष : क्या जानता है तू ? मैं सभी लोगों की बात कर रहा था—सभी क्या छिपे हुए नहीं रहते हैं ? किसको किसकी खबर रहती है ?

प्रथम पुरुष : लेकिन तुमको सबकी चिंता क्यों है ? तू लीडरी करेगा ?

द्वितीय पुरुष : मैं पूछता हूं—तू सवाल-जवाब करने वाला है कौन ?

प्रथम पुरुष : तुम बेकार बड़बड़ कर रहे हो।

द्वितीय पुरुष : और तुम बोलते ही नहीं।

प्रथम पुरुष : मैं सच बोलता हूं—सभी छिपे थे तो कत्लेआम कैसे हो गया ?

द्वितीय पुरुष : मुझे क्या पता ?

प्रथम पुरुष : तब तू कैसे कह सकता है कि कत्लेआम हो गया ? सभी के छिपे रहने पर भी ?

अचानक साले···हट। जा···दी···बार···से···· दीवार टूट जायेगी···माक्।

द्वितीय पुरुष : **भयग्रस्त** हे भगवान।

प्रथम पुरुष : हे भगवान के बच्चे। मैं कहता हूं, यह ढेला किधर से आया ?

द्वितीय पुरुष : अयं ! हां···अंधेरे में किस तरफ से आया ? मैं क्या जानूं ?

प्रथम पुरुष : तू देखता क्या है ? तेरी आंख है कि बटन ?

द्वितीय पुरुष : तुम्हारी भी तो आंखें हैं ? तू ही देख तो अंधेरे में····।

प्रथम पुरुष : तू अंदाज भी नहीं कर सकता ?

द्वितीय पुरुष : अंधेरे में अंदाज होता है ?

प्रथम पुरुष : एकदम बेवकूफ। देहाती। बंदर।

द्वितीय पुरुष ढेले की जगह खिसकता जाता है। टूटे ढेले को उठाकर देखने की चेष्टा करता है।

: तू क्या करता है ? तू ढेला उठाकर रखना चाहता है ?

द्वितीय पुरुष : पागल हो क्या ? ढेला तो टूट गया।

प्रथम पुरुष : और दीवार ?

द्वितीय पुरुष : वह इसी तरह है।

प्रथम पुरुष : तू····तू··· मैं जानता हूं····अपनी जान बचाने के लिए तू बड़ा हथियार ढूंढता है··· लेकिन तू मर्द है तो आजमा कर देख ले···।

प्रथम पुरुष अपनी छड़ दिखाता है।

द्वितीय पुरुष : चोर की दाढ़ी में तिनका। तिनका भी नहीं, रुई।

प्रथम पुरुष : तू मुझे चोर बोलेगा ?

द्वितीय पुरुष : हां, तू चोर है। और अंधेरा होने दे, तब पता चलेगा।

प्रथम पुरुष : अंधेरा होने पर क्या पता चलेगा ?

द्वितीय पुरुष : कि तू चोर है।

प्रथम पुरुष : और तुम भलेमानुष हो ? हो न ?

द्वितीय पुरुष : सो मैंने कब कहा ?

प्रथम पुरुष : तू साबित तो करना चाहता है।

द्वितीय पुरुष : हर आदमी कोशिश करता है। यूं मैं इतना बड़ा बेवकूफ नहीं हूं कि यहां से भागने की कोशिश न करूं····।

प्रथम पुरुष : इतना बड़ा बेवकूफ ··बेमतलब। तुम बेवकूफ हो···उनमें बड़े नहीं हो कि···।

द्वितीय पुरुष : बेकार की बहस है।

प्रथम पुरुष : बेकार की बहस से ही तुम्हारा पता चलेगा। मैं जानता हूं, तुम बहसों में ही बता दोगे कि तुम्हारी जात क्या है।

द्वितीय पुरुष : अगर मैं बता दूं कि मैं ··।

प्रथम पुरुष : हां, हां, बोल तो ··।

द्वितीय पुरुष : **आहट लेता हुआ** मुझे लगता है, इस घर में कोई है। किसी की आहट आ रही है। **फुसफुसाकर** तू सुन तो। जरूर कोई है।

प्रथम पुरुष : एं।

द्वितीय पुरुष तू आहट सूंघता है ?

प्रथम पुरुष : नहीं, मैं जानता हूं··· इस तरह पांव घसीट कर औरतें ही चलती हैं ···।

द्वितीय पुरुष : सच ?

प्रथम पुरुष : मैं झूठ नहीं बोलता।

द्वितीय पुरुष : **आहट लेता हुआ** लगता है, इस कोने से आयी और मैदान की ओर भाग गयी···।

प्रथम पुरुष : जाने दो। बला टली। कहीं यह घर उसी का न हो···?

द्वितीय पुरुष : हां, कहीं उसी का घर न हो। अंधेरे मे भटक गयी है शायद।

प्रथम पुरुष : लगता है, तुम्हारी बात सही है।

द्वितीय पुरुष : लेकिन यह घर किसका है ?

प्रथम पुरुष : उसी औरत का होगा। औरत की जात क्या है ?

द्वितीय पुरुष : पहले यह तो पता चले कि घर किसका है ?

प्रथम पुरुष : अबे। यह उसी औरत का घर होगा। मैं अंदाज तो कर ही सकता हूं···।

द्वितीय पुरुष : अगर न हो तब ?

प्रथम पुरुष : तब··तब··· यह हो नहीं सकता औरत का इधर से उधर भागते हुए जाना··· यह घर उसी का है।

द्वितीय पुरुष : तब वह मैदान की ओर क्यों भाग गयी ?

प्रथम पुरुष : अंधेरे में पहचान नहीं पायी होगी।

द्वितीय पुरुष : अपना घर ··चाहे कितना भी अंधेरा हो, पहचान लेना मुश्किल नहीं है।

प्रथम पुरुष : तब वह अपने आदमी की तलाश रही होगी।

द्वितीय पुरुष : क्यों ?

प्रथम पुरुष : इस हालत में अपना घर भी रोशनी में हो तो भी खतरा पैदा कर देता है।

द्वितीय पुरुष : मतलब ?

प्रथम पुरुष : वह अपने गिरोह के साथ इसमें घुसेगी।

द्वितीय पुरुष : **हतप्रभ** क्या करें ? अब क्या करें ?

प्रथम पुरुष : बस, इंतजार करना चाहिए। छड़ को सीधे रखना चाहिए। कोने में दुबक जाओ।

प्रथम पुरुष और द्वितीय पुरुष रंगमंच के कोने में दुबक जाते हैं। वहां उनकी टांगें दिख पड़ती हैं और धड़ का अग्र भाग।

द्वितीय पुरुष : सब बेकार। बेकार। कूड़ा। सब कूड़ा।····कहीं कोई जगह नहीं बची है।

प्रथम पुरुष : मैं तो अपने लोगों के नारे पहचानता हूं। साला। एक बार भी

इधर से···मेरी जात की भीड़ गुजरे कि मैं नौ दो ग्यारह हो जाऊंगा।

द्वितीय पुरुष : तुम भाग जाओगे ?

प्रथम पुरुष : तब क्या यहां मरूंगा ?

द्वितीय पुरुष : तुम्हारी जात क्या है ?

प्रथम पुरुष : तुम्हें बता दूं ? मुझे कमजोर समझ लिया है, है न ?

द्वितीय पुरुष : मैं भी अपनी जात की भीड़ का इंतजार कर रहा हूं।

प्रथम पुरुष : **ऐंठकर** तेरी जात की भीड़। क्या जात है तेरी ?

द्वितीय पुरुष : मैं क्यों बताऊं ?

प्रथम पुरुष : ठीक है। यह भी ठीक है। सब ठीक है।···मुझसे जात पूछता है···खुद नहीं बताता चालाक ! कायर ! **जोर से बोलता है** लेकिन अगर तू मेरी जात का हुआ तो ?

द्वितीय पुरुष : **हिकारत से** क्या जात है तेरी ?

प्रथम पुरुष : और तू नहीं बता सकता ?

भीड़ की एक टुकड़ी तेजी से गुजरती है। आवाजें गड्डमड्ड। "र···रतना की औलाद-स्साला···।" फिर आवाजें चारों ओर से गुजरने जैसी।

द्वितीय पुरुष : **थोड़ा फुसफुसाते हुए** किस जात की भीड़ है यह ?

प्रथम पुरुष : **किंचित तेज आवाज** जरूर मेरी जात की होगी।

द्वितीय पुरुष : असंभव।

प्रथम पुरुष : तू टांय-टांय बेकार करता है। मुझे सुनने दे···।

द्वितीय पुरुष : सब समझता हूं···सब।

प्रथम पुरुष : तुम घंटा समझते हो। वे तेजी से गुजर रहे थे, सुन···सुन ले किस जात के हैं ?

प्रथम पुरुष और द्वितीय पुरुष सुनने की चेष्टा करते हैं।

द्वितीय पुरुष : इतनी आवाज में पता लगाना बहुत मुश्किल है।

प्रथम पुरुष : सचमुच···ये जाहिल लोग खामखाह शोर करते आ रहे हैं **तैश में**···अरे ! किस जात की भीड़ है···सुनो···यह भीड़ किस जात की है ?

द्वितीय पुरुष : **भयभीत** चुप। क्यों चिल्लाता है ?

प्रथम पुरुष : मैं पता लगाना चाहता हूं।

द्वितीय पुरुष : जान का डर है या नहीं ?

प्रथम पुरुष : क्या पता चले, इस भीड़ में···जान का डर। पता तो चल जाये··· सब-कुछ गड़बोल हो गया है।

द्वितीय पुरुष छड़ को सीध में किये सामने की ओर झुकाता है, शोर को पहचानने की अनवरत कोशिश···मशालें और आवाजें गुजर रही हैं। अचानक बरामदे के अर्धभाग में मशाल की रोशनी देखता है। अचानक-अनायास रोशनी दीवार से होती हुई एक बंद कमरे में जिसकी कुंडी गिरी है और अंदर से बंद है, गिरती है···द्वितीय पुरुष अचानक चिल्लाता है।

द्वितीय पुरुष : मिल गया, सुनता है तू ?

प्रथम पुरुष चौंककर तुरंत छड़ सीधी करता है, फिर तनकर खड़ा हो जाता है।

प्रथम पुरुष : क्या बात है ?

द्वितीय पुरुष : **फुसफुसाते हुए** सुन, सुन तो ! **परस्पर कानाफूसी, भयग्रस्त मंत्रणाएं।**

प्रथम पुरुष : हां, दरवाजा बंद है।

द्वितीय पुरुष : मैं कहता हूं, उसके अंदर जरूर कोई है।

प्रथम पुरुष : क्या करें ?

द्वितीय पुरुष : जरूर यह घर—यह घर उसी का है।

प्रथम पुरुष : हो सकता है···हो सकता है··वह छिप गया हो।

द्वितीय पुरुष : लेकिन क्यों ?

प्रथम पुरुष : क्यों को छोड़। उसे निकालना चाहिए।

द्वितीय पुरुष : नहीं हो सकता है, अंदर बहुत आदमी हों···।

प्रथम पुरुष : नहीं, वह अकेला होगा, देखने की कोशिश तो करो, पहले, बिना जाने-सुने पता कैसे चले कि अंदर कौन है ?

द्वितीय पुरुष : अगर वह अकेला हुआ तो ?

प्रथम पुरुष : तो, तो उसे····।

द्वितीय पुरुष : **चीखता है** नहीं, यह संभव नहीं है मुझसे। मैं किसी की हत्या नहीं करना चाहता।

प्रथम पुरुष : हत्या करने को कौन कहता है ? केवल छानबीन के लिए जरूरी है। पता चल जाये तो।

द्वितीय पुरुष : फिर दरवाजे तक चल।

दोनों छड़े तानते हुए दरवाजे की ओर बढ़ते हैं। मशालें गुजरती

आती हैं और हलका-सा अंधेरा दरवाजे के इर्द गिर्द हिलने लगता है।

प्रथम पुरुष : हम ज्यों-ज्यों आगे बढ़ते हैं, अंधेरा फैलने लगता है।

द्वितीय पुरुष : नहीं, यार ! हम रोशनी तो पीछे छोड आये हैं।

प्रथम पुरुष : खाक छोड़ आये हैं ... पीछे।

द्वितीय पुरुष : असल में मशाल वाले गुजर गये हैं, मशालों की रोशनियां खत्म हो गयी हैं।

प्रथम पुरुष : सचमुच !

द्वितीय पुरुष : संभलकर अलग-अलग लेकिन सम्मिलित होकर इस दरवाजे पर चोट करना चाहिए।

प्रथम पुरुष : अंधेरे में ?

द्वितीय पुरुष : हां भई, अब उजाला कहां से लाओगे ?

प्रथम पुरुष : ठीक है।

द्वितीय पुरुष : ठहर, एक मिनट ठहर। अगर अंदर औरत हुई तो ?

प्रथम पुरुष : धत् तेरे की। कुछ भी तो निकले ... सांप या बिच्छू। पहले हमला तो करो।

द्वितीय पुरुष : लेकिन साथ-साथ। साथ-साथ हमला करना अच्छा होगा।

प्रथम पुरुष : मैं जानता हूं ... तुम डर रहे हो ... कहीं मैं तुम्हें पीछे से छुड़ न लगा दूं ... क्यों ?

द्वितीय पुरुष : यह बात नहीं है। तू समझता क्यों नहीं है ? साथ-साथ ठीक रहेगा ... समझा ?

प्रथम पुरुष : तो शुरू करो।

द्वितीय पुरुष : पहले दरवाजे पर दस्तक दो।

प्रथम पुरुष : कभी शत्रु को सावधान नहीं करना चाहिए। एकाएक हमला कर दो।

द्वितीय पुरुष : नहीं, अगर वह निहत्था हो तो ?

प्रथम पुरुष : तब तो और अच्छा है। दोनों मिलकर उसे पीट देंगे, प्यारे। वह हमारा दुश्मन है और दुश्मन हमेशा कसूरवार ....।

द्वितीय पुरुष : नहीं, बेकसूर को नहीं मारना चाहिए।

प्रथम पुरुष : कमाल है। वह हमारा दुश्मन है और दुश्मन हमेशा कसूरवार होता है।

द्वितीय पुरुष : लेकिन वह तो एकतरफा बात है। वह हमें दुश्मन समझे तब न ? वह तो ... अंदर है।

प्रथम पुरुष : इसीलिए वह हमारा दुश्मन है। अंदर क्यों बैठा है? बाहर निकल नहीं सकता ?

द्वितीय पुरुष : उसे क्या पता ?

प्रथम पुरुष : और पता चलता तो क्या हमें वह छोड़ देता ?

द्वितीय पुरुष : क्या ?

प्रथम पुरुष : क्या के बच्चे। पूछ कि कौन है अंदर ?

द्वितीय पुरुष : तू पूछ।

प्रथम पुरुष तैश में, दरवाजे के पास से लौटकर बरामदे में खड़ा हो जाता है, द्वितीय पुरुष बंद फाटक की ओर आशंका से देखता है। फिर धीरे-धीरे दरवाजे को छूता है, आशंकित। भागकर दूसरे कोने में खड़ा हो जाता है।

प्रथम पुरुष : तू डरपोक है। डरपोक आदमी, अंदर झांक तक नहीं सकता।

द्वितीय पुरुष : तुम बड़े बांके वीर हो न। तू ही क्यों नहीं पूछता है, दस्तकें देता है ? कुंडी पीटो।

प्रथम पुरुष : मैं तुम्हारा नौकर हूं या चरणसेवक ? मारे जाओगे तब पता चलेगा····।

द्वितीय पुरुष : क्या कहते हो तुम ?

प्रथम पुरुष : मैं ठीक कहता हूं···तुम मूर्ख हो। एक से बीस तक भी तुम्हें गिनना नहीं आता। तुम्हें इतनी अकल नहीं है कि पूछ सको।

द्वितीय पुरुष : इसमें अकल की क्या बात हो गयी ? तू मुझे अकल सिखायेगा ?

प्रथम पुरुष : अकल के साथ साहस तो होना चाहिए····तुम्हारा साहस मर चुका है····तुम मरे हुए हो···· ।

द्वितीय पुरुष : क्या बोलते हो तुम ?

प्रथम पुरुष : मैं ठीक कहता हूं···तुम मरे हुए सांप हो। साला न घर का न घाट का पहले पूछा, क्या जात तो ? कुछ नहीं, चुप लगा बैठा। कहां रहते हो ? तो···।

द्वितीय पुरुष : मैं ठीक बता रहा था, तुम····।

प्रथम पुरुष : तो गलत बताया। पूछता हूं, दंगा किसने करवाया ? तो चुप। कुछ फेंक दो तो····।

द्वितीय पुरुष : तुम, तुम अपनी जान बचाने····।

प्रथम पुरुष : छड़ नहीं फेंकी। कहता हूं दुश्मन अंदर में है, छिपा हुआ। दस्तक दो, तो छू के भाग आया।

द्वितीय पुरुष : मैं किसी की हत्या नहीं करना चाहता।

प्रथम पुरुष : तुम मुझे राजनीति सिखाओगे ? छड़··· मैं जानता हूं, तू··· मेरी जान का दुश्मन है। लेकिन याद रख, मुझे मारकर तू चैन से नहीं रह सकता। **विक्षिप्त-सा** मैं जानता हूं, हर-कुछ अंदर से शुरू है···ऊंचे-ऊंचे लोग साले। जाहिल···अल्पज्ञ लोग अंदर में। कंठ तक डूबे हुए हैं भ्रष्ट···मैं अपने लौंडे को जानता हूं····साला सोर्स भिड़ाता है···यहां जात का पता नहीं और भीड़ का नेता बनेंगे। गुलाम थे हजारों वर्षों तक गुलाम थे····और अब कानून छांटते हैं···खूब मालपूआ खाओ। ···मैं पूछता हूं, तू अंदर में देखता क्यों नहीं कि कौन-सी व्यवस्था है ?···गदहे। कौन है छिपा हुआ ?-

द्वितीय पुरुष : **हतप्रभ** यह तुम्हे क्या हो गया ? तू···ठीक तो है ? **छड़ सीधी करता है।**

प्रथम पुरुष : तू क्या समझता है ? मैं क्या पागल हूं ? यही मौका है··· हमारे लिए न कोई देश है, न कोई गांव···मैं केवल टिकना चाहता हूं···फिर हर जगह रहने की आजादी क्यों नहीं है ?

द्वितीय पुरुष : आश्चर्य है। **दरवाजे की ओर देखने लगता है** एक दरवाजे से आदमी पागल हो सकता है। फिर ? **भयग्रस्त।**

प्रथम पुरुष : मैं पागल नहीं हूं····आखिर तू इस दरवाजे पर हमला क्यों नहीं करता ?

द्वितीय पुरुष : और तू केवल खड़ा-खड़ा लेक्चर छांटेगा ? नहीं ?

प्रथम पुरुष : कमाल है। मैं तुम्हें रास्ता भी बताऊं और साथ भी दूं ?

द्वितीय पुरुष : तुम खुद बचना चाहते हो मुझे फंसाना चाहते रहे हो। मैं जानता हूं····पहले तुम्हीं आगे क्यों नहीं आते ?

अचानक मैदान में भेड़-बकरियों की आवाजों के साथ लोगों की भाग-दौड़ होने लगती है।

प्रथम पुरुष : **दरवाजे की ओर ताकते हुए छड़ सीधी रखते हुए बड़बड़ाता है।** सावधान ! सामने देख। लगता है। मेरी जात वाले हैं, पता लग जाये कि···**द्वितीय पुरुष प्रथम पुरुष की ओर देखकर घृणा से नाक-भौं सिकोड़ता है** देख लूंगा। तमाशा देखना हो तो घुस के देखो····।

द्वितीय पुरुष : फिर शुरु हो गया। एक सेकंड, एक मिनट भी चैन नहीं है। सब पागल, सब···।

दोनों मैदान में देखने लगते हैं।

प्रथम पुरुष : मार सालों को। खोज-खोजकर पीटो। एक भी बचने न पाये। पी···टो। **चीखता है।**

द्वितीय पुरुष की ओर हतप्रभ-सा देखने लगता है। बकरियां मिमियाती हैं।

द्वितीय पुरुष : बकरियां। इस भीड़ में ये कहां से चली आयीं ?

प्रथम पुरुष : **बाहर टोहते हुए** लगता है, आज भोज होगा। जिसकी जीत होगी वे भोज करेंगे···मांस, रोटी, दारू, ताड़ी, भांग··· ।

द्वितीय पुरुष : भूख तो मुझे भी लग रही है।

प्रथम पुरुष : तो चला जा···उन लोगों के साथ··· ।

द्वितीय पुरुष : नहीं। वे कहीं···मारपीट करें तो···?

प्रथम पुरुष : अबे ! भीड़ में पता थोड़े चलेगा ? एक आदमी तो छिप सकता है।

द्वितीय पुरुष : तू ही क्यों नहीं जाता ?

प्रथम पुरुष : मुझे भूख नहीं लगी है। और मैं भीड़ की जात पूछे बिना नहीं जा सकता। अगर वे···इसकी जात वाले हुए तो बेमौत क्यों मरूंगा ?

एक सन्नाता हुआ ढेला दरवाजे से टकराता है।

द्वितीय पुरुष : बेमौत ?··· सावधान ! **रंगमंच पर चीखता हुआ दरवाजे को छूकर पीछे पलटता है।** कौन ढेले फेंक रहा है ? **प्रथम पुरुष से** तूने देखा ?

प्रथम पुरुष : हट जा वहां से। नहीं तो सिर दो टुकड़ों में बंट जायेगा। लोग ढेले फेंक रहे हैं। चाहे जिसे लगे, जहां लगे, अंधाधुंध सिर्फ हमला है। भाग जा वहां से।

द्वितीय पुरुष : **सिर थामकर** बच गया मैं। **बैठ जाता है। अपनी अंगुलियां देखता है। फिर डरपोक-सा मैदान की ओर देखने की चेष्टा करता है। रुककर**··· एक बीड़ी है ?

प्रथम पुरुष : क्यों, भूख मिट गयी ? अब तलब लग रही है।

द्वितीय पुरुष : बीड़ी है तो फेंक। बेकार की बहस से क्या फायदा ?

प्रथम पुरुष : और माचिस ?

द्वितीय पुरुष : क्यों, माचिस नहीं है तुम्हारे पास ?

प्रथम पुरुष : है, लेकिन तू जलायेगा कैसे ? थोड़ी भी रोशनी होगी कि बाहर दंगा खड़ा हो जायेगा। मशाल वाले दौड़ेंगे।

द्वितीय पुरुष : मैं कोने में बैठकर हाथ से ढांप लूंगा तो।
प्रथम पुरुष : नहीं, रोशनी आखिर रोशनी है। कहीं···।
द्वितीय पुरुष : तू ला तो।
प्रथम पुरुष : नहीं। अंधेरे में बीड़ी भी भुक-भुक चलेगी। बिलकुल नहीं।
द्वितीय पुरुष : मत दे। मत दे, डरपोक।

दीवारों की ओर देखने लगता है। हलकी रोशनी का वृत्त चारों ओर फैलता है, बाहर से शोर की हलकी-सी आवाज भी है।

द्वितीय पुरुष : शायद शाम हो रही है।
प्रथम पुरुष : शाम हो गयी है। रात हो रही है देखता नहीं है क्या ? बाहर अंधेरा है। यहां कितना अंधेरा आ गया है।
द्वितीय पुरुष : कहीं कोई रास्ता नजर नहीं आता।
प्रथम पुरुष : रास्ते का क्या करेगा तू ? घर जाना है ?
द्वितीय पुरुष : हां।
प्रथम पुरुष : हूं। अभी जा सकता है ?
द्वितीय पुरुष : रास्ता ढूंढ रहा हूं।
प्रथम पुरुष : दीवारों में।
द्वितीय पुरुष : बकवास बंद कर। घर है तो रास्ता तो होगा ही।
प्रथम पुरुष : सामने से भाग जा न।
द्वितीय पुरुष : नहीं, भीड़ देख ले तो खामखा आफत हो जायेगी।
प्रथम पुरुष : तब क्या ढूंढ रहा है ?
द्वितीय पुरुष : मैं जानता हूं, हर घर का एक तीसरा दरवाजा होता है, हर घर-गांव का एक-दूसरा गांव होता है···आदमी के भीतर एक तीसरा आदमी बैठा होता है, हर औरत के पीछे एक और···।
प्रथम पुरुष : फिलासफर बनता है तू। सब के पीछे सब। यह भी कोई बात हुई, एक के पीछे एक ?
द्वितीय पुरुष : तू निरा ठूंठ है।
प्रथम पुरुष : मैं ठूंठ हूं ? मैं ! कानून का जानकार। तू मुझे ठूंठ कहता है ?
द्वितीय पुरुष : फिर नहीं तो तुम क्या हो ?
प्रथम पुरुष : मैं आदमी हूं।
द्वितीय पुरुष : **ऐंठकर** आदमी हूं। बड़ा आया आदमी।
प्रथम पुरुष : मैं आदमी का बाप हूं। मेरी बात से चिढ़ता है। ले चिढ़। मैं आदमी का बाप हूं। तू आदमी है ?
द्वितीय पुरुष : मैं आदमी हूं, लेकिन तुम मेरे बाप नहीं हो सकते।

प्रथम पुरुष : फिर कौन है तुम्हारा बाप ?
द्वितीय पुरुष : और तेरा ?
प्रथम पुरुष : पहले मैंने पूछा है···कमाल है। बड़बड़ किये जा रहा है।
द्वितीय पुरुष : मैं सब जानता हूं। तू जात का पता लगाना चाहता है।
प्रथम पुरुष : तू क्यों मेरे पीछे पड़ा है ?
द्वितीय पुरुष : तू क्या मेरे पीछे नहीं पड़ा है ?
प्रथम पुरुष : मैं किसी के पीछे नहीं पड़ता।
द्वितीय पुरुष : तुम पड़ते हो। तुम ठूंठ हो।
प्रथम पुरुष : गालियां मत दो।
द्वितीय पुरुष : **ऐंठकर** कानून जानते हैं।
प्रथम पुरुष : देख, मैं सावधान किये देता हूं। अब कभी एक लफज मुंह से निकाला तो मुझसे बुरा कोई नहीं होगा।
द्वितीय पुरुष : **ऐंठकर** मुझसे बुरा कोई नहीं होगा। **छड़ आजमाता है, फिर अपनी अस्तव्यस्त पोशाक को ठीक करता है। द्वितीय पुरुष प्रथम पुरुष की ओर हतप्रभ-सा देखता है। जेब में बीड़ियां खोजता है।** तलब लग रही है।
प्रथम पुरुष : क्या कहा ? तलब लग रही है ?
द्वितीय पुरुष : हां।
प्रथम पुरुष : बीड़ी मत पी। बीड़ी लगाने में भी खतरा है।
द्वितीय पुरुष : खतरा है। क्या खतरा है ?
प्रथम पुरुष : बार-बार बताना जरूरी है क्या ?
द्वितीय पुरुष : हां।

अन्यमनस्क-सा प्रथम पुरुष दीवारों के पास घूमता हुआ दरवाजे के पास आता है, जबकि द्वितीय पुरुष बड़बड़ाता हुआ कभी घर के इर्द-गिर्द फैले अंधकार को देखता है और कभी स्वयं सिर पकड़कर चिंताग्रस्त-सा प्रथम पुरुष की ओर देखने लगता है।

प्रथम पुरुष : **फुसफुसाते हुए** इस घर के भीतर जरूर कोई है।
द्वितीय पुरुष : कौन हो सकता है ?
प्रथम पुरुष : कोई तो जरूर है। **जासूस की तरह** दरवाजे के बाहर लगता है, किसी के पांव के निशान हों।
द्वितीय पुरुष : माचिस जलाकर देख तो।
प्रथम पुरुष : नहीं, माचिस से रोशनी फैल जायेगी। जानते हो न। थोड़ी-

सी रोशनी इधर-उधर फैली कि सत्यानाश ।

द्वितीय पुरुष : उतनी रोशनी से कुछ नहीं हो सकता, मेरी समझ में उन्हें पता ही नहीं चलेगा कि यहां रोशनी है ।

प्रथम पुरुष : कमाल है, रोशनी होगी और पता नहीं चलेगा ? कहीं पता चल जाये तो ।

द्वितीय पुरुष : बेकार का डर है, मैं कहता हूं । मैं कहता हूं, तू जलाकर तो देख ।

प्रथम पुरुष : ठीक है । लेकिन तू बीड़ी नहीं पी सकता । बीड़ी धुधकने लगेगी और मक्-मक् एक लाल धब्बे की तरह उसकी रोशनी अंधेरे में दीखेगी ।

द्वितीय पुरुष : अगर मैं बीड़ी जला भी लूं तो क्या हो जायेगा ?

प्रथम पुरुष : तुम्हें जलाने कौन देगा ?····तू दुश्मन से लड़ने···उसकी छान-बीन करने से बीड़ी पीने को ज्यादा अच्छा समझता है ? तू स्वार्थी है ।

द्वितीय पुरुष : बीड़ी पीना भी कोई स्वार्थ है ।

प्रथम पुरुष : सब कुछ स्वार्थ है और जान जाने के भय से अलग जो केवल धुआं पीना चाहते हैं वे तो डबल स्वार्थी हैं ।

द्वितीय पुरुष : मैं धुआं पीता हूं ?

प्रथम पुरुष : चेहरे से तो लगता ही है । जैसे कई दिनों से खाना न मिला हो ।

द्वितीय पुरुष : ऐसी बात नहीं ।

प्रथम पुरुष : **दरवाजे को निहारता है** बाहर से कोई कुंडी नहीं है । मतलब, मतलब दुश्मन अंदर से दरवाजा बंद कर···बैठा हुआ है । **दरवाजे से कान सटाता है** । लगता है, सांसें खींच रहा हो । **द्वितीय पुरुष से** सुन, कान लगाकर सुन तो । लगता है, भीतर में कई लोग बैठे कुछ बातें कर रहे हों ।

द्वितीय पुरुष : **छड़ बगल में सावधानीपूर्वक दबाता हुआ** तू सुन । मैं इस पचड़े में नहीं पड़ना चाहता । जाने यह किसका घर है ? जाने क्या-कुछ कहां-कहां फैला है ।

प्रथम पुरुष : गदहे ! सामने के दरवाजे के भीतर कानाफूसी चल रही है और तुम सोचने बैठ गये । मैं कहता हूं, जरूर कोई आदमी बैठा है अंदर और उसका कोई गुट भी होगा । हो सकता है, वह कभी भी औचक में हमला कर दे ।

द्वितीय पुरुष : तो पूछ कि कौन है ?

प्रथम पुरुष : साथ दे ।

द्वितीय पुरुष : अगर वह पूछे कि हम कौन हैं, तब ?

प्रथम पुरुष : हम कोई उत्तर नहीं देंगे ।

द्वितीय पुरुष : अगर वह दरवाजा नहीं खोले तब ?

प्रथम पुरुष : दरवाजा तोड़ देंगे ।

मैदान शोरगुल से भरने लगता है । 'मां मेरे गुब्बारे' की गड्ड-मड्ड आवाजें । 'भागो पकड़ो दौड़ो'...की अनुगूंज । दूरवर्ती कई हिंसक आवाजें ।

प्रथम पुरुष : मैं कहता हूं, दरवाजा तोड़ दो । अंदर चलो । अब तो डर और खतरा है । इंकलाबी इधर टपके तो खैर नहीं ।

द्वितीय पुरुष : मैं तो निर्दोष हूं ।

प्रथम पुरुष : निर्दोष के बच्चे, सुनता नहीं है तू । बाहर क्या हो रहा है और यह किसने कह दिया कि निर्दोष मारे नहीं जाते । किसी से आज तक सुना है ? तू दरवाजे के पास क्यों नहीं आता ?

द्वितीय पुरुष : आता हूं, लेकिन धोखा नही देना । कहीं ऐसा नहीं कि आगे बढ़ाकर खुद पीछे भाग जाओ··· ।

प्रथम पुरुष : हम साथ-साथ रहेंगे । आगे-पीछे का सवाल नहीं पैदा होता । एक साथ दरवाजे पर हमला कर दो । फिर कुछ-न-कुछ तो होगा ।

द्वितीय पुरुष : क्या कुछ ?

प्रथम पुरुष : ओ··· हो ! हमेशा संदेह पालते हो । यहां घुटते रहने से अच्छा है कि घर पर कब्जा कर लें ।

द्वितीय पुरुष : अगर वे संख्या में ज्यादा हुए तो ?

प्रथम पुरुष : होंगे तो होंगे । पहले पता तो चले कि इस घर में कौन छिपा है ? देख । देखता है ना ? बाहर कुंडी है ही नहीं । मतलब, दरवाजा भीतर से बंद है । तैश में भीतर कौन है, दरवाजा खोलो ।

द्वितीय पुरुष : **अचानक छड़ सीधी करके दरवाजे के पास आता है···छिटपुटे प्रकाश वृत्त में दोनों परस्पर देखते हैं, फिर अचानक चीखने लगते हैं ।** कौन है अंदर छिपा हुआ, दरवाजा खोलो ।

प्रथम पुरुष : दरवाजा खोलो । नहीं तो तोड़ देंगे ।

द्वितीय पुरुष : हां, तोड़ देंगे।

प्रथम पुरुष : यह मत समझना कि हम अकेले हैं।

द्वितीय पुरुष : हां, अकेले नहीं हैं। जल्दी दरवाजा खोलो नहीं तो तोड़ देंगे।

प्रथम पुरुष दरवाजे को पीटता है। द्वितीय पुरुष हाथ से दस्तक देता है।

प्रथम पुरुष : दरवाजा खोल। खोल दरवाजा।

द्वितीय पुरुष : दरवाजा क्यों नहीं खोलता ?

प्रथम पुरुष : तू चैन से नहीं बैठ सकता ? तेरे बाप का घर नहीं है। खोलता है या नहीं ?

द्वितीय पुरुष : खोल।

प्रथम पुरुष थक जाता है।

द्वितीय पुरुष : लगता है, कोई नहीं है।

प्रथम पुरुष : **हांफता हुआ** है क्यों नहीं ? नहीं होता तो दरवाजा खुलता क्यों नहीं ? अंदर से बंद करके बैठा है।

द्वितीय पुरुष : क्या करें ?

प्रथम पुरुष : ठहर एक मिनट। जरा सुस्ता लें···।

दोनों फिर अलग-अलग बैठकर हांफते हुए मैदान की भागती भीड़ और थकी आवाजों को अन्यमनस्क-से सुनते हैं।

प्रथम पुरुष : तू कहां था ? तू कहां का है ?

द्वितीय पुरुष : एक बार तो बता दिया···।

प्रथम पुरुष : हां, याद आया। लोहे वाला पुल। वहां कौन-सी जात के लोग ज्यादा हैं ?

द्वितीय पुरुष : **कान खुजलाने लगता है। अनसुना करके** मैं नहीं जानता।

प्रथम पुरुष : चल उठ। दरवाजा तोड़ दे।

द्वितीय पुरुष : क्यों ?

प्रथम पुरुष : दुश्मन अंदर है। वह न तो नरहिया का है, न फिटकी का समझा, यह यहीं का है और कभी भी दरवाजा खोलकर हमला कर देगा।

द्वितीय पुरुष : सचमुच।

प्रथम पुरुष : चल उठ।

मैदान की ओर धीमी और नजदीक और कभी दूर के शोर में घुली हुई 'मां मेरे ऽ गुब्बारे ऽऽ' की आवाज।

द्वितीय पुरुष : ठीक है।

दोनों छड़ों को सीधा करके दरवाजे पर टूटते हैं। रंगमंच पर 'खटक-खटक' छड़ और दरवाजे के बाह्य संघर्षण से निष्पन्न लय फैलती है।

प्रथम पुरुष : और जोर से **खटाक** खोल।

द्वितीय पुरुष : दरवाजा खोल। **खटाक** खोल।

परस्पर की आवाजों और छड़ की चोट से अचानक दरवाजे का एक पल्ला गिर जाता है। दरवाजे के अंदर भयावह अंधेरा। सिर्फ दोनों की आकृतियां, छड़ और पैर दीखते हैं।

प्रथम पुरुष : टूट गया। भीतर चल।

द्वितीय पुरुष : साथ-साथ चल।

अंधेरे में दोनों के चलने और लाठी की तरह टेकने की आवाजें।

प्रथम पुरुष : अंदर कौन है? कोई है?

द्वितीय पुरुष : कोई है तो बाहर निकल।

प्रथम पुरुष : **चलते हुए** आगे खड्डा लगता है।

द्वितीय पुरुष : कमरे में खड्डा क्यों होगा?

प्रथम पुरुष : लकिन वे लोग कहां गये?

द्वितीय पुरुष : कौन लोग?

प्रथम पुरुष : जिनकी आवाजें हम लोग सुन रहे थे।

द्वितीय पुरुष : पता नहीं। हो सकता है, भाग गये हों।

प्रथम पुरुष : रास्ता तो दीखता नहीं।

द्वितीय पुरुष : संभलकर आगे बढ़ो। कुछ नजर नहीं आता। जाने कैसा अंधेरा आ गया है।

प्रथम पुरुष : दियासलाई जलाकर देखूं?

द्वितीय पुरुष : हां, देख लो।

प्रथम पुरुष दियासलाई जलाता है। दियासलाई की मृत रोशनी में कमरे का एक अदना भाग, जिसमें ढेर कचरे, कपड़े के गट्ठर के अलावा टूटी कुरसियां, चारपाइयां, अलमारियों का अंबार-सा दीखता है।

प्रथम पुरुष : बहुत सामान है।

द्वितीय पुरुष : सभी टूटा-फूटा है।

प्रथम पुरुष : **दियासलाई बुझ जाती है** कितना अंधेरा आ गया। मैं कहता हूं, इधर ही कहीं और दरवाजा होना चाहिए।

दीमक काठ की अलमारियों को कुतरता है।

द्वितीय पुरुष : हां, होना चाहिए। लेकिन यह आवाज कैसी है ?
प्रथम पुरुष : दीमक है शायद।
द्वितीय पुरुष : वे यहीं कहीं बैठे होंगे।
प्रथम पुरुष : अबे, कहां से होंगे। वे शायद भाग गये।
द्वितीय पुरुष : यहां सिर्फ अंधेरा है।
प्रथम पुरुष : क्या खाक है। यह अच्छा है।
द्वितीय पुरुष : क्या खाक अच्छा है। इतनी मेहनत के बाद भी अंधेरा ही हाथ लगा। कहां तो हम दुश्मनों की उम्मीद किये बैठे थे।
प्रथम पुरुष : अंधेरा है। इसीलिए सब-कुछ संभव है।
द्वितीय पुरुष : क्या संभव है ?
प्रथम पुरुष : दुश्मन का होना। हर-कुछ संभव है।
कुछेक सैकेंड तक दीमकों की आवाजें। बाहर शोर गुल में आठ वर्षीया बालिका के रोने की आवाज।
द्वितीय पुरुष : बाहर से रोने की आवाज आ रही है।
प्रथम पुरुष : **चीखते हुए** सावधान। दरवाजे से बाहर आकर देखना चाहिए।
दोनों मैदान की ओर छड़ें ताने हुए, सैनिक की तरह आगे बढ़ते हैं। लेकिन बरामदे पर जाकर रुक जाते हैं। हिंसक आंखों से भीड़ को देखते हैं।
द्वितीय पुरुष : अकेला कोई नहीं दीखता।
प्रथम पुरुष : दीख जाये, तब तो। सिर्फ भीड़ है, चीख-चिल्लाहट है। अंधेरे में मशालें किसी जानवर की चमकती आंख की तरह दीखती हैं।
द्वितीय पुरुष : **कान लगाकर सुनने की चेष्टा** शायद कोई बच्ची रो रही है। ध्यान से सुनो। मैं कहता हूं, यह अब भी आफत की जड़ है। **छड़ पटकने लगता है।** आफत की जड़। आफत। साला पीछा छुटाना मुश्किल...।
प्रथम पुरुष : **अचानक हाथ में छड़ उठाकर** ऐ लड़की, चुप रह। **फिर रोती हुई लड़की से** ऐ लड़की, चुप रह। भाग यहां से। **खुद अंधेरे में भागता है और लड़की को घसीटते हुए कमरे में धकेलता हुआ भागता है।**
द्वितीय पुरुष : कहां जा रहे हो ?
प्रथम पुरुष : **अंधेरे में चीखते हुए** फिटकी गांव। लोहे वाला पुल।

द्वितीय पुरुष : छड़ उठाकर बच्चों की ओर भय से देखता है और अंधेरे में भागता हुआ मैं भी जा रहा हूं...।

अंतराल। अंधेरा, शोर और खोये हुए घर में एक आदमी। शिशु की आवाज। भागने का स्वर—थप्-थप्-थप्...। अंधकार में प्रथम और द्वितीय पुरुष परस्पर टकरा जाते हैं।

प्रथम पुरुष : तुम कहां जा रहे हो ?

द्वितीय पुरुष : नरहिया। जिला दरभंगा।

प्रथम पुरुष : अब कभी मेले में नहीं जाऊंगा।

द्वितीय पुरुष : मैं भी। एक बात बताओगे ?

प्रथम पुरुष : पूछो, जल्दी पूछो।

द्वितीय पुरुष। यह घर किस जात का है ?

प्रथम पुरुष नहीं मालूम।

द्वितीय पुरुष : बच्ची रो रही है।

प्रथम पुरुष : नाबालिग है। रोने दो। हम क्या कर सकते हैं ?

दोनों विपरीत दिशाओं में भागते हैं। दोनों के हाथ की लोहे की छड़ें ऊपर हैं। घर में बच्ची के रोने की आवाज थम-थमकर आती है और अंधेरा घर के चारों ओर फैल जाता है।

शोर, आवाज मेले की जगह पसर कर एक तरफ झुकी हुई लगती है, जहां से दो आदमी विपरीत दिशाओं में जा रहे हैं।

पटाक्षेप।

कल्पना के खेल

ललित मोहन थपल्याल

पात्र

मिस्टर टी०/सूत्रधार/प्रोफेसर रतननाथ
मिस्टर मूर्ति/मिस्टर मुरारी
मिसेज मूर्ति/नटी/मिसेज मुरारी
मिस्टर कुमार
मिसेज कुमार
मिस्टर भाटिया
मिसेज भाटिया
कुछ लोग

हवालात

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

पात्र

तीन लड़के
सिपाही

बर्फीली तूफानी रात, तेज हवाएं, पार्क के एक कोने में एक नंगे पेड़ के नीचे तीन फटेहाल लड़के, उम्र बीस के आसपास, सर्दी में ठिठुरते हुए खड़े हैं। वे बारी-बारी से मंच पर दौड़कर फिर एक दूसरे से चिपककर खड़े हो जाते हैं। अचानक पुलिस की सीटियां बजने लगती हैं। भारी भरकम बरान कोट पहने एक पुलिसवाला दौड़ता हुआ आता है।

सिपाही : साले भाग रहे थे।

लड़का—१ : कौन भाग रहा था ?

सिपाही : तुम लोग।

लड़का—२ : **आश्चर्य से** हम लोग ?

सिपाही : हां, हां, तुम लोग।

लड़का—३ : **दोनों को आंख मारकर** हां, हां, माफ कीजियेगा, हम भूल गये थे। सचमुच हम लोग भाग रहे थे।

लड़का—१ : आपसे डरकर।

लड़का—२ : तेजी से भाग रहे थे हम लोग, सांस फूल गयी हमारी। **तीनों हांफने लगते हैं।**

लड़का—३ : पर आपने, साहब, पकड़ ही लिया। अपराधी और पुलिस में यही फर्क होता है।

लड़का—१ : अपराधी पुलिस से तेज नहीं भाग सकता।

सिपाही : **हैरत से** क्या करते हो तुम लोग ?

तीनों एक क्षण एक दूसरे का मुंह देखते हैं।

लड़का—२ : यही, सोचते रहते हैं कि क्या करें ?

लड़का—३ : **दूसरे को आंख मारकर** और बहुत से खतरनाक काम करते रहते हैं।

लड़का—१ : जो हम आपको हरगिज नहीं बतायेंगे।

सिपाही : नहीं बताओगे ? सालों, हवालात की हवा खाओगे ?

तीनों लड़के : **कांपते हुए** ले चलिए, सर, जल्दी हवालात ले चलिए।

सिपाही : देखी है हवालात कभी ?

लड़का—२ : आपकी तरह ही शानदार होगी।

लड़का—३ : पार्लियामेंट स्ट्रीट वाली देखी है, साहब, पर बाहर से। संसद की इमारत से मिलती-जुलती है। लगता है एक ही इंजीनियर ने बनाया है, दोनों को।

लड़का—१ : **जेब से टटोलकर एक बीड़ी निकालकर** लीजिए, बीड़ी पीजिए, सर, और हमें हवालात ले चलिए। **दियासलाई दूसरे लड़के से लेकर तीसरा लड़का बीड़ी जलाता है।**

सिपाही : **कश लेकर** तुम तीनों के नाम क्या हैं ? सालों, जल्दी बताओ।

लड़का—२ : हम तीनों के नाम अलग-अलग हैं।

लड़का—३ : वैसे हम जब चाहते हैं आपस में नाम अदल-बदल भी लेते हैं।

लड़का—१ : और जब चाहते हैं एक में मिला भी लेते हैं।

लड़का—२ : इस तरह एक नाम के हो जाते हैं।

लड़का—३ : झंडे की तरह।

सिपाही : **कड़क कर** मैं नाम पूछ रहा हूं, कमीनों।

लड़का—१ : यहां क्यों ? वहीं हवालात में पूछ लीजियेगा।

लड़का—२ : वहां आप भी आराम से होंगे।

लड़का—३ : और हम भी।

लड़का—१ : काफी समय होगा।

लड़का—२ : न आपको जल्दी होगी।

लड़का—३ : न हम को।

सिपाही : बकवास बंद करो। नाम बताओ।

लड़का—१ : **घबराने का नाटक करते हुए** मेरा नाम दरोगा सिंह है, वल्द कोतवाल सिंह थाना सेवानगर।

लड़का—२ : मेरा नाम कलट्टर सिंह, वल्द जरनैल सिंह, थाना सेवानगर।

लड़का—३ : मेरा नाम हनुमान मंत्री, वल्द हवापति ···

सिपाही : थाना सेवानगर ! तुम तीनों, सालों, हमारे हलके के हो और ये हरकत ?

लड़का—१ : लानत भेजिए, साहब, हम को।

लड़का—२ : मारिए-पीटिए।

लड़का—३ : और तुरंत हवालात में बंद कर दीजिए। फौरन, देर मत लगाइए।

सिपाही : **कुछ हैरत से** मैं पूछता हूं तुम भागे क्यों थे ?

लड़का—१ : **कुछ सोचकर** बता दें साहब, सच···सच···

सिपाही शान से हां-सूचक सिर हिलाता है।

लड़का—१ : बात यह है, सर, मैंने जेब काटी थी। भाग रहा था कि आपकी सीटी बज गयी। फिर रफ्तार तेज करनी पड़ी।

सिपाही : हूं, तो तुम हो वह आदमी ?

लड़का—१ : जी हां, दरोगा सिंह।

लड़का—२ : और, सर, मैंने हत्या की है। लाश की उंगली से हीरे की अंगूठी उतारने ही जा रहा था कि आपकी सीटी सुनाई दी। क्या करता, सर, भागना पड़ा।

सिपाही : अच्छा तो तुम हो···

लड़का—२ : जी हां, कलट्टर सिंह।

लड़का—३ : मैं, सर, नक्सलवादी हूं। टाइम बम लगा रहा था। आपकी सीटी न बज गयी होती तो अब तक एक धमाके से सब कुछ उड़ गया होता। पूरी पार्लियामेंट स्ट्रीट। हम लोग बहुत खतरनाक आदमी हैं, सर। हमें तुरंत हवालात में बंद कर दीजिए।

तीनों सर्दी से कांपते हैं।

सिपाही : **कुछ सोचता हुआ** सालों, कमीनों, सबूत ?

लड़का—१ : मैं पर्स दिखा सकता हूं।

लड़का—२ : मैं लाश से उतारी अंगूठी।

लड़का—३ : मैं बिना फटा बम। आप तीनों सबूत इकट्ठे कर लीजिए और हमें हवालात ले चलिए। हम लोग अपराधी साबित होने में आपकी पूरी मदद करेंगे।

सिपाही : सालों, मैं कच्ची गोलियां नहीं खेलता। तुम लोग यहीं सड़ोगे। मैं केवल यह जानना चाहता हूं कि तुम लोगों में से वह एक कौन था जो अभी भागा था ?

लड़का—१ : भागे तो हम तीनों थे।

सिपाही : नहीं, एक भागा था। और वह कौन है ?

लड़का—२ : भागे तो हम तीनों थे।

सिपाही : नहीं, एक भागा था।

लड़का—३ : हम तीनों को बांटिये नहीं, सर। खुद सोचिए, आप समझदार हैं। कोई एक कैसे भाग सकता है।

सिपाही : **कड़ककर** नहीं, एक भागा था और वह कौन था ?

तीनों एक दूसरे का मुंह देखते हैं।

लड़का—१ : नहीं मानते तो एक ही सही।

लड़का—२ : पर सोचिए तो सही, एक आदमी कैसे भाग सकता है ?

सिपाही : क्यों ? क्या उसके पैर ऊपर हो जायेंगे ?

लड़का—३ : नहीं, सर, आप जानते ही हैं भागने के लिए भय चाहिए। भय के लिए दो और का होना जरूरी है। एक डराने वाला, एक बचाने वाला। तीन हो गये, सर। हम तीनों थे। तीनों भागे थे।

सिपाही : पर आवाज एक के कदमों की कैसे आ रही थी ?

लड़का—१ : यह अभ्यास की बात है····

लड़का—२ : हम तीनों ख़तरनाक अपराधी हैं, सर, इसकी बड़ी मश्क की है···

लड़का—३ : कि इस तरह भागें कि लगे एक आदमी भाग रहा है।

लड़का—१ : आप लोगों ने कवायद सीखी होगी···

लड़का—२ : अच्छी कवायद में लगता है एक आदमी चल रहा है, पैर पटक रहा है।

लड़का—३ : इससे संगठन का, एक होने का भाव आता है।

लड़का—१ : हम लोग अभी आपको भागकर दिखा सकते हैं।

लड़का—२ : पर आपको परेशानी में नहीं डालना चाहते।

लड़का—३ : आप नेक आदमी ! हमें हवालात में ले जायेंगे।

लड़का—१ : नेक के साथ हम बदनीयत कैसे हो सकते हैं।

लड़का—२ : आप हवालात ले जा रहे हैं, इस अहसान को हम कैसे भूल सकते हैं।

लड़का—३ : आज के समय में इतना भी कौन करता है।

लड़का—१ : वैसे एक से एक कामचोर सिपाही हमने देखे हैं।

लड़का—२ : एक आध डंडा मारकर छुट्टी कर देते हैं।

लड़का—३ : पकड़ने में सालों की नानी मरती है।

सिपाही : **तिलमिलाकर** सालों, तुम कहना क्या चाहते हो ? तुम तीनों भागे थे और हमने एक आदमी देखा ? हम अंधे हैं ?

तीनों फिर एक दूसरे को देखते हैं।

लड़का—१ : यही हमारा कमाल है, साहब।

लड़का—२ : सारी उम्र हम इसका अभ्यास करते रहे।

लड़का—३ : बिलकुल सीधी लाइन हमारी होती है, पीछे से एक दिखाई दे।

सिपाही : मैं पीछे से नहीं, बगल से देख रहा था।

लड़का—१ : कहीं से भी देखिए, एक दिखायी देगा।

लड़का—२ : हम कोण बदल लेते हैं।

सिपाही : जा, तेरे बाप भी···

लड़का—३ : हम स्वार्थी हैं। कोण का संबंध स्वार्थ से होता है। आप डाकुओं के बीच जरूर रहे होंगे। बड़े से बड़े गिरोह का भी कोण एक ही होता है।

लड़का—१ : फिर, ताकतवर को ताकत कम दिखायी भी देती है।

लड़का—२ : आप ताकतवर जो ठहरे।

लड़का—३ : आप नेताओं के साथ भी रहे होंगे। नेताओं में कोणवाली बात आपने साफ-साफ देखी होगी। ऊपर से एक ही पार्टी दीखेगी पर होगी तीन ····

सिपाही : **घबराकर** तुम लोग पहेली मत बुझाओ। क्या भागने वाला तुम लोगों में से कोई नहीं था ?

तीनों फिर एक दूसरे को देखने लगते हैं।

लड़का—१ : हम जानते थे, हारकर आप इसी नतीजे पर पहुंचेंगे।

लड़का—२ : सब पहुंचते हैं।

लड़का—३ : यह तो ऐसा ही है कि तिरंगा अंधेरे में फड़फड़ाये और आप उसे ढूंढते आगे निकल जायें।

सिपाही : क्या मतलब ?

लड़का—१ : यूं समझिए हम लोग तीन रंगों की पट्टियां हैं।

लड़का—२ : झंडा एक है।

लड़का—३ : हम फड़फड़ाये थे। एक थे इसलिए एक साथ। इसलिए आपको एक ही तो दिखायी देता, चाहे जिस कोण से देखते।

लड़का—१ : यकीन मानिये, अभी हम तीनों एक साथ फड़फड़ाये थे।

लड़का—२ : हमारी किस्मत का चक्र उस फड़फड़ाने में लगा था कि दौड़ रहा है, तेजी से दौड़ रहा है।

लड़का—३ : पर वह दौड़ता दीखता भी वहीं स्थिर था। आगे बढ़ा नहीं। आप हमें हवालात ले चलिए।

सिपाही : ठीक है, ठीक है, अपने सबूत लाओ।

लड़का—१ : अपनी जेब देखिए। आपका पर्स जेब में है ?

सिपाही : हां है।

लड़का—१ : यह वही नीले रंग वाला पर्स है जिसे मैंने किसी की जेब से उड़ाया था और आपकी सीटी की आवाज सुनकर फेंक दिया था। पर्स निकालिये और देखिये।

सिपाही : **पर्स निकालता है** यह तो मेरा पर्स है।

लड़का—१ : सारे देश का पर्स आपका है, सर। खोलकर देखिए इसमें न आपके नाम का कार्ड होगा न आपकी बीवी का चित्र। यह मेरे जेबकतरा, चोर होने का सबूत है। मेहरबानी कर इसे न हड़पिये। आप दयालु है।

सिपाही : **कुछ सोचकर** अच्छी बात है। तुम उधर बैठ जाओ।

लड़का-१ अलग हटकर अपराधी की मुद्रा में बैठ जाता है।

लड़का—२ : और मेरा सबूत आपकी उंगली में है। यह वही हीरे की अंगूठी है जिसके लिए मैंने हत्या की थी पर लाश की उंगली से निकाल नहीं पाया, आपकी सीटी बज गयी।

सिपाही : गलत बात। यह अंगूठी मुझे ससुराल से मिली है।

लड़का—२ : सारा देश ही आपको ससुराल से मिला है, सर। पर यह असली है या नकली, इसका पता न आपको है न हमको।

सिपाही : ठीक है। तुम भी उधर बैठो।

दूसरा लड़का भी हटकर अपराधी की मुद्रा में बैठ जाता है।

लड़का—३ : और, सर, मेरा बम आपकी पुलिस लाइन में पड़ा है। टाइम बम है। यदि आप जरा-सा उसे लगा आने दे तो ऐसा धमाका होगा कि व्यवस्था का पुर्जा-पुर्जा उड़ जाएगा। मैं एक बम रख रहा था कि आपकी सीटी बज गयी। मैं ठीक से लगा नहीं पाया। भाग खड़ा हुआ। सारा विद्रोह फुस्स हो गया। अगर इतना सबूत काफी न हो तो थोड़ा इंतजार कीजिये और अगला धमाका देखिये।

सिपाही कुछ सोचता है।

सिपाही : तुम भी उधर बैठो।

तीनों अपराधी की मुद्रा में बैठ जाते हैं। सिपाही जेब से कपड़ा निकालता है। सबकी आंखों पर पट्टी बांधता है। तीनों के हाथ पीछे बांध देता है। सीटी बजाता है। उन्हें ले चलता है। वह उन्हें मंच पर घुमाता है और अंत में उन्हें छोड़कर एक ओर खड़ा हो जाता है। वे तीनों घूमते रहते हैं।

लड़का—१ : अभी और कितनी दूर चलना है ?

लड़का—२ : कुछ तो दिलासा दीजिए।

लड़का—३ : आप इतने चुप क्यों हैं ?

लड़का—१ : लगता है आप नाराज हो गये ?
लड़का—२ : आपको बीवी-बच्चों की याद आ रही है क्या ?
लड़का—३ : हम लोग इस मामले में अच्छे हैं। ऐसी कोई झंझट नहीं।
लड़का—१ : हम लोग अपने ही बाप हैं अपने ही बच्चे।
लड़का—२ : अपने ही मियां अपने ही बीवी।
लड़का—३ : हम लोगों का बाहर कोई नहीं। खुद ही सब कुछ हैं अपने भीतर।
सिपाही : सालों, जानते हो तुम लोग कहां जा रहे हो ?
लड़का—१ : जहां आप ले जा रहे हैं।
लड़का—२ : आप, हमारे माई-बाप।
लड़का—३ : हवालात।
लड़का—१ : लेकिन रास्ता आप बहुत लंबा कर रहे हैं।
लड़का—२ : वैसे जब आंख में पट्टी बंधी हो तो हर रास्ता लंबा हो भी जाता है।
लड़का—३ : यदि दिल-दिमाग दुरुस्त हो तो....
सिपाही : आंख में पट्टी इसलिए बंधी है, सालों, कि तुम लोग अपने ठिकाने से हवालात का रास्ता पहचान न सको।
लड़का—१ : अपना कोई ठिकाना नहीं, सर।
लड़का—२ : एक नंगा पेड़ है बस।
लड़का—३ : झंडे का डंडा, उसी से चिपटे फड़फड़ाते हैं।
सिपाही : वह नंगा पेड़ घुसा दूंगा।
लड़का—१ : क्यों, सर ?
सिपाही : बकवास बहुत करते हो तुम लोग।
लड़का—२ : यह तो रास्ता काटने के लिए है।
लड़का—३ : बकवास से रास्ता कट जाता है। सारा देश काट रहा है। उसके कर्णधार काट रहे हैं।
लड़का—१ : आपको हमारी बातचीत बुरी लग रही है ?
लड़का—२ : फिर कुछ गायें ?
लड़का—३ : आपका मन बहलायें ?
सिपाही : हाल्ट ! लाइन में खड़े हो ! **जैसे कवायद करा रहा हो।**

तीनों आंख में पट्टी बांधे लाइन में खड़े होकर गाते हैं। सिपाही संगीत संचालक का भाव दिखाता है।

गाना

हम हवा में लात चलाते हैं वह हवालात ले जाते हैं।
हम सदा तरसते खाने को वह तरसा-तरसा खाते हैं।
क्या इतनी कृपा तुम्हारी कम
जो अभी शेष है दम में दम
हम पेट बजाते आते हैं वह गाल बजाते जाते हैं।
हम ऋणी तुम्हारे मौसम के
जो वार कर रहा है जम के
हम खून बहाते जाते हैं वह खून जमाते जाते हैं।
सदके हैं तुम्हारी फितरत के
जो दांव चल रहे बेखटके
हम आग लगाते जाते हैं वह आग छुपाते जाते हैं।
हम हवा में लात चलाते हैं वह हवालात ले जाते हैं।

लड़का—१ : सर, आप भी हमारे साथ गाइये।
सिपाही : चोप, सालों।
लड़का—२ : क्या आपको हमारा गाना पसंद नहीं आया ?
लड़का—३ : थोड़ा गर्म था, सर।
लड़का—१ : ऐसे गानों से सर्दी दूर होती है।
लड़का—२ : तेज हवा में नंगे पेड़ को आपने गाते सुना है ?
लड़का—३ : अपने भीतर।
लड़का—१ : बात यह है, सर, हम लोग ज्यादा पढ़-लिख नहीं पाये।
लड़का—२ : पढ़ने-लिखने का मतलब नौकरी पाना होता, वह हमें नहीं मिली।
लड़का—३ : और कुछ करने लायक हमें बनाया नहीं गया।
लड़का—१ : स्कूल में यही गाना हम गाते थे।
लड़का—२ : इसी तर्ज में।
लड़का—३ : वह शक्ति हमें दो दयानिधे कर्तव्य मार्ग पर डट जायें।
लड़का—१ : पर कर्तव्य मार्ग समझ में नहीं आया।
लड़का—२ : दिखायी नहीं दिया।
लड़का—३ : आपको तो दीखता ही है, सर। जल्दी हवालात पहुंचाइए। रात चढ़ रही है।
लड़का—१ : सर, आपने स्कूल में यह गाना गाया था या नहीं, कर्तव्य-मार्ग वाला ?

लड़का—२ : आपका गला अच्छा रहा होगा जो आप सिपाही बने ।
लड़का—३ : कुछ बोलिये, सर ।
लड़का—१ : चाहे गाली ही दीजिए ।
लड़का—२ : आप लोगों के मुंह से गाली बहुत अच्छी लगती है ।
लड़का—३ : भाषा की सही ताकत आप समझते हैं ।
लड़का—१ : हम लोगों ने बहुत कोशिश की, पर गाली देना नहीं सीख पाये ।
लड़का—२ : लगने लगता था खुद को गाली दे रहे हैं ।
लड़का—३ : पर गाली सहना खूब सीख गये हैं । हर एक की गाली हम सह लेते हैं । संकोच न कीजिए, सर, जम के गाली दीजिए । आखिर आपका हमारे ऊपर अहसान है । आप हमें हवालात ले जा रहे हैं ।
लड़का—१ : क्यों, सर, यदि हम लोग गाली सीख लेते तो पुलिस में नौकरी मिल जाती ?
लड़का—२ : बड़े भाग्य से गाली जुबान पर चढ़ती है ।
लड़का—३ : वैसे ऊपर चढ़ी रहती है ।
लड़का—१ : बोलिये, सर, आप बोलते क्यों नहीं ?
लड़का—२ : कुछ तो बोलिए, सर ।

सिपाही उनकी बातें सुनकर सुस्त, निढाल होता जा रहा है ।

लड़का—३ : लगता है मूतने लगा है ।

तीनों काफी देर खड़े आहट लेते रहते हैं ।

लड़का—१ : कितनी देर मूतेगा ?
लड़का—२ : काफी देर से रोके होगा । इनका भी हगना-मूतना बंद हुआ रहता है ।
लड़का—३ : सिपाही साहेब ! **जोर से चिल्लाता है ।**
सिपाही : क्या है, सालों, रुक क्यों गये ? चलते चलो ।
लड़का—१ : कितनी दूर है हवालात अभी ?
सिपाही : जितनी दूर तुम्हारी मौत है, सालों ।
लड़का—२ : हमें तो कहीं दिखायी नहीं देती ।
लड़का—३ : बचपन से हम उसे पाने की कोशिश कर रहे हैं ।
लड़का—१ : एक बार पकड़ में आने वाली थी, जब परीक्षा में फेल कर दिये गये थे । पर साली फिसल गयी ।

लड़का—२ : एक बार और पकड़ में आयी थी जब नौकरी में नहीं लिये गये, पर कमीनी सरक ली।

लड़का—३ : एक बार और आंखें चार हुई थीं जब, आपको क्या बतायें, कारखाने के मालिक के सीने पर रिवाल्वर रख दिया था। पर अहिंसा की भीतरी आवाज ने उंगली कर दी। आंखें नीचे हो गयीं। फिर वह नहीं मिली।

सिपाही : मौत आसानी से नहीं मिलती, बेटा।

लड़का—१ : यह आप तजुर्बे से कह रहे हैं ?

सिपाही : हां, तजुर्बे से कह रहा हूं।

लड़का—२ : सुनाइये, सर, अपना तजुर्बा। पर अब आंखों की पट्टी खोल दीजिये।

सिपाही : अपने को बहुत चालाक समझते हो, सालों। पट्टी खोल दीजिये। रास्ता समझ जाओ जिससे, जान जाओ किस रास्ते से हवालात जाया जाता है।

लड़का—३ : रास्ते की चिंता हमें नहीं है। पहुंचने की चिन्ता है।

सिपाही : लेकिन रास्ते की चिंता हमें तो है।

लड़का—१ : क्या रास्ते में आपका घर पड़ता है ?

लड़का—२ : वह तो मैं पट्टी बंधे होने पर भी देख रहा हूं। एक छोटी कोठरी है। एक टूटी खाट पर आपकी बीमार बीवी बिना दवा के पड़ी है। टीन के कनस्तरों और हांडियों में चूहों भर का राशन। बुझा चूल्हा है, काला, अधजली लकड़ी राख।

लड़का—३ : आपकी बीवी आपका इंतजार कर रही है कि आप कुछ पैसे लेकर आयेंगे। छीना-झपटी के ही सही। फिर वह चूल्हा जलायेगी। आपका भूखा बच्चा ललचाया हुआ गली में लावारिस घूम रहा है।

लड़का—१ : उसे हम देख रहे हैं, सर। आपकी शानदार वर्दी के नीचे तार-तार फटी मैली बनियान की तरह है वह। उसका स्कूल जाना बंद है। वहां आपके अमीर अफसरों के बच्चे पढ़ते हैं !

सिपाही : चोप, सालों ! **तिलमिलाकर जोर से चिल्लाता है। उसकी आवाज टकराकर लौटती है, गूंजती है।**

लड़का—२ : इसीलिए कहते हैं, सर, हमें जल्दी हवालात पहुचा दीजिये।

लड़का—३ : हममें आपमें कोई फरक नहीं। देखिए, इस बर्फीली रात में

आप भी भटक रहे हैं और हम भी। फर्क इतना है, आपके ऊपर एक मोटा लबादा है। गर्म लबादा। ताकतवालों का दिया हुआ। भीतर हमारी हड्डियां एक जैसी नंगी हैं। बेसहारा, चूर्मी हुई।

सिपाही का चेहरा उतरने लगता है।

लड़का—१ : सर, आप इतनी सर्द रात में बाहर क्यों निकल आये ? लकड़-बग्घे भी गुफा में मांद में बैठे रहते हैं। भूखे होने पर ही निकलते हैं। सच-सच बताइये, सर, आपको अपनी चिंता थी या हमारी ?

सिपाही : जबान बंद करो, सालों, नहीं खींच लूंगा। तू मेरा बाप है ? अदालत है जो हलफिया बयान दूं कि मैं इस रात में क्यों गश्त लगा रहा हूं ? तुझे बताऊं कि मेरी ड्यूटी क्या है ? तुम चोर उचक्कों, छटे गुंडे-बदमाशों को बताऊं ? तुम सालों का जवाब मेरे पास डंडा है।

लड़का—१ : हवालात भी तो है, सर।

लड़का—२ : हम जैसे आवारा, बदचलन, जरायमपेशा लोगों के लिए···

लड़का—३ : हवालात। वहां ले चलिए, सर, मेहरबानी कीजिए। बात यह है, सर, आप से क्या छिपायें ? ऐसी भयानक रात में हम जैसे चोर-उचक्के-हत्यारे, व्यवस्था-विरोधी लोगों का छुट्टा घूमना पूरे समाज के लिए घातक है। शहर में भेड़ियों के घूमने जैसा। आप व्यवस्था के रखवाले हैं। आपको हमें बंद रखना ही चाहिए।

लड़का—१ : यह बात दीगर है, सर, कि वही व्यवस्था आपको भी पीस रही है जो हमें पीस रही है। पर आपको उसकी रक्षा करनी है। आप जिम्मेदार आदमी हैं।

लड़का—२ : आपको चाहिए कि जिस रोटी के लिए आप लड़ रहे हैं उसी के लिए यदि हम लड़ें तो आप हम पर डंडा चलायें, हमें हवालात में बंद कर आयें।

लड़का—३ : और इस तरह कुचले हुए होने पर भी हमें कुचल दें। कोई आपका गला घोट रहा है, आप हमारा गला घोटें। आखिरकार जिंदा हम दोनों को ही नहीं बचना है। हवालात में आप भी हमारे साथ थोड़ी देर आराम कर लेंगे।

सिपाही : सालों, मुझे क्या करना है मैं जानता हूं। तुम्हारी सलाह की जरूरत नहीं। बहुत कुत्तों को भोंकते हुए मैंने सुना है। मैं वह पेड़ जड़ से काट देता हूं।

लड़का—१ : जो फूलने-फलने लायक होता है।

सिपाही : नहीं, सालों, जिनमें कांटे होते हैं। बीड़ी पिलाओ।

लड़का—२ : अब बीड़ी नहीं है सर। एक ही बीड़ी थी हम तीनों के बीच। वह भी आपको दे दी।

सिपाही : कमीनों, बीड़ी नहीं है और हवालात जाने का ख्वाब देखते हो! तुम्हारे बाप ने बनवायी है हवालात?

लड़का—३ : बाप तो हमारे आजादी मिलते ही गुजर गये। वह तो आपके बाप की बनवायी हुई है।

सिपाही : **एक झापड़ मारकर** जबान लड़ाता है!

लड़का—१ : **खुश होकर** यह हुई न मर्दानगी! पहले झापड़, घूसा, लात, फिर हवालात। चलिए सिलसिला तो शुरू किया आपने।

लड़का—२ : हम लोग इसकी इंतजारी कर रहे थे।

लड़का—३ : अब पट्टी खोल दें, क्या हवालात आ गया?

सिपाही : हां, हाथ बढ़ाकर पकड़ ले। तुम्हारा ताऊ खड़ा है।

लड़के हाथ बढ़ाते हैं और वही नंगा पेड़ खड़ा हुआ पाते हैं। उसे प्यार से टटोलते हैं।

लड़का—१ : तो आपने हमें धोखा दिया।

लड़का—२ : आंख में पट्टी बांधकर हमें वहीं घुमाते रहे?

लड़का—३ : जैसे सब घुमा रहे हैं आजादी के बाद से।

लड़का—१ : आप उस आदमी का खयाल कीजिये जिसका पर्स मैंने उड़ाया था।

लड़का—२ : और उसका भी जिसकी हत्या मैंने की है।

लड़का—३ : और उस धमाके का भी जो होनेवाला है। आप व्यवस्था के रक्षक हैं। उसकी रक्षा कीजिए।

सिपाही चौंकता है। पर्स, हीरे की अंगूठी और अपनी ओर देखता है। फिर अपराधी-सा सिर झुकाकर उतरा हुआ चेहरा लिये खड़ा हो जाता है।

लड़का—१ : यदि आप अपनी ड्यूटी में चूके तो आनेवाला जमाना आपको माफ नहीं करेगा।

लड़का—२ : हम आपको माफ नहीं करेंगे ।

लड़का—३ : आप खुद अपने को माफ नहीं कर पायेंगे ।

लड़का—१ : देखिए, रात बढ़ती जा रही है ।

लड़का—२ : बर्फीली हवा हड्डियां तक कंपा रही है ।

लड़का—३ : पेड़ नंगे हो गये हैं और हम भी । आप हमारी मदद कीजिए । आपकी, हमारी सूरत एक है । हमारे दुख एक हैं । आपका भी कोई नहीं है । हमारा भी कोई नहीं है । जो हैं वह टूटे हुए हैं । हम दोनों के जो हैं वह टूटे हुए हैं, असहाय, निरुपाय, टूटे हुए ।

लड़का—१ : आप हमारी मदद करेंगे ?

तीनों एक साथ : आप हमारी मदद करेंगे ?

सिपाही दयनीय चेहरा बनाये चुपचाप चला जाता है ।

लड़का—१ : आप कहां हैं ? हमारी पट्टी खोल दीजिए ।

लड़का—२ : हमने आपसे बहुत उम्मीद की थी ।

लड़का—३ : बहुत आस लगायी थी ।

तीनों गाते हैं ।

पट्टीवाले रे आंखों की पट्टी खोल दे ।
बाहर दुनिया रूखी सूखी
जैसे कोई बिल्ली भूखी
बिल्लीवाले रे म्याऊं की बोली बोल दे ।
चूहे का पिंजड़ा खोल दे
पट्टीवाले रे आंखों की पट्टी खोल दे ।
बाहर दुनिया नंगी-बूची
जैसे कोई बुढ़िया भूखी
बुढ़ियावाले रे सोने पर सोना रोल दे ।
भारत मां की जय बोल दे
पट्टीवाले रे आंखों की पट्टी खोल दे ।

तीनों कुछ देर सकपकाये चारों तरफ देखते हैं । सिपाही साहब को आवाज देते हैं फिर यह मानकर वह चला गया है, अपने हाथों के बंधन ढीला कर खोलते हैं, फिर आंखों की पट्टी खोलते हैं ।

लड़का—१ : सोचते थे हवालात की गर्म इमारत में सर्द ठिठुरती रात आसानी से कट जायेगी । कपड़े न होने की तकलीफ नहीं उठानी होगी ।

लडका—२ : पर वह हमें हवालात क्यों ले जाता ? हमारे पास देने को एक दमड़ी जो नहीं थी।

लड़का—३ : बेचारा··· !

तीनों थरथराते हुए फिर उस नंगे पेड़ से चिपट जाते हैं। बर्फीली तूफानी हवा की सांय-सांय सुनायी देती है, जिसमें सिपाही की सीटी की आवाज दूर-दूर मद्धिम होती जाती है।

पिन कुशन

रमेश बक्षी

पात्र

डैडी—उम्र ५० साल, काली पैंट, काली अचकन।
बिटिया—उम्र २४/२५, बाल कटे हुए।
(अ) नाइटी में।
(ब) कीमती साड़ी में।

माली
बावर्ची
शोफर } एक व्यक्ति भी तीनों अभिनय कर सकता है।

आया
धोबिन
जमादारिन } एक ही स्त्री चाहे तो तीनों अभिनय कर सकती है।

स्थान

एक बड़े बंगले का हाल। लेकिन सैट के नाम पर खाली स्टेज।
केवल एक कोने में बहुत बड़ा पिन कुशन रखा है।

समय

सुबह।

जब तीसरी घंटी बज चुकती है मंच पर एक प्रकाश वृत्त घूमता है। वृत्त इस तरह घूमता है जैसे उसे कोई एडजस्ट कर रहा हो। दोनों विंग से आने-जाने के रास्ते हैं। कोई किधर से भी आ-जा सकता है। बायें रास्ते में डैंडी जी हाथ में एक सेब (फल) और छुरी लेकर आते हैं। मंच के बीचों-बीच खड़े हो जाते हैं। सेब काटने का इरादा करते हैं कि नेपथ्य से एक कनस्तर पर थाप पड़ती है। डैंडी चौंक कर पीछे देखते हैं तो थाप रुक जाती है।

डैंडी : वन एपल अ डे, कीप्स द डाक्टर अवे।

सेब काटने को होते हैं कि फिर वही थाप। डैंडी जी फुट स्टेज पर आ जाते हैं। जेब से चश्मा निकाल कर देखते हैं। बांई तरफ से एक सोफे को उठाए आया और बावर्ची आते हैं। पीछे कनस्तर अपनी थाप देता रहता है।

आया : बावर्ची भइया, जोर लगाके अलपिन।

बावर्ची : आया मामी, जोर लगाके अलपिन।

आ०बा० : हां, जोर लगाके अलपिन, जोर लगाके अलपिन।

वे उस सोफे को लाकर झुलाते हुए उसे बीच में रखते हैं।

आया : चुमती है अलपिन बालों में। कब आयेगी निंदिया। दूल्हा-दुलहिन अलपिन। अलपिन हैं सारी दुनिया। **झाड़-पोंछ करती है।**

बावर्ची : पालक, बैंगन-भिंडी, टिंडा, आलू, गोभी अलपिन।
तोरी, मूली, प्याज, करेला, आम, चुकंदर अलपिन।

बावर्ची : जोर लगाके अलपिन भइया।

बा०आ० : हां जोर लगाके अलपिन भइया। जोर लगाके अलपिन भइया।

दोनों काम खत्म करके अलग-अलग दिशाओं में चले जाते हैं। कनस्तर बजता रहता है। डैंडी आगे बढ़कर फिर बीच में आते हैं। स्वस्थ होने की कोशिश करते हैं। फिर सेब काटने को होते हैं।

डैंडी : **चेहरे पर मुस्कान लाकर** वन एपिल अ डे····

सहसा एक तरफ से माली एक केक्टस का गमला और दूसरी तरफ से धोबिन एक स्टूल उठाये आती है।

माली : धोबिन रानी, जोर लगाके अलपिन।

धोबिन : माली बाबा, जोर लगाके अलपिन ।

दोनों एक दूसरे से नजदीक आते हैं ।

मा०धो० : हां, जोर लगाके अलपिन, जोर लगाके अलपिन ।

धोबिन एक कोने में स्टूल रखती है ।

धोबिन : खटन गया सो सइयां, बोला ले आना पैंजनियां
उमर गंवा के लौटा मोलू, ले आया अलपिनिया ।

माली उस स्टूल पर गमला सजाता है ।

माली : डैंडी जी की अलपिन नगरी, अलपिन का बाग है
अलपिन की जैं-जैं होती, अलपिन का राग है ।
डैंडी जी डरकर फिर एक कोने में बिदक जाते हैं ।

धोबिन : जोर लगाके अलपिन मइया ।

मा०धो० : हां, जोर लगाके अलपिन मइया, जोर लगाके अलपिन मइया ।

दोनों गाते हुए फिर अलग-अलग चले जाते हैं । डैंडी डरते हुए बीच में आते हैं । फिर सेब काटने का इरादा करते हैं लेकिन दरवाजों की तरफ देखने लगते हैं ।

डैंडी : वन एपिल···**रुककर दरवाजों की तरफ देखते हैं ।** वन एपिल अ डे··· ।

जमादारिन और शोफर मंच पर आते हैं । शोफर हाथ में अपनी टोपी लिए है । जमादारिन झाडू लगाती जाती है ।

शोफर : ओय जमादारिन, जोर लगाके अलपिन ।

जमादारिन : शोफर बाबू, जोर लगाके अलपिन ।

जमादारिन नीचे से उठा-उठाकर शोफर को अलपिन देती जाती है । वह उन्हें अपनी टोपी में खोंसता हुआ गाता है ।

शोफर : अलपिन की मोटर गाड़ी, अलपिन का ताज है । नौकर है अलपिन, चाकर है अलपिन, अलपिन का राज है ।
अलपिन आगे, अलपिन पीछे, अलपिन के सिर पर अलपिन ।
डैंडी अलपिन, बिटिया अलपिन बतलाओ कितनी अलपिन ।

शोफर मस्ती में दो उंगलियां बतलाता है । डैंडी दोनों हाथों से आंखें बन्द कर लेते हैं । सेब और छुरी गिर गये हैं ।

शोफर : जोर लगाके अलपिन मइया ····

ज० शो० : हां जोर लगाके अलपिन मइया, जोर लगाके ।

जमादारिन सोफे पर भी एक झाडू मारती है । कनस्तर की थाप

फेड आउट हो जाती है। आ—हा ! देखो शोफर बाबू। रईसों के घर का कूड़ा-कचरा भी रईस होता है। वे कचरे में सेब फल ही नहीं फेंकते, साथ में छुरी भी फेंक देते हैं।

शोफर : **सेब और छुरी उठाकर** ताकि खाने वालों को तकलीफ न हो। मैं तो हमेशा कहता हूं कि आल इंडिया अलपिन कंपनी ही ऐसी कंपनी है जहां कफन-भत्ता भी मिलता है।

जमादारिन : ये क्या बक रहा है ?

शोफर : डैडी जी से मैंने कहा, बिटिया से अपील की कि जब मुझे बाहर भेजते हैं तो भत्ता तो ढंग का दिया करो, बोले—हम जितना भत्ता देते हैं उतने में सिल्क का कफन खरीदा जा सकता है।

जमादारिन : **हंसकर** इस कंपनी में तो शोफर बाबू तेरे जैसा मुंहफट जवान होना चाहिए।

शोफर : **सेब काटकर आधा उसे देता है।** ले खा और दुआ कर कि रोज कमरे में से सेब (फल) निकला करें। **दोनों हंसते हुए चले जाते हैं। डैडी जी उसी तरह कानों को हाथ से बंद किये बीच में आ खड़े होते हैं और जोर-जोर से पुकारते हैं।**

डैडी : बिटिया, ओ बिटिया। बिटिया···

आवाज सुनकर आया और बावर्ची आते हैं और वैसे ही अंदर दौड़ जाते हैं।

डैडी : बिटिया, ओ बिटिया।

आफ साउंड सुनाई देती है—अभी आई डैडी, अभी आई।

बिटिया : **चौंककर** क्या हुआ डैडी, क्या हुआ।

डैडी : **कान अब भी बंद किए हुए हैं** सुन रही हो ना, सुन रही हो ना। **संगीत और संगीत के साथ-साथ क्रांति का कोरस** इसी दिन का मुझे डर था।

बिटिया : हुआ क्या डैडी, आपकी तबियत तो ठीक है ना **डैडी के कानों पर से हाथ हटाती है।** कहां है संगीत और कैसा कोरस और कौन-सी क्रांति ?

डैडी : ओ, बंद हो गया। यह स्थिति मुझे पागल कर देगी। बिटिया। ये नमक हराम जिस पत्तल में खाते हैं उसी में छेद करते हैं।

बिटिया : लेकिन माजरा क्या है। मुझे कुछ भी समझ में नहीं आ रहा है।

डैडी : आज सुबह मुझे लग गया कि इस आल इंडिया अलपिन कंपनी का अंत नजदीक आ गया है। जिस पौधे को मैंने खून से सींचा था,

रात-दिन जागकर जिसकी परवरिश की थी वह अब कुम्हलाने लगा है। इसी दिन को देखने के लिए मैंने अपनी कंपनी में सबको बराबरी के अधिकार दिए थे, इसी सुबह की क्या मुझे मुराद थी कि मेरे कानों को मेरी ही अलपिनों के खिलाफ ताने सुनने पड़ेंगे।

बिटिया : आप जरा शांत हो जाइए डैडी ! जरा गंभीरता से इस मामले पर गौर करेंगे तो हो सकता है कि आपकी यह बात उतनी संगीन नजर न आए।

डैडी : मुझे लगता है बिटिया, तुमने जो तालीम पाई है वह तुम्हें अपने बूढ़े बाप से अब अलग करने लगी है।

बिटिया : आप बहुत नाराज नजर आ रहे हैं।

डैडी : यह नाराजी नहीं है अपने ख्वाब को मिसमार होते देखना है।

बिटिया : मुझे आप कुछ बतलाइए तो डैडी कि आखिर हुआ क्या ? किसने क्या किया है ? कौन है उस कोरस का गीतकार और किसने उसे संगीत दिया है ?

डैडी : ये कोरस···मैं जानता हूं कोई गीतकार नहीं लिखता, पूरी भीड़ जब बगावत पर उतारू हो जाती है तो ऐसे ही कोरस जबान पर आने लगते हैं। आज ये मेरे खिलाफ गूंज रहे थे कल तुम्हारे खिलाफ भी गूंज सकते हैं।

बिटिया : वह मैं जानना भी नहीं चाहती। लेकिन अपनी कोठी में कोई ऐसी चीज नहीं है जिसमें से संगीत पैदा हो सके। डैडी, आपको कोई भ्रम हुआ है।

डैडी : हल्के से हंसकर डैडी ने बहुत सियासत खेली है बेटे, डैडी को भ्रम नहीं होता और मुझे मालूम है ऐसा संगीत किसी बाजे से नहीं टीन से ही पैदा किया जा सकता है।

बिटिया : तो मैं समझ गई। आपको ऐसा लग रहा है कि आल इंडिया अलपिन कंपनी में आपके खिलाफ साजिश हो रही है। एक विरोधी दल बन गया है। जैसा कि संसद में होता है, जो आपकी चूलें उखाड़ने में लग गया है। और उनकी तैयारी इतनी है कि क्रान्ति की जबान में एक कोरस तैयार हो गया है जिसके सुनने से आपके कानों में गरम सलाखें ठुंसने लगती हैं और उनके संगीत से आपकी नींद हराम होने लगती है। आपको लग रहा है कि कोई आपकी कुर्सी छीन रहा है।

डैडी : यही, हां यही, यही मुझे लग रहा है। लग रहा है जैसे एक बहुत बड़ी भीड़ मेरे लिए मुर्दाबाद के नारे लगा रही है।

बिटिया : जैसे भरी सड़क पर आपके कपड़े उतरवा दिए गए हों···

डैडी : हां। जैसे मेरी आल इंडियन अलपिन कंपनी में आग लग गई है और सारी फैक्टरी आग की लपटों में आ गई है।

बिटिया : जैसे किसी ने कीचड़ उछालकर आपके कपड़े गंदे कर दिये हों···

डैडी : जैसे जिस प्रारब्ध यानी जिस डेस्टिनी पर विश्वास था वही मुझे धोखा दे रही हो···

बिटिया : **जोर से हंस देती है** और ?

डैडी : तुम हंस रही हो ?

बिटिया : **हंसी रोककर** हां डैडी। मैं हंस रही हूं। हंस इसलिए रही हूं कि डेस्टिनी आपको और आपकी आने वाली पीढ़ी को कभी धोखा नहीं दे सकती।

डैडी : **प्रसन्न दिखाई देते हैं**। हां बिटिया, वह आने वाला समय बताएगा। मुझे भरोसा है कि तुम जो कहती हो वह अन्तरात्मा के अन्दर से फूटा हुआ सच होता है। ना, मैं फिजूल ही वहम पालकर अपने आपसे जद्दोजहद कर रहा था। मुझे यह तक लगता है जैसे तुम भी मेरे खिलाफ हो और किसी दिन ये लोग तुम्हारे भी खिलाफ हो जायेंगे।

बिटिया : आप अपना वन एपल अ डे खा चुके क्या डैडी ?

डैडी : वन एपल···**घबराकर** वन एपल। मैं कह रहा हूं बिटिया मैं जो पहले बोल रहा था वही सच था, वही सच था, वही सच था, तुमने जो तकरीर की वह गलत है। वे सब मेरे खिलाफ हैं यही सच है। पता है, पता है बिटिया·· **बिटिया डैडी को संभालती है**। पता है क्या तुझे···।

बिटिया : डैडी, आप बहुत जल्दी नाराज हो जाते हैं। आप इस समय बहुत उत्तेजित नजर आ रहे हैं, आपके मन से शांति गायब हो गई है, आप अंदर ही अंदर तिलमिला रहे हैं। डैडी, अपने आप ठीक हो जाइए। मैं वादा करती हूं कि जो भी रास्ते में कांटें बोएगा मैं उसे ही रास्ते से निकाल दूंगी, पूरी कोशिश सहित उसे नेस्तनाबूद कर दूंगी।

डैडी : पता नहीं बिटिया, पता नहीं। मुझे लग रहा है बोर्ड आफ डायरेक्टर्स भी मेरे खिलाफ सोचने लगे हैं।

बिटिया : डैडी, इस खामखयाली से बाहर आइए। पहले मेरी बात का जवाब दीजिए कि आप अपना वन एपल अ डे खा चुके हैं या फिर से मंगाऊं ?

डैडी : फिर से क्या मतलब उठता है बिटिया। जो एपिल था वही जब चला गया....

बिटिया : कहां चला गया **डैडी सिर पर हाथ रखे है। बताइए** किसने लिया है आपका एपल ? **दरवाजे की तरफ जाकर बुलाती है।** आया, बावर्ची...**दोनों दौड़कर आते हैं।** तुम लोगों में से किसी ने डैडी के एपल को देखा है ?

बावर्ची : **आगे आकर** जी, मैंने देखा है बिटिया रानी।

आया : मैंने भी देखा है बिटिया रानी।

बिटिया : मैं पूछ रही हूं कहां देखा है, किसके पास देखा है और किसकी जुर्रत हुई कि वह डैडी का एपल उठा ले।

बावर्ची : **सिर झुकाकर** मैंने तो वह सेबफल आज सबेरे कमरा झाड़ते समय डैडी जी के हाथ में देखा है।

आया : जी बीबीजी, महाराज सही कह रहा है। डैडी जी के हाथ में छुरी भी थी और वे जहां खड़े हैं ना इसी जगह सेबफल पर छुरी मारने ही वाले थे।

बिटिया : अच्छा तुम जाओ **दोनों जाते हैं** अजीब बात है। हो सकता है ये एपल खा गए लेकिन फिर छुरी कहां गई ?

डैडी के पास आती है और उनके कंधे थामती है। मुझे लगता है डैडी, आपकी तबीयत ठीक नहीं है। क्या महसूस कर रहे हैं आप ? डाक्टर को बुलाऊं क्या ?

डैडी : मेरे एपल का पता चला ?

बिटिया : चल गया।

डैडी : किसने लिया वह ?

बिटिया : हो सकता है उसे आप खा गए हैं।

डैडी : क्या ? क्या मैं इतना बूढ़ा हो गया हूं कि एपल खा गया और भूल गया कि मैं उसे खा चुका हूं।

बिटिया : बात यह है डैडी, आपकी स्मरण शक्ति कुछ कमजोर हो गई है।

डैडी : यानी तुम यह कहना चाहती हो कि मुझे बातें याद नहीं रहतीं।

बिटिया : शायद ! लेकिन अब आप सोचना छोड़िए। वह कोरस और

संगीत क्या है, इसकी तपतीश मैं करूंगी। यह पता भी मैं लगाऊंगी कि वह कौन है जिसने वन एपल अ डे चुराया है।

डैडी : मेरा हमेशा से सिद्धांत यह रहा है बिटिया कि विरोध जब सिर उठाए तो उसे उसी समय कुचल देना चाहिए। अगर ऐसा नहीं किया तो छोटा-सा अंकुर बरगद का पेड़ बन जाता है। अगर जरूरत पड़े तो घर के सब नौकरों को काम से निकाल बाहर करो। जरूरत पड़े तो कंपनी का नाम बदल दो। कुछ भी करो लेकिन यह विरोध जो पैदा हुआ है इसकी जड़ खोदकर उसमें मट्ठा डाल दो।

बिटिया : आप जरा मन को शांत रखिए। आपको ऐसी बेचैनी शोभा नहीं देती। आप तो हमेशा महात्मा गांधी के भक्त रहे हैं। उनके सत्य-अहिंसा को आपने अपने जीवन में नया अर्थ दिया है। वह पुराना जमाना याद कीजिए जब आपको बंदूक बनाने का ठेका मिल रहा था लेकिन आपने वह ठेका नहीं लिया। आपने राजनीति की सारी अच्छाइयों का सहारा लिया। डैडी, उन दिनों को याद कीजिए जब आपने इस अहिंसक अलपिन की फैक्ट्री खोली। अलपिन को अपना अहिंसा का प्रतीक बताया था।

डैडी : हंसकर हां-हां। पता है बिटिया, मैंने उन्नीस सौ सैंतालीस में सभी मंत्रियों को सारे अलपिन सोने के केस में मढ़वाकर भेजी थी। आज भी हर चुनाव के बाद सारे मंत्रियों को सोने चढ़ी पिनों का पैकेट भेंट करता हूं। तुम किसी भी पार्टी के किसी भी घर में चले जाओ। अगर उसका सियासत से दूरदराज का भी कोई ताल्लुक है तो वहां मेरी अलपिन का एक पैकेट जरूर निकलेगा। पता है बिटिया, एक बार गांधी जी के दर्शन का मौका मिला। वे कागज के छोटे-छोटे टुकड़ों पर खत लिख रहे थे और उन दो-तीन कागजों को उन्होंने एक बबूल के कांटे से नत्थी कर दिया। उसी लमहे मेरे अंदर इस आल इंडिया अलपिन कंपनी का जन्म हो गया था। आइ डिसाइडेड देन एण्ड देअर टु प्रोड्यूस पिन्स विद फाइन पाइंट्स एण्ड परफेक्ट सान्डि एंड्स।

बिटिया : यानी डैडी इन अलपिनों के राष्ट्रपिता भी महात्मा गांधी हैं।

डैडी : वो हुई। वो तो हुई, मैं तो भरे बाजार में यही कहता हूं।

बिटिया : अब आप जरा स्वस्थ नजर आ रहे हैं। तबसे खड़े हैं आप। मेरा खयाल है आराम से बैठ जाइए ताकि हम इस मामले पर····

डैडी : गौर फरमा सकें···। जरूर-जरूर।

डैडी प्रसन्न होकर सोफे पर बैठ जाते हैं कि सहसा पिन चुभती है। वे अपने पीछे हाथ रखे दर्द से चक्करघिन्न घूम जाते हैं।

बिटिया : क्या हुआ ?

डैडी : क्या हुआ, क्या हुआ। मुझसे मत पूछो कि क्या हुआ। मैं कहता हूं अपने घर में जहर घोला जा रहा है। यह देखो···**सोफे पर से एक पिन उठाकर दिखाते हैं।** यह हिमाकत, बदमाश, जलील, लफंगे, बेईमान। यह नालायक हरकत मैं बर्दाश्त नहीं कर सकता। मैं इन्हें एक-एक कर···

बिटिया डैडी के कंधे थामती है।

बिटिया : मुझे लगता है आज सोफों की सफाई ठीक से नहीं की गई।

डैडी : तुम अब भी नहीं समझ रही हो। यह सफाई नहीं होने का परिणाम नहीं है यह तो साजिश है। यह तो षड़यंत्र है। बदमाशी है। हतक है। इन लोगों ने सब जगह जानबूझ कर पिनें खोंस रखी हैं कि हमें जगह, हर जगह चुभती रहें।

बिटिया : अगर यह भी सत्य है तो इसकी भी मैं तपतीश करूंगी।

डैडी : यह सत्य नहीं तो क्या झूठ है बिटिया। इस आंखों देखे सत्य पर भी संदेह करती हो।

बिटिया : संदेह नहीं कर रही हूं, समय की जड़ तक पहुंचने की कोशिश कर रही हूं आखिर ये लोग ऐसा क्यों कर रहे हैं। अगर उनकी कोई मांग है तो वह वैसे भी पूरी की जा सकती है···कौन हो सकता है इसकी जड़ में ?

डैडी : इसकी जड़ के लोकल आदमी का पता तो मुझे नहीं है लेकिन बाहरी आदमी कौन है, यह मुझे जरूर मालूम है।

बिटिया : कौन है वह—गिरधारी लाल या हफीज मियां ? ये दोनों जरूर कोई धार्मिक प्रपंच पैदा करके हमारे नौकरों को भड़का रहे होंगे।

डैडी : इतनी भोली मत बनो बिटिया। धोखा खा जाओगी। इसके मूल में है सियासती हाथ। पोलिटिकल स्ट्रेटेजी। हो सकता है वह आदमी चेयरमैन माओ हो।

बिटिया : क्या कह रहे हैं आप, अलपिन में भी माओ ?

डैडी : वह आदमी बंदूक की गोली में हो सकता है तो अलपिन में क्यों नहीं हो सकता। हो सकता है उसने कह दिया हो कि क्रांति बंदूक की गोली में से ही नहीं अलपिन की नोक में से भी निकल सकती है। देख रही हो ना अलपिन की नोक ने अभी क्या कमाल दिखाया कि मैं अपने सोफे पर से उछल पड़ा। खाली तपतीश से कुछ नहीं होगा बिटिया।

बिटिया सोचती हुई कमरे में टहलती है। डैडी परेशान होकर सोफे को साफ करके उस पर बैठते हैं।

बिटिया : मैं समझती हूं बेहतर यह होगा कि जरा इन लोगों से बात की जाए। **पुकारती है।** ड्राइवर।

ड्राइवर सिर पर टोपी लगाए आता है।

शोफर : सलाम डैडी जी। सलाम बिटिया जी।

डैडी : **उठ खड़े होते हैं। गुस्से में।** यह जो शोफर है ना जरा इससे पूछो।

बिटिया : आप बैठिए डैडी। **उन्हें बिठाती है।** बात यह है ड्राइवर···

शोफर : कहीं जाना है बीबी जी। गाड़ी तैयार है, लेकिन आप तो अभी तैयार नहीं हुई। अभी नाइटी में ही घूम रही हैं।

बिटिया : तुम्हें और कुछ नहीं दिखाई दिया, मेरी नाइटी दिखाई दे गई।

शोफर : वैसे डैडी जी की अचकन भी दिखाई दी है और आप तो जानती ही हैं कि डैडी जी रात को भी अचकन पहन कर ही सोते हैं।

डैडी : **गुस्से से उठकर** देखा, देखा ना, अब इसे कैसे मालूम कि मैं रात को अचकन पहनकर सोता हूं। क्या तुम मेरे बेडरूम में झांकते रहते हो ?

शोफर : जी नहीं, और कौन क्या पहनकर सोता है यह जानने के लिए किसी के बेडरूम में झांकना जरूरी भी नहीं है।

डैडी : बहरहाल, तुम अपने काम से काम रखा करो।

शोफर : आपकी जैसी मर्जी। आपका नमक खाते हैं तो बदले में अपना पसीना भी बहाते हैं। न आपका अहसान, न हमारा अहसान। बल्कि डैडी जी, यह हमारा अधिकार है···

डैडी : सुन रही हो, सुन रही हो बिटिया, यह जरूर रामलीला मैदान से किसी का भाषण सुनकर आ रहा है। इसकी आवाज में से क्रांति का धुआं निकल रहा है।

शोफर : **जाने लगता है।** खुदा हाफिज।

बिटिया : रुको तो। मैंने तुम्हें यह पूछने के लिए बुलाया था कि इस नौकरी से तुम खुश हो या नहीं······

शोफर : नहीं, कतई नहीं। आप लोगों में तानाशाही है। अपने मातहतों को आप पैर की जूती समझते हैं।

बिटिया : तो तुम क्या चाहते हो ?

शोफर : काम के घंटे कम हों। हर हफ्ते छुट्टी मिले। साल में एक महीने की छुट्टी पगार के साथ में दें। भत्ता बढ़ाया जाए। ओवर टाइम का बंदोबस्त हो। प्राविडेंट फंड का इंतजाम किया जाय। नौकरी खत्म होने पर ग्रेच्यूटी मिले। बोनस फिक्स किया जाए। वर्दी धोने के लिए दो की जगह तीन साबुन···

डैडी : क्या तुम चुप कर सकते हो ?

शोफर : और हमें बोलने का अधिकार दिया जाए···

डैडी : तुमने कहा वर्दी दो, हमने वर्दी दी। तुमने कहा टोपी दो, हमने दी।

शोफर : तो ले लीजिए अपनी टोपी।

शोफर अपनी टोपी डैडी के हाथ में ठूंस देता है। डैडी उसे गौर से देखते हैं।

डैडी : देखा, देखा। यह अलपिनें चुराकर अपने घर ले जाता है। **शोफर से** मियां, ये अपनी टोपी की दीवार में इतनी सारी पिन क्यों खोंस रखी हैं।

शोफर : इसलिए कि कभी काम आ जायें।····

बिटिया : **डैडी के हाथ से टोपी लेकर शोफर को दे देती है।** कोई बात नहीं। लेकिन ड्राइवर टोपी में पिनें बहुत सारी हैं कहीं सिर में न चुभ जायें।

शोफर . बहुत सारी नहीं हैं। गिनी हुई हैं। हमारी जितनी मांगें हैं, उतनी ही पिनें हैं इसमें।

डैडी सिर पकड़कर बैठ जाते हैं।

बिटिया : कितनी होंगी ?

शोफर : एक सौ दस।

बिटिया : बस। अच्छा तुम अब जा सकते हो।

ड्राइवर जाते हुए सीटी बजाने लगता है।

बिटिया : बात यह है डैडी, आप घबराइये मत। सब ठीक हो जाएगा।

डैडी : खाक ठीक हो जाएगा। तुम उससे हंसकर बात कर रही थीं।

बिटिया : यही जरूरी है। **डैडी हाथ भींचकर फिर सोफे पर जा बैठते हैं।** जमादारिन ……

आफ साउंड : बीबीजी बुला रही हैं, आई बी बी जी। जमादारिन दूर दरवाजे से जुहार करती है।

बिटिया : क्या बात है जमादारिन, तुम आजकल सफाई ठीक से नहीं कर रही हो ?

जमादारिन : ऐसी तो कोई बात नहीं बीबीजी। मैं तो कोठी का सारा कचरा समेटकर ले जाती हूं। आपकी कोठी के कूड़े-कचरे से ही हमारा पेट पलता है।

बिटिया : जमादारिन, तुम क्या काम करते हुए गाना भी गाती हो ?

जमादारिन : **शरमाकर** आप तो मजाक कर रही हैं बीबीजी। जैसे काम करते हुए आप बड़े लोगों का चेहरा तन जाता है वैसे ही काम करते हुए मजूरों के मुंह से गाने फूट निकलते है।

डैडी उठकर कुछ बोलना चाहते हैं लेकिन रुक जाते हैं।

बिटिया : कौन-सा गाना गाती हो ?

जमादारिन : **दुपट्टा सिर पर ले लेती है।** पाकीजा का…

बिटिया जोर से हंस देती है और जमादारिन शरमाकर बाहर भाग जाती है।

डैडी : **उसे जाते और बिटिया को हंसते हुए देखकर** चुप करो।

बिटिया : डैडी, आपको वहम हुआ है।

डैडी : मुझे वहम हुआ है। सुना, इस डैडी को वहम हुआ है, जिसकी जिंदगी को सब लोगों ने मिलकर पिन कुशन बना दिया है। यहां तक कि **पीछे हाथ फेरते हुए** मेरे शरीर को भी नहीं छोड़ा…

बिटिया उन्हें फिर से सोफे पर बैठाती है।

बिटिया : **दरवाजे के पास जाकर पुकारती है।** महाराज…आया…

दोनों हाथ में एक-एक चीज, एक प्लेट और निचोड़ा हुआ कपड़ा लेकर आते हैं।

दोनों : जी, बीवीजी।

बिटिया : बात यह है आया, तुम्हारी मुझे शिकायत मिली है कि तुम हमेशा कपड़े ही निचोड़ा करती हो…

आया : एक जमाने में बीवीजी, इसी बात के लिए बख्सीस मिलती थी और आज जादे काम करना सिकायत हो गई।

बिटिया : मैं यह कह रही थी कि तुम्हें ओवर टाइम मिलना चाहिए।

आया : ओवर टेम का बीबीजी क्या करना है। चौबीस घंटे में ही दम निकल जाता है।

बिटिया : **हंसकर** ठीक है ठीक है। तुम जाओ आया।

आया जाती है और बावर्ची प्लेट आगे बढ़ाता है।

बावर्ची : मैं समझा बीबीजी, आपने रोज की तरह यह पूछने के लिए बुलाया है कि आज क्या सब्जी बनी है। आज भरवां करेले पकाये हैं बीवी जी···

डंडी उठकर पास आते हैं।

डंडी : भरवां करेले।

बावर्ची : जी, डंडी जी, आपको बहोत पसंद हैं ना।

डंडी एक करेला उठाकर मुंह में रखते हैं।

बिटिया : देखिये डंडी, महाराज आपका कितना ख्याल रखता है कि जो सब्जी आपको पसंद हो वही बनाता है।

डंडी सहसा करेला थूक देते हैं। और नीचे झुककर कुछ उठाते हैं।

बावर्ची : क्या हुआ डंडी जी ?

डंडी : क्या हुआ के बच्चे, करेले में अलपिन। बोल, यह अलपिन है या नहीं ?

बावर्ची : हां है तो अलपिन।

बिटिया : सब्जी में अलपिन कैसे आई महाराज ?

बावर्ची : मैं इसे निकालना भूल गया। बात यह हुई कि भरवां करेले पहले मैं धागे में बांध दिया करता था। इस बार धागा मिला नहीं, तो सोचा कि अलपिन लगा दूं और सब्जी के पक जाने पर उन्हें निकाल लूंगा।

डंडी : सब्जी के पक जाने पर अलपिन निकालने वाले के बच्चे···।

बावर्ची प्लेट उठाकर चला जाता है।

अब भी कोई शक रह गया है ?

बिटिया : यह तो एक्सपरिमेंटल बावर्ची है। करेले को पिन से जोड़ रहा है। **हंसती है।**

डंडी : और तुम हंस रही हो।

बिटिया : उसकी अकल पर मुझे तरस आ रहा है डंडी। बेचारा अपढ़ है। अगर जरा भी समझ होती तो यह हिमाकत नहीं करता।

डैडी : मैं कहता हूं यह मेरे खिलाफ क्रांति है। यह सब साजिश है। इस धुएं को देखकर लगने वाली आग का अंदाजा लगा लेना चाहिए कि अठारह सौ सत्तावन की क्रांति भी मंगल पांडे की जरा-सी बात से शुरू हुई थी। मुझे वही सब होता दिख रहा है। तब मरवां कारतूस कारण था अब मरवां करेला कारण है।

बिटिया : **दरवाजे की तरफ जाकर** माली। **दूसरे दरवाजे की तरफ** घोबिन···· ।

माली हाथ में खुरपा लिए और धोबिन हैंगर में टंगा एक पेंट लिए आती है। दोनों झुककर सलाम करते हैं।

माली : आपने बुलाया बीवी जी ?

डैडी : मैंने बुलाया है। यह कमरे में कैक्टस का पौधा क्यों रखा। इस-लिए कि इसके कांटे मेरा मुंह चिढ़ाकर अलपिनों की याद दिलाएं।

माली : मैंने तो बीवीजी ने जो कहा सो किया।

बिटिया : हां डैडी, मैंने यह गमला यहां रखने को कहा था। इससे कमरे में एक चेंज आता है। मैं आपके लगाये हुए गुलाब के फूल को देखते-देखते बोर महसूस करने लगी थी।

डैडी चुपचाप सोफे पर जा बैठते हैं और कविता के लहजे में बोलते हैं।

डैडी : कांटे और कांटे और कांटे।
हम किसे इन्हें बाटें, कैसे इन्हें छाटें।
कहां चले जायें किस रास्ते पर
अलपिनें, अलपिनें और अलपिनें
कौन इन्हें चुने, कौन इन्हें बिने,
कहां चले जायें किस रास्ते पर····।

बिटिया : तुम जा सकते हो माली। और जाते हुए यह गमला भी ले जाओ। अब कभी कैक्टस यहां मत लाना····

माली गमला उठाकर चला जाता है।

डैडी : यह किसका पेंट है ?

बिटिया : होगा किसका, आपका। मैं तो पेंट पहनती नहीं।

धोबिन पेंट डैडी को देती है। डैडी पेंट की क्रीज देखते हैं।

डैडी : ये लो। देखो देखो····

बिटिया : **पेंट हाथ में लेकर हूं**। क्यों घोबिन, डैडी के पेंट में यह पिन तुमने खोंसी ?

घोबिन : जी बीबी जी। क्या करती, देख रही हैं ना पेंट उधड़ गया है। अब हमारे पास सुई-धागा तो है नहीं। एक पिन पड़ी थी सो लगा दी···।

बिटिया : अच्छा अच्छा, जाओ तुम···

डैडी : **चीखकर** पिन पड़ी हुई थी सो लगा दी की बच्ची···।

धोबिन डरकर रुकती है फिर भाग खड़ी होती है। तुम कहती हो यह सब सहज है। जवाब दो बिटिया, सारा आवां बिगड़ गया है और तुम कहती हो कि यह कुछ नहीं है।

बिटिया : मैं अभी कुछ नहीं बोलना चाहती। मुझे सोचने के लिए समय चाहिए।

डैडी : हर तरफ अलपिन। हर तरफ अलपिन। तुम देखोगी किसी दिन ये अलपिनें मेरा घिराव कर देंगी। मैं कैद हो जाऊंगा इनके बीच। इन अलपिनों की एक शरशैया बनाई जायेगी और मुझे उस पर लिटा दिया जाएगा।

बिटिया : बात यह है डैडी, आप बरसों से एकछत्र राज करते आये हैं और अपने जूतों और हंटरों से तानाशाही फैला रखी थी। अब जमाना बदल गया है।

डैडी : तो मुझे अलपिनें निगल लेनी चाहिए, मुझे पिनकुशन बन जाना चाहिए कि सारा अवाम मेरे शरीर में अलपिनें ठोंक जाये।

बिटिया : आपको आराम की जरूरत है डैडी।

डैडी : मेरे लिए आराम हराम है। इस समय मेरा सिर फट रहा है। किसी दिन मैं ऐसे ही चीखते हुए जमीन पर गिर जाऊंगा और तुम लोगों को मालूम होगा कि, मालूम होगा कि तब मालूम होगा तुम लोगों को, तब तक तुम लोगों को मालूम ही नहीं होगा···तब तक तुम लोग····

बिटिया उन्हें कंधे से थामती है और ले जाने लगती है। वही कनस्तर जोर से थाप देने लगता है। जमादारिन और शोफर की सिलहुटी मंच पर दिखाई देती है।

शोफर : **हाथ की टोपी झुलाता हुआ** डैडी जी—

जमादारिन : **झाड़ू ऊपर उठाकर** मुर्दाबाद।

शोफर : आल इंडिया अलपिन कंपनी का—

जमादारिन : नाश हो।

शोफर : एक-एक अलपिन

जमादारिन : एक-एक बंदूक की गोली है।

वे मंच पर चक्राकार घूमते हैं।

शोफर : जोर लगाके अलपिन मइया।

जमादारिन : जोर लगाके अलपिन मइया।

शो० जमा० : जोर लगाके अलपिन मइया, जोर लगाके अलपिन मइया...।

शोफर : शांत हो जाइये दोस्तों, शांत हो जाइये। आज से मैं भगतसिंह हो गया हूं और इस कोठी में काम करने वाली जमादारिन, धोबिन और आया एक-एक लक्ष्मीबाई है। वे झांसी की रानियां अलपिनों के इस मुगलेआजम का तख्ता हिलाकर रहेंगे। दोस्तों, एक हो जाओ और इन अलपिनों की चूलें हिला दो। आज हमारा नारा होगा कि हम डैडी जी की तानाशाही नहीं सहेंगे।

जमादारिन : नहीं सहेंगे, नहीं सहेंगे।

शोफर : दोस्तों, मेरा लाल सलाम कबूल कीजिए और अपने-अपने रूमालों में गांठ लगा लीजिए कि जब तक हम इस बुर्जुआ पूंजी-वादी तानाशाही कंपनी का पटरा नहीं बैठा देंगे तब तक चुप नहीं बैठेंगे। हमारी मांगें जब तक पूरी नहीं हो जाएंगी, माली बगीचे में पानी नहीं देगा। महाराज करेले नहीं पकायेगा और यह आपका कामरेड गाड़ी का गियर नहीं बदलेगा। धोबिन लोहा गरम नहीं करेगी, जब तक लोहे से लोहा नहीं टकरा जाये। आया कपड़े नहीं निचोड़ेगी जब तक कंपनी की बेईमानी को ही हम ना निचोड़ दें और जमादारिन।

जमादारिन : जमादारिन झाड़ू जरूर लगायेगी। लेकिन डैडीजी की किस्मत पर।

शोफर : हमारी एकता।

जमादारिन : जिन्दाबाद।

शोफर : हमारी एकता।

जमादारिन : जिन्दाबाद।

वे कई बार यह नारा दुहराते हैं और चक्राकार घूमकर बाहर चले जाते हैं। प्रकाश लौटता है तो बिटिया लकदक साड़ी पहने डैडी

को थामे मंच पर आती है। डैडी के हाथ में सहायता के लिए एक लाठी भी है।

बिटिया : आपने कल रात केवल सपना देखा है डैडी। भरोसा मानिये कहीं कोई क्रांति नहीं हो रही है। सब कुछ शांत है, सब लोग अपने-अपने काम कर रहे हैं। न किसी ने मुर्दाबाद बोला है, न किसी ने आपके खिलाफ तकरीर ही की है।

डैडी : कल हर चीज में अलपिन निकली। कल सबेरे मैंने कोरस सुना। कल रात मैंने भयंकर सपना देखा।

बिटिया : आप चाहते क्या हैं आखिर ?

डैडी : इन सबसे मुक्ति। मुझे वह दिन नहीं देखना जब हर तरफ मुझे काले झंडे दिखाये जायेंगे।

बिटिया : आप बैठिये और शांत होकर सुनिये।

डैडी जी बैठते हैं। बिटिया उनके सामने खड़ी है।

डैडी : हां, बिटिया, बोलो।

बिटिया : क्या आप सुनने के लिए तैयार हैं ?

डैडी : मैं वह सब सुनने के लिए तैयार हूं जिससे मुझे इन सारी परेशानियों से निजात मिल जाये।

बिटिया : यह हकीकत है कि अब लोग आपको सहन नहीं कर रहे हैं। तरीका केवल एक है कि आप कुरसी से उतर जायें। आप खुद अपने आप अपदस्थ हो जायें।

डैडी : **उत्तेजित** लेकिन मेरी कम्पनी का क्या होगा ? यह पौधा जो मैंने लगाया ···

बिटिया : यह पौधा लगा रहेगा और फूलेगा। अब से आगे मैं इस कंपनी की मालिक हूं ?

डैडी : क्या ?

बिटिया : आज से आगे इस कंपनी की देखभाल मैं करूंगी। और यह सुन लीजिए अगर आप अपनी इच्छा से कुरसी से नहीं उतरे तो मैं आपको कुरसी से उतरवा दूंगी। मुझे कुछ करना पड़े उससे बेहतर है···

डैडी : लेकिन तुम इस काम को चला पाओगी ?

बिटिया : यह आज से आगे आपकी चिंता का विषय नहीं है। इस सबकी चिंता मैं करूंगी।

डैडी : तुम उस कनस्तर की आवाज को कैसे रोकोगी ?

बिटिया : उसे रोकूंगी नहीं, मैं खुद ही कनस्तर बजाने लगूंगी ।

डैडी : उस कोरस का तुम क्या करोगी ?

बिटिया : उस कोरस को मैं अपनी कंपनी का राष्ट्रगीत बना दूंगी कि बच्चे-बच्चे की जबान पर वह होगा ।

डैडी : तुम बौखला गई हो ।

बिटिया : मैं यही बात आपके लिए नहीं बोलना चाहती थी ।

डैडी : तुम मुंह की खाओगी ।

बिटिया : उससे मुझे एतराज नहीं होगा ।

डैडी सिर पर हाथ रख लेते हैं । बिटिया पूरे मंच पर चक्कर लगाती है ।

डैडी : तुम उन्हें शांत नहीं कर सकोगी ।

बिटिया : मैं उनकी सब मांगें मंजूर कर दूगी ।

डैडी : वे फैक्टरी में से अलपिनें चुरा-चुराकर बेचेंगे ।

बिटिया : मैं हर पगार के साथ ढाई सौ ग्राम अलपिनें हर मजदूर को फ्री बाटूंगी । इससे वे चोरी बंद कर देंगे ।

डैडी : चोरी बंद कर देंगे कि बच्ची···तुम तुम···

बिटिया : हां मैं मैं मैं । आप शांतिपूर्वक बैठ जाइये ।

डैडी : मैं नहीं बैठूंगा । अब भी बहुत से लोग मुझे चाहते हैं ।

बिटिया : आप बैठ जाइये ।

डैडी बैठ जाते हैं ।

डैडी : आखिर बिटिया तुम यह क्या कर रही हो । क्या कर रही हो यह ?

बिटिया : अपने विरोध को कुचल रही हूं । आपकी तरह ही डैडी, मुझे भी अपनी खिलाफत पसंद नहीं ।

डैडी : आज मैंने अपना वन एपल अ डे भी नहीं खाया ।

बिटिया : अब आपको एपल की नहीं, डाक्टर की जरूरत है ।

डैडी : अब मुझे लगा, सचमुच लग गया कि डैस्टिनी मुझे धोखा दे रही है ।

बिटिया : आप क्या पसंद करेंगे डैडी नैनीताल जाकर रहना या इसी कोठी के पिछले कमरे में आपका बिस्तर लगवा दूं ।

डैडी अपनी लाठी से टिके बिटिया की तरफ सिर उठाकर देखते हैं और फ्रीज हो जाते हैं । सहसा कनस्तर पर थाप जोर से बजने लगती है । बिटिया दरवाजे की तरफ जाती है तो शोफर

और जमादारिन एक-एक फूलमाला लाकर उसे पहनाते हैं। प्रकाश केवल डैडी पर है बाकी सब अंधेरे में हो रहा है।

शोफर और जमादारिन : बिटिया जी जिन्दाबाद। बिटिया जी जिन्दाबाद।

बिटिया : संभल कर भाई। कहीं हार में भी तो अलपिनें नहीं हैं।

तीनों हंसते हैं। शोफर और जमादारिन एक बार फिर नारा लगाते हैं।

बिटिया : मैं जरा डैडी को तो देख लूं। उन्हें मैंने परेशानियों से मुक्ति दी है, बदले में वे मुझे आशीर्वाद तो दे सकते हैं।

बिटिया डैडी के पास आती है। वह वैसे ही फ्रीज हैं।

बिटिया : डैडी, डैडी······**सहसा पीछे हटती है, सिर झुका लेती है। शोफर और जमादारिन भी डैडी के आसपास सिर झुकाकर खड़े हो जाते हैं। बिटिया आगे बढ़कर अपने गले में पड़े हार डैडी के कदमों पर रख देती है।**

बिटिया : **श्रद्धांजलि में** मैंने तय किया है डैडी कि आपकी याद में शहर के बीचों-बीच कुतुब के आकार की एक अलपिन बना दूंगी जो अनन्तकाल तक धरती पर चुभती रहेगी, विद फाइन पाईंट एंड परफैक्ट सालिड हेड।

सहसा प्रकाश वृत्त डैडी पर से हटकर बिटिया पर आ जाता है और कनस्तर की आवाज के साथ शोफर और जमादारिन बिटिया के पीछे आ खड़े हो जाते हैं।

एक और दिन

शांति मेहरोत्रा

पात्र

स्त्री
पुरुष
लड़की
लड़का

न्यूयार्क में मि० कुमार के अपार्टमेंट का लिविंग रूम। रोशनी मद्धिम है। बहुत-से लोगों के बैठे होने का आभास होता है परंतु चेहरे किसी के नजर नहीं आते। एक मजमा है जिसमें व्यक्तिगत चेहरे खो गये हैं। कमरे में रखे हुए लैंपों के शेड कटाऊ पैटर्न के हैं जिससे दीवारों पर अजीब शक्ल की छायाकृतियाँ बनी हुई हैं। अभी-अभी डिनर समाप्त हुआ है और कुछ गाना-वाना हो रहा है। जब नाटक शुरू होता है, मेहमान तालियाँ बजा रहे हैं। श्रीमती कुमार अभी-अभी गाना सुनाकर श्रीमती भाटिया के पास आकर बैठी है। मिस्टर टी० ह्विस्की का खाली गिलास हाथ में लिये खड़े हो जाते हैं।

मि० टी० : भई वाह। आपने तो वाकई कमाल कर दिया। क्या धुन है, और क्या आवाज पायी है। आज रात का आपका यह डिनर, मिसेज कुमार, भारतीय संस्कृति का सच्चा नमूना है। सिर्फ खाने से हम लोगों का काम नहीं चलता। आत्मा की खूराक भी चाहिए।

मि० कुमार : **गिलास लेकर** इधर लाइये। आत्मा की खूराक सोडा मिलाकर पेश करता हूं।

मि० टी० : धन्यवाद। गोकि मेरा इशारा उस खूराक की तरफ था जिसका अहसास आपको अभी-अभी हो जायगा जबकि श्रीमती भाटिया अपना गाना पेश करेंगी।

तालियां बजती हैं। श्रीमती भाटिया एक लोकगीत गाती हैं। गाना खत्म होने पर फिर तालियां बजती हैं।

मि० टी० : वाह रे हिंदुस्तान। कितने तेरे रूप हैं, कितने तेरे रंग हैं, आपने तो, बहन, देश-दर्शन करा दिया। युगों पहले हिंदुस्तान के किसी दूर देहात में, न जाने किसने—किसी चरखा कातती विधवा ने या ढोर चराते छोकरों ने—इस गीत के पद मिलाये। और आज ये गीत बारह हजार मील चलकर हमारे दिलों को छू रहे हैं। यह असल चीज है। ये प्लास्टिक के फूल नहीं हैं। ये जंगली गुलाब हैं जिन्हें देश की मिट्टी और इंसान के दर्द ने जन्म दिया है।

मि० भाटिया : अरे भई, मिस्टर टी० तो एकदम शायरी करने लगे।

मि० टी० : इसमें, मेरे भाई, दो बातें हैं। पहली तो यह कि जब अपना कोई आइडिया जोर पकड़ जाता है तो या तो शायरी के अंदाज

में निकलता है या गाली के। और दूसरी यह कि मिस्टर कुमार की ह्विस्की सौ फीसदी शुद्ध आगमार्का होती है।

श्रीमती मूर्ति : आज खाली बातें बनाने से नहीं चलेगा, मिस्टर टी०। आज आपको भी गाना पड़ेगा।

कई लोग इस बात का समर्थन करते हैं।

मि० टी० : ठहरिये, ठहरिये। मैं एक और प्रस्ताव रखता हूं। मैं और मिसेज मूर्ति, आप, हम लोग तो एक दूसरी ही कला के उपासक हैं। क्यों न हम एक ड्रामा पेश करें ?

श्रीमती मूर्ति : पर कैसा होगा ? नाटक कहां है ? और अभी-अभी सब कुछ हो जायगा ?

मि० टी० : ऐसी क्या मुश्किल है ? सब कल्पना ही का खेल तो है। अभी आपने देखा मिसेज कुमार गा रही थीं तो गढ़वाल के चीड़ और देवदार के जंगल हमारी आंखों के सामने झूमने लगे। और मिसेज भाटिया ने तो हरियाना का एक गांव ही न्यूयॉर्क में हाजिर कर दिया। तो फिर आप और मैं एक नाटक क्यों नहीं दिखा सकते ?

श्रीमती मूर्ति : अच्छा, बताइये कैसे ?

मि० टी० : आप आइये मेरे साथ। कल्पना के द्वार खुले रहें, बस। बाकी आप से आप हो जायगा।

दोनों एक नियत स्थान पर आ जाते हैं। उनके वहां पहुंचते ही बाकी कमरे में अंधेरा हो जाता है।

श्रीमती मूर्ति : दो ही पात्रों से काम चलाना होगा क्या ? और नहीं चाहिए ?

मि० टी० : एक और बढ़ा लेते हैं अगर आप चाहें। मिस्टर मूर्ति को रख लें ? आपके साथ पार्ट खेलने में शरमायेंगे तो नहीं ?

श्रीमती मूर्ति : उल्टे डर यह है कि पार्ट न मिला तो कहीं नाराज न हो जायें।

मि० टी० : तब तो हीरो का पार्ट उनका। हीरोइन का पति होने से बड़ी क्वालिफिकेशन क्या है ? **दर्शकों में बैठे हुए मि० मूर्ति की ओर देखकर** मूर्ति गारू, आप भी फंस गये इस झमेले में। लेकिन मुझे दोष न दीजियेगा।

श्रीमती मूर्ति : और किसे रखा जाय ?

मि० टी० : बस, भई । तीन का बनता है ट्राएंगल । इससे जबरदस्त ड्रामा कहां होता है ? **दर्शकों की ओर और फिर ये सब भी तो** अपना-अपना पार्ट खेल रहे हैं ।

श्रीमती मूर्ति : आपकी ड्रामा की थ्योरियां बहुत सुनी हैं । पर अगर नाटक फ्लैट गया तो जिम्मेदारी आपकी होगी, मिस्टर टी०।

मि० टी० : अब मिस्टर टी० नहीं । मिस्टर टी० को जाइये एकदम भूल । अब मैं तो बन गया सूत्रधार, और आप खेल रही हैं पार्ट नटी का ।

मि० टी० एक पुराने ढंग का सिर का आभूषण या मुकुट श्रीमती मूर्ति को देते हैं और स्वयं पगड़ी बांधना शुरू करते हैं ।

श्रीमती मूर्ति : वेरी गुड आइडिया । और मिस्टर मूर्ति ?

मि० टी० : उनका अभी काम नहीं । समय आने पर जब आप एक 'बोर्ड' पत्नी का रोल अदा करेंगी ···

नटी : **क्षण भर सोचकर** समझ गयी । वे तब मिस्टर मुरारी बनकर आयेंगे ।

सूत्रधार : बिल्कुल ठीक । पर अभी वापस मौजूदा सीन में आइये । सूत्रधार नटी से कह रहा है कि हे प्रिये—

नगाड़े के बोल सुनाई देते हैं ।

सूत्रधार : हे प्रिये । आज नाटक दिखाने का बीड़ा क्या उठा लिया, सिर पर पहाड़ उठा लिया ।

नटी : वाह ।
अभी तो डींग मारते थे, और अब घबराने लगे ।
नजर पड़ा मैदाने जंग, तो हुजूर कतराने लगे ।

सूत्रधार : क्या बताऊं प्रिये कुछ समझ में नहीं आता ।
कहना बहुत कुछ है पर कहा नहीं जाता ।।
मैं कुछ कहता हूं ये सुनते कुछ और हैं ।
पर क्या करूं ये समाज के सिरमौर हैं ।।
जो जिंदगी का सच है इनसे देखा नहीं जाता ।
सच पै मुलम्मा चढ़ाना हमसे सीखा नहीं जाता ।।

नटी : फलसफे के फेर में न जाइये श्रीमान् ।
वक्त के मोहताज हैं ये मेहरबान ।।

इस आला दिमाग को खड़खड़ाइये जरा ।
दिल के कबूतर को फड़फड़ाइये जरा ।
उम्दा-सा, कोई प्लाट कहीं से चुराइये ।
उसमें चंद चुनिंदा चुटकुले मिलाइये ।।
हरदिल पसंद, हरदिल फरेब डरामा दिखाइये ।
हंसिये, हंसाइये, तालियों का साज सुनवाइये ।।

सूत्रधार : हरदिलपसंद खेल हो, प्यार की बातों में मजाकिया मेल हो । हीरो का बोलबाला हो, बदमाशों का मुंह काला हो । ऐसा कुछ मंतर चल जाय कि बाघ-बकरी एक घाट पानी पियें, अमीर गरीब का अंतर न रह जाय । क्यों ?

नटी : बिल्कुल ठीक ।

सूत्रधार : बिल्कुल ठीक । यानी कि ऐसी दुनिया बना दें, जैसी न भगवान बना पाया न इंसान बना पाया ।

नटी : **डांटकर**
दुनिया से हमें क्या लेना
हमें तमाशे से काम है
जो दर्शकों का दिल बहलाय
नाटक उसी का नाम है ।
अजी, हम चलकर अपना काम दिखायें । भला क्या है, बुरा क्या है, क्यों इस झगड़े में पड़ने जायें ?

सूत्रधार : अच्छा भई, अच्छा । तुम्हारी बात सर आंखों रखता हूं और अपनी बकवास बंद करके नाटक शुरू करता हूं । **सोचता है** जो सुखी लोगों का किस्सा उठायेंगे, तो क्यों कर किसी का दिल दुखायेंगे । और जो मियां-बीबी में पटती रहेगी तो क्यों किसी को बात लगेगी, क्यों किसी की दुखती रग दुखेगी ? **नगाड़े के बोल सुनाई देते हैं** अमेरिका नाम का एक बड़ा सम्पन्न देश है । उसमें न्यूयार्क नाम का एक विशाल नगर है । वहां एक बहुत सुखी भारतीय दम्पत्ति रहते हैं ।

नटी : श्री और श्रीमती मुरारी ।

सूत्रधार : श्री और श्रीमती मुरारी । प्रेम, रूप, धन—किसी चीज की यहां कमी नहीं है ! कमी अगर कोई है तो यही कि मिस्टर मुरारी को दफ्तर जाना लाजिमी है और मिसेज मुरारी

को तमाम दिन अकेले काटना पड़ता है। टेलिविजन में अब पहले वाला ग्म नहीं रहा। और उपन्यास सब पढ़ डाले। शुरू-शुरू में मिस्टर मुरारी हर घंटे फोन कर लिया करते थे। अब उन्हें फुरसत भी कम रहती है और इस बात में भी अब वह बात नहीं रह गयी। अब कुछ और नशा चाहिए। अब वे तमाम दिन कल्पना लोक में खोयी रहती हैं। उनका मन-पंछी कभी उन्हें वापस उनके बचपन में, कभी कालेज के जीवन में पहुंचा देता है। कभी-कभी ऐसे घटनाचक्रों की उन्हें नायिका बना देता है जिनका वास्तविकता से कोई संबंध नहीं। आज कहां-कहां की सैर हुई, यह सवाल पति-पत्नी के बीच एक खासा हंसी-मजाक का विषय बन गया है। शाम को या रात गये जब मिस्टर मुरारी घर लौटते हैं, तब कहीं श्रीमती मुरारी उस तिलस्मी दुनिया से निकलकर वर्तमान में आ पाती हैं। इसी तरह दिन, हफ्ते, महीने, साल बीतते चले जाते हैं। और जिंदगी है कि कटती चली जाती है। **नटी से** श्रीमती मुरारी। संभालिये अपना घर। मिस्टर मुरारी पहुंचते ही होंगे।

नटी सर का आभूषण उतारकर सूत्रधार को देती है और श्रीमती मुरारी की भूमिका में हाथ में एक किताब लिये सोफे के ऊपर बैठ जाती है। सूत्रधार चला जाता है और पगड़ी उतारकर दर्शकों के साथ बैठ जाता है।

श्रीमती मुरारी किताब पढ़ते-पढ़ते सोफे के ऊपर सो गयी हैं। बहुत धीमे स्वर में बांसुरी की धुन सुनाई पड़ती है। श्रीमती मुरारी के चेहरे पर प्रसन्नता-सी झलक उठती है। बांसुरी का स्वर रुकते ही झटके से उनकी नींद खुल जाती है।

सोफे पर बैठकर वे एक क्षण भावमग्न रहती हैं मानो सपना दोहरा रही हों। फिर किताब पटककर उठती हैं और सीधे रेफ्रिजरेटर के पास जाती हैं। कुछ निकालकर खाती हैं। रेकर्डप्लेयर के पास जाकर एक फिल्मी रेकार्ड चढ़ाती हैं। आलमारी से एक बोतल निकालती हैं। एक ड्रिंक बनाती हैं। एक घूंट पीकर ड्रिंक रख देती हैं। रेकर्डप्लेयर बंद कर देती हैं। रेडियो खोल देती हैं। कई स्टेशन बदलने

के बाद उसे भी झुंझलाकर बंद कर देती है। टेलीफोन मिलाती है।

श्रीमती मुरारी : **टेलीफोन मिलाकर** गुड आफ्टर नून, एक्सटेंशन ३२५, प्लीज। मिस्टर मुरारी है ? जी हां, मैं मिसेज मुरारी बोल रही हूं—नमस्ते। दो ही बजे घर चले गये ? यहां तो अभी तक नहीं पहुंचे—जी हां, जी हां, धन्यवाद। नहीं नहीं, कोई खास बात नहीं। जी जी, नमस्ते। **टेलीफोन रख देती है** दो ही बजे घर चले गये ? घर कौन आता है ? घर में क्या रखा है ?

श्रीमती मुरारी एक घूंट पीती है। फिर गिलास को रोशनी की तरफ उठाकर देखती हैं। दरवाजे की घंटी बजती है। श्रीमती मुरारी चौंककर उठती हैं और ड्रिंक फेंककर गिलास सिंक में डाल देती हैं। दरवाजा खोलती हैं। मुरारी आता है। वह पत्नी की ओर देखकर स्नेहपूर्वक मुस्कराता है और कोट उतारता है। वह उसकी ओर ध्यान से पर बिना मुस्कराये देख रही है।

मुरारी : अब मुस्करा डालिये। कब तक नैनों की भाषा में डांटती रहोगी ?

श्रीमती मुरारी : काम ही डांट खाने का करोगे तो किया क्या जाय ? दो बजे दफ्तर छोड़ दिया। कहां थे अब तक ?

मुरारी : अच्छा, यह बात है। ये दफ्तर वाले मेरी सारी पोल खोल देतें हैं। बीबी से बात छिपाना नामुमकिन हो जाता है। बोलो तो, कहां रहा हूंगा मैं जो सीधे घर नहीं आया ?

श्रीमती मुरारी : हमें क्या मालूम। होगी कोई सहेली आपकी।

मुरारी : बस तुम लोग तो सहेली–सहेला के अलावा कुछ सोच ही नहीं सकतीं। श्रीमती जी, आप अपना विश्वास अटल रखें। मैं निहायत नेक काम से गया था। एक बीमार को देखने। इसीलिए दफ्तर से जल्दी उठ गया था।

श्रीमती मुरारी : कौन है बीमार ?

मुरारी : उस दिन वह मि० नोर्टन नाम का आदमी मिला था पोलिश एम्बेसी की पार्टी में, याद है ? उस बेचारे का एक्सिडेंट हो गया कल। टांग में काफी चोट आयी है। एक दिन तुम भी

चलना। मिसेज नोर्टन बहुत याद कर रही थीं।

श्रीमती मुरारी : राम राम, यह तो बुरी बात हुई। हां, मुझे भी ले चलना एक दिन।

मुरारी : मेरी तो सफाई हो गयी। अब आप बताइये। मैंने दफ्तर से उठते समय फोन किया था। आप कहां गायब थीं।

श्रीमती मुरारी : अरे सचमुच। लगता है जैसे ही मैं मेले देखने नीचे उतरी तुम्हारा फोन आ गया।

मुरारी : चलो, मान लेते हैं। हम तो विश्वासी आदमी हैं। जो कहा मान लिया।

श्रीमती मुरारी : चलो चलो, बहुत दिल्लगी मत करो। जब फोन किसी ने नहीं उठाया तो फिकर तक नहीं हुई। सोचा होगा चलो छुट्टी हुई।

मुरारी सोफे के ऊपर बैठकर अंगड़ाई लेता है।

मुरारी : मैं तुम्हारे सवाल के इंतजार में हूं।

श्रीमती मुरारी : कौन-सा सवाल ?

मुरारी : एक बुनियादी सवाल जो तुम रोज पूछती हो कि पहले चाय पीओगे या खाना खाओगे ?

श्रीमती मुरारी : मैं सचमुच बड़ी खराब हूं। एक दिन तुम खूब पीटो मुझे। बोलो, चाय बनाऊं या खाना लगाऊं ?

मुरारी : मार-पिटाई वाली तो कोई बात हुई नहीं। आज मैं जरा जल्दी भी तो घर पहुंच गया।

श्रीमती मुरारी : चाय बना देती हूं। जब तक चाय पीते हो, खाना गरम हो जाता है।

मुरारी : धन्यवाद। पर न तो अभी चाय बनाओ न खाना खिलाओ। एक गिलास में थोड़ी-सी व्हिस्की डालो। उतना ही पानी डालो। दो डली उसमें बर्फ डालो। फिर बड़े प्रेम से उसे लेकर मेरे पास आओ।

श्रीमती मुरारी : ऐसे बता रहे हैं जैसे वैद्यराज की दवा बन रही हो। **शराबों वाली आलमारी की ओर जाते-जाते** पता नहीं क्या स्वाद मिलता है तुम्हें इस व्हिस्की में। एकदम कड़वी।

मुरारी : पुष्पा !

श्रीमती मुरारी : क्या हुआ ?

मुरारी : तुमने व्हिस्की—पी क्या ?

श्रीमती मुरारी : **हंसकर** नहीं, पर पीने का इरादा है एक दिन ।

मुरारी : तुमने कैसे कहा कि उसका स्वाद··

श्रीमती मुरारी : वह तो पता चल जाता है । जिस तरह पीने वाले मुंह बनाते हैं उससे मालूम हो जाता है कि चीज कड़वी है ।

मुरारी : रहने दो, पुष्पा । ड्रिंक रहने दो ।

श्रीमती मुरारी : **ड्रिंक बनाते-बनाते** रहने क्यों दो ? तुम्हें कड़वी नहीं लगती तो तुम पीओ । मुझे कड़वी अच्छी लगती ही नहीं । मेरे मायके में करेला सबको पसंद है । पर मैं कभी छूती नहीं ।

श्रीमती मुरारी ड्रिंक लेकर आती हैं और नैपकिन से पोंछकर उसे पति के हाथ में पकड़ा देती हैं । उसके पास फर्श पर बैठ जाती हैं । उसकी कमीज का कफ ठीक करती हैं । स्निग्ध दृष्टि से उसकी ओर देखती हैं । फिर उठकर रेकर्डप्लेयर के पास आती हैं और एक रेकर्ड लगाती हैं । सितार पर पीलू का आलाप बजने लगता है । वे फिर पति के पास आकर बैठ जाती हैं । मुरारी एक-दो घूंट पीकर गिलास मेज पर रख देता है ।

मुरारी : आज कोई चिट्ठी आयी ?

श्रीमती मुरारी : ना, कौन लिखेगा चिट्ठी ? किस को फिकर है ? सब समझते हैं पुष्पा न्यूयॉर्क में आनंद कर रही है ।

मुरारी : तुम्हें चिट्ठी की जरूरत भी क्या है ? तुम तो कल्पना के हवाई घोड़े पर रोज ही घर का एक चक्कर लगा लेती हो । आज कहां-कहां जाना हुआ, जरा सुनूं तो ।

श्रीमती मुरारी : इलाहाबाद तक हो आयी । एल्फ्रेड पार्क में कैना के फूल खिले हुए थे । रोली और चंदन के रंग के ।

मुरारी : मैं साथ नहीं था ?

श्रीमती मुरारी : **हंसकर** तुम कहां ? **बनावटी नाटकीयता से** तुम उस समय तक मेरे भाग्याकाश में उदय ही कहां हुए थे ।

मुरारी : वाह ! क्या भाषा और क्या भाव ! तुम्हारा कालेज का दोस्त तुम्हारे साथ रहा होगा ।

श्रीमती मुरारी : कोई जरूरी है ? और जो मेरी सहेली मेरे साथ रही हो तो ?

मुरारी : जरूरी तो नहीं है । परंतु अगर सहेली साथ रही हो तो

हीरो के आते ही किसी तिकड़म से सहेली को गायब कर देना होगा। वरना कहानी आगे बढ़ेगी कैसे ?

श्रीमती मुरारी : तो ठीक है। सहेली चली गयी अपने हीरो के साथ। ठीक है न ? तब आया मुख्य नायक।

मुरारी : आया। फिर ? पद्य में प्रेम निवेदन किया कि गद्य में ?

श्रीमती मुरारी : उस दिन पहली बार मैंने रवींद्र संगीत सुना। पहली बार।

मुरारी : आहा ! फिर आकाश में देवता लोग प्रकट हुए और फूल बरसाने लगे।

श्रीमती मुरारी : **हंसकर** ओह, तुम ये सारी बातें झूठ समझ रहे हो ?

मुरारी : एकदम झूठ, सोलह आना झूठ। मैं सिद्ध कर सकता हूं।

श्रीमती मुरारी : कैसे ? करो सिद्ध।

मुरारी : सीधी-सी बात है। जहां कोई वास्तव में नहीं गया, वहां कल्पना में कैसे जाएगा ?

श्रीमती मुरारी : मैं इलाहाबाद नहीं गयी ? पूछ लो जो पूछना हो। एल्फ्रेड पार्क, कैनिंग रोड, टैगोर टाउन से लेकर कटरा-कर्नलगंज-दारागंज तक।

मुरारी : **आश्चर्य से** ये सब तुम जानती हो ? तो तुमने उस दिन क्यों कहा कि तुमने इलाहाबाद नहीं देखा है ?

श्रीमती मुरारी : किस दिन ?

मुरारी : जिस दिन हम बातें कर रहे थे कि विवाह से पहले कौन-कौन से तीर्थ हमने देखे है ?

श्रीमती मुरारी : भूल गयी हूंगी। बहुत सी बातें होती हैं जो मैं कभी-कभी बिल्कुल भूल जाती हूं। फिर न जाने क्यों याद आ जाती है। चाहे लाख भूलने की कोशिश करो।

मुरारी : ऐसी कोई बात हुई क्या इलाहाबाद में जो तुम भुला देना चाहती हो ?

श्रीमती मुरारी : ऐसी तो कोई बात नहीं। मैंने कहा कि ऐसी कोई बात हुई है ?

रेकर्ड खत्म हो चुका है। श्रीमती मुरारी जाती हैं और रेकर्ड प्लेयर बंद कर देती हैं।

मुरारी : मुझे तो ऐसा ही लगा।

श्रीमती मुरारी : **हंसकर** सब झूठ है, सब झूठ है। एकदम झूठ है।

मुरारी : क्या झूठ है ?

श्रीमती मुरारी : जो तुम समझ रहे हो। मैंने तुम्हें बुद्धू बना दिया।

मुरारी : कैसे ?

श्रीमती मुरारी : मैं कभी इलाहाबाद गयी ही नहीं। माया की कहानियां पढ़कर इलाहाबाद के कई मुहल्लों के नाम याद हो गये।

मुरारी : चलो, मान गये। अब अपनी कही बात याद रखना। फिर कभी इलाहाबाद का नाम आया तो तुम्हें याद दिलाऊंगा।

श्रीमती मुरारी : अब कभी इलाहाबाद का नाम न लूंगी।

मुरारी : लेकिन क्यों ? ऐसी कौन-सी बात है इलाहाबाद में ? जैसे और शहर वैसे इलाहाबाद। उसका नाम ही नहीं लूंगी, ऐसा संकल्प करने की क्या बात है ?

श्रीमती मुरारी : कहा तो कोई खास बात नहीं। तुम एक बात के पीछे पड़ते हो तो पीछा नहीं छोड़ते।

मुरारी इस अकारण झुंझलाहट पर मुस्कराता हुआ सिर हिलाता है। उसका गिलास खतम हो चुका है। यह उठकर जाता है और दूसरा गिलास बनाने लगता है। श्रीमती मुरारी खयालों में खोई हुई, कुछ परेशान-सी दर्शकों की ओर बढ़ती हैं। बांसुरी पर वही धुन सुनाई देती है जो पहले सुनी जा चुकी है। सूत्रधार प्रोफेसर रतन नाथ की भूमिका में प्रवेश करता है और उसी स्थान पर बैठ जाता है जो मुरारी ने अभी-अभी खाली की थी। श्रीमती मुरारी बराबर आगे की ओर देख रही हैं। न वे प्रोफेसर को आते देखती हैं न सारे दृश्य में उसकी ओर मुड़ती हैं। परंतु ज्यों ही प्रोफेसर बैठता है वे जड़वत खड़ी रह जाती हैं।

श्रीमती मुरारी : सारे दरवाजे तो बंद हैं। तुम कैसे अंदर आ गये ?

प्रोफेसर : दरवाजे बंद करके मुझे कैसे रोकोगी ? मैं तो तुम्हारे मन के अंदर हूं।

श्रीमती मुरारी : तुम क्यों चले आये ? मेरे पति देखेंगे तो क्या कहेंगे ?

प्रोफेसर : वे मुझे नहीं देख सकते, जब तक तुम न दिखाओ। मैंने कहा न, मैं तो तुम्हारे मन के अंदर हूं। बाहर मेरा कोई अस्तित्व ही नहीं है।

श्रीमती मुरारी : तुम जाओ, जाओ, एकदम चले जाओ।

प्रोफेसर : बिना बुलाये कोई नहीं आता।

श्रीमती मुरारी : नहीं, मैंने तुम्हें नहीं बुलाया। मुझे कुछ नहीं चाहिए। ले

जाओ अपना रवींद्र संगीत, अपना खुला आकाश, अपने बांस के झुरमुट, अपनी कैना की क्यारियां। सब ले जाओ।

प्रोफेसर : मेरा कुछ नहीं, सब तुम्हारा है। तुम्हारा सौंदर्यबोध न होता तो मेरे गाने में जादू कहां होता, कैना के फूलों में रंग कहां होता ?

श्रीमती मुरारी : वह सब बीत गया। उसे याद करने से कुछ लाभ नहीं। कुछ था जो हमेशा के लिए खो गया।

प्रोफेसर : अतीत कभी नहीं खोता। अनुभव के उन क्षणों में तुम्हारा व्यक्तित्व निखरा। तुमने अपने को पाया। जो तुम्हें मिला हमेशा तुम्हारे पास रहेगा।

श्रीमती मुरारी : ना बाबा ना, तुम जाओ, तुम जाओ। वे कभी इस बात को समझ नहीं पायेंगे।

प्रोफेसर उठकर जाता है। मुरारी गिलास हाथ में लिये आ रहा है। प्रोफेसर उसके सामने से गुजरता है पर उसे कुछ आभास नहीं होता। मुरारी आकर अपने स्थान पर बैठ जाता है। श्रीमती मुरारी रेकर्डप्लेयर के पास जाकर रेकर्ड देखने लगती हैं।

मुरारी : इधर आओ, भई। कितनी बार ये पुराने रेकर्ड सुनोगी ?

श्रीमती मुरारी आती हैं और पति के पीछे उसके कंधों पर हाथ रख कर खड़ी हो जाती हैं।

श्रीमती मुरारी : मैं बड़ी खराब लड़की हूं।

मुरारी : यह स्वागत भाषण है या मुझसे कहा गया ?

श्रीमती मुरारी : अगर तुमने सुन लिया तो तुम्हीं से कहा गया ?

मुरारी : तो कारण भी बताओ। कन्फेशन हो तो पूरा ही होना चाहिए।

श्रीमती मुरारी : तुम उस समय से खाली व्हिस्की पी रहे हो। मुझसे यह नहीं हुआ कि थोड़े-से काजू ही सामने रख दूं।

काजू की शीशी और एक रकाबी लाती हैं। थोड़े-से काजू रकाबी में डालकर उसके सामने रखती हैं।

मुरारी : इसी गलती के लिए अपने को बुरा कह रही थीं ?

श्रीमती मुरारी : इसे भी एक लक्षण समझो। मैं भूल क्यों जाती हूं ? मुझे तुम्हारा उतना खयाल क्यों नहीं रहता जितना पहले रहता था ? मुझे क्यों लगता है कि तुम मुझसे दूर जा रहे हो ?

मुरारी : सब तुम्हारे कल्पनाशील दिमाग की उपज है। ये सब कहानियां-उपन्यास जो पढ़ती रहती हो, उसी का नतीजा है। इस तरह की बात अपने खयाल से एकदम हटा दो। मैं तो तुम्हें पाकर—बस क्या कहूं। अगर कुछ कहूं तो फिल्मों-उपन्यासों वाला डायलाग हो जायेगा।

काजू की शीशी वापस रखने जाती हैं। बांसुरी की परिचित धुन सुनाई देती है। श्रीमती मुरारी जड़वत खड़ी रह जाती हैं। कमरे की दूसरी ओर, उनके ठीक उल्टी दिशा में, प्रोफेसर आकर खड़ा हो जाता है। तीनों पात्र एक ही रेखा पर स्थित तीन बिंदु हैं। श्रीमती मुरारी, मानो अपने को संयत करके घूम पड़ती हैं।

श्रीमती मुरारी : तुम हमेशा के लिए खो क्यों नहीं जाते ?

प्रोफेसर : यह असंभव है, तुम क्यों नहीं सोच पातीं ? मैं तो तुम्हारे चेतन-अवचेतन के ताने बाने में बुना हुआ हूं। तुम्हारे जीवन का सबसे बड़ा अनुभव हूं। मुझसे मुंह फेरना सच्चाई से मुंह फेरना है।

श्रीमती मुरारी : लेकिन वह कैसी सच्चाई है, जरा सोचो ना ! तुम विवाहित थे। मेरे प्रोफेसर थे। और मैं तुम्हारे साथ भाग निकली।

प्रोफेसर : हमने किसी का बुरा नहीं किया। अपना दर्द आप सहा।

श्रीमती मुरारी : सिर्फ सात दिन इलाहाबाद में—और ये जनम भर की घुटन।

प्रोफेसर : जो खोया उसे कब तक रोती रहोगी ? उन सात दिनों में जो तुमने पाया उसे संजोकर रखो। वह अनमोल है।

श्रीमती मुरारी पति के पास आकर उसके कंधों पर हाथ रखकर खड़ी हो जाती हैं।

श्रीमती मुरारी : वे समझ पायेंगे ?

प्रोफेसर : उन्हें समझना होगा ! और कोई रास्ता नहीं है।

श्रीमती मुरारी : कोई अनिष्ट तो नहीं होगा ?

प्रोफेसर कुछ कहने को होता है पर बिना जवाब दिये चला जाता है।

मुरारी : **पत्नी के हाथ के ऊपर अपना हाथ रखकर** जिसे तुम इतनी मजबूती से पकड़े हुए हो वह मेरा कंधा है, सायकिल का हैंडिल नहीं।

श्रीमती मुरारी : **हंसकर** मैं सायकिल चला रही थी, कैसे समझ लिया ?

मुरारी : दो व्हिस्की पीकर मेरे ज्ञान-चक्षु खुल जाते हैं। भूत-भविष्य सब दिखाई देने लगता है। दूसरे के मन की बात किताब की तरह पढ़ लेता हूं।

श्रीमती मुरारी : कभी मेरे मन की किताब पढ़ने की कोशिश तो करो।

मुरारी : अनेक बार पढ़ा है। एक-एक पेज जानता हूं।

श्रीमती मुरारी : याने किताब खत्म हो गयी। पढ़कर एक तरफ रख दी।

मुरारी : यह कोई चलता उपन्यास नहीं है जो पढ़ा और एक तरफ रख दिया। इसमें तो जितनी बार पढ़ो नया रस है, नया ज्ञान है।

श्रीमती मुरारी : सच कह रहे हो ? इतना मानते हो तुम मुझे ?

मुरारी : तुम्हारा क्या खयाल है ?

श्रीमती मुरारी : अच्छा, एक बात बताओ। तुम मुझसे हमेशा सच बोलते हो या कभी बात छिपाते भी हो ?

मुरारी : छिपाने वाली कोई बात भी तो हो।

श्रीमती मुरारी : तुम्हारी दुनिया बड़ी दूर लगती है। दिन भर क्या करते हो, कहां रहते हो, दफ्तर में किस तरह के लोगों से मिलते हो—इन सब बातों की मैं कल्पना भी नहीं कर सकती।

मुरारी : एक दिन ले चलेंगे तुम्हें भी, देख लेना। देखकर बड़ी निराशा होगी, कहे देता हूं।

प्रकाश मंद होता है। मुरारी दिखाई नहीं देता, सिर्फ उसकी आवाज सुनाई देती है। श्रीमती मुरारी के चेहरे पर प्रकाश की एक क्षीण किरण पड़ रही है। अब जो वार्तालाप हो रहा है, एक-दूसरे को सुनाई नहीं दे रहा है।

श्रीमती मुरारी : तुम कुछ कह रहे थे ? मुझे सुनाई क्यों नहीं देता ?

मुरारी : दफ्तर तो एक रोज का धंधा है। कौन-सी नयी बात वहां होती है ?

श्रीमती मुरारी : जब हमारी शादी हुई थी, सब कुछ नया था। कभी सपना देखती हूं तुम दूर किसी पहाड़ी पर चढ़ गये और मैं नीचे खड़ी देख रही हूं।

मुरारी : और कोई नयी बात होती है तो मैं तुम्हें बता ही देता हूं। जैसे घोष बाबू की तरक्की हो गयी। कृष्णन बदलकर सिंगापुर जा रहे हैं। मिसेज शर्मा मेटर्निटी लीव पर गयीं। और सबसे

बड़ी खबर कि दफ्तर वाले हांगकांग से साड़ियां मंगवा रहे हैं।

श्रीमती मुरारी : तुम दफ्तर में होते हो तो मैं सोचती हूं आज यह कहूंगी, वह कहूंगी। जब तुम आते हो, लगता है कुछ कहने को नहीं है।

मुरारी : लेकिन यह कि मिस्टर एक्स मिस्टर वाइ की साहब से चुगली खा रहे थे, या कि मिस्टर जेड का पेटिशन रिजेक्ट हो गया—इन सब दफ्तर के झगड़ों से तुम्हें क्या मतलब ?

श्रीमती मुरारी : जब तुम घर में होते हो तब तो मुझे अकेला नहीं होना चाहिए।

मुरारी : सच कहता हूं दुनिया बड़ी जलील है। अच्छे-भले लोग अपने मतलब की खातिर दूसरे की जान तक लेने पर उतारू हो जाते हैं। यह सब कहकर तुम्हें दुखी करने से कोई फायदा है ?

श्रीमती मुरारी : कभी सपना देखती हूं, चारों तरफ कोहरा है, कोहरा ही कोहरा। दिखाई कुछ नहीं देता, न कुछ सुनाई देता है। सिर्फ तरह-तरह की आवाजों की गूंज आती है।

मुरारी : तुम वह हो जिसे कहते हैं घर की शोभा, मन का मंदिर। आदमी लाख झंझटों में फंसा हो, ठोकरें खाता हो, पर पत्नी के पास आते ही अपना दुख भूल जाता है। तुम दुनिया के झगड़ों से दूर रहो, यह अच्छा नहीं है ?

श्रीमती मुरारी : तुम न जाने क्या कह रहे हो, मैं न जाने क्या कह रही हूं।

मुरारी : कुछ कहो न। चुप क्यों हो गयीं ? पुष्पा !

कमरे में प्रकाश हो जाता है।

श्रीमती मुरारी : हां।

मुरारी : क्या सोचने लगीं ? बोलती क्यों नहीं ?

श्रीमती मुरारी : इसका मतलब यह हुआ कि बाहर की दुनिया के जो समाचार मुझे मिलते हैं, सेंसर होकर। कुछ चीजें मेरे लिए अच्छी हैं, कुछ नहीं।

मुरारी : यह ठीक नहीं है क्या ?

श्रीमती मुरारी : ठीक है।

मुरारी : तुम्हारे कहने से तो नहीं लगता कि ठीक है।

श्रीमती मुरारी : जो तुम समझते हो वही ठीक है। मेरे समझने न समझने से कुछ नहीं होता।

मुरारी : यह क्या बात कही तुमने ? क्यों भला ?

श्रीमती मुरारी : **कुछ देर चुप रहकर** स्त्री का जनम जो लिया है। अब जाकर बात मेरी समझ में आयी। हमें अपने मन से कुछ सोचने-समझने की जरूरत नहीं है। जो कहा जाय करते जाना है। इसीलिए स्त्री को तहाकर अलग रख दिया गया है। बाहर की हवा भी उस पर न लगने पाये।

मुरारी : तो हर्ज क्या है ? दुनिया भर की जलालत से बची रहती हो। तभी तो देवी कहलाती हो।

श्रीमती मुरारी : हां, देवी तो बना दिया, पर इन्सान मानने को कोई तैयार नहीं।

मुरारी : देवता तो, भई, इन्सान से एक दर्जे ऊंचे होता है। इसमें ऐसी क्या बुराई है ?

श्रीमती मुरारी : **आवेश में** झूठ में, आडंबर में, मिथ्याचार में, क्या बुराई है ?

मुरारी : **हंसकर** अरे, यह सब आरोप मुझ पर लगाया जा रहा है ?

श्रीमती मुरारी : तुम भी तो पुरुष जाति के हो।

मुरारी : मेरे अत्याचार का एक उदाहरण तो दो।

श्रीमती मुरारी : सुनोगे ? तो लो एक उदाहरण। सब जानते हैं शराब पीना बुरा है। सब यह भी जानते हैं कि थोड़ी-थोड़ी कभी पी लेने में कोई खास हर्ज भी नहीं है। लेकिन तुम अपने आप पर तो विश्वास कर सकते हो कि शराबी नहीं बनोगे, पर मुझ पर नहीं कर सकते। क्यों ?

मुरारी : **कुछ विस्मित पर हंसते-हंसते** क्योंकि मुझे अपनी जान की उतनी परवाह नहीं है जितनी तुम्हारी।

श्रीमती मुरारी : यूं कहो कि औरत की अक्ल का क्या भरोसा ? आखिर—"पिता रक्षति कौमार्ये भर्ता रक्षति यौवने"।

मुरारी : **गिलास उसकी ओर बढ़ाकर** लो भई, नाराज मत होओ। अगर यह इतनी बड़ी चीज है।

श्रीमती मुरारी : यह बड़ी चीज नहीं है। बड़ी चीज है विश्वास।

मुरारी : विश्वास है तभी दे रहा हूं, सच मानो। इस दृष्टि से मैंने इस चीज को कभी नहीं देखा था। पर तुम पीकर देखो।

मुझे कोई एतराज नहीं है। न मैं समझता हूं कि तुम पीने लगोगी तो एकदम शराबी ही हो जाओगी।

क्षण भर दोनों चुप रहते हैं। मुरारी मेज पर उंगली से वृत्त और त्रिकोण बना रहा है। श्रीमती मुरारी कहीं दूर देख रही हैं।

श्रीमती मुरारी : एक बात कहूं, नाराज तो नहीं होंगे ?

मुरारी : जो बात तुम कहने जा रही हो नाराज होने की नहीं है।

श्रीमती मुरारी : तुम समझ गये ?

मुरारी : शायद। पर कहो। तुम्हारे मुंह से सुनूं।

श्रीमती मुरारी : तुम शायद ठीक ही समझे। शराब मेरे लिए कोई नयी चीज नहीं रही।

मुरारी : **उसका हाथ पकड़कर अपने पास बिठाते हुए** यहां आकर बैठो।

श्रीमती मुरारी : बहुत बड़ा धक्का लगा ?

मुरारी : हां, शायद इसी की जरूरत थी। एक घर में रहते हुए भी हम कितने अनजान हैं। मैं कितना बेखबर हूं तुम्हारी तरफ से। तुमने ठीक कहा शायद। हम पुरुषों की दृष्टि में स्त्री जीवन की एक सहूलियत है, बस। उसका अपना अलग कोई अस्तित्व नहीं है। मैं भी अपने संस्कारों से मुक्त नहीं हूं इसलिए देख नहीं पाया कि तुम्हारे मन में कुछ है जो तुम्हें साल रहा है, जो तुम्हें चैन नहीं लेने देता। क्या बात है, पुष्पा ?

श्रीमती मुरारी : **क्षण भर चुप रहकर** न जाने कैसा एक परदा-सा पड़ गया तुम्हारे और मेरे बीच। मैं चाहती हूं जैसी मैं हूं—अच्छी-बुरी—वैसी तुम मुझे देखो। किसी तरह की दीवार न रहे।

मुरारी : नहीं रहेगी। तुम देख लेना। मैं समझ रहा हूं। मुझे अपनी कई आदतें, कई तौर-तरीके बदलने पड़ेंगे।

श्रीमती मुरारी : सब अपने सर ले रहे हो। कितना शर्मिंदा करोगे ?

मुरारी : नहीं, सच कह रहा हूं। आज ही की बात लो। जितनी देर दफ्तर में रहा, टेलीफोन और तार करता रहा—एक प्लेन एक्सिडेंट के बारे में। घर आ रहा था तब भी वही सोच रहा था। परंतु चूंकि भयानक समाचार है —तैंतालीस

आदमी मरे हैं—तुम्हें सुनाने का मेरा कतई इरादा नहीं था। आखिर क्यों ? तुम कोई दूध-पीती बच्ची हो ?

श्रीमती मुरारी : हाय राम ! भारतीय जहाज तो नहीं था ?

मुरारी : नहीं, पर एक भारतीय सज्जन थे उसमें। तभी इतने तार-टेलीफोन खड़खड़ाने पड़े।

श्रीमती मुरारी : राम, राम। कौन थे ?

मुरारी : एक—अरे हां, तुम तो पटना कालेज की पढ़ी हो। तुम्हारे जमाने में प्रोफेसर रतननाथ थे वहां पर ?

बांसुरी पर परिचित धुन सुनाई पड़ती है।

श्रीमती मुरारी : हां, थे तो। वही थे क्या ?

मुरारी : वही थे। भारत का कितना बड़ा दुर्भाग्य है। इस आदमी की गिनती दुनिया के चोटी के विद्वानों में थी।

श्रीमती मुरारी : प्रोफेसर रतननाथ। मैं खूब जानती थी उनको।

मुरारी : हां, उन्हें कौन न जानेगा ? ए ग्रेट सन आफ इंडिया। अच्छा, उठो, खाना खाया जाय अब।

श्रीमती मुरारी : चलो। खाना खाकर गीतांजलि सुनाओगे थोड़ी देर ?

मुरारी स्वीकृतिसूचक मुद्रा में सर हिलाता है। श्रीमती मुरारी पति का हाथ अपने कंधे पर रखती हैं। दोनों अंदर की ओर चले जाते हैं। प्रकाश परिवर्तन होता है और दोनों एक-दूसरे की ओर देखने की मुद्रा में छायाचित्र बनकर निश्चित खड़े हो जाते हैं। सूत्रधार आता है।

सूत्रधार : बस, यहां की बात यहीं छोड़ते हैं, बाकी के लिए हाथ जोड़ते हैं। क्योंकि हाजरात, तमाशा खत्म हुआ। अब बात बढ़ाने से क्या, जो खुद रोशन है उसे दीया दिखाने से क्या ?

स्टेज वाले भाग में पूरा प्रकाश हो जाता है। श्री और श्रीमती मुरारी सूत्रधार के पास आकर खड़े हो जाते हैं। तीनों दर्शकों को सर नवाते हैं। तालियां बजती हैं और सारे कमरे में प्रकाश हो जाता है।

पहला दृश्य

एक भोजन-कक्ष, दाहिनी ओर से प्रवेश द्वार। बीच में खाने की मेज और नीची पीठ की कुर्सियां। पर्दा जब खुलता है तो बायीं ओर के दरवाजे से स्त्री केतली लेकर आती है और मेज पर रखकर टीकोजी से ढंक देती है। पुरुष अखबार खोले बीच के पन्ने की खबरें देख रहा है। वह सूट पहनकर दफ्तर जाने के लिए तैयार हो चुका है। लड़का अति-आधुनिक ढंग के कपड़े पहने किसी फिल्मी पत्रिका पर झुका, एक लड़की को किस कोण से देखे कि वह सबसे सुंदर दिखाई दे, इसी प्रयास में लगा है। लड़की नये फैशन के चूड़ीदार पाजामे-कुर्ते में है, और गले में दुपट्टा डाले मेज पर पड़ी हुई इयान फ्लेमिंग की 'लिव ऐंड लेट डाई' पढ़ रही है।

लड़का : **त्यौरी चढ़ाकर मां की ओर देखते हुए** इस घर में चाय हमेशा दो कौड़ी की बनती है। घंटों पानी खौलता रहता है, लेकिन किसी को केतली में डालने का होश ही नहीं रहता।

पुरुष : **अखबार से नजर हटाकर लड़के को घूरते हुए** साला-बद्तमीज। **फिर अखबार पढ़ने में तन्मय हो जाता है।**

लड़का : **क्रोध के साथ लेकिन दबे स्वर में** हुआ शुरू!

लड़की : गुडनेस! बाल-बाल बचे।

पुरुष : बेबी, तुमसे कितनी बार कहना पड़ेगा कि खाने के समय यह सब बकवास मत पढ़ा करो।

इसी बीच स्त्री प्लेटें लाकर रख देती है जो खाली हैं। केतली भी खाली है। खाने-पीने का अभिनय मात्र होता रहता है।

लड़की : बकवास! ओह डैडी! आप इसे नहीं समझ सकते। जेम्स बांड बस गजब का आदमी है। काश, सालिटेयर की जगह मैं उसके साथ होती। जानते हैं इस वक्त बेचारा किस मुसीबत में फंसा है?

पुरुष : न जानता हूं, न जानना चाहता हूं। उतरकर तमीज से कुर्सी पर बैठो और यह बकवास बंद करो। मेरे सिर में पहले ही काफी दर्द हो रहा है।

लड़की : सॉरी, डैडी ।

मेज से उतरकर लड़की कुर्सी पर बैठ जाती है और फिर से उपन्यास पढ़ने में इतनी लीन हो जाती है कि सामने रखे खाली प्याले में चमचा चलाने लगती है । स्त्री दूधदानी ले आती है ।

लड़का : जिस प्याले में तुम अपनी समझ से चीनी घोल रही हो, वह खाली है ।

लड़की : **मुस्कराकर** ऊ-ऊ-ऊ-ऊ !

लड़का : कितना बनती हो तुम !

लड़की : शट अप ! तुमसे कौन बोल रहा है ।

लड़का : बिच !

लड़की : स्वाइन !

स्त्री के माथे पर हल्की-सी शिकन पड़ती है । लेकिन फिर सहज भाव से वह बच्चों के लिए चाय बनाने का अभिनय करने लगती है ।

पुरुष : वाह ! वाह ! कितने तमीजदार बच्चे हैं । बातचीत सुनकर तबीयत खुश हो जाती है । **स्त्री से** लेकिन आपको शायद इन सब बातों में कोई दिलचस्पी नहीं है—नहीं है, न ? **स्त्री से कोई उत्तर न पाकर** आप ही से कह रहा हूं ।

स्त्री : आप चाय ही लेंगे, न ?

पुरुष : स्नाबरी जरा कम दिखाया करो ।

स्त्री : चाय के लिए पूछना, स्नाबरी दिखाना है ?

पुरुष : इतनी सीधी नहीं हो तुम कि स्नाबरी क्या है, यह भी समझाना पड़े ।

स्त्री : **चाय बनाते हुए** आपने बताया नहीं कि आप चाय लेंगे या काफी ?

पुरुष : **प्याला अपनी ओर खींचते हुए** जो है वही बहुत है । **एक घूंट पीकर** वाह ! वाह ! क्या बात है ! इतनी बढ़िया चाय बनाना कहां सीखी तुमने ? तुम्हारे हाथ का बना एक प्याला पी लें, तो बरसों से पड़ी चाय की लत हमेशा के लिए छूट जाय ।

स्त्री : हलकी है क्या ?

पुरुष : एक खूबी हो तो बताऊं । हलकी है, दूध ज्यादा है, चीनी नहीं पड़ी है ।

स्त्री : चीनी डाली है, शायद चलायी नहीं है ।…छोड़ दीजिए, दूसरा प्याला बना देती हूं ।

पुरुष : नहीं, रहने दीजिए । दूसरा इससे अच्छा बन ही जायेगा, इसकी उम्मीद कम है ।

लड़का : **लड़की से** तुम आज कालेज नहीं जाओगी ?

वह किताब में इतनी डूबी है कि उसकी बात पर ध्यान नहीं देती।

लड़का : तुम कितनी बदतमीज होती जा रही हो ! यू हैव नो मैनर्स। रस्टिक।

लड़की : **बिना किताब से सिर उठाये** पहले अपना मुंह शीशे में देख लो, फिर मेरी बात करना।

पुरुष : **लड़के से** तुमने वह इंजीनियरिंग वाला फार्म भर दिया ?

लड़का : जी।

पुरुष : कुछ पढ़ाई-वढ़ाई शुरू की या इस बार भी रुपये बट्टे खाते जायेंगे ?

लड़का : चले भी गये, तो कौन लाखों लुटे जा रहे हैं।

पुरुष : नवाबजादे, अपनी जेब से जाते हैं तब पता चलता है। **लड़की से** बेबी, तुम शर्बत पियोगी क्या ?

लड़की : शर्बत ?...जी, नहीं तो....ऊ-ऊ-ऊ-ऊ...! चाय बिल्कुल भूल गयी थी। दीपक, प्लीज जरा चीनी।

लड़का : तुम्हारा नौकर नहीं हूं। उठा लो और डाल लो।

लड़की : उठा तो लूंगी ही। तुम्हारी जैसे बड़ी परवाह पड़ी है। टु हेल विद यू। अब आना कभी कोई किताब लेकर।

पुरुष : **स्त्री से** आज एक खास काम था। तुम्हें तो याद काहे को होगा।

लड़का : **लड़की से** ठीक है, नहीं आऊंगा।

स्त्री : **पुरुष से** खास काम ? क्या था ?

पुरुष : **स्त्री से** वही तो मैं आपसे पूछ रहा हूं।

लड़की : **लड़के से** नहीं आऊंगा। तब तो बड़े सीधे बन कर कहोगे, 'बेबी... प्लीज, जरा इसका मतलब बता दो।'

स्त्री : **पुरुष से** याद नहीं आ रहा है।

लड़का : **लड़की से** अच्छा बाबा, मत बताना। डिक्शनरी नाम की एक चीज होती है न, उसी से काम चल जायेगा।

पुरुष : **स्त्री से** सोचने का कष्ट कर लीजिए, तब बताइए।

स्त्री : सोचकर देखा।

लड़की : **लड़के को उठते देखकर खुशामद के साथ** लौटते वक्त जरा मेरी मेज पर से नीलीवाली फाइल उठाते लाना...प्ली-ई-ई-ई-ज।

लड़का : तुम्हारे पैरों में कुछ तकलीफ है क्या ?

पुरुष : **स्त्री से** टालिए मत। टालने में आप माहिर हैं।

बाहर से साइकिल की घंटी और डाकिये की आवाज सुनायी पड़ती है। स्त्री पुरुष से 'एक मिनट' कहकर बाहर चली जाती है।

लड़की : प्लीज, दीपक, मैं खुद चली जाती, लेकिन इस वक्त दुष्ट बिग मछलियों का शिकार बनने ही वाला है।

लड़का : बिग की ऐसी की तैसी! वह बचे या जहन्नुम में जाये, मुझे इससे क्या मतलब। खैर, बहुत खुशामद कर रही हो, इसलिए इस बार तो फाइल उठा लाऊंगा, मगर खैरियत चाहो तो अपना बातचीत का ढंग तुम बदल डालो, वरना आगे चलकर पछताओगी।

लड़का उठकर भीतर चला जाता है। स्त्री बाहर से एक पोस्टकार्ड और मनी आर्डर की रसीद पुरुष को पकड़ा देती है। लड़की किताब में और भी तन्मय हो गयी है।

पुरुष : **स्त्री से** हूं। तो फिर···?

स्त्री : पता नहीं क्या बात थी।

पुरुष : आज दिन कौन-सा है, यह पता है ?

स्त्री : शनिवार।

पुरुष : तारीख ?

स्त्री : हर नये दिन पर तारीख चिपकाना आप लोगों का काम है। हम लोगों को तो साल-भर में मुश्किल से तीन-चार तारीखें याद रह पाती हैं, बस !

पुरुष : कैलेंडर से मदद ले लीजिए।

स्त्री : आपके पास ही टंगा है।

पुरुष : उठकर देख लीजिए। कौन दो-चार मील की दूरी पर है।

स्त्री : **खिन्न स्वर में** हर काम के लिए नादिरशाही चलाना जरूरी है ? सात जनवरी।

पुरुष : हां, सात जनवरी। आज ही बंपर हाउजी है।

स्त्री : हुंह, हाउजी !! और मैं समझ रही थी कि कोई जरूरी काम भूल गयी हूं।

पुरुष : आपके 'हुंह' कर देने में किसी एंटरटेनमेंट की कीमत घट नहीं जायेगी।

स्त्री : ठीक है, लेकिन हाउजी से मनोरंजन होता है या नहीं, इस बारे में दो राय हो सकती है।

लड़का एक फाइल बगल में दबाये भीतर से आता है, दूसरी लड़की की ओर उछाल देता है। वह 'थैंक यू' कहकर फाइल लपक लेती है। हाथ की किताब मेज पर रखकर वह गहरी दिलचस्पी के साथ

पुरुष और स्त्री की बातचीत सुन रही है । लड़के को भी सुनने का संकेत करती है ।

पुरुष : जी हां, वह तो मैं भूल ही गया था । आप ठहरीं आर्टिस्ट कलाकार । आप बढ़िया पिक्चर नहीं देखेंगी, दो कौड़ी के नाटक देखेंगी । वैस्टर्न म्यूजिक नहीं सुनेंगी, अ-आ-आ-आ में रस लेंगी । साला म्यूजिक है वह भी ! खाना खाने के बाद सुनो तो जी मिचला जाये । जैसे किसी के गले में मक्खी फंस गयी हो ।

लड़की : हाय डैडी, आप कमाल के हैं । हर चीज को कितने प्यारे ढंग से बताते हैं । मम्मी के साथ जहां भी जाओ बोर होना पड़ता है, इसमें शक नहीं । एक बार मुझे भी ये अपने साथ पकड़ ले गयी थीं । ईश्वर जाने किस जीनियस का गाना था । मैं तो जाकर ऊंघती रही । ओह गॉड ! व्हाट टार्चर !

लड़का : बिलकुल सही है । मम्मी की पसद की जगह जाना सचमुच सजा भुगतना है ।

लड़की : बुरा तो नहीं मान रही हो न, मम्मी ?

पुरुष : तो फिर क्या रहा ? आप इस रद्दी एंटरटेनमेंट में मेरा साथ देंगी या नहीं ?

स्त्री : कहिए तो चली चलूं ।

पुरुष : नहीं, नहीं । इतने त्याग की जरूरत नहीं है । जाना चाहेंगे, तो ये ही दोनों मेरे साथ चले जायेंगे । आपका लटका हुआ चेहरा देख-देख कर बेकार सबका मजा किरकिरा होगा । **लड़की से** खूब आनंद रहेगा, बेबी । शर्माज भी आयेंगे ।

लडकी : हाइ ! उनका लड़का राजन तो इतना हंसता है कि हँसते-हँसते साँस रुकने लगती है ।

पुरुष : **लड़के को उठते देखकर** तो फिर, नवाब साहब, पढ़ने में थोड़ा-बहुत मन लगाइए और सैर-सपाटे कीजिए बंद । तभी कहीं ठिकाना लगेगा, वरना जैसा जमाना आ गया है, क्लर्की भी ढूंढे नसीब नहीं होगी । समझे ?

लड़का : **चिढ़कर** मम्मी, खाने के लिए मेरा इंतजार मत करियेगा ।

पुरुष : दोपहर के खाने के लिए या रात के, यह भी बता जाइए ।

लड़का : दोनों के लिए··· । अब ठीक है ?

पुरुष : गेट आउट, यू रास्कल ! दिमाग खराब हो गया है बिल्कुल ।

लड़का क्रोध प्रकट करने के लिए कुर्सी को जोर से हटाकर चला जाता है।

स्त्री : तुम्हारा खाना, बेबी ?

लड़की : वही लौटने पर फ्रूट्स और सेलेड । मम्मी, दिनों-दिन इतनी मोटी होती जा रही हूं । गुडनेस ! पिछले महीने मेरा वजन दो आउंस बढ़ गया··· तब से मैं बहुत डर गयी हूं । जानते हैं, डैडी, मेरी ऊंचाई में आइडियल कमर कितने इंच की मानी जाती है ।

स्त्री : अच्छा-अच्छा, ज्यादा बक-बक मत करो । वैसे ही सींक-सलाई हो, और कम हुई तो दिखाई भी नहीं पड़ोगी । **लड़की को उठते देखकर** आज अभी से कालेज का वक्त हो गया ?

लड़की : जरा एक फ्रेंड के यहां होती हुई जाऊंगी । **मुस्कराकर माँ से कुछ धीमे स्वर में** गर्ल फ्रेंड है । परेशानी की कोई बात नहीं । बा···इ ।

पुरुष : **ठंडे उदासीन स्वर में** मैं भी चल रहा हूं । तुम्हें छोड़ता हुआ आफिस चला जाऊंगा ।

स्त्री उन दोनों को जाते देखती है, फिर उदास होकर सूनी दृष्टि से सामने ताकती रहती है । खिन्न मन से झाड़न उठाकर खाने की मेज साफ करने लगती है । लेकिन फिर एक कोना झाड़कर झाड़न मेज पर ही छोड़ देती है और सामने पड़ी कुर्सियों में से एक कुर्सी पर निढाल-सी बैठ जाती है । उसके चेहरे पर गहरी थकान उतर आयी है । एक पत्रिका के पन्ने उलटती है । कुछ पन्नों के बाद ध्यान आता है कि उलटी पकड़े थी । सीधी करके दो-एक पन्ने पलटती है, फिर पत्रिका बीच की मेज पर डाल देती है और हथेलियों पर सिर टिकाकर सामने देखती रहती है – भावनाविहीन । अपेक्षाकृत हलके और रहस्यमय आलोक तथा वाद्य-संगीत द्वारा यह संकेत कि जो कुछ घटित हो रहा है, भीतर हो रहा है, मन में । स्त्री की भाव-भंगिमा में तनाव की जगह सहज माधुर्य आ जाता है ।

स्त्री : अब कुछ देर समय मेरे पास पालतू कुत्ते की तरह दुबककर बैठा रहेगा । एकदम शांत । पहले उसकी आंखों में बहुत प्रश्न तैरते रहते थे । अब कुछ नहीं पूछता । चुपचाप बैठा मेरी ओर ताकता रहता है ।

पुरुष प्रवेश-द्वार से भीतर आता है और स्त्री के पास ही कुर्सी खींचकर बैठ जाता है । वह भी अपेक्षाकृत कोमल लग रहा है । फिर भी दोनों के बीच अपरिचय की दूरी स्पष्ट है ।

स्त्री : तो इस समय भी मैं अकेली नहीं हूं। **कौन हो तुम ?** ऐसे इत्मीनान से आकर बैठ गये, जैसे अपना ही घर हो।

पुरुष : एक तरह से है भी।

स्त्री : किससे मिलने आये हो ? बरसों से यहां कोई नहीं रहता। सिर्फ आवाजें सुनाई पड़ती हैं। मुझे उन आवाजों से डर लगता है। वे हरदम मेरा पीछा करती रहती हैं। तुम्हें भी सुनाई दे रही हैं ?

पुरुष : कहां ? मुझे तो कुछ सुनाई नहीं पड़ रहा है।

स्त्री : **निराश होकर** मेरी बात भी नहीं ?

पुरुष : हां-आं, वह तो सुन ही रहा हूं, लेकिन और कुछ नहीं। एकदम सन्नाटा है।

स्त्री : सन्नाटा है ! **ध्यान से सुनने का प्रयास करते हुए** तुम ठीक कहते हो। सन्नाटा है।

पुरुष : आवाजें और सन्नाटा एक साथ ?

स्त्री : **शांत भाव से** एक साथ। **कुछ रुककर** इतने गौर से क्या देख रहे हो ?

पुरुष : कुछ नहीं। ऐसा लगता है जैसे मैं तुम्हें जानता हूं। कहां मिले होंगे हम लोग ?

स्त्री : यह सुखद भ्रम अक्सर हो जाता है। लेकिन मेरे ख्याल से अजनबी बने रहना आत्मीय बनने से ज्यादा ईमानदारी की बात है।

पुरुष : होगी। पहले तुम याद करने की कोशिश करो···किसी मित्र के घर ? ···किसी पार्टी में ?···क्लब में ?···सफर में ?···कुछ ध्यान आ रहा है ?

स्त्री : नहीं।

पुरुष : ओफ-ओह ! कितनी खीझ आती है, जब बार-बार लगता है कि कहीं देखा है, मगर समझ में नहीं आता कि कौन है, कहां देखा है। शायद तुम्हारे घर के और लोगों से मिलने पर याद आ जाये।

स्त्री : मैंने बताया न, इस घर में कोई नहीं रहता।

पुरुष : तुम तो यहीं रहती हो ?

स्त्री : हां, मैं यहां उनका इंतजार कर रही हूं। हो सकता है वे लोग लौटें।

पुरुष : कौन लोग ?

स्त्री : मेरा पति और मेरे बच्चे। **उठकर एक खिड़की की ओर जाते हुए** तुमने इस तरह कभी किसी की प्रतीक्षा की है ?

पुरुष : नहीं ।

स्त्री : तुम्हारा परिवार है ?

पुरुष : हां है । पत्नी, बच्चे, अच्छी-सी नौकरी, बड़ा-सा घर, मोटर, फ्रिज, नौकर-चाकर सभी कुछ है । मेरा घर तुम्हारे घर की तरह खाली नहीं है । मुझे किसी की प्रतीक्षा भी नहीं है ।

स्त्री : तुम खुशकिस्मत हो ।

पुरुष : सब यही कहते हैं ।

स्त्री : क्या तुम ऐसा नहीं सोचते ?

पुरुष : मैंने इस बारे में कभी कुछ सोचने की जरूरत नहीं समझी ।

स्त्री : तुम दूने भाग्यवान हो । मुझे तुमसे ईर्ष्या है । **रुककर** यह खिड़की खोल दोगे ? **खोलता है ।** कितना अंधेरा है । झांककर देखो, कहीं चांद दिखाई पड़ता है ?

पुरुष : अमावस की रात में ।

स्त्री : ओह ! इस खिड़की से मुझे हमेशा वही चांद दिखाई देता है, जिसे शुरू-शुरू में हमने शरद पूनो पर देखा था ।

पुरुष : **ध्यान भटक जाता है** क्या चीज ?

स्त्री : कुछ नहीं । एक निजी बात याद आ गयी थी, सच पूछो तो समर्पण का भी एक नशा होता है, जिसमें छोटे-से-छोटा सुख फैलता चला जाता है ।

पुरुष : सोख्ते पर पड़ी स्याही की बूंद की तरह ।

स्त्री : नहीं, स्याही के धब्बे की तरह नहीं, कंकड़ी फेंककर जगायी गयी झील की तरह ।

पुरुष : बात तो एक ही हुई ।

स्त्री : है अंतर, लेकिन उस अंतर को तुम नहीं समझ सकोगे । मेरे पास और कुछ नहीं, केवल स्मृतिया हैं । उन्हें कीमती नगीनों की तरह जड़कर रख लिया है । तुम जल्दी में तो नहीं हो ?

पुरुष : नहीं ।

स्त्री : तो फिर आराम से बैठो, क्या खातिर करूं तुम्हारी ? चाय लोगे ?

पुरुष : नहीं ।

स्त्री : काफी ?

पुरुष : उहुंक ।

स्त्री : पीकर देखो । इतनी बुरी नहीं बनेगी कि पी न जा सके ।

पुरुष : मन नहीं है ।

स्त्री : **आहत स्वर में** तब रहने दो ।

पुरुष : बुरा मान गयीं ?

स्त्री : नहीं । बुरा क्यों मानूंगी ? बुरा मानने के लिये तो बहुत बड़ा अधिकार चाहिए । मेरा तुम पर काहे का अधिकार ।

पुरुष : **कुछ देर के मौन के बाद** तुम्हारी अंगूठी बहुत सुंदर है ।

स्त्री : है, न ? मुझे भी बहुत पसंद है । हमेशा पहने रहती हूं ।

पुरुष : **मेज पर रखा फूलदान देखकर** यह फूलदान यहां कैसे आ गया ? इसे मैं अपनी पत्नी के लिये लाया था । शायद कोई उत्सव था···या किसी का जन्मदिन, या कोई त्यौहार····

स्त्री : या किसी के विवाह की पहली साल गिरह···

पुरुष : **चौंककर** हां, वही थी । लेकिन तुमने कैसे जाना ?

स्त्री : अनुमान से ।

पुरुष : एक गिलास पानी—**मेज पर जग और गिलास देखकर** अच्छा तुम बैठी रहो । मैं ले लेता हूं ।

स्त्री : **उठते हुए** नहीं, नहीं, तुम मेरे मेहमान हो । अचानक आज आ गये, कौन जाने फिर कभी आओ, न आओ । इतने से काम के लिए खुद उठोगे ?

पुरुष : तुम बातें बहुत अच्छी करती हो ।

स्त्री : अगर कहूं कि तुम पारखी ही अच्छे हो ।

पुरुष : तब तुम खुद ही अपनी तारीफ करोगी ।

पानी पीकर गिलास मेज पर रखने के लिए उठता है तो कोने की तरफ एक ओर दरवाजे पर झीना पर्दा पड़ा दिखाई पड़ता है ।

पुरुष : यह कमरा हाल ही में बनवाया है ?

स्त्री : नहीं, पुराना है ।

पुरुष : बदला-बदला-सा लग रहा है ।

स्त्री : हां, व्यवस्था नयी है, इसी से ।

पुरुष : इसके सामने बड़ा-सा जालीदार बरामदा था ।

स्त्री : अब भी है ।

पुरुष : इसकी दीवारों पर ढेरों ऊलजलूल तसवीरें टंगी रहती थीं । इसे देखकर मेरे सामने वही पुरानी तसवीर उभरती है, रंगों में डूबी एक बदहवास औरत, दीन-दुनिया से बिल्कुल बेखबर···

स्त्री : **हंसती है** लेकिन अब उस बदहवास औरत ने इस कमरे को करीने से सजा दिया है। इसमें बहुत कीमती-कीमती सामान है, बढ़िया-बढ़िया साड़ियां, गहने, चांदी के बर्तन। सब तो लॉकर में रखे नहीं जा सकते। आये दिन जरूरत पड़ती रहती है।

पुरुष : तसवीरें क्या कीं ? बेच दीं ?

स्त्री : नहीं, तसवीरों का खरीदार कहां मिला ! कुछ गैरेज में टंगी हैं, कुछ बड़े कैनवास जोड़कर बगीचे में बैठने के लिए छांह कर दी है। वैसे भी हमारी जरूरतों को देखते हुए मकान छोटा है। कहां तक फालतू चीजें जमा करते रहें।

पुरुष : **सहमति में सिर हिलाते हुए** ठीक कहती हो। **दीवार पर दोनों बच्चों की तसवीरें दिखाई पड़ती हैं।**

पुरुष : **स्नेह के साथ** इन बच्चों को मैंने अक्सर इस घर से आते-जाते देखा है।

स्त्री : बच्चों को ? इस घर से आते-जाते देखा है। ताज्जुब है। बहुत पहले यहां दो नन्हें-नन्हें बच्चे थे।

पुरुष : फिर ? उन्हें क्या हो गया ?

स्त्री : वे कहीं चले गये। कोई दूसरे बच्चे उनकी जगह कभी-कभी आते हैं, लेकिन वे मेरी बातें नहीं समझ पाते। शायद हम लोगों की भाषाएं अलग-अलग हैं। मैं उन्हें देखकर मुस्करा देती हूं और वे उसके लिए धन्यवाद देकर चले जाते हैं। लेकिन मेरे बच्चों को तुमने कहां देखा ? क्या तुम मुझे उनसे मिलवा दोगे ? मुझे उनकी बड़ी याद आती है।

पुरुष : मैं कोशिश करूंगा। एक बात तुमसे और कहनी थी।

स्त्री : कहो।

पुरुष : ठीक न लगे, तो भी तुम मुझे ग़लत मत समझना।

स्त्री : नहीं समझूंगी। इतना भरोसा तुम मुझ पर हमेशा कर सकते हो।

पुरुष : **संकोच के साथ** क्या हम लोग एक साथ नहीं रह सकते ?

स्त्री : नहीं। इस मकान में रहने वाले लौट आयेंगे और वे हमें यहां टिकने नहीं देंगे।

पुरुष : तो मैं यह घर गिरा दूंगा।

स्त्री : उन्होंने बड़ी लगन से इसे बनाया था।

पुरुष : वे दूसरा बना लेंगे।

स्त्री : क्या और कोई उपाय नहीं है ?

पुरुष : **किसी के आने की आहट पाकर** कोई आ रहा है। इस समय न सही, लेकिन मैं इसे तोड़ूंगा जरूर। धीरे-धीरे—एक-एक ईंट करके। पर अभी नहीं, किसी के सामने नहीं। मैं फिर आऊंगा। तब तक तुम यह पता लगाने की कोशिश करना कि इस मकान में जो लोग रहते थे, वे कहां चले गये।

स्त्री : और यह भी कि अगर हमने इसे गिरा दिया और वे लौटे, तो फिर वे कहां जायेंगे ?

स्टेज पर उजाला सिमट कर उदास स्त्री पर केंद्रित होकर बिखर जाता है। पुरुष चला जाता है। बाहर से पॉप-म्यूजिक गुनगुनाती हुई लड़की प्रवेश करती है।

लड़की : **फाइल को उछालकर मेज पर डालते हुए** हाय मम्मी, यह साड़ी तुम्हें बहुत सूट करती है। कितनी प्यारी लग रही हो।

स्त्री : **बिना किसी प्रतिक्रिया के** वही सुबह वाली तो है। तुमने लौटने में बड़ी देर कर दी।

लड़की : **उमंग के साथ डांस के दो-एक प्रारंभिक स्टेप्स का अभ्यास करते हुए** हां, जरा-सी देर हो गयी।

स्त्री : जरा-सी देर ?

लड़की : **मां के गालों को दुलार से थपथपाते हुए** अच्छी बात है, बाबा, बहुत देर हो गयी। आई एम सॉरी। बस ? **कुर्सी पर आराम से बैठते हुए** ओ बाबा, थककर चकनाचूर हो गये। हम तो अभी से भर पाये। बी० ए० पास करके कोई बढ़िया-सी नौकरी कर लेंगे। ज्यादा पढ़ाई-वढ़ाई अपने बस की है नहीं।

स्त्री : बी० ए० कर लेने से ही कोई बढ़िया-सी आरामदेह नौकरी मिल जायेगी तुम्हें ?

लड़की : क्यों नहीं ? ठाट से एयर-होस्टेस बन जाऊंगी। जानती हो, मम्मी, तरला एयर-होस्टेस बनने से पहले ही उड़ी जा रही है।

स्त्री : कोई स्कॉलरशिप मिल गयी ?

लड़की : अरे, यह मतलब नहीं है। उसका एक—एक—समझो कि एक बॉय फ्रेंड है। उसी को लेकर घर में बमचक मच गयी। अब फंसी बेचारी शादी के चक्कर में।

स्त्री : चक्कर काहे का ? आज न सही, चार दिन बाद सही, यही तो होना

था ।

लड़की : यह तो तुम कहती हो, न ? उसका तो शादी करने का अभी कोई इरादा ही नहीं था ।

स्त्री : यह लड़का उसे मिल कहां से गया ?

लड़की : उसका सहपाठी है । मम्मी, तुम तो लड़कियों के कालेज में पढ़ती थीं ।

स्त्री : हां ।

लड़की : बोर नहीं होती थीं ? वहां की लाइफ कितनी डल रहती होगी । मेरा तो ऐसे कालेज में एक दिन भी मन न लगे । लेकिन तुम्हें क्या, तुम तो शुरू से ऐसी ही रही होंगी, माता जी टाइप । नहीं ?

स्त्री : पापा कितने बजे आयेंगे, कुछ कह गये हैं ?

लड़की : नहीं तो, सात बजे तक हाउजी के लिये तैयार रहने को जरूर कह गये हैं । तुम भी चलो न, हम लोगों के साथ ?

स्त्री : नहीं, तुम्हीं लोग जाओ । मुझे यह सब अच्छा नहीं लगता ।

लड़की : और तुम्हारे बिना जाना हमें अच्छा नहीं लगता । **हाथों में हाथ थामते हुए दुलार के साथ** मम्मी !

स्त्री : हां ।

लड़की : अगर तुम्हें पता चले कि तरला की तरह मैं भी किसी से प्रेम करती हूं तो ?

स्त्री : तो हम लोग तुरंत कार्ड पसंद करने के लिए साथ-साथ बाजार के लिए रवाना हो जायेंगे ।

लड़की : हंसी नहीं कर रही हूं । कई दिन से मैं कहना चाहती थी, लेकिन हिम्मत नहीं पड़ रही थी । सोचती थी तुम नाराज होगी ।

स्त्री : **उदासीन भाव से** नाराज होने की इसमें क्या बात है ? अब तुम लोग समझदार हो गये हो, अपना भला-बुरा खुद समझ सकते हो ।

लड़की : हाऊ स्वीट आफ यू, मम्मी ! अच्छा, तुम्हारी किसी लेडी डाक्टर से दोस्ती है ?

स्त्री : क्यों ?

लड़की : ऐसे ही पूछा ।

स्त्री ठंडी दृष्टि से उसे देखती रह जाती है ।

लड़की : वह बहुत अच्छा लड़का है, और हम दोनों एक-दूसरे को बेहद चाहते हैं । वी सिंपली अडोर ईच अदर !

स्त्री : **कुछ देर पूर्ववत देखते रहने के बाद ठंडे स्वर में** मैं जानती थी कि यह होगा। उसके साथ शादी क्यों नहीं कर लेती ?

लड़की : **हतप्रभ होकर** शादी ! किसलिए ? अभी तो मैंने जिंदगी को एक झलक देखा भर है। उसके रस में डूबी नहीं, उसे पूरी तरह जिया नहीं, अभी से बोर होने की सलाह दे रही हो। तुम्हारी और पापा की तरह की नीरस जिंदगी ! ओह गॉड ! भूल कर भी न जीनी पड़े। जीवन से ऊबकर शादी करूंगी। जीवन से ऊबने के लिए नहीं।

स्त्री : ठीक है। लेकिन—

लड़की : नहीं, मुझे उपदेश नहीं चाहिए, सलाह चाहिए।

स्त्री : शायद तुम्हें वह भी नहीं चाहिए। चाहिए स्वीकृति ! जो कुछ, जब, जैसे करना चाहो उसकी स्वीकृति। वह अगर मिली तो ठीक, नहीं मिली, तो—

लड़की : तो ?

स्त्री : तो तुम बिना आगा-पीछा देखे बहती चली जाओगी, तेज—और तेज —और तेज तब तक, जब तक तुम टूटकर बिखर न जाओ।

लड़की : **तीखे स्वर में** बुरा न मानो तो एक बात पूछूं ?

स्त्री : पूछो।

लड़की : तुम तो आगा-पीछा देखकर काम करने वालों में हो, तुम तो एक किलोमीटर प्रतिदिन की रफ्तार से दौड़ने वालों में हो, तुम तो उनमें से हो, जो दूसरों के सामने एक आदर्श रखना चाहते हैं। वह आदर्श कौन-सा है ? घुट-घुट कर मर जाने का ? लाश की तरह ठंडे पड़ते जाने का ? पापा के, तुम्हारे और हमारे बीच, है कोई ऐसा तार, जो एक साथ झनझनाता है ? बोलो ?

स्त्री : मैं तुमसे बहस नहीं करना चाहती।

लड़की : क्यों ? जवाब देते नहीं बना इसी लिए ?

लड़का बाहर पर्दे में से झांककर देखता है, फिर माथे पर बल डाले हुए आता है।

लड़का : **लड़की से** बहुत अच्छे, अभी तक चालू है ! बक अप ! **मां से** आज का टॉपिक क्या है ? **किसी से उत्तर न पाकर** इस वक्त हवा का रुख बहुत बदला-बदला नजर आ रहा है। **इधर-उधर देखकर लड़की से** तशरीफ नहीं लाये अभी ?

लड़की : **अपने आपको संभालते हुए** कौन ?

लड़का : डैडी साहब, और कौन ! सुबह पारा खासा चढ़ा हुआ था। वैसे भी ईश्वर की कृपा से 110 डिग्री पर नार्मल रहता है उनका।

स्त्री : **तीखे, तराशते हुए-से स्वर में** जितनी खबर तुम दूसरों की रखते हो, उससे आधी भी अपनी रखो तो जिंदगी बन जाये।

लड़का : अपनी जिंदगी मैं बनाऊं या बिगाड़ूं, उसकी चिंता आपको क्यों सताती है ?

स्त्री : ठीक है। मेरी तरफ से जहन्नुम में जाओ।

लड़का : जहन्नुम भी इस घर से तो बेहतर ही जगह होगी। **बदतमीजी के साथ मुस्कराकर** चाय-वाय की कुछ उम्मीद है या कोई होटल तलाश किया जाये ?

स्त्री : बदतमीज कहीं का ! रोज चाय के लिए होटल जाना पड़ता है क्या ? जितना इनके लिए करो, उतना ही सिर पर चढ़ते जाते हैं।

लड़का : ऐसा क्या कर दिया, जो दूसरे नहीं करते ? हमें भी तो कुछ पता चले।

स्त्री : कुछ नहीं किया ! अपने आप इतने बड़े हो गये।

लड़का : इससे क्या ! जो सभी मां-बाप करते हैं, वही किया तो एहसान किस बात का ?

लड़की : दीपक !

लड़का : **लड़की से** मैं कुछ गलत कह रहा हूं ? **स्त्री से** आप लोगों की नजरों में मैं दो कौड़ी का हूं, यह मैं जानता हूं। लेकिन एक बात हमेशा याद रखिएगा, मैं कृतघ्न नहीं हूं। जितना आप लोगों ने मुझ पर लगाया है, एक दिन सब सूद-ब्याज के साथ लौटा दूंगा। नकद।

लड़की : किसी से झगड़ा करके आये हो क्या ? जाओ जाकर कपड़े बदलो। मैं चाय बनाकर लाती हूं। और हां, चाय पीकर कहीं चल मत देना। पापा के साथ जाना है।

लड़का : मुझे किसी के साथ कहीं नहीं जाना। क्लब जाते हैं लोग दिल बहलाने के लिए, हम वहां जायेंगे डांट खाने के लिए। "तुम बड़े बदतमीज हो—खन्ना अंकल मजाक कर रहे थे तो तुम हंसे क्यों नहीं ?—बीना आंटी से तुमने प्रदीप के न आने के बारे में क्यों नहीं पूछा ? वैसे तो बड़े दोस्त की दुम बनते हो—कहां-कहां के उल्लू तुम बातें करने के लिए छांट लेते हो ? साले एक से एक जंगली !"—मैं ये सब डायलाग

घर पर ही दोहरा लूंगा । इसके लिए कहीं जाने की क्या जरूरत है ?

स्त्री : तुम्हें कब क्या करना है, अब यह अकेले तुम ही तय करोगे ?

लड़का : नहीं, मेरी इस घर में भला क्या हस्ती है । तय तो फिलहाल आप लोग ही करेंगे ।

स्त्री : आप लोग क्या ? मैं तुमसे बात कर रही हूं । इस वक्त सिर्फ मेरी बात करो ।

लड़का : उससे कोई अंतर नही पड़ता । आप दोनों के रवैये में फर्क है ही कहां ? एक-सा कटा-कटा रुख । हमेशा लगता है, कोई गैर बात कर रहा है । ताने, अविश्वास जली-कटी बातें—यही तो हम पाते हैं । देर से लौटने के लिए रोज डांट खाता हूं, फिर भी होटलों में बैठा गाने पर गाने सुनता रहता हूं । न जाने क्या है इस मनहूस घर के दरवाजों में, जो इनके भीतर होते ही दम घुटने लगता है ।

लड़की : दीपक, प्लीज ।

लड़का : झूठ कह रहा हूं मैं ? ईमानदारी से कहो, क्या यही तुम्हें भी नहीं लगता रहा है ?

लड़की : लेकिन जो कुछ लगता है, वह सब क्या कह ही देना होता है ?

लड़का : कहते रहते तो शायद आज यह नौबत न आती । वह दिन मैं भुलाये नहीं भूलता, जिस दिन मेरा हाईस्कूल का रिजल्ट निकला था ।

लड़की : छोड़ो बेकार की बातें, चलो भीतर ।

स्त्री : नहीं, कहो तुम । सब कह डालो । क्या हुआ था उस दिन ?

लड़का लड़की की ओर देखता है । उस घटना की स्मृति, जिसे दोनों ने साथ-साथ झेला था, सजीव हो उठती है ।

लड़की : **लड़के से** मुझे याद है । **स्त्री से** सबको उम्मीद थी कि इसका फर्स्ट क्लास जरूर आयेगा, लेकिन इसका सेकंड क्लास ही आया था । पापा के पास उस वक्त तमाम लोग बैठे थे । मैंने उन्हें बताया तो सबके सामने उन्होंने इसे क्या-क्या नहीं कहा ।

स्त्री : **स्वगत** हां, मैं सुन रही थी ।

लड़का : वह सब झेलकर मैं तुम्हारे पास आया था, इस उम्मीद में कि तुम मुझे गले से लगा लोगी और मैं सारा दर्द-अपमान भूल जाऊंगा । लेकिन तुमने मेरे रिजल्ट के बारे में पूछा तक नहीं । मैं तुम्हारे पास खड़ा-खड़ा सोचता रहा कि अब तुम कुछ पूछोगी, अब पूछोगी, लेकिन तुम चुप रहीं । **भीतर जाते-जाते** दिस हेटफुल होम ! इस मनहूस घर

में मेरा दम घुटता है। जिस दिन हमेशा के लिए यहां से छुटकारा पा लूंगा—**स्त्री की ओर मुड़कर देखते हुए** चैन की सांस लूंगा।

लड़के के पीछे-पीछे लड़की भी भीतर चली जाती है। स्त्री को तरह-तरह के चुभते हुए वाक्यांश सुनाई पड़ते हैं। पहले धीमे फिर तेज और एक-दूसरे में गुंथे हुए।

पुरुष : मैं इस घर को तोड़ूंगा जरूर। धीरे-धीरे, एक-एक ईंट करके।

लड़की : वह आदर्श कौन-सा है? घुट-घुटकर मर जाने का? लाश की तरह ठंडे होते जाने का?

स्त्री : मेरी तरफ से जहन्नुम में जाओ।

लड़का : जहन्नुम भी इस घर से बेहतर ही होगा।

लड़की : मुझे उपदेश नहीं चाहिए, सलाह चाहिए।

पुरुष : क्या हम लोग एक साथ नहीं रह सकते?

स्त्री : किससे मिलने आये हो? यहां कोई नहीं रहता। अब यहां कोई नहीं रहता।

स्त्री ध्यान से सुनती रहती है। उसके चेहरे पर न हर्ष है, न विषाद, न संत्रास। केवल सूनापन है।

आवाजों की पृष्ठभूमि में पहले हलका प्रकाश स्त्री पर केंद्रित है और स्टेज पर अंधेरा है। फिर प्रकाश उस पर से हटकर स्टेज पर कांपता-सा बिखरता है। धीरे-धीरे सब कुछ अंधेरे में खो जाता है।

दीवार की वापसी

शम्भुनाथ सिंह

पात्र

क
का
एक व्यक्ति
दूसरा व्यक्ति
पहला व्यक्ति
दूसरा
पहला
एक आवाज
दूसरी आवाज
आगंतुक
खन्ना
राजेश
पिता

एक मध्यवर्गीय व्यक्ति के मकान का बैठका, जिसे वह बड़े गर्व से 'ड्राइंग रूम' कहा करता है, उसमें तीन कुर्सियां और एक छोटी मेज है, जिस पर एक गंदा मेजपोश है। एक तरफ तख्त जिस पर बिस्तर लपेट कर रखा है। इस कमरे से भीतर के कमरे में जाने का एक दरवाजा है। दोनों कमरों के बीच की दीवार में एक, 6 फीट लंबी 4 फीट चौड़ी, छड़दार खिड़की है जिसमें लगा परदा दोनों ओर खींच-कर हटा दिया गया है। खिड़की दीवार में इतनी ऊंचाई पर है कि भीतर इसके सामने खड़े व्यक्ति का कमर से ऊपर का हिस्सा ही दिखाई पड़ सकता है। भीतरवाला कमरा सोने का कमरा है जिसे वह व्यक्ति 'बेडरूम' कहता है। भीतरी कमरे में एक के ऊपर एक रखे कई बक्स तथा दीवार की अलमारी दिखाई पड़ती है जिस पर शीशा, कंघी, तेल आदि प्रसाधन की वस्तुएं रखी हैं। बैठके में दायीं ओर बाहर जाने का दरवाजा है। दर्शकों की ओर बैठके की एक दीवार होगी पर इस समय वह नहीं है, क्योंकि यदि वह होती तो नाटक नहीं देखा जा सकता था। अतः मान लिया जाय कि मंच का सामने का परदा ही वह दीवार है। नाटक दिखाना है, इसलिए उस दीवार को हटाना जरूरी है। परदा हटता है तो वह व्यक्ति—उसका नाम ? हटाइए, उसका नाम जानकर क्या होगा ? सभी मध्यवर्गीय नौकरी-पेशा लोगों की तरह वह भी समय, और कायदे-कानून का पाबंद एक सामान्य व्यक्ति है। इसलिए वह 'क' है—जो कमीज-पाजामा पहने है, और अखबार पढ़ने में लीन दिखाई पड़ता है। एकाएक सामने की ओर देखकर वह आश्चर्य से बोलता है।

क : अरे-अरे, यह क्या हो गया ? अजी सुनती हो ? कहां हो तुम ? दौड़ो, यह देखो।

भीतर की ओर देखता है। भीतर उसकी पत्नी—उसका नाम ? 'क' की पत्नी है इसलिए उसे 'का' कह लीजिए—सूट-केस बंद कर रही है। वह जल्दी-जल्दी दरवाजे से बैठक में आती है। कपड़े पहनकर वह कहीं जाने को तैयार है।

का : क्यों, क्या हो गया ? इतना शोर क्यों कर रहे हो ?

क : **दर्शकों की ओर हाथ दिखा कर** देखती नहीं ? यहां की

दीवार ? अरे, यहां की दीवार क्या हो गयी ? उड़ गयी या जमीन में चली गयी, आखिर वह हो क्या गयी ?

का : दीवार ? यह क्या दीवार है ? पागल हो गये हो क्या ? आंखों के सामने ही सही-साबित दीवार है और कहते हो कि दीवार उड़ गयी ? हुं–अजीब आदमी हैं !

क : दीवार है ? **आंखें मलकर देखता है** नहीं, मैं दावे के साथ कहता हूं, दीवार नहीं है। तुम्हें रोज देखने की आदत है जिससे दीवार दिखाई पड़ रही है। मुझे तो नहीं दिखाई पड़ रही है।

का : **हंसती हुई** अच्छा मान लिया, दीवार नहीं है। लेकिन अपनी घड़ी तो देखो, क्या वक्त हुआ है ? साढ़े सात बज रहे होंगे। मुझे वहां साढ़े आठ तक पहुंच जाना चाहिए। अभी बस के लिए जाने कितना रुकना पड़े।

क : तो कहां कलकत्ता-बंबई जाना है तुम्हें ? नयी दिल्ली से पुरानी दिल्ली जाने में क्या देर लगती है ? मगर का, अगर यह दीवार। **सामने की ओर आश्चर्य से देखता है।**

का : **क्रोध से** बंद करो यह बकवास। मैं कहती हूं, मुझे जाने की जल्दी है और तुम हो कि बस यह दीवार, यह दीवार की रट लगाये जा रहे हो। **भीतर चली जाती है।**

क : **पीछे की ओर मुड़कर** अच्छा तो फिर जाओ, मुझे इसमें क्या करना है।

का : **अपना वैनिटी बैग लेकर लौटती हुई** देखो, मैंने अपना विचार बदल दिया है।

क : **चौंक कर** क्या अब वहां नहीं जाओगी ?

का : यह नहीं, मैं तो जाऊंगी ही, पर तुमको भी साथ ले चलूंगी। पता नहीं, तुम यहां क्या कर डालो।

क : **प्यार से** का, प्लीज, आज छुट्टी का दिन है। मुझे घर पर ही आराम करने दो।

का : नहीं, मुझे अब विश्वास नहीं हो रहा है कि तुम अकेले ठीक ढंग से रह सकोगे।

क : अरे वाह, मैं क्या कोई बच्चा हूं जो प्याले और गिलास तोड़ दूंगा ? क्या तुम डरती हो कि अकेला होने पर मुझे

लकड़बग्घा उठा ले जायगा ?

का : मैं तुम्हें खूब जानती हूं। मैं न रहूं तो तुम्हारा एक भी काम पूरा न हो। अपने से न ठीक समय पर उठ सकते हो, न समय से खाना खा सकते हो, न आफिस जा सकते हो। तुम्हारा रत्ती-रत्ती काम मुझे करना पड़ता है। अगर मैं न होती तो बहुत पहले आफिस से निकाल दिये गये होते। न रहने का तरीका मालूम, न जीने का सलीका। मैं तो ऊब गयी हूं तुम्हारे इस ऊलजलूलपन से।

क : ऊलजलूलपन ? तुम भूल रही हो कि यदि मैं ऊलजलूल होता तो दिल्ली में एक दिन भी नहीं टिक पाता।

का : तो तुम्हारा टिकना मेरी वजह से है, तुम्हारी वजह से नहीं। खैर, अब जल्दी से कपड़े बदल लो। **भीतर जाकर पैंट, कमीज लाती है** लो, कपड़े बदलो।

क : कपड़े बदल लू ? यहीं ? **दर्शकों की ओर दिखाता हुआ** इतने लोगों के सामने ?

का : कितने लोगों के सामने ? यहां कौन है ? अजीब बात है सामने ही यह दीवार है और···

क : तुम मुझे बेवकूफ बना रही हो का। कहां दीवार है ?

का : अच्छा मान लिया, दीवार नहीं है। यहां शरम आ रही है तो भीतर जाकर कपड़े बदल आओ। लेकिन जल्दी करो।

ढकेलकर उसे भीतर कर देती है। स्वयं बैग खोलकर छोटा शीशा और लिपिस्टिक निकालती है। शीशे में देखकर लिपिस्टिक से ओंठ रंगती, फिर गालों पर रूज मलती है। एकाएक उसकी नजर कोने में पड़े एक बण्डल पर पड़ती है जो अखबार में लिपटा है।

का : यह लो। यह कोने में क्या रख छोड़ा है ? मैं लाख बार कह चुकी हूं कि यह ड्राइंग रूम है इसे ड्राइंग रूम ही रहने दो, कबाड़खाना न बनाओ। पर तुम हो कि मानते ही नहीं। जो भी चीज लाते हो, यहीं पटक देते हो। जूते खोलकर यहीं रख दोगे, कपड़े कुर्सियों पर फेंक दोगे। **बण्डल उठाती हुई** आखिर इसमें है क्या ? **मेज पर रखकर खोलती है। उसमें से पांच मुखौटे निकलते हैं। रामलीला के मेले में बिकने वाले मिट्टी**

के मुखौटे । अरे, सुनते हो, यह क्या लाये हो ? **खिड़की से झांककर** अजी, तुम बोलते क्यों नहीं ? कहां हो ?

क की आवाज : बाथ-रूम में हूं । आ रहा हूं । **जल्दी-जल्दी बाहर आता है ।**

का : **क को देखकर क्रोध से** यह सब क्या है ? रबिश !

क : अरे, छोड़ो भी । ये खिलौने हैं ?

का : तुम्हें शरम नहीं आती ? घर में बच्चे मरे पड़े हैं क्या, जो ये पांच-पांच मुखौटे उठा लाये ?

क : आज नहीं हैं तो क्या कभी होंगे ही नहीं ? पड़े रहेंगे ये ।

का : दस बरस शादी को हुए, अब तक एक चूहे का बच्चा भी नहीं जन सके और बच्चों के खेलने के लिए यह···

क : खैर, छोड़ो इसे, जल्दी करो, **घड़ी देखता हुआ** देखो, आठ बज रहे हैं ।

का : चलो, इसे भी लेती चलती हूं, बाहर फेंक दूंगी ।

क : अरे-अरे, यह क्या कर रही हो ? आखिर पैसे देकर खरीदे हैं ।

का : इसीलिए तो फेंकूंगी ताकि आगे फिर कभी ऐसी बेकार चीजें न खरीदो ।

क : अगर तुम इन्हें फेंकने पर ही तुली हो, तो फिर मैं तुम्हारे साथ न जाऊंगा ।

का : **मुसकुराती हुई** अच्छी बात है, रख लो । लेकिन ड्राइंग रूम में नहीं, **हाथ में देती हुई** भीतर स्टोर में रख आओ ।

क उन्हें लेकर भीतर जाता है ।

का : **वहीं से** अजी सुनो, स्टोर में तो मैंने ताला बंद कर दिया है । बेडरूम में कहीं नीचे रख दो । और बाहर के दरवाजे में बंद करने के लिए ताला लेते आना । **शीशा निकाल कर मुंह देखती है ।** चाभियों का गुच्छा भी वहीं है, लेते आना । **जूड़ा ठीक करती है ।**

क : **ताला और चाभियों का गुच्छा हाथ में लिये हुए बाहर आता है** बाहर तो ताला बंद करोगी, मगर यह दीवार तो है ही नहीं । इसका···

का : **अत्यन्त क्रुद्ध होकर** चुप रहो । मैं कहती हूं, मुझे पागल मत बनाओ ।

क : **जोर से** तो क्या मैं झूठ कह रहा हूं ? कहां है यहां की दीवार ? ये सामने इतने आदमी हैं, क्या यह झूठ है ?

का : हे भगवान् । मैं कहती हूं या तो तुम्हारी आंखों को कुछ हो गया है या मेरी आंखों को ।

क : बेशक, हम में से किसी एक की आंखों को कुछ हो गया है। लेकिन इसका निर्णय कौन करेगा कि किसकी आंखें खराब हैं, मेरी या तुम्हारी ?

का : **कुछ सोचकर** अच्छा, निर्णय हो जायगा। लेकिन इस समय तो यहां से चलो, देर हो रही है ।

क : हां, अब तो काफी देर हो गयी है। तुम्हारे पिता जी ने तुम्हें साढ़े आठ बजे बुलाया था और आठ बजकर दस मिनट यहीं हो गये ।

का : अरे तो क्या देर हो गयी ? बाहर निकलते ही दो मिनट में बस अड्डे पहुंचेंगे। अगर नौ नंबर की बस मिल गयी तो सीधी कश्मीरी गेट पंद्रह मिनट में पहुंचायगी। कुछ भी देर नहीं हुई है, चलो ।

क : लेकिन हम लोग इस विषय पर कोई समझौता करके तब चलें कि यहां दीवार है या नहीं ।

का : मैं तो देख रही हूं कि है ।

क : और मुझे दिखाई नहीं पड़ती ।

का : एक बात सुनो, तुम हमेशा मेरी बात मानते हो न ?

क : हां, मानता तो हूं ।

का : तो इस बार भी मान लो कि दीवार है ।

क : क्या मानने के सिवा और कोई चारा नही है ?

का : नहीं है, नहीं है, नहीं है। बस, मान ही लो ।

क : अच्छी बात है । अगर मेरे मान लेने से ही हम लोगों में समझौता हो जाय तो मान लेता हूं कि यहां दीवार है ।

का : केवल समझौते के लिए मत मानो । अपने मन में बैठा लो कि यहां दीवार थी, है और रहेगी ।

क : मन में बैठा लू ? अच्छी बात है। मन में बैठा लिया कि यहां दीवार है, दीवार है, दीवार है, दीवार···

का : हां, अब ठीक है। ऐसे ही अच्छे लड़के की तरह रहो ।

आगे-पीछे दोनों निकलते हैं। बाहर से क दरवाजा बंद करता है। कुंडी बंद करने और ताला लगाने की आवाज ।

आगे के पांच मिनट तक मंच खाली रहेगा। मंच पर पहले धुंधलापन छा जाता है, फिर नीली रोशनी भर जाती है। थोड़ी देर में दरवाजा खटखटाने की आवाज होती है। बाहर से बोलने की आवाजें होती हैं।

एक व्यक्ति : अरे बुद्धू, देखते नहीं, ताला बंद है ! खटखटाते चले जा रहे हो ?

दूसरा व्यक्ति : अरे हां, तो हजरत के घर में आज ताला बंदी है।

पहला व्यक्ति : मरदूद इतवार को भी घर में आराम नहीं करता।

दूसरा : कौन जाने पिकनिक मनाने ओखला गया हो।

पहला : हो सकता है, दोनों कोई अंग्रेजी फिल्म देखने गये हों।

दूसरा : हो सकता है, सब्जी लाने गये हों।

पहला : खैर, कुछ भी हो सकता है। अब खड़े क्या हो यहां ? चलो दूसरा दरवाजा खटखटाएं। यहां की चाय तो गयी।

दूसरा : चलो, सोनी के यहां चलें।

आवाजें बंद हो जाती हैं। फिर पूर्ववत् शांति। मंच पर रोशनी बुझ जाती है, अंधेरा हो जाता है। फिर पीला प्रकाश-वृत्त भीतर वाले कमरे में इधर-उधर घूमता है। सहसा वह बुझ जाता है और दूसरा नीला प्रकाश-वृत्त बैठक में एक कुर्सी पर पड़ता है, फिर दूसरी कुर्सी पर, फिर तीसरी पर, अंत में मेज पर आकर स्थिर हो जाता है। बाहर से ताला खोलने और बोलने की आवाज। क दरवाजा खोलकर भीतर आता, पर दरवाजे पर ही रुककर बाहर वालों से बात करता है।

क : चले आओ, दोस्तों, मैदान खाली है। **बाहर देखता हुआ** आओ भई, भीतर क्यों नहीं आते ?

एक आवाज : क्यों आयें भीतर ? भाभी जी तो हैं नहीं, और तुम चाय बनाना जानते नहीं।

दूसरा : लेकिन यह भी खूब रही। उनको बस में ढकेल कर खुद बाहर ही रह गये।

क : तो मैं क्या करता, भाई ? वहां पहुंचने के पहले ही बस आ गयी थी। वह ठसाठस भरी थी और बाहर लंबी लाइन लगी थी। श्रीमतीजी लाइन से आगे जाकर बस में घुस गयीं। जब मैं घुसने लगा तो लोगों ने मेरी बांह पकड़कर मुझे रोक दिया। इसी बीच बस चल पड़ी।

दूसरी आवाज : चलो, तुम्हें तो इसी बहाने छुट्टी मिली।

क : छुट्टी मिली या जान की आफत आयी। मैं तो यही सोचता हुआ वापस आ रहा था कि क्यों न मैं भी दूसरी बस से चला जाऊं।

पहली आवाज : तो वापस क्यों आ गये ? चले जाना चाहिए था।

क : मैं तो बस सोच रहा था, वापस तो मेरे पांव आ रहे थे।

दूसरी आवाज : **लंबी हंसी के बाद** लेकिन यार, बहाना तुमने अच्छा ढूंढा, पांव वापस आ रहे थे। **फिर हंसता है।**

क : सच कहता हूं, अगर तुम लोग न मिल गये होते तो मैं जरूर दूसरी बस से चला जाता।

दूसरी आवाज : तो अब भी क्या बिगड़ा है, चले जाओ। हम लोग तो अब सोनी के यहां जा रहे हैं।

क : अच्छी बात है, जाओ। मैं भी दूसरी बस से चला जाऊंगा।

दरवाजा भीतर से बंद करके सिटकनी लगाता है और भीतर आते हुए जोर से हंसता है, इतना हंसता है कि हंसी रुकती ही नहीं। हंसते-हंसते एक कुर्सी पर बैठकर वह सुस्ताता है और फिर हंसने लगता है। फिर जूते सहित पांवों को मेज पर फैला देता है और जूतों को खूब हिलाता है। फिर एक पैर ऊपर करके हिलाने लगता है, वह पैर थक जाता है तो दूसरा पैर ऊपर करके हिलाता है। जब वह भी थक जाता है तो खड़ा होकर बारी-बारी से दोनों हाथों को देर तक हिलाता है, फिर सिर को चारों ओर घुमाता, फिर मनमाने ढंग से हाथ-पैर भांजता और उछल-कूद करता है, एकाएक रुककर अपने कपड़ों को देखता है। फिर कुर्सी पर बैठकर जूतों के फीते खोलते हुए गाने लगता है, "फेंक दो—फेंक दो—हां-हां जूतों को फेंक दो।" इसके बाद जूते उतार कर वह बारी-बारी से छत की ओर उछालता है, गाता है, "फेंक दो—फेंक दो—फेंक दो," फिर खड़ा होकर बनियान निकालता और उछाल देता है। पैंट के बटन खोलने लगता है। ऊपर के दो बटन खोलने पर भीतर का जांघिया देखने के लिए उसकी डोरी वाला भाग ऊपर खींचता है। इसके बाद पैंट के बटन खोलकर वह उसे जमीन पर पटक देता है। जांघिये की डोरी

पर हाथ लगाये हुए इधर-उधर देखता है। एकाएक उसकी नजर सामने के दर्शकों पर जाती है।

क : **घबराकर** अरे दीवार....दीवार तो है नहीं ! **भागकर पहले बाहर वाले दरवाजे के पास कोने में छिपता है, फिर तेजी से दौड़कर भीतर वाले दरवाजे से सोने के कमरे में घुसता और आड़ में छिप जाता है। फिर खिड़की के सामने आकर** अरी कम्बख्त दीवार, तू कहां चली गयी है ? अच्छा, आ, आ, ले, यह जांघिया पहन ! **छड़ से बाहर हाथ निकालकर जांघिया बाहर फेंक देता है। फिर नीचे झुककर एक मुखौटा उठाता है और उसे उलट-पुलट कर देखता है। मुखौटा बंदर का है। मुखौटे को दोनों हाथों में वह इस तरह लेता है कि मुखौटे का मुंह उसके मुंह के सामने है और दर्शक दोनों का मुंह देखते हैं** कहिए हनुमान जी, अब तो पकड़ में आये ? **जोर से हंसता है** भई, आओ, हम अपने चेहरे बदल लें। **मुखौटा अपने चेहरे के ऊपर लगाकर सिर के पीछे रस्सी में गांठ देता है। शीशा लेकर अपना रूप देखता और जोर-जोर से हंसता है। तभी बाहर से दरवाजा खटखटाने की आवाज आती है।**

धीरे-से न जाने कौन खूसट आया ! सालों को अपने घर में अच्छा नहीं लगता। **जोर से** खोलता हूं। कौन साहब हैं ? **धीरे-से** अरे मेरा पाजामा, मेरा पाजामा कहां है ? **इधर-उधर खोजता है। बाहर से फिर खटखटाने की आवाज** कमबख्त पाजामा भी कहीं घूमने चला गया ! **धीरे-से** घबराइए नहीं, अभी खोलता हूं। **धीरे-से** अच्छा, यह का की साड़ी है। **बक्सों पर रखी साड़ी उठा कर दोहरी करके लुंगी की तरह लपेट लेता है और लपक कर बाहर निकलता है। दरवाजे के पास जाकर सिटकनी खोलता है। आगंतुक सिर नीचा किये उसकी साड़ी की ओर देखता हुआ भीतर प्रवेश करता है। वह वृद्ध व्यक्ति है, हाथ में छड़ी है।**

आगंतुक : माफ कीजियेगा, मैंने आपको तकलीफ दी। वे कहीं बाहर गये हैं क्या ? खैर, मैं तब तक बैठूंगा जब तक वे आ नहीं जाते। **आगे बढ़ता जाता है। क उसके पीछे-पीछे है। देखता हुआ**

बोलता जाता है। आपको मेरी वजह से कोई तकलीफ नहीं होगी। जब आपके पति मेरे दामाद के दोस्त हैं तो आप भी मेरी बेटी के बराबर ही हुईं। मेरी बेटी ने उन्हें बुलाया है कि वे बीच-बचाव कर दें। उसी ने मकान का पता बता कर भेजा है मुझे।

क : जी, मैं···

आगंतुक : मेरे जमाने तो अब लद गये, बेटी। हमारे जमाने में पति-पत्नी में लाख झगड़े थे पर मजाल क्या कि कोई बाहरी आदमी जान जाय। और अब तो जरा भी खटपट हुई नहीं कि पंचायत, कचहरी, मुकदमा·······अब यही देखो न, मेरा दामाद···

क : **नाराज होता हुआ** कौन है आपका दामाद ? बताते क्यों नहीं ? कौन है आपका दामाद ?

आगंतुक : **क को सिर से पांव तक देखकर कांपता हुआ** जी, माफ··· कीजियेगा मैं गलत जगह आ गया था···मैं···

क : अरे, आप इस तरह कांप क्यों रहे हैं ? बैठिये, जा कहां रहे हैं ?

आगंतुक : **पीछे की ओर हटता हुआ** जी···यह आपका····

क : **आगंतुक की ओर तेजी से बढ़कर** आखिर आप कहना क्या चाहते थे ?

आगंतुक : **पीछे हटता हुआ दरवाजे के पास तक पहुंच जाता है।** मैं··· मैं···जी, मैं कुछ नहीं।···माफ कीजियेगा···आपका चेहरा···

क : **एकाएक चेहरे पर लगे मुखौटे का ख्याल आता है। वह उसे जल्दी से उतार कर जोर-जोर से हंसने लगता है। फिर शांत होकर** यह चेहरा आदमी के पूर्वज आदम का है, बुजुर्गवार, यह हम सबकी पुरानी और असली सूरत है। **फिर हंसता है** लीजिए, जरा आप भी शौक कीजिए। मैं आईना ला देता हूं। उसमें आपको अपनी असली सूरत साफ दिखाई पड़ने लगेगी। **आगे बढ़कर वह आगंतुक के पास पहुंच जाता है। और मुखौटा उसके मुंह के पास ले जाता है।**

आगंतुक : **दोनों हाथों से रोकता हुआ और क्रोध से** तुम तो बड़े बदतमीज मालूम पड़ते हो जी। मेरी उम्र का ख्याल नहीं करते।

क : तो मेरी उम्र क्या आप पांच साल की समझते है ? आप साठ साल के हैं, तो मैं भी पैंतीस साल का हूं। यह चेहरा हम दोनों का असली चेहरा है। लीजिए, अपने हाथ में तो लीजिए।

आगंतुक : **दरवाजे से बाहर निकलता हुआ** राम-राम ! मैं भी कहां आ फंसा !

क : **दरवाजे के पास पहुंचकर** अच्छा, तो इसे अपने साथ लेते जाइए। घर में कमरा बंद कर अकेले में इसे अपने चेहरे पर लगाइएगा। **उनके हाथ में जबर्दस्ती थमाकर दरवाजा बंद कर लेता है। फिर गंभीर होकर लौटता हुआ** बेवकूफ, बेहूदे, चमगादड़ कहीं के। और तुर्रा यह कि ये लोग अपने को आदमी समझते हैं, जबकि असलियत यह है कि—**दौड़कर भीतर जाता, बाकी मुखौटे लाकर मेज पर रखता और बारी-बारी से एक-एक को उठाता हुआ** ये सब के सब **भेड़ का मुखौटा उठाकर** भेड़ हैं, **गीदड़ का मुखौटा उठाकर** गीदड़ हैं, **गधे का मुखौटा उठाकर** गधे हैं। **लोमड़ी का मुखौटा उठाकर** लोमड़ी हैं। बदसूरत, मक्कार, डरपोक, कमअक्ल, छिपकर वार करने वाले हिंसक ! हुंह ! अपना चेहरा कोई नहीं देखता, दूसरों का चेहरा सब देखते हैं। **सहसा उसकी दृष्टि दर्शकों की ओर जाती है** अरे, मेरी बनियान क्या हुई ? कमबख्त यहां की दीवार क्या हो गयी ? अजीब बात है। अपने घर में भी एकांत नहीं है। इतने सारे लोग मेरी ही ओर टकटकी लगाये देख रहे हैं, जैसे मैं कोई चोर होऊं। उंह ! अब अगर यहां बैठना है तो कपड़े पहनो। या खुदा। **खड़ा होकर इधर-उधर देखता है, फिर बनियान के पास जाकर उसे उठाता और पहनता है। फिर अपनी लुंगी को देखकर** और मेरा पाजामा····? वह किधर है ? **दर्शकों की ओर देखकर फिर भीतर के कमरे में जाता है। पाजामा पहनकर फिर बाहर आता, कुर्सी पर बैठता और जमुहाई लेता है। फिर उठकर तख्त के पास जाकर बिस्तर फैलाता और बैठता है।**

क : पहले सिगरेट पी लूं, तब सोऊंगा। मेरा सिगरेट केस !

उठकर कमोज के पास जाता, जेब देखता है। सिगरेट का डिब्बा न पाकर कमोज को वहीं पटक देता है। फिर पेंट के पास जाता है। जेब से सिगरेट का डिब्बा और दियासलाई निकालता है। तख्त पर जाकर इत्मीनान से सिगरेट सुलगाता और धुएं के छल्ले ऊपर फेंकता है। बाहर से दरवाजा खटखटाने की आवाज :

क : नहीं खोलूंगा, मैं सोने जा रहा हूं। **फिर खटखटाहट** कह तो दिया, नहीं खोलूंगा।

बाहर से आवाज : अरे भई, खोलते क्यों नहीं ? ताश लेकर आया हूं।

क : **दौड़ कर दरवाजा खोलता हुआ** अरे, खन्ना ! आओ, आओ। मैंने समझा, कोई और है।

खन्ना : लेकिन, यार, भारी भुलक्कड़ हो। तुमने कल कहा था कि तुम मेरे घर ताश खेलने आओगे। छुट्टी के दिन घर में बैठकर क्या कर रहे हो ? लेकिन माजरा क्या है ? ये कपड़े क्यों बिखरे हैं ?

क : तो क्या हुआ ? आखिर हूं तो घर में ही।

खन्ना : **हंसता हुआ** ओ, अब समझा। श्रीमतीजी घर में नहीं हैं क्या ?

क : नहीं दिन-भर के लिए मैके गयी हैं।

खन्ना : तब तो, यार, बहुत मजे रहेंगे। आओ, हो जाय फ्लश।

मेज पर ताश के पत्ते पटकता है। दोनों कुर्सियों पर बैठ जाते हैं।

क : हां, हो जाय। **रुक कर दर्शकों की ओर देखता और धीरे से बोलता है** लेकिन, यार, फ्लश तो जुआ ही है न ?

खन्ना : तो इससे क्या हुआ ? सभ्य समाज में इसे जुआ नहीं कहा जाता।

क : लेकिन, पुलिस ? पुलिस तो इसे जुआ समझती है न ?

खन्ना : समझती है तो समझा करे। हम अपने घर में हैं। कमरे की इन चार दीवारों के भीतर हम चाहे जो करें।

क : **खड़ा होकर** बस-बस, यार, यही तो मैं कहना चाहता हूं कि हम अपने घर में रहते हुए भी सड़क पर हैं।

खन्ना : सड़क पर हैं ? **जोर से हंसता है** सड़क पर हैं, या तुम्हारे कमरे में हैं ?

क : अपने कमरे में होते हुए भी सड़क पर हैं। एक चौकोर कमरे में कितनी दीवारें होती हैं ?

खन्ना : क्यों, चार दीवारें होती हैं।

क : लेकिन दोस्त, मेरे इस कमरे में आज तीन ही दीवारें हैं। एक दीवार सवेरे से ही गायब है और कमरा सड़क पर पूरा का पूरा खुल गया है।

खन्ना : बकवास कर रहे हो ? चार दीवारें तो हैं **उंगली से चारों ओर दिखाकर गिनाता हुआ** एक, दो, तीन **अंत में दर्शकों की ओर** चार।

क : इधर चार कैसे कहा ? यहां कहां दीवार है ?

खन्ना : क्यों, यह दीवार नहीं है ?

क : अब समझ गया, बकवास मैं नहीं, तुम कर रहे हो। मैं साफ देख रहा हूं कि इधर की दीवार नहीं है और हजारों आदमियों की भीड़ हमारी एक-एक हरकत को गौर से देख रही है। इस भीड़ में पुलिस वाले होंगे, खुफिया के लोग होंगे, पुलिस के दलाल होंगे, सरकारी अफसर होंगे। अभी तो ये सब तमाशबीन हैं, मगर कल···· नहीं, भाई, मैं फ्लश नहीं खेलूंगा।

खन्ना : अगर तुम्हें विश्वास है कि लोग हमें देख रहे हैं तो मत खेलो। लेकिन तुम्हारा दिमाग···

क : मेरा दिमाग खराब ही सही, तुम्हारा दिमाग ठीक है तो मेरे एक प्रश्न का उत्तर दो।

खन्ना : **मुसकुराता हुआ उसकी आंखों में घूरता है**। अच्छा, पूछो।

क : क्या कोई ऐसा रास्ता है कि हम यहां जुआ खेलें, शराब पिएं या चाहे जो करें, मगर इस भीड़ में उपस्थित पुलिस या और कोई हमें पकड़ न सके ?

खन्ना : **कुछ सोचता हुआ** मुझे तो कोई रास्ता नहीं सूझता।

क : अब देखो मेरे दिमाग की करामात। मैं रास्ता बताता हूं। **उसके कान के पास झुककर, धीरे-से** यार, अब तक ये लोग हमारा रहस्य जानने के लिए भीड़ लगाकर मेरी ओर देख रहे

थे। क्यों न इन्हें चकमा दिया जाय ?

खन्ना : कैसे ?

क : **दो मुखौटे उठाकर मेज पर रखते हुए** ये मुखौटे लगाकर हम जो भी करेंगे, ये लोग समझेंगे कि हम नाटक कर रहे है। फिर कोई नहीं पूछेगा कि क्या कर रहे हो।

खन्ना : **कुतूहल से कभी मुखौटों की ओर, कभी क की ओर देखता हुआ** क्या बक रहे हो ? हम कोई बच्चे है जो मुखौटे लगायें ?

क : मेरे भाई, बच्चे मुखौटे लगाकर खेलते हैं, बड़े लोग मुखौटे लगाकर नाटक करते हैं। लो, **गीदड़वाला मुखौटा उठाते हुए** इसे बांध लो। लाओ, मैं बांध देता हूं।

खन्ना : अरे-अरे, यह क्या कर रहे हो ?

क : अगर फ्लश खेलना है तो बांधने दो। **जबर्दस्ती उसके चेहरे पर मुखौटा लगाकर पीछे रस्सी की गांठ देता है। दूसरा मुखौटा, जो लोमड़ी का है, अपने चेहरे पर लगाता है।** देखो, लोग कैसे खुश हो गये। लो, ये ताश के पत्ते !

खन्ना : लेकिन पहले दरवाजा तो बंद कर दो।

क : शायद तुम भूल गये हो कि तुम नाटक के पात्र हो और दूसरों को तुम्हें देखने का पूरा हक है, चाहे वे दरवाज़े से देखें या पूरी दीवार तोड़कर देखें। खैर, दरवाजा बंद किये देता हूं। **दरवाजा बंद करके सीधे भीतर के कमरे में जाता और शीशा उठा लाता है** आओ, खेल शुरू होने के पहले हम अपनी सूरतें तो देख लें। **अपने को देखकर** वाह, बिलकुल लोमड़ी लग रहा हूं, और तुम भी, यार, एकदम गीदड़ लग रहे हो। **शीशा दिखाता है** तुम्हारा असली चेहरा तो यही है।

खन्ना : **शीशा हटाते हुए** भाई, अब तो मैं तुम्हारे इस खेल से ऊब रहा हूं। मैं जाऊंगा। बाज आया इस फ्लश से।

क : वाह, जाओगे कैसे ? अब तो मैं मूड में आया हूं। बैठ जाओ, प्यारे। जम जाने दो।

खन्ना : **अपने को छुड़ाता हुआ** नहीं भाई, मुझे जाने दो।

क : **हंसता हुआ** अरे यार, तुम तो भाग रहे हो। सुनो, सुनो। **ताश उठाता हुआ** जा ही रहे हो तो अपना यह ताश तो लेते जाओ।

खन्ना : लाओ, लाओ। जाने आज सबेरे उठकर किसका मुंह देखा

था ? **दरवाजे के पास खड़ा हो जाता है।**

क : **मुखौटा लिये हुए पास आकर** अपनी बीवी का देखा होगा। **मुखौटे में रखकर ताश देता है, अपना मुखौटा उतारकर दिखाता हुआ** ठीक ऐसा ही था न ? इसे भी लेते जाओ। बीवी के चेहरे पर लगा देना और दोनों मिलकर फ्लश खेलना। **हाथ में मुखौटा थमाकर** अब जाओ। **बाहर ढकेलकर दरवाजा बंद करता और ठहाके लगाने लगता है।** साले, अपना असली चेहरा देखते ही भाग खड़े होते हैं। नकली चेहरा उतारकर असली चेहरा लगाने में शरम लगती है। **कुर्सी पर बैठकर** नहीं, ऐसे नहीं, अब ऐसे बैठूंगा। **पालथी लगाकर कुर्सी पर बैठता है।** देखता हूं, कोई मेरा क्या कर लेता है, देखे, जिसे देखना हो। **दोनों मुखौटों को उठाकर मेज पर रखता हुआ** मुखौटा भी लगाये रहूंगा, और कभी नहीं उतारूंगा— चाहे जो हो जाय। **गधे का मुखौटा लगाता है** अब फिर कोई आ रहा होगा। अच्छा, आये। चाहे जो भी हो आये, इस बार जबर्दस्ती मुखौटा बांध दूंगा। देखा जायेगा। उल्लू के पट्ठे आकर सीधे कुर्सी पर बैठ जाते हैं। मैं कुर्सियों के चेहरे भी बदल देता हूं। **उठकर सभी कुर्सियों को उलटा कर देता है। अलग हटकर उन्हें देखता हुआ** हां, अब ठीक है। **बारी-बारी से कुर्सियों को दिखाता हुआ** ये हैं कार्यालय अधीक्षक, यानी आफिस सुपरिंटेंडेंट। ये हैं प्रधान लिपिक यानी हेड क्लर्क। ये हैं खजांची बाबू और **मेज पर बैठकर अपने को दिखाता हुआ** और ये हैं किरानी बाबू, मिस्टर क मिस्टर बुद्धू, मिस्टर गधा। **जोर-जोर से हंसता है। बाहर दरवाजा खटखटाने की आवाज।**

क : **धीरे-से** हां-हां, खटखटाओ, खटखटाते रहो। **फिर कुछ सोचकर** कौन है ? अरे, जग्गू हो क्या ? मेरी फाइल लाये हो ? यार, अच्छे चपरासी हो। एक दिन बाद फाइल ला रहे हो ? मैंने तो कहा था, रात ही में मेरे यहां पहुंचा जाना। अब तुम इस वक्त ला रहे हो ? **फिर खटखटाहट** ठहरो खोलता हूं। आओ, तुम भी क्या कहोगे कि कहीं गया था। **जोर से** अभी खोला। **हाथ में मुखौटा उठाकर दरवाजे के पास जाता है। धीरे-से**

सिटकनी गिरा कर दरवाजा खोलता और किवाड़ की ओट में छिपता है। आगंतुक के घुसते ही झपट्टा मारकर उसे देखे बिना ही उसके चेहरे पर मुखौटा बांध देता है। आगंतुक अभी दरवाजे के सामने ही है। वह स्तब्ध रह जाता है। वाह भाई जग्गू। अब तुम अपने असली रूप में दिखाई पड़ रहे हो। बिल्कुल भेड़।

आगंतुक : वह क्रोध से मुखौटे को जमीन पर पटक देता है और पीछे मुड़कर बेटी, तुम जल्दी भीतर आ जाओ। राजेश, तुम भी आ जाओ। दोनों भीतर आ जाते हैं। औरत का और युवक उसका भाई है। आगंतुक का का पिता है। क उन्हें देखकर अत्यंत चकित होता है और जहां का तहां खड़ा रह जाता है। उसके मुंह से बोली नहीं निकलती।

पिता : राजेश बेटा, जल्दी दरवाजा बंद करो। कहीं यह भागने न पाये। बेटी, तुम ठीक कह रही थीं। इसका दिमाग जरूर गरम हो गया है।

का : दुखी स्वर में पिता जी, अब क्या होगा, पिता जी ?

पिता : राजेश, इसके दोनों हाथ पीठ के पीछे बांध दो। कौन जाने, यह फिर कुछ कर बैठे।

राजेश आगे बढ़कर क की ओर जाता है। क पीछे हटता हुआ कुर्सियों के पास जाता है। का और उसके पिताजी सतर्क होकर आगे बढ़ते हैं।

का : कुर्सियों को देखकर अरे, यह सब क्या हो गया है ? ये कुर्सियां— ये कपड़े ! पिता जी, मैं पहले ही कह रही थी, किसी डाक्टर को लेते चलिए।

पिता : मैं क्या जानता था कि यह सचमुच पागल हो गया है ? मैं तो समझता था कि तुम्हें शक हो गया है।

का : कुछ-कुछ शंका तो मुझे यहां से जाने के पहले ही हो गयी थी। लेकिन जब ये मुझे बस में भीतर ढकेल कर खुद बाहर रह गये और मेरे बुलाने पर भी भीतर नहीं घुसे तो मेरा शक मजबूत हो गया। बस चल जाने से मैं उतर भी नहीं सकी।

राजेश : दीदी, तुम उतरकर भी अकेले क्या कर पातीं ?

पिता : गनीमत है कि हम लोग जल्दी ही आ गये। अगर देर होती

तो यह दीवाना बनकर सड़क पर निकल गया होता। देखते नहीं, चेहरे पर गधे का मुखौटा बांध रखा है। **क की ओर देखकर गरजता हुआ** उतारो इसे। **क भयभीत होकर मुखौटा उतार लेता है और अपने ससुर की ओर बढ़ाता है।**

पिता : **उसे लेकर जमीन पर पटकता हुआ** राजेश, इसके हाथ बांधो।

का : पिता जी, पहले इनसे कुछ पूछिए। ये कुछ बोलें तो।

पिता : अभी कुछ पूछना-समझना बाकी रह गया है क्या ? मेरे मुंह पर भेड़ का मुखौटा लगा दिया, अपने चेहरे को गधे का चेहरा बनाये था। कुर्सियां उलटी पड़ी हैं। कपड़े चारों ओर फिंके हैं। पागल के क्या कुछ और लक्षण होते हैं ?

का : **खुद क के पास जाती हुई** क प्लीज, कुछ बोलो, कुछ भी बोलो। **क चुप होकर उसकी ओर एकटक देखता है।** यों मुझे देखते क्या हो ? कुछ बोलते क्यों नहीं ? अरे, यही कह दो कि इधर दीवार है।

क : **क्रोध से उबलता हुआ** मैं झूठ नहीं बोल सकता। सच्चाई यह है कि इस ओर की दीवार नहीं है। दीवार होती तो ये हजारों लोग कैसे दिखते ?

पिता : अब लो ! हम तीन जने देख रहे हैं कि वहां दीवार है और यह कहता है कि दीवार नहीं है। पागल और किसको कहते हैं ? जो सामने है उसे नहीं देखना और जो नहीं है उसे देखना, यही तो पागल की पहचान है।

का : पिता जी…

राजेश : लेकिन, पिता जी, हो सकता है, इन्हें भ्रम हो गया हो। इनका भ्रम मिटाने के लिए पहले हम लोग ही कुछ करें। जब हमसे कुछ नतीजा न निकले तब डाक्टर को बुलाया जाय।

पिता : खैर, यही सही। मगर इसका भ्रम मिटाया कैसे जाय ?

राजेश : मैं बताता हूं, पिता जी। **क से** भाई साहब, आपकी आंखें उधर क्या देखती हैं ?

क : भीड़, भीड़ में आदमी, आदमियों के चेहरे, चेहरों में आंखें, आंखों में भय, पीड़ा, मक्कारी, धोखा, फरेब, हिंसा…

राजेश : बस बस। लेकिन हम लोग उधर दीवार देखते हैं। आपकी

दो आंखों का देखना सही है या हमारी छह आंखों का···

क : मेरी दो आंखों का, क्योंकि ये मेरी आंखें हैं। आप तीनों की या और हजारों-लाखों की नहीं।

राजेश : आंखों की तरह आप हाथ से छूने को भी प्रमाण मानेंगे या नहीं ?

क : हां, मानूंगा।

राजेश : तो चलिए, आप खुद अपने हाथ से चारों ओर की दीवारों को छूकर देख लीजिए।

क : चलो।

पिता : लेकिन इसकी आंखें ? अगर हाथ कहे भी कि दीवार है तो इसकी आंखें कहेंगी, दीवार नहीं है। मैं जानता हूं, यह आंखों का ही कहा मानेगा।

का : तो इसका तो सीधा उपाय है। इनकी आंखों पर पट्टी बांध दी जाये।

राजेश : बिलकुल ठीक।

पिता : हां, ऐसा ही करो।

राजेश : दीदी, पट्टी बांधने के लिए कोई कपड़ा लाओ।

का : **क से प्यारपूर्वक** बोलो, पट्टी बांध दी जाय न ?

क : **अत्यंत उदास होकर** हां, बांध दो।

राजेश : **हाथ में तौलिया लेते हुए** देखिए, भाई साहब, **दर्शकों की ओर दिखाकर** इधर पूरब है न ? **जो भी दिशा हो उसी का नाम लिया जाए।**

क : हां।

राजेश : तो हम उत्तर की दीवार से शुरू करेंगे और अंत में पूरब की दीवार तक आयेंगे। **उत्तर की दीवार के पास ले जाकर आंख पर पट्टी बांधता है।** दीदी, तुम इनका हाथ पकड़ कर आगे-आगे चलो। **का क का बायां हाथ पकड़कर आगे-आगे चलती है। राजेश क का दायां हाथ दीवार से सटा देता है।**

राजेश : बोलिए, यह उत्तर की दीवार है न ?

क : हां, है।

सभी उत्सुकतापूर्वक आगे बढ़ते हैं। आगे-आगे का, उसके पीछे क दीवार को छूते हुए। बगल में राजेश और उसके पीछे पिता।

राजेश : **पश्चिम की दीवार के पास मुड़ते हुए** यह पश्चिम की दीवार है। कहिए, दीवार है या नहीं ?

क : हां, है।

सब वैसे ही उत्सुकतापूर्वक आगे बढ़ते हैं। दक्षिण की दीवार शुरू होने पर मुड़ जाते हैं।

राजेश : यह दक्षिण की दीवार है। कहिए दीवार है न ?

क : हां है।

सब आगे बढ़ते हैं। ज्यों ही वे पूरब-दक्षिण के कोने तक पहुंचते हैं, परदा बंद होने के लिए सरककर कुछ आगे बढ़ जाता है।

का : हम पूरब की दीवार के पास आ गये हैं।

राजेश : भाई साहब, यह···

क : **परदे को छूकर चिल्लाता हुआ** अरे, दीवार तो है। का, दीवार तो वापस आ गयी। मेरी आंखें खोल दो। मेरी खुशी वापस आ गयी! दीवार वापस आ गयी! खुशी वापस आ गयी! **परदा पूरा बंद हो जाता है। भीतर से पिता, राजेश और का की ओर की हंसी। उस हंसी के बीच क की डूबती आवाज, "दीवार वापस आ गयी···खुशी वापस आ गयी।"**

मुद्रक : ब्यूटी प्रिंट, 10/8020 मुलतानी ढांडा, पहाड़गंज, नई दिल्ली-55